Date- 31-01-2023

सच्ची गीता खण्ड-2 (वॉल्यूम-1)

क्रमांक	विषय सूची	क्रमांक	विषय सूची	क्रमांक	विषय सूची
1	अमृतवेला	34	गुजरात	67	पुरुषार्थ
2	आलस्य-निद्रा-अलबेलापन	35	गुण-अवगुण	68	राजस्थान
3	अधिकारी अधीन नहीं	36	गुरू गोसाई भ्रष्टाचारी	69	रिफाइनिंग-चेन्जिंग
4	अधरकुमारों से	37	जानी-जाननहार	70	रिगार्ड-डिसरिगार्ड
5	अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर	38	जिम्मेवारी	71	सम्मुख-विमुख
6	अफ्रीका	39	काम कटारी	72	सम्पूर्णता की निशानियाँ
7	अंग से अंग न लगे	40	कर्मातीत अवस्था	73	सर्विस- गीता पाठशाला, सेंटर
8	आठ आने दो रोटी	41	कर्नाटक	74	सर्विस-डिससर्विस
9	ऑस्ट्रेलिया	42	खान-पान, रहन-सहन	75	सर्वसंबंध बाप से
10	एडवांस पार्टी	43	क्लास	76	सेवा दृष्टि से
11	बी.के. ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी	44	क्रोधी नहीं, मीठे बनो	77	सेवा का फल
12	भक्त	45	कुमारियों से	78	सर्विस कैसे, कैसी और किसकी
13	भट्ठी	46	कुमारों से	79	सेवा कर्मणा की
14	भोग-ध्यान-दीदार	47	लण्डन	80	सेवा माना क्या?
15	चार्ट, पोतामेल	48	मधुबन	81	सेवा मंसा की
16	चित्र-प्रदर्शनी	49	मधुबनवासियों प्रति	82	सर्विस में असफलता
17	दान	50	महाराष्ट्र	83	सेवा में सफलता का आधार
18	देह-देही	51	मांगना नहीं	84	सेवा और याद में बैलेंस
19	देखना धोखा है	52	मातागुरू	85	सेवा वाचा की
20	ढांढस या हौसला/(उमंग-उत्साह)	53	माताओं से	86	सेवा विदेश की
21	धर्मराज	54	मिलन मेला	87	सेवा विश्व की
22	धर्मशाला, कोसघर	55	मुक्ति-जीवनमुक्ति	88	सेवा व्यक्ति की
23	दिल्ली	56	मुरली	89	सेवाधारी की निशानियां
24	दृष्टि-वृत्ति	57	नौकरी-धंधा	90	शूद्र कुमारी
25	एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके	58	निश्चय पत्र	91	स्नेह
26	फाइनल पेपर	59	निश्चय-अनिश्चय	92	ट्रैफिक कंट्रोल
27	फॉलो फादर	60	पंजाब से	93	ट्रस्टी (न्यासी, अमानती, धरोहर वाला)
28	फोटो रखना रांग	61	पर्चे, पत्र, कार्ड्स	94	त्याग
29	फुल सरेण्डर	62	पतित पावन बाप	95	यू.पी.
30	फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे	63	पवित्रता	96	योग से प्राप्ति
31	फुटकर प्वाइंट्स	64	पवित्रता पर बखेड़ा	97	युगलों से
32	गंधर्व विवाह	65	प्रश्नावली		
33	गृहस्थ व्यवहार	66	प्रेरणा		

अमृतवेला

1. बाबा कहते हैं- रात को सवेरे (जल्दी) सो जाओ, फिर सवेरे उठो। अज्ञानी लोग 8 घण्टा नींद करते हैं। तुम्हारी नींद आधा होनी चाहिए। कर्मयोगी हो ना! रात को 10 बजे सो जाओ, 2 बजे उठो। (मु.ता.11.5.73 पृ.3 अंत)

2. अमृतवेले ही बाप को याद करना अच्छा है। प्रभात का समय बहुत अच्छा है। उस समय माया के तूफान भी नहीं आवेंगे। रात को 12 बजे तक तो तपस्या आदि करने का कोई फायदा नहीं है; क्योंकि टाइम बड़ा (गंदा) होता है, वायुमण्डल ख़राब रहता है। तो 1 बजे तक छोड़ देना चाहिए। 1 के बाद वायुमण्डल अच्छा रहता है। (मु.ता.9.6.71 पृ.2 मध्य)

3. बाबा अनुभव भी बतलाते रहते हैं कि सवेरे उठने में बड़ा मज़ा आवेगा। 84 का चक्र ऐसे लगाए हैं। अपन से बैठ बातें करनी चाहिए। विचार-सागर-मंथन सवेरे में अच्छा होगा। सर्विस का शौक होगा तो बाबा आपे ही तुमको उठावेंगे। (मु.ता.20.7.73 पृ.3 अंत)

4. बोलते हैं- सवेरे जाग न सकते हैं, तो फिर पद भी ऊँच पा न सकेंगे, दास-दासी बनना पड़ेगा। (मु.ता.19.10.78 पृ.2 मध्य)

5. बाप समझाते हैं कि सवेरे उठ अभ्यास करो- बाबा, आप कितने मीठे हो! आत्मा कहती है- बाबा! बाप ने पहचान दी है- मैं तुम्हारा बाप हूँ। (मु.ता. 20.2.76 पृ.2 मध्य)

6. एक से 5 तक अमृतवेला है, धूप निकलने से पहले। (मु.ता.18.4.76 पृ.2 मध्य)

7. सवेरे उठकर बाबा को याद करना है, वह टाइम बहुत अच्छा है। वायब्रेशन भी शुद्ध रहता है। जैसे आत्मा रात को थक जाती है तो कहती है- मैं डिटैच हो जाता हूँ। तुम्हारा भी यहाँ होते हुए बुद्धियोग वहाँ लगा रहे। अमृतवेले उठकर याद करने से दिन में भी याद आएगी। यह कमाई है। (मु.ता.8.3.87 पृ.3 अंत)

8. अमृतवेले यह रूहानी धंधा करो, बहुत कमाई होगी। प्रातः आत्मा रिफ्रेश होती है। बार-2 अभ्यास करने से आदत पड़ जाएगी। अभी जो करेगा, वह ऊँच पद पाएगा। (मु.ता.16.4.87 पृ.3 अंत)

9. सवेरे उठकर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आँसू भी आएँ; क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। (मु.ता.3.8.90 पृ.1 मध्य)

10. रात को बाबा की याद में सोएँगे तो सुबह को बाबा आकर खटिया हिलाएँगे। (मु.ता.31.3.87 पृ.2 मध्य)

11. सवेरे उठते नहीं हैं। जिन सोया तिन खोया। तुम जानते हो, बरोबर हमको हीरे जैसा जन्म मिला है। अब भी अगर नींद से सवेरे नहीं उठेंगे तो समझेंगे- यह बख़्तावर नहीं हैं। सुबह को उठकर मोस्ट बिलवेड बाप को, साजन को याद नहीं करते हैं। आधा कल्प से साजन बिछुड़ा हुआ है और बाप तो कल्प से बिछुड़ा हुआ है; क्योंकि साजन और सजनी की बात भक्तिमार्ग से चलती है। बाप को तुम सारा कल्प भूल जाते हो, फिर भक्तिमार्ग में तुम साजन के रूप में वा (सुप्रीम) बाप के रूप में याद करते हो। (मु.ता.9.10.83 पृ.1 अंत)

12. अमृतवेले का समय अच्छा है। उस समय बाहर के विचारों को लॉकप कर देना चाहिए। कोई भी ख़्याल न आए। बाप की याद रहे। (मु.ता.2.6.85 पृ.1 अंत)

13. याद की यात्रा को बच्चों को भूलना नहीं है। सुबह को जैसे कि यह प्रैक्टिस करते हैं। उसमें वाणी नहीं चलती है; क्योंकि वह है ही निर्वाणधाम जाने की युक्ति। (मु.ता.22.4.68 पृ.1 आदि)

14. सवेरे का टाइम बहुत ही अच्छा है। जो नेमी होते हैं, वह सवेरे उठते हैं। कोई बिस्तरे से उठ, जल्दी हाथ-मुँह धोकर भागते हैं क्लास में; याद करने का खिर ही नहीं। (मु.ता.11.2.69 पृ.1 अंत)

15. सवेरे 4 बजे उठ, स्नान आदि कर, यहाँ आकर बैठ जावें। संगम के आगे, सीढ़ी के आगे वा शिवबाबा के चित्र के आगे बैठ जाओ। तुम्हारी बहुत उन्नति होगी। (मु.ता.16.11.75 पृ.3 मध्य)

16. अमृतवेले जो अमरभव का वरदान मिलता है, वह अगर न लेंगे तो फिर मेहनत बहुत करनी पड़ेगी। (अ.वा.8.7.73 पृ.130 आदि)

17. अमृतवेले आपको उठाने वाला कौन? बाप का प्यार उठाता है। (अ.वा.26.11.94 पृ.20 अंत)

18. दिनचर्या की आदि परमात्म प्यार होता है। प्यार नहीं होता तो उठ नहीं सकते। प्यार ही आपके समय की घण्टी है। प्यार की घण्टी आपको उठाती है। सारे दिन में परमात्म साथ हर कार्य कराता है। (अ.वा.31.1.98 पृ.108 मध्यांत)

19. अमृतवेले का (पुरुषार्थ) ठीक करेंगे तो सभी ठीक हो जावेगा। जैसे अमृत पीने से अमर बन जाते हैं, तो अमृतवेले को सफ़ल करने से 'अमर भव' का वरदान मिल जाता है। (अ.वा.8.7.73 पृ.129 अंत)

20. यह संगमयुग ही अमृतवेला है। ..... पूरा ही संगमयुग अर्थात् अमृतवेला अर्थात् डायमण्ड मॉर्निंग। (अ.वा.9.4.86 पृ.322 अंत, 323 आदि)

21. अमृतवेले भी जैसे यह अभ्यास करना है- हम जैसे कि अवतरित हुए हैं। कभी ऐसे समझो कि मैं अशरीरी और परमधाम का निवासी हूँ अथवा अव्यक्त रूप में अवतरित हुई हूँ और फिर स्वयं को कभी निराकार समझो। यह तीन स्टेजिस पर जाने की ऐसी प्रैक्टिस हो जाए जैसे कि एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना होता है। तो अमृतवेले यह विशेष 'अशरीरी भव' का वरदान लेना चाहिए। (अ.वा.15.9.74 पृ.135 मध्य)

22. अमृतवेले को मिस करना अर्थात् संगम की विशेष प्राप्ति को ख़त्म करना। जो भी ईश्वरीय मर्यादाएँ हैं, उस मर्यादाएँ पूर्वक जीवन बिताने से विश्व के आगे एग्ज़ाम्पल बन जाएँ। (अ.वा.13.1.78 पृ.33 अंत)

23. अमृतवेले उठकर अपने को अटेन्शन के पट्टे पर चलाना, तो पट्टे पर गाड़ी ठीक चलेगी। (अ.वा.1.6.73 पृ.85 आदि)

24. अमृतवेले पावर हाउस से फुल पावर लेने का जो नियम है, उसको बार-2 चैक करो। यही बड़ी-से-बड़ी इन्जेक्शन है। अमृतवेले बाप से कनेक्शन जोड़ लिया तो सारा दिन माया की बेहोशी से बचे रहेंगे। इस इन्जेक्शन की ही कमी है। कनेक्शन ठीक होना चाहिए। ..... अमृतवेले का कनेक्शन अर्थात् सर्व पावर्स का और सर्व प्राप्तियों का अनुभव होना, यह बड़े-से-बड़ा इन्जेक्शन है। (अ.वा.8.7.73 पृ.127 अंत,128 आदि)

25. यह वरदानों का समय है। वरदानों के समय अगर कोई सोया रहे, सुस्ती में रहे वा विस्मृत रहे, कमजोर होकर बैठे तो वरदानों से वंचित हो जाएगा। (अ.वा.7.5.84 पृ.299 मध्य)

26. अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे। (अ.वा.2.2.69 पृ.29 अंत)

27. बापदादा सदा स्नेही बच्चों को अमृतवेले मुबारक देते हैं। ''वाह, मेरे बच्चे वाह!'' यह गीत गाते हैं। गीत सुनने आता है? (अ.वा.18.3.81 पृ.66 आदि)

28. अमृतवेले आँख खोलते बाप से मिलन मनाते रत्नों से खेलते हो ना! सारे दिन में धंधा कौन-सा करते हो? रत्नों का धंधा करते हो ना! बुद्धि में ज्ञान-रत्नों के प्वॉइण्ट्स गिनते हो ना! तो रत्नों के सौदागर, रत्नों की खानों के मालिक हो। (अ.वा.3.12.83 पृ.26 अंत, 27 आदि)

29. जहाँ भी कुछ मूँझ हो तो जो निमित्त बने हुए हैं, उन्हों से वेरीफाय कराओ या फिर स्वस्थिति शक्तिशाली है तो अमृतवेले की टचिंग सदा यथार्थ होगी। अमृतवेले मन का भाव मिक्स करके नहीं बैठो; लेकिन प्लेन बुद्धि होकर बैठो, फिर टचिंग यथार्थ होगी। (अ.वा.20.1.84 पृ.125 अंत,126 आदि)

30. बार-2 रिवाइज़ करो- मैं कौन हूँ! किसका हूँ! अमृतवेले शक्तिशाली स्मृति स्वरूप का अनुभव करने वाले सदा ही शक्तिशाली रहते हैं। अमृतवेला शक्तिशाली नहीं, तो सारे दिन में भी बहुत विघ्न आएँगे; इसलिए अमृतवेला सदा शक्तिशाली रहे। अमृतवेले पर स्वयं बाप बच्चों को विशेष वरदान देने आते हैं। उस समय जो वरदान लेता है, उसका सारा दिन सहजयोगी की स्थिति में रहता है। तो पढ़ाई और अमृतवेले का मिलन- यह दोनों ही विशेष सदा शक्तिशाली रहें। तो सदा ही सेफ रहेंगे। (अ.वा. 22.2.84 पृ.155 मध्य)

31. अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से, सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसी वेला श्रेष्ठ, अमृत श्रेष्ठ, वैसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा। अगर इस श्रेष्ठ वेला को साधारण रीति से चला लेते हो तो सारा दिन संकल्प और कर्म भी साधारण ही चलते हैं। तो ऐसे समझना चाहिए- यह अमृतवेला सारे दिन के समय का फाउण्डेशन वेला है। अगर फाउण्डेशन कमज़ोर वा साधारण डालेंगे तो ऊपर की बनावट भी ऑटोमैटिकली ऐसी होगी। (अ.वा.24.6.72 पृ.319 अंत, 320 आदि)

32. जो श्रीमत मिली हुई है, इसको ब्रह्ममुहूर्त के समय स्मृति में लाएँगे तो ब्रह्ममुहूर्त वा अमृतवेले के समय स्मृति भी सहज आ जाएगी। देखो, (दुनियावी) पढ़ाई पढ़ने वाले भी पढ़ाई को स्मृति में रखने के लिए इसी टाइम पढ़ने की कोशिश करते हैं; क्योंकि इसी समय सहज स्मृति रहती है। .....जैसे श्रीमत है, उसी प्रमाण समय को पहचान और समय प्रमाण कर्तव्य किया तो बहुत सहज सर्व प्राप्ति कर सकते हो। (अ.वा. 24.6.72 पृ.320 मध्य)

33. अमृतवेले के समय जो तकदीर (की) रेखा खिंचवाना चाहो, वह खींचने के लिए तैयार हैं। ..... उस समय यह भोले भगवान के रूप में हैं, लवफुल हैं, तो लव के आधार से श्रेष्ठ लकीर खिंचवा लो। जो चाहे, जितने जन्मों के लिए चाहे, चाहे अष्ट-रत्नों में, चाहे 108 की माला में, बापदादा की खुली ऑफर है। (अ.वा.17.12.79 पृ.126 अंत)

34. सारे दिन में चाहे कितना भी पुरुषार्थ करें; लेकिन सारे दिन की आदि अर्थात् फाउण्डेशन का समय कमज़ोर होने के कारण मेहनत ज़्यादा करनी पड़ती, प्राप्ति कम होती है। प्राप्ति कम होने के कारण दो प्रकार की अवस्था का अनुभव करते हैं। एक तो चलते-2 थकावट अनुभव करते हैं, दूसरा- चलते-2 दिलशिकस्त हो जाते हैं। (अ.वा.17.12.79 पृ.125 अंत, 126 आदि)

35. अमृतवेले जागृत स्थिति में अनुभव नहीं करते, मजबूरी से वा कभी सुस्ती, कभी चुस्ती के रूप में बैठते, तो पुजारी भी मजबूरी से या सुस्ती से पूजा करेंगे, विधिपूर्वक पूजा नहीं करेंगे। (अ.वा.17.10.87 पृ.88 मध्य)

आलस्य-निद्रा-अलबेलापन

1. सभी बातों में भिन्न-2 रूप से पहले आलस्य रूप आता है। आलस्य अर्थात् सुस्ती, उदासाई (बाबा के) संबंध से दूर कर देते हैं।... ज्ञानी तू आत्मा वत्सों में लास्ट नम्बर अर्थात् सुस्ती के रूप से शुरू होती है। सुस्ती में फिर कैसे संकल्प उठेंगे? वर्तमान इसी रूप से माया की प्रवेशता होती है। (अ.वा.25.6.70 पृ.276 आदि)

2. वर्तमान समय पुरुषार्थियों के मन में यह संकल्प उठना कि अंत में विजयी बनेंगे व अंत में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे- यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है। (अ.वा.9.1.75 पृ.9 अंत)

3. अलबेले पुरुषार्थी की सबसे बड़ी विशेषता- अंदर मन खाता रहेगा और बाहर से गाता रहेगा! क्या गाता रहेगा? अपनी महिमा? के गीत गाता रहेगा। (अ.वा.11.4.83 पृ.126 अंत)

4. कोई-2 फिर ऐसे भोले बच्चे होते हैं, जो कि ईश्वरीय प्राप्ति और माया के अंतर को भी नहीं जानते; निद्रा को ही शांत-स्वरूप और बीज-रूप स्टेज समझ लेते हैं, अल्पकाल की निद्रा द्वारा रेस्ट के सुख को अतीन्द्रिय सुख समझ लेते हैं। (अ.वा.8.7.74 पृ.94 अंत)

5. एक तरफ एक राज्य, एक धर्म की सुनहरी दुनियाँ का आह्वान कर रहे हो और साथ-2 फिर कमजोरी अर्थात् माया का भी आह्वान कर रहे हो, तो रिज़ल्ट क्या होगी? दुविधा में रह जाएँगे। इसलिए यह छोटी बात नहीं समझो। समय पड़ा है, कर लेंगे। औरों में भी तो बहुत-कुछ है, मेरे में तो सिर्फ एक ही बात है। दूसरे को देखते-2 स्वयं न रह जाओ। (अ.वा.27.11.87 पृ.152 मध्य)

6. आज सोचते हैं- कल से करेंगे, यह कार्य पूरा करके फिर यह करेंगे। ऐसे-2 संकल्प ही आलस्य का रूप हैं। जो करना है वह अभी करना है। जितना करना है वह अभी करना है। बाकी करेंगे, सोचेंगे- इन अक्षरों में पिछाड़ी में 'ग-ग' आता है ना! तो यह शब्द हैं बचपन की निशानी। छोटा बच्चा 'ग-ग' करता रहता है ना! यह अलबेलेपन की निशानी है। इसलिए कब भी आलस्य का रूप अपने पास आने न देना और सदा अपने को हुल्लास में रखना; क्योंकि निमित्त बनते हो ना! (अ.वा.4.3.72 पृ.236 अंत)

7. जो अभी भी कहते हैं- देख लेंगे तुम्हारा क्या कार्य है! वा देख लेंगे आपको क्या मिला है! जब कुछ होगा तब देखेंगे, ऐसे समय का इंतज़ार करने वाले, एसलम के इंतज़ाम के अधिकारी नहीं बन सकते। उस समय भी देखते ही रह जाएँगे। (अ.वा.27.10.81 पृ.80 अंत)

8. अलबेला अर्थात् करने के समय करते हुए भी उस समय जानते नहीं हो कि कर रहे हैं। पीछे पश्चाताप करते हो। इस कारण डबल, ट्रिपल समय एक बात में गँवा देते हो- एक, करने का समय; दूसरा, महसूस करने का समय; तीसरा, पश्चाताप करने का समय; चौथा फिर उसको चैक करने के बाद चेन्ज करने का समय। तो एक छोटी-सी बात में इतना समय व्यर्थ कर देते हो और फिर बार-2 पश्चाताप करते रहने के कारण, कर्मों का फल संस्कार रूप में पश्चाताप के संस्कार बन जाते हैं। (अ.वा.23.4.77 पृ.92 अंत)

9. कोई भी प्रकार के संस्कार या स्वभाव को परिवर्तन करने में दिलशिकस्त होना या अलबेलापन होना भी थकना है। यह तो होता ही रहता है, यह तो होगा ही- यह है अलबेलापन; बहुत मुश्किल है, कहाँ तक चलेंगे- यह है दिलशिकस्त होना। (अ.वा.5.2.77 पृ.73 अंत)

10. सेवा में जो निमित्त हैं उन्हों को भी तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए। अपने अलबेलेपन से किसको मेहनत नहीं करानी चाहिए। अपनी वस्तुओं को सम्भालना यह भी नॉलेज है। याद है ना, ब्रह्मा बाप क्या कहते थे- रुमाल खोया तो कभी खुद को भी खो देगा। (अ.वा.11.4.86 पृ.328 मध्य)

11. अगर कुछ भी अलबेलापन रहा, तो जैसे कई बच्चों ने साकार मधुर मिलन का सौभाग्य गँवा दिया, वैसे ही यह पुरुषार्थ के सौभाग्य का समय भी हाथ से चला जाएगा। इसलिए पहले से ही सुना रहे है- पुरुषार्थ से स्नेह रख पुरुषार्थ को आगे बढ़ाओ। (अ.वा.17.4.69 पृ.50 अंत)

12. अलबेलापन का कारण हुआ कि ज्ञान की कमी और पहचान की कमी। (अ.वा.20.2.74 पृ.21 आदि)

13. हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है- यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जावेगा। (अ.वा.7.6.77 पृ.219 आदि)

14. जब अपने ऊपर ज़िम्मेवारी समझेंगे तो ज़िम्मेवारी पड़ने से अलबेलापन और आलस्य ख़त्म हो जाएगा। (अ.वा.16.7.69 पृ.87 अंत)

15. कई बच्चे अलबेलेपन में आने के कारण, चाहे बड़ों को, चाहे छोटों को, इस बात में चलाने की कोशिश करते हैं कि मेरा भाव बहुत अच्छा है; लेकिन बोल निकल गया वा मेरी एम (लक्ष्य) ऐसे नहीं थी; लेकिन हो गया या कहते हैं कि हँसी-मज़ाक में कह दिया अथवा कर लिया। यह भी

चलाना है। इसलिए पूजा भी चलाने जैसी होती है। यह अलबेलापन सम्पूर्ण पूज्य स्थिति को नम्बरवार में ले आता है। (अ.वा.17.10.87 पृ.87 अंत)

16. आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। (अ.वा.17.10.87 पृ.88 मध्य)

17. 'प्राप्ति भव' की वरदानी आत्मा कभी भी अलबेलेपन में आ नहीं सकती। (अ.वा.9.10.87 पृ.77 अंत)

18. बच्चे का अलबेलापन अच्छा लगता है, बड़प्पन नहीं और बड़ों का फिर अलबेलापन अच्छा नहीं लगता है; इसलिए समय के प्रमाण अपने स्वमान को कायम रखते हुए ज़िम्मेवारी को सम्भालते जाओ। (अ.वा.8.5.73 पृ.62 मध्य)

19. अलबेलापन भी आधी नींद है। (अ.वा.4.5.73 पृ.54 मध्य)

20. जो अलबेलेपन में रहते हैं, वह भी नींद में सोने की स्टेज है।.... ऐसे को कहा जाता है- आए हुए भाग्य को ठोकर लगाने वाले। (अ.वा.4.5.73 पृ.54 मध्य)

21. हर कर्म करने के पहले यह लक्ष्य रखो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाय, सैम्पुल बनाना है। होता क्या है कि संगठन का फायदा भी होता है तो नुकसान भी होता है। संगठन में एक/दो को देख अलबेलापन भी आता है और संगठन में एक/दो को देख करके उमंग-उत्साह भी आता है, दोनों होता है। तो संगठन को अलबेलेपन से नहीं देखना है। अभी यह एक रीति हो गई है- यह भी करते हैं, यह भी करते हैं, हमने भी किया तो क्या हुआ! ऐसे चलता ही है। तो यह संगठन में अलबेलेपन का नुकसान होता है। (अ.वा.18.1.86 पृ.173 मध्य)

22. पुरुष+अर्थ की एक भी कमी का दाग बहुत बड़ा देखने में आता है। फिर हमेशा ख्याल आता है कि छोटा-सा दाग मेरी वैल्यू कम कर देगा। चिंतन चिंता के रूप में होना चाहिए। वह नहीं तो अलबेलापन है। (अ.वा.18.1.75 पृ.25 अंत)

23. भले ही आराम के साधन प्राप्त हैं; परंतु आराम पसंद नहीं बन जाना है। पुरुषार्थ में भी आराम पसंद न होना अर्थात् अलबेला न होना है। आराम के साधनों का एडवाण्टेज (लाभ) सदाकाल की प्राप्ति का विघ्न रूप नहीं बनाना। यह अटेन्शन रखना है। (अ.वा.11.2.75 पृ.69 मध्य)

24. अलबेलापन न आए उसकी विधि क्या है? उसकी विधि है- सदा स्वचिंतन करो और शुभचिंतक बनो। .....चिंतन नहीं करते, इसको एक दृढ़ संकल्प की रीति से अपने जीवन का निजी कार्य नहीं बनाते, इसलिए अलबेलापन आता है। (अ.वा.10.12.79 पृ.102 आदि)

अधिकारी अधीन नहीं

1. हरेक को अपनी ज़िम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर ज़िम्मेवार हैं, तो इससे सिद्ध होता है कि आपको भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी अधीन रहने के संस्कार हुए न? जो अधीन रहने वाला है, वह अधिकारी नहीं बन सकता, विश्व का राज्य-भाग नहीं ले पाता। इसलिए स्वयं के ज़िम्मेवार, फिर सारे विश्व की ज़िम्मेवारी लेने वाले विश्व-महाराजन बन सकते हैं। (अ.वा.30.5.73 पृ.81 मध्य)

2. ऐसे नहीं, बड़े-2 कार आदि रखनी है। ऐसा कुछ होगा तो बन्धन रहेगा। बन्धन जितना हो सके, कम हो। मनुष्य वानप्रस्थ में जाते हैं, तो फिर घूमना-फिरना, मोटरें आदि छोड़ देते हैं। (मु.ता.1.2.74 पृ.1 अंत, 2 आदि)

3. प्रकृति के व परिस्थिति के और व्यक्ति के व वैभव के अधीन रहने वाली आत्मा, अन्य आत्माओं को भी सर्व अधिकारी नहीं बना सकती। (अ.वा.26.6.74 पृ.80 मध्य)

4. इस समय के किसी-न-किसी स्वभाव वा संस्कार वा किसी सम्बन्ध के अधीन रहने वाली आत्मा जन्म-2 अधिकारी बनने के बजाय प्रजा पद के अधिकारी बनते हैं, राज्य अधिकारी नहीं। (अ.वा.6.1.86 पृ.133 मध्य)

5. बन्धन है, ऐसे कहने वाले रीढ़-बकरियाँ हैं। गवर्मेण्ट कब कह न सके कि तुम ईश्वरीय सर्विस न करो। (मु.ता.19.11.74 पृ.2 अंत)

6. अगर किसी को सम्भालना नहीं आता है तो किसी के सम्भालने में चलना पड़े ना! तो मास्टर रचयिता के बदले रचना बनना पड़े। (अ.वा.8.7.73 पृ.127 मध्य)

7. अधिकारी कभी किसी के आधीन नहीं होते। ..... अपनी हर कर्म-इन्द्रियों को जब चाहो, जैसे चाहो, वहाँ लगाओ और जब न लगाना हो तो कर्मेन्द्रियों को कण्ट्रोल कर सको। (अ.वा.4.5.73 पृ.51 मध्य, 52 अंत)

8. अब प्रैक्टिकल में चेक करो कि हर कर्मेन्द्रिय कमल समान न्यारी बनी हैं? जैसे कमल सम्बन्ध और सम्पर्क में रहते हुए न्यारा है, ऐसे कर्मेन्द्रियाँ कर्म के और कर्म के फल के सम्पर्क में आते हुए न्यारी हैं? .....कोई भी कर्मेन्द्रिय का रस- देखने का, सुनने का, बोलने का, अपने वशीभूत तो नहीं बनाता है? (अ.वा.23.1.76 पृ.13 आदि)

9. दास और अधिकारी, दोनों साथ-2 नहीं हो सकते। दासपन की निशानी है- मन से, चेहरे से उदास होना। उदास होना निशानी है दासपन की। ..... दास सदा अपसेट होगा। राज्य-अधिकारी सदा

सिंहासन पर सेट होगा, दास छोटी-सी बात में और सेकेंड में कनफ्यूज़ हो जाएगा और अधिकारी सदा अपने को कम्फर्ट (आराम में) अनुभव करेगा।..... दास आत्मा सदा अपने को परीक्षाओं के मझधार में अनुभव करेगी। अधिकारी आत्मा माँझी बन नैया को मज़े से परीक्षाओं की लहरों से खेलते-2 पार करेगी। (अ.वा.6.4.82 पृ.346 अंत, 347 आदि)

10. ऑलमाइटी अथॉरिटी के हर डायरैक्शन को प्रैक्टिकल में लाने की हिम्मत का अभ्यास हो गया है? ..... अभ्यास में सफल कौन हो सकता है? जो हर बात में स्वतन्त्र होगा; किसी भी प्रकार की परतन्त्रता न हो। बापदादा भी स्वतन्त्र बनाने की ही शिक्षा देते रहते हैं।..... सबसे पहली स्वतन्त्रता पुरानी देह के अन्दर के सम्बन्ध से है। इस एक स्वतन्त्रता से और सब स्वतन्त्रता सहज आ जाती है। देह की परतन्त्रता अनेक परतन्त्रता में न चाहते हुए भी ऐसे बाँध लेती है, जो उड़ते पक्षी आत्मा को पिंजरे का पक्षी बना देती है। तो अपने-आप को देखो, स्वतन्त्र पक्षी हैं वा पिंजरे के पक्षी हैं?..... परतन्त्रता सदैव नीचे की ओर ले जाएगी अर्थात् उतरती कला की तरफ ले जावेगी। (अ.वा.26.4.77 पृ.98 आदि, अंत, 99 आदि)

11. कोई भी किनारा, अल्पकाल का सहारा बन, बाप के सहारे वा साथ से दूर कर देंगे। (अ.वा.30.4.82 पृ.402 अंत)

12. जो वर्से के अधिकारी बनते हैं, उन्हों का सर्व के ऊपर अधिकार होता है। वह कोई भी बात के अधीन नहीं होते। अगर अधीन होते हैं- देह के, देह के सम्बन्धियों वा देह के कोई भी वस्तुओं से, तो ऐसे अधीन होने वाले अधिकारी नहीं हो सकते। अधिकारी अधीन नहीं होते हैं। सदैव अपने को अधिकारी समझने से, कोई भी माया के रूप के अधीन बनने से बच जाएँगे। (अ.वा.24.1.70 पृ.183 आदि)

13. विष्णु की शेष शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह अधीन हो गए, वह अधिकारी हो गए; नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता। साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गए। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गए। (अ.वा.12.12.79 पृ.111 मध्य)

14. कोई अपने में, बाप के डायरैक्ट साथ और सहयोग लेने की हिम्मत न देख, राह पर चलने वाले साथियों को ही पण्डा बनाते,.....बाप के बजाय कोई आत्मा को सहारा समझ लेते हैं; इसलिए बाप से किनारा हो जाता है। ..... अविनाशी बाप का आधार न ले, अल्पकाल के अनेक आधार बना लेते हैं। (अ.वा.3.5.77 पृ.117 अंत, 118 आदि)

15. कर्म-बन्धनी आत्मा बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी। ....वह याद के सब्जेक्ट में सदा कमज़ोर होगी। नॉलेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सिबुल होगी; लेकिन इसेन्सफुल

नहीं होगी। ..... सेवा की वृद्धि कर लेंगे; लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। ..... स्पीकर बन सकती है; लेकिन स्पीड में नहीं चल सकती। (अ.वा.8.4.82 पृ.357 मध्य)

16. जैसे श्रीकृष्ण के लिए दिखाते हैं कि उसने साँप को भी जीता, उसके सिर पर पाँव रखकर नाचा। तो यह आपका चित्र है। कितने भी ज़हरीले साँप हों; लेकिन आप उन पर भी विजय प्राप्त कर नाच करने वाले हो। (अ.वा.25.11.85 पृ.58 आदि)

17. अधीन न होना अर्थात् शेर व शेरनी की चाल चलना। (अ.वा.23.4.77 पृ.95 अंत)

अधरकुमारों से

1. सभी अपने जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सेवा करने वाले हो ना! सबसे बड़े-से-बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है- आप सबकी जीवन का परिवर्तन। ..... याद रखो, स्व-परिवर्तन से औरों का परिवर्तन करना है। यह सेवा सहज भी है और श्रेष्ठ भी है। मुख का भी भाषण और जीवन का भी भाषण; इसको कहते हैं- सेवाधारी। .....क्या थे और क्या बन गए! यह सदा स्मृति में रखते हो? इस स्मृति में रहने से कभी भी पुराने संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। साथ-2 भविष्य में भी क्या बनने वाले हैं, यह भी याद रखो; तो वर्तमान और भविष्य श्रेष्ठ होने के कारण खुशी रहेगी और खुशी में रहने से सदा आगे बढ़ते रहेंगे। ..... सदा अपने इस बेहद के परिवार को देख खुश होते रहो।..... जो ऐसे परिवार के बनते हैं, वह भविष्य में भी एक/दो के समीप आते हैं। (अ.वा.27.11.85 पृ.65 अंत, 66)

2. आधा कल्प आप दर्शन करने जाते रहे, अभी बाप परमधाम से आते हैं आपके दर्शन के लिए। देखने को ही दर्शन कहते हैं।..... वह दर्शन नहीं, यह दर्शन अर्थात् मिलना।..... अधर कुमार अर्थात् सदा पवित्र प्रवृत्ति में रहने वाले। बेहद की प्रवृत्ति में सदा सेवाधारी, हद की प्रवृत्ति में न्यारे। अधर कुमारों का ग्रुप है- कमल-पुष्पों का गुलदस्ता। प्रवृत्ति में रहते विघ्न-विनाशक की स्टेज पर रहते हो ना?..... जितना समय विघ्नों के वश हो उतना समय लाख गुणा घाटे में जाता है। जैसे एक घंटा सफल करते हो तो लाख गुणा जमा होता, ऐसे एक घण्टा वेस्ट जाता है तो लाख गुणा घाटा होता है। (अ.वा.30.11.79 पृ.69 आदि)

3. न्यारे होकर फिर प्रवृत्ति के कार्य में आओ तो सदा माया प्रूफ अर्थात् न्यारे रहेंगे।..... मेरेपन से माया का जन्म होता है। .....ज्ञान की गहराई में भी अनेक अनुभव रूपी रत्नों को प्राप्त करते जा रहे हो ना? जितना सागर के तले में जाते हैं उतना क्या मिलता है? रत्न। ऐसे ही जितना ज्ञान की गहराई में जाएँगे उतना अनुभव के रत्न मिलेंगे और ऐसे अनुभवीमूर्त हो जाएँगे, जो आपके अनुभव को देख और भी अनुभवी बन जाएँगे। (अ.वा.30.11.79 पृ.69 अंत, 70 आदि, मध्य)

4. अधरकुमारों को दो विशेष बातों को ध्यान में रखना पड़ेगा। शोकेस में चीज़ रखी जाती है, उसमें क्या विशेषता होती है? (एट्रैक्टिव) एक तो अपने को एट्रैक्टिव बनाना पड़ेगा और दूसरा- एक्टिव। यह दोनों विशेषताएँ ख़ास अधरकुमारों को अपने में भरनी हैं। यह दोनों गुण आ जावेंगे तो फिर और कुछ रहेगा नहीं। (अ.वा.17.11.69 पृ.142 आदि)

5. सदा यह नशा रहता है कि हम श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ आत्माएँ हैं; क्योंकि बाप के साथ पार्ट बजाने वाली हैं। सारे चक्र के अन्दर इस समय बाप के साथ पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। .....बाप का कितना प्यारा बना हूँ, उसका हिसाब न्यारेपन से लगा सकते हो। ..... जो सदा बाप के प्यारे हैं, उसकी निशानी है- स्वतः याद। प्यारी चीज़ स्वतः सदा याद आती है ना! ..... भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु को प्रिय समझने लगते हो। अगर सदा बाप को प्रिय समझो तो भूल नहीं सकते। ..... अधरकुमार तो अनुभवी कुमार हैं, सब अनुभव कर चुके। अनुभवी कभी भी धोखा नहीं खाते। ..... एक-2 अधरकुमार अपने अनुभवों द्वारा अनेकों का कल्याण कर सकते हैं। (अ.वा.1.11.81 पृ.103, 104 आदि)

6. सदा प्रवृत्ति में रहते अलौकिक वृत्ति में रहते हो? गृहस्थी जीवन से परे रहने वाले। सदा ट्रस्टी रूप में रहने वाले।..... ट्रस्टीपन की निशानी है- सदा न्यारा और बाप का प्यारा।..... ट्रस्टी बनने से सब बंधन सहज ही समाप्त हो जाते हैं। बन्धनमुक्त हैं तो सदा सुखी हैं। उनके पास दुःख की लहर भी नहीं आ सकती। अगर संकल्प में भी आता है- मेरा घर, मेरा परिवार, मेरा यह काम है, तो यह स्मृति भी माया का आह्वान करती है। तो मेरे को तेरा बना दो। जहाँ तेरा है वहाँ दुःख खत्म। मेरा कहना और मूँझना; तेरा कहना और मौज में रहना। ..... सदा एक बाप, दूसरा न कोई- इसी लगन में मग्न रहो। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न नहीं रह सकता। (अ.वा.12.12.84 पृ.65 मध्य, 66 आदि)

अखबार, मैगजीन, लिट्रेचर

1. तुमको यह मैसेज तो (सारी) दुनियाँ को देना है। अख़बार वाले भी आपे ही सर्विस करेंगे। अभी आनाकानी करते हैं, समय पर आपे ही डालेंगे। जिससे सभी को पैगाम मिल जावेगा। (मु.ता.13.2.69 पृ.3 अंत)

2. तुम्हारा अख़बारों द्वारा भी बहुत काम होगा। एक दिन तुम्हारे यह चित्र भी अख़बार में पड़ेंगे। दो पेज इकट्ठे में तुम्हारे चित्र अच्छे पड़ सकते हैं। ..... आगे चलकर फ्री भी छापेंगे। ..... यह सारे चित्र, तुम्हारे सारे (आठों), दुनियाँ में जाने वाले हैं। (मु.ता.16.11.73 पृ.4 आदि)

3. कई बच्चे तो अख़बार ऐसे पढ़ते हैं जैसे बुद्धू लोग पढ़ते हैं, जैसे व्यवहारी मनुष्य पढ़ते हैं। मतलब नहीं निकालते कि अख़बार पढ़ा, जो पढ़ा, फिर उस बातों का जवाब दिया। (मु.ता.11.10.72 पृ.3 आदि)

4. दिन-प्रतिदिन प्र+दर्शनी(य) की धूम मचती जावेगी। आखरीन विलायत के अख़बार में भी पड़ेगा। शुरू-2 में (ॐ मंडली में) जब भट्ठी बनी, तो सभी विलायत तक अख़बार में (ग्लानि-भरा) नाम गया था। अब फिर यह (महिमा का) भी अख़बार में पड़ेगा कि यह तो खुद (सुप्रीम) गॉडफादर आय सभी को लिबरेट कर रहे हैं। (मु.ता.25.11.71 पृ.2 मध्य)

5. लिट्रेचर से भी कोई मुश्किल समझ सकते हैं। तुम लॉ+केट से भी समझा सकते हो। (मु.ता.7.6.78 पृ.3 आदि)

6. सिर्फ कोई को लिटरेचर देने से समझ न सकेंगे, समझाने वाला टीचर ज़रूर चाहिए। टीचर सेकेण्ड में समझावेगा- यह तुम्हारा (साकार+निराकार) बाबा है, यह (सिर्फ साकारी) दादा है, यह बेहद का (डबल) बाप स्वर्ग का रचयिता है। सिर्फ कोई को लिटरेचर दिया तो देखकर फेंक देंगे, कुछ भी समझेंगे नहीं। (मु.ता.28.8.73 पृ.3 आदि)

7. सिर्फ लिटरेचर से कोई का समझना मुश्किल है। दिन-प्रतिदिन तुम्हारा (सबके अंदर) ठक्का होता जावेगा। (मु.ता.6.5.69 पृ.4 अंत)

8. दुनियाँ वाले इन बातों से क्या जानें! उन्हों को अगर तुम लिटरेचर दिया तो पढ़कर फेंक देते हैं और चने दियो तो खा लेवेंगे। यह बन्दर क्या जाने ज्ञान-रत्नों को! (मु.ता.6.10.72 पृ.3 मध्य)

9. तुमको तो (सम्पूर्ण बनने पर) कोई पुस्तक आदि नहीं पढ़ना है, न बनाना है। यह मुरली छपाते भी हैं थोड़ा रिफ्रेश होने लिए। बाकी कोई भी किताब आदि नहीं रहेगी। (मु.ता.9.6.75 पृ.1 अंत)

10. सिर्फ़ कोई को लिटरेचर दिया तो देखकर फेंक देंगे, कुछ भी समझेंगे नहीं। इतना ज़रूर समझाना है- (सुप्रीम) बाप आया हुआ है। यह ढिंढोरा पिटवाना तुम्हारा फर्ज़ है। (मु.ता.2.7.73 पृ.3 आदि)

11. आखरीन तुम्हारी यह समझानी और चित्र आदि अख़बारों में भी पड़ेंगे। सीढ़ी भी अख़बार में पड़ेगी। (मु.ता.9.10.76 पृ.1 मध्यांत)

12. यह (अविनाशी) बाप तुम बच्चों को सत्+मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो, फिर भी (सुप्रीम) टीचर के सिवाय तुमको कोई समझा न सके। (मु.ता.19.1.75 पृ.2 मध्यांत)

अफ्रीका

1. सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। ..... तीव्र पुरुषार्थी जो होगा, वह जो प्लैन बनाएगा वही प्रैक्टिकल होगा। ..... पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियाँ तो आपके तरफ बहुत आती हैं; लेकिन जो सदा बाप के साथ है, उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है, पहाड़ भी राई बन जाता है। ..... ऑलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति, चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन जो (अंदर से) बाप के बने हैं, उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- (शंकर पार्टी में जाएँगे तो) कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खाएँगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं, उनका भी पेट भर जाता है, तो आप तो (विश्व के) अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते! इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ़ छोटा-सा पेपर होगा कि कहाँ तक निश्चय है? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घंटे का पेपर होता है। अगर बापदादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल, एक भरोसा है, तो बिल्कुल ऐसे पार हो जाएँगे जैसे कुछ था ही नहीं। ..... तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता; लेकिन है कुछ नहीं। ..... (अफ्रीका से बड़ी) मेहनत करके आए हो, परिस्थिति पार करके आए हो, इसलिए बापदादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है, जैसे (शंकर चाप जहाज का) स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहाँ, कोई कहाँ जाकर पड़ते हैं, तो यह भी द्वापर (की शूटिंग..) में सब बिछुड़ गए- कोई विदेश में, कोई देश में। अभी आप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिक्र रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आएगा। महावीर-(महावीरनी) हो ना! कहानी सुनी है ना- भट्ठी के बीच पूँगरे बच गए। क्या भी हो; लेकिन आप सेफ हो, सिर्फ़ माया प्रूफ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। ..... (विजयमाला का) एक-2 रत्न वैल्युएबल है; क्योंकि अगर वैल्युएबल रत्न नहीं होते तो कोटों में कोई (सन 76 प्रत्यक्षता वर्ष में) आप ही कैसे आते? जिसको (परम+आत्मा को) दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है, उसने मुझे अपना लिया। एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है, आप तो बच्चे बन गए। तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए! ..... जैसे बाप जैसा कोई नहीं, वैसे (लक्ष्मी रूप) आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं।..... (अंदर से) बाप को जान लिया, पा लिया, इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना- बच्चे, उठो! देश कोई भी हो; लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो। (अ.वा.14.2.78 पृ.47 आदि, 48 आदि, 49 आदि)

अंग से अंग न लगे

1. तुमको बैठना भी ऐसे चाहिए जो अंग अंग से न लगे।.....तुम उन्हों (के नेत्रों) का संग भी न करो। मेहतरों से मनुष्य किनारा करते हैं न! बाप ने समझाया है- यह सब (मन वाले) मनुष्य मेहतर-ही-मेहतर हैं। (मु.ता.17.3.74 पृ.2 मध्यादि)

2. यहाँ पर अलग-2 होकर बैठना है। अंग-अंग से ना मिलना चाहिए; क्योंकि हर एक की अवस्था में, योग में रात-दिन का फर्क है। (मु.ता.12.10.74 पृ.1 आदि)

आठ आने, दो रोटी

1. हिम्मत है, अपना शरीर निर्वाह आपे ही कर सकते हो, तो फिर झंझट में क्यों फँसें। पेट कोई बहुत थोड़े ही खाता है। बहुत-2 करके 30 रुपया पेट के लिए बिल्कुल काफ़ी है। एक रुपया रोज़, बल्कि होना तो आठ आना चाहिए, सिर्फ दूध-चाय की आदत छोड़ दें ।... एक सब्ज़ी सस्ती-में-सस्ती बनाओ। दो/तीन वेले(टाइम) के लिए एक ही सब्जी बना दो। रोटी भी बना दो।... बस, रोटी खाई, और कोई फुर्ना नहीं।... इसका मतलब यह नहीं कि धंधा आदि नहीं करना है; नहीं तो फिर आठ आना कहाँ से लावेंगे? भीख नहीं माँगनी है। यह तो घर है। शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। अगर सर्विस न करते हैं, मुफ्त में खाते हैं तो वह गोया भीख पर चलना हो गया। (मु.ता.14.2.74 पृ.2 मध्यादि)

2. देखेंगे, यह बहुत फँस पड़े हैं धंधे आदि में, तो राय देंगे- क्यों इतना माथा मारते हो? कितना समय तुम जिएँगे? पेट तो एक/दो रोटी माँगता है। उनसे ग़रीब भी चलते तो साहूकार भी चलते हैं। साहूकार लोग अच्छी रीति खाते हैं, फिर रोगी भी बनते हैं। भील लोग देखो कितने मज़बूत रहते हैं और खाते क्या हैं? कितना काम करते हैं! अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं। पेट के लिए बहुत-में-बहुत आठ आने में भोजन मिल सकता है। तो इस समय और सब आसक्तियाँ छोड़ देनी चाहिए। दो रोटी मिली, पेट भरा। बस, बाप को याद करना है। (मु.ता.11.7.78 पृ.2 अंत)

3. पेट तो एक पाव रोटी खाता है। जास्ती लोभ में नहीं रहना है। जास्ती धन होगा तो वह खत्म हो ही जावेगा। (मु.ता.30.6.71 पृ.1 आदि)

ऑस्+ट्रे+लिया

1. (रुद्रमाला की) पाण्डव-सेना और (विजयमाला की) शक्ति-सेना को देख बापदादा भी हर्षित होता है। हरेक ने मायाजीत बनने का दृढ़ संकल्प किया है ना! सारा ग्रुप चैलेन्ज करने वाला है। ..... हिम्मत बहुत अच्छी रखी है। अभी हिम्मत के साथ जो भी कदम उठाते हो, वह योगयुक्त हो। पहले ईश्वरीय मर्यादा प्रमाण है या नहीं है- वह वेरीफाय कराकर अमल में

लाते जाओ, फिर एक-2 एग्ज़ाम्पल बन जाएँगे। ..... अकेला नहीं समझो। एक-2 बहुत कमाल कर सकते हैं। जैसे दुनियाँ वाले बताते हैं कि एक-एक सितारे में दुनियाँ है, ... अर्थात् अपनी-2 (नं.वार धर्मों की) राजधानी है। तो एक-एक को अपनी-2 (आगे राजाओं की) राजधानी स्थापन करनी है। कुमारियों को देख बापदादा हर्षित होते हैं। कुमारियाँ बहुत सर्विस में आगे जा सकती हैं। ..... यह (विजयमाला की) कुमारियों का संगठन बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। (अ.वा.14.2.78 पृ.52 अंत, 53 आदि)

2. ऑस्+ट्रे+लिया निवासियों से बापदादा का विशेष स्नेह है, क्यों? क्योंकि सदा एक अनेकों को लाने की हिम्मत और उमंग में रहते हैं। .....एक अनेकों के निमित्त बन जाता है।..... ऑस्ट्रेलिया वाले माया (रावण) को भी थोड़ा ज़्यादा प्रिय हैं।..... कितने अच्छे-2, थोड़े समय के लिए ही सही; लेकिन (बाप की जगह) माया के बन तो गए हैं ना! आप सब तो कच्चे नहीं हो ना? .....किसी भी बात को पूरा न समझने के कारण क्यों और क्या में आ जाते हैं, तो माया के आने का दरवाज़ा खुल जाता है।..... फिर भी संख्या में, हिम्मत में, निश्चय में अच्छा नं॰ है। (अ.वा.3.3.84 पृ.191 आदि)

3. ऑस्ट्रेलिया में शक्तियाँ ज्यादा हैं या पाण्डव? (दोनों समान हैं) शक्तियाँ थोड़ी रेस्ट कर रही हैं, फिर ज़्यादा उड़ेंगी ना, इसलिए रेस्ट कर रही हैं। बाकी जाना तो नं॰ वन है। ऐसे कई करते हैं, बीच में थोड़ी रेस्ट ले करके फिर फास्ट जाते हैं और मन्ज़िल पर पहुँच जाते हैं। (अ.वा.14.1.82 पृ.239 अंत)

4. ऑस्ट्रेलिया वालों का जो दूसरे-(दूसरे) धर्म में पार्ट बजाने का निमित्त मात्र (लौकिक 63 जन्मों का) समय था, वह समय अभी समाप्त हो गया। ..... इसलिए यह भी विशेषता है कि जो भी आते हैं, मैजॉरिटी वह अपने लगते हैं, दूसरे धर्म के नहीं लगते हैं। ऑस्ट्रेलियन अथवा विदेशी होते हुए भी चात्रक आत्माएँ लगती हैं। .....गलती से दूसरी (धर्म की विदेशी) डाली पर चले गए हैं, सेवा के लिए, यह भी एक थोड़े समय का पार्ट मिला हुआ है; नहीं तो विदेश (के धर्मों) की सेवा कैसे होती? ..... ऑस्ट्रेलिया निवासी के बजाय अपने को वहाँ रहते भी, (मधुसूदन के) मधुबन-निवासी समझ कर रहते हो ना! जन्म का घर मधुबन है। साकार घर मधुबन और निराकारी घर परमधाम। ऑस्ट्रेलिया आपका दफ्तर है। ..... घर वालों से स्नेह होता है। दफ्तर वालों से काम चलाना होता है। तो ऐसे चलो। ..... विनाश में ऑस्ट्रेलिया सारा एक ही टापू बन जाएगा- कुछ पानी में आ जाएगा, कुछ ऊपर रह जाएगा। आप लोग सेफ़ रहेंगे। ..... जब तुम सभी सेफ़ स्थान पर पहुँच जाएँगे, फिर विनाश होगा। जैसे गायन है- भट्ठी में बिल्ली के पूँगरे सेफ़ रहे। तो जो बच्चे बाप की याद में रहने वाले हैं, वह विनाश में विनाश नहीं होंगे; लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोड़ेंगे। ..... जो बहुत समय के स्नेही और

सहयोगी रहते हैं, उनको अन्त में मदद ज़रूर मिलती है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे स्थूल वस्त्र उतार रहे हैं। ऐसे ही शरीर छोड़ देंगे। सारा दिन में चलते-2 बीच-2 में अशरीरी बनने का अभ्यास ज़रूर करो। जैसे ट्रैफिक कण्ट्रोल का रिकॉर्ड बजता है, वैसे वहाँ कार्य में रहते भी बीच-2 में अपना प्रोग्राम आपे ही सेट करो तो लिंक जुटा रहेगा। ..... आप लोगों में यह भी एक विशेषता है कि जब चाहो नौकरी छोड़ सकते हो, जब चाहो कर सकते हो। निर्बंधन हो। सिर्फ मन और संस्कारों का बंधन न हो। वैसे देह और देह के धर्मों से फ्री हो, आधे बंधनों से पहले ही फ्री हो, बाकी थोड़े बन्धनों को याद और सेवा से ख़त्म कर दो। (अ.वा.4.1.80 पृ.178 मध्य,179 आदि, 180 मध्य)

5. ऑस्ट्रेलिया वालों ने धैर्यता का गुण बहुत अच्छा दिखाया है।.....यह सारा ही शुभचिंतक ग्रुप है ना! परचिन्तन को तलाक देने वाले सदा शुभचिंतक। .....तो ऑस्ट्रेलिया में सदा पावरफुल वायब्रेशन, पावरफुल सर्विस और सदा फरिश्तों की सभा दिखाई देगी। शक्तियों और पाण्डवों का संगठन भी अच्छा है।.....ऑस्ट्रेलिया निवासियों ने कितने सेवाकेन्द्र खोले हैं? ..... अपनी सेवा समझ कार्य करो। ऐसा नहीं- यह जर्मनी की है, यह ऑस्ट्रेलिया की है। नहीं! बाबा की सेवा वा विश्व की सेवा हमारी है। इसको कहा जाता है- बेहद की वृत्ति। .....अभी ऑस्ट्रेलिया से कोई ऐसा वी.आई.पी. नहीं लाए हो, ऐसा वी.आई.पी. लाओ, जो भारत की सरकार को उनका स्वागत करना पड़े। ..... अभी छोटी-2 तूतारियों तक पहुँचे हो, बिगुल बजाना पड़ेगा। फिर आप सबको बापदादा बहुत अच्छी गिफ्ट देंगे। जब ऐसा आवाज़ निकलेगा तब जय-जयकार की शहनाइयाँ बजेंगी; नहीं तो भारत के कुम्भकरण ऐसे सहज जागने वाले नहीं हैं। ..... ऑस्ट्रेलिया निवासी जितने ही शुरू में स्वतन्त्र संस्कार के रहे उतना ही अभी मर्यादा में भी अच्छे रह रहे हैं। अभी बाप के मीठे बन्धन में आ गए हैं। (अ.वा.19.3.81 पृ.71 आदि, 72 आदि)

6. हर कदम में पद्मों की कमाई जमा हो रही है? ..... सदा एक/दो से सन्तुष्ट रहते हो? सब सदा एकमत और एकरस हैं, यह भी एक बहुत अच्छा एग्ज़ाम्पल है। एक ने कहा, दूसरे ने माना, यह है सच्चे-2 स्नेह का रेसपांड। ऐसे एग्ज़ाम्पल को देख और भी सम्पर्क में आने के लिए हिम्मत रखते हैं। संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। एक बाप, एक मत, यही संस्कार सतयुग में एक राज्य की स्थापना करते हैं। .....सदा अपने को निर्बन्धन आत्मा महसूस करते हो?..... नॉलेजफुल बन्धन में कैसे रह सकते हैं? ..... जब ब्रह्माकुमार-कुमारी बन गए तो बन्धन कैसे हो सकता? ब्रह्मा बाप निर्बन्धन है तो बच्चे बन्धन में कैसे रह सकते?.....बच्चों के त्याग की हिम्मत देख, तपस्या का उमंग देख बापदादा खुश होते हैं। बाप की महिमा तो भक्त करते हैं; लेकिन बच्चों की महिमा बाप करते हैं।.....तो जिस समय बाप माला सिमरण करते, उस समय आप सो तो नहीं जाते हो? शक्तियाँ तो सोने वालों को जगाने वाली हैं, खुद कैसे सोएँगी! रिज़ल्ट

अच्छी है। .....ऑस्ट्रेलिया वालों को अच्छा सर्टिफ़िकेट मिल रहा है। (अ.वा.19.3.81 पृ.74 मध्य, 75, 76)

7. ऑस्ट्रेलिया वालों के ऊपर तो बापदादा को सदा ही नाज़ है, क्यों? क्योंकि ऑस्ट्रेलिया निवासियों ने बाप को पहचान अपना बनाने में नं. वन रिकॉर्ड दिखाया है। संख्या में देखो, वृद्धि में देखो, क्वालिटी में देखो, सबमें आगे हैं और अच्छी तरह से सम्भाल रहे हैं; इसलिए ऑस्ट्रेलिया कम नहीं है। लण्डन में फिर भी भारतवासी आत्माएँ ज़्यादा हैं; लेकिन ऑस्ट्रेलिया में सब पर्दे के अन्दर छिपे हुए बाप को पहचानने में नं. वन हैं। (अ.वा.14.1.82 पृ.240 आदि)

8. सभी महावीर हो ना! महावीर ग्रुप अर्थात् सदा के लिए माया को विदाई देने वाले। ..... ऑस्ट्रेलिया को सदा बापदादा बहादुरों का स्थान कहते हैं। ..... जब बाप साथ है तो बाप के साथ होते माया आ नहीं सकती। .....सभी अनुभवी आत्माएँ दिखाई दे रही हैं। सेवाधारी भी हैं। जैसे सेवा की विशेषता में लण्डन का विशेष पार्ट है, वैसे ऑस्ट्रेलिया का भी विशेष पार्ट है। (अ.वा.25.12.83 पृ.74 अंत, 75 आदि)

9. बापदादा को ऑस्ट्रेलिया निवासी अति प्रिय हैं, क्यों? ... ऑस्ट्रेलिया की विशेषता है जो स्वयं में हिम्मत रख चारों ओर सेवाधारी बन सेवा-स्थान खोलने की विधि अच्छी है।..... ऑस्ट्रेलिया को इतनी (काशी माँ जैसी लं.) पालना का चान्स नहीं मिलता है; लेकिन फिर भी अपने पाँव पर खड़े होकर सेवा में वृद्धि और सफलता अच्छी कर रहे हैं। सभी याद और सेवा के शौक में अच्छे रहते हैं। ..... मैज़ॉरिटी निर्विघ्न हैं। कुछ अच्छे-2 बच्चे चले भी गए हैं; लेकिन फिर भी बाप को अभी भी याद करते रहते हैं; इसलिए उन्हों के प्रति भी सदा शुभ भावना रख उन्हों को भी फिर से बाप के समीप ज़रूर लाना है।..... बापदादा को डबल विदेशी बच्चों पर नाज़ है। आपको भी बाप पर नाज़ है ना! आपको भी यह नशा है ना कि सारे विश्व में से हमने बाप को (पहले-2) पहचाना। .....अभी बापदादा ने सभी का फोटो निकाल लिया है। फिर फोटो दिखाएँगे कि देखो, आप आए थे। ..... ऑस्ट्रेलिया की विशेषता है जो अधिकतर पाण्डव सेना ज़िम्मेवार है; नहीं तो मैजॉरिटी शक्तियाँ होती हैं। यहाँ पाण्डवों ने कमाल की है। पाण्डव अर्थात् पाण्डवपति के सदा

एडवांस पार्टी

1. एडवांस पार्टी तो साकार शरीर परिवर्तन कर सेवा कर रही है; लेकिन कोई-2 का पार्ट अन्त तक साकारी और आकारी रूप द्वारा भी चलता है। आपका क्या पार्ट है? किसका एडवांस पार्टी का पार्ट है, किसका अंतःवाहक शरीर द्वारा सेवा का पार्ट है। दोनों पार्ट का अपना-2 महत्व है। फर्स्ट, सेकण्ड की बात नहीं, वैराइटी पार्ट का महत्व है। एडवांस पार्टी का भी कार्य कोई कम नहीं है।

सुनाया ना- वह ज़ोर-शोर से अपने प्लैन बना रहे हैं। वहाँ भी नामी-ग्रामी हैं। (अ.वा.25.1.80 पृ.245 अंत, 246 आदि) (यहाँ भी नामीग्रामी थे।)

2. बहुत बच्चे एडवांस में भी जाने वाले हैं। उनका कोई अफसोस? नहीं करना है, जाकर रिसीव करेंगे। रिसीव करने के लिए भी टाइम चाहिए ना! माँ-बाप तो पहले जाने चाहिए। (मु.ता.27.2.73 पृ.4 मध्यादि)

3. एडवांस का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामी-ग्रामी आत्माएँ हैं, उनका संगठन बहुत मज़बूत है। श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म दिलाने के लिए धरणी तैयार करने का वण्डरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्र गति से चल रहा है। (अ.वा.18.1.80 पृ.222 अंत)

4. ऐसा कॉलेज कब देखा, जहाँ इन एडवांस बतावें कि तुम यह बनेंगे। (मु.ता.23.6.69 पृ.3 आदि)

5. एडवांस में भी अच्छे-2 महारथी जाते हैं, घोड़े सवार भी जाते हैं। (मु.ता.13.1.69 पृ.4 आदि)

6. एडवांस पार्टी का क्या कार्य चल रहा है? आप लोगों के लिए आज सारी (कुरुक्षेत्र की) फ़ील्ड तैयार कर रहे हैं। उनके परिवार में जाओ, न जाओ; लेकिन जो (राजधानी) स्थापना का कार्य होना है, उसके लिए वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पावर्स लेंगे, जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे, दिन-प्रतिदिन न्यू-ब्लड का रिगार्ड ज़्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे, उतना छोटों की बुद्धि काम करेगी, जो कि बड़ों की नहीं। बड़ी आयु की तुलना में फिर भी छोटेपन में सतोप्रधानता रहती है। कुछ-न-कुछ प्यूरिटी की पावर होने के कारण उनकी बुद्धि जो काम करेगी, वह बड़ों की नहीं करेगी। यह चेन्ज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं, वह समझते हैं कि हम तो पुराने ज़माने के हैं, यह आजकल के हैं। उनको रिगार्ड न देंगे और उन्हें बड़ा समझ नहीं चलावेंगे तो काम नहीं चलेगा। पहले बच्चों को रोब से चलाते थे। अभी ऐसे नहीं। ..... छोटे ही कमाल कर दिखावेंगे। एडवांस पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है; लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवांस में जाने के लिए रुके हुए हैं। उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है। (अ.वा.2.8.73 पृ.151 मध्य, 152 आदि)

7. एडवांस पार्टी में किसका पार्ट है, वह दूसरी बात है, बाकी यह सीन देखना तो बहुत आवश्यक है। जिसने अंत किया उसने सब-कुछ किया। ..... तो जाने का संकल्प नहीं करो।..... अकेले जाएँगे तो भी एडवांस पार्टी में सेवा करनी पड़ेगी; इसलिए जाना है, यह नहीं सोचो; सबको साथ ले जाना है, यह सोचो। (अ.वा.26.11.84 पृ.32 अंत)

8. वह (एडवांस पार्टी) भी अपना (8 का) संगठन मज़बूत बना रहे हैं। उन्हों का कार्य भी आप लोगों के साथ-2 प्रत्यक्ष होता जाएगा। अभी तो सम्बन्ध और देश के समीप हैं; इसलिए छोटे-2 ग्रुप उन्हों में भी कारणे-अकारणे आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं। ..... (प्रैक्टिकल संगठन बनाने लिए) कर्मणा वाले भी गए हैं, राज्य-स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गए हैं। साथ-2 हिम्मत-हुल्लास बढ़ाने वाले (इंस्पीरेटिंग पार्टी) भी गए हैं। ..... ग्रुप तो अच्छा बन रहा है; लेकिन (सूर्य और चंद्रवंशी) दोनों ग्रुप साथ-2 प्रत्यक्ष होंगे। ..... वह भी पार्टी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लैन बना रहे हो ना, तो वह भी यूथ हैं अभी। ..... अन्दर तो बहुत जोश है; लेकिन बाहर से (इम्प्योरिटी कारण) कुछ कर नहीं सकते हैं। यह भी एक स्थापना के राज़ में (प्योरिटी के) सहयोग का पार्ट है। (आपस में) मन से मिले हुए नहीं हैं, मजबूरी से मिले हैं; लेकिन मजबूरी का मिलन भी रहस्य है। अभी स्थापना की गुह्य रीति-रस्म (की परम्पराओं के) स्पष्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है..... और वह भी क्वेश्चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं! लेकिन दोनों ही ड्रामानुसार बढ़ रहे हैं। (अ.वा.18.1.85 पृ.133 मध्य, 134 आदि)

9. एडवांस पार्टी पूछ रही थी कि अभी हम (सूर्यवंशी) तो एडवांस का कार्य कर रहे हैं; लेकिन हमारे (चंद्रवंशी) साथी हमारे कार्य में विशेष क्या सहयोग दे रहे हैं? वह भी (रूद्र)माला बना रहे हैं। कौन-सी माला बना रहे हैं? कहाँ-2 (धर्मखण्डों में) किस-2 (ग्रुप) का नई दुनियाँ के आरम्भ करने का जन्म होगा, वह निश्चित हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में विशेष सहयोग (पवित्रता की) सूक्ष्म शक्तिशाली मंसा का चाहिए। जो शक्तिशाली (राजधानी) स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्माएँ हैं, वह स्वयं भल पावन हैं; लेकिन वायुमण्डल (नीची कुरी के) व्यक्तियों का, (अपरा) प्रकृति का तमोगुणी है। अति तमोगुणी (विधर्मियों) के बीच अल्प सतोगुणी (चंद्रवंशी बीजों की) आत्माएँ कमल-पुष्प समान हैं। ..... एडवांस पार्टी वाले कोई स्वयं श्रेष्ठ (विजयमाला की) आत्माओं का आह्वान करने के लिए① तैयार हुए हैं और② हो रहे हैं, कोई③ तैयार कराने में लगे हुए हैं। उन्हों की सेवा का साधन है- मित्रता और समीप के सम्बन्ध। (अ.वा.18.1.86 पृ.164 मध्य,165 अंत,166 आदि)

(B.K.) ब्राह्मण भी भ्रष्टाचारी

1. तुम्हारे में भी कोई तो बिल्कुल ही (नं. वार) तुच्छ बुद्धि रह जाते हैं। तुम जानते हो, कितने कपूत बच्चे हैं। ब्रह्माकुमार कहलाने वाले भी कपूत हैं। उनसे तो साधु लोग अच्छे हैं, पवित्र रहते हैं, समझू हैं। यहाँ तो ऐसे-2 हैं जो पतित दुनियाँ वालों से भी बदतर हैं। (मु.ता.1.10.73 पृ.3 अंत)

2. कन्याएँ सर्विस पर जाती हैं तो कीचक (ब्रह्माकुमारी के) पिछाड़ी में पड़ते हैं। फिर लिखा है- भीमसेन ने कीचकों को (सुप्रीम कोर्ट द्वारा) पकड़ा है। कीचक माना एकदम डर्टी ब्रट्स, जो पिछाड़ी पड़ते हैं। कीचक आदि की अभी (संगम) की बात है। इस समय सभी द्रौपदियाँ, कीचक, दुर्योधन हैं। आसुरी सम्प्रदाय हैं। इसकी बहुत सम्भाल करते रहना है। अगर बाप के पास आए, फिर कीचक बने तो (जगत) पिता नहीं, धर्मराज बन क्या हाल करूँगा! (मु.ता.7.5.73 पृ.2 मध्यांत)

3. (B.K. भी) विकार में गिर पड़ती हैं। आगे चलकर तुम बहुतों की सुनते रहेंगे। कोई तो फिर अपने पति के साथ ही ऐसे मिल जाती हैं जो आगे से भी जास्ती। वण्डर खावेंगे! यह तो हमको (B.K. बन) ज्ञान देती थी। ..... बाबा ने कहा है- बड़े-2, अच्छे-2 (रमेश-जगदीश-निर्वैर जैसे) महारथियों को माया बहुत ज़ोर से फथकावेगी। फथका-2 कर जीत पहनेगी। (मु.ता.16.12.74 पृ.3 अंत)

4. ऐसे नहीं, जो (कुमारिका-विश्वकिशोर जैसे) शुरू से आए हैं वह पूरे पावन होंगे। (मु.ता.28.12.74 पृ.3 अंत)

5. जो ज्ञानामृत पी फिर जाकर विख पीते हैं, उनको भस्मासुर कहा जाता। अपन को भस्मासुर करने वाले बहुत हैं। (संगम में भी) यह है भस्मासुरों की दुनियाँ। (मु.ता.26.4.72 पृ.3 अंत)

भक्त

1. सारी दुनियाँ के मनुष्यमात्र भक्त हैं। ज्ञान सिखलाने वाला एक ही परमपिता+परमात्मा=शिव है। ..... भक्ति की चमक कितनी है, कितनी धमाधम है। तुम्हारे (जगत्पिता-जगदम्बा के) पास तो कुछ भी नहीं है। और (दूसरे) कहाँ भी सत्संग आदि में जावेंगे, (बाहर से) आवाज़ ज़रूर होगा। गीता(गीत) गावेंगे, भक्ति करेंगे। यहाँ तो बाबा यह (गीत आदि का) रिकॉर्ड भी पसन्द नहीं करते हैं। आगे (एडवांस में) चल शायद यह भी बन्द हो जाए। (मु.ता.24.8.76 पृ.1 मध्यांत, 2 अंत)

2. अगर अंशमात्र भी किसी (आसुरी) स्वभाव-संस्कार के अधीन हैं, नाम-मान-शान के मँगता (माँगने वाले) हैं, 'क्या' और 'कैसे' के क्वेश्चन में चिल्लाने वाले, पुकारने वाले, भक्त समान 'अन्दर एक, बाहर दूसरा'- ऐसे धोखा देने के बगुले भक्त (नारद) के संस्कार हैं, तो जहाँ भक्ति का (खड़ताल वाला) अंश है वहाँ ज्ञानी तू आत्मा हो नहीं सकती; क्योंकि भक्ति है रात और ज्ञान है दिन। (अ.वा.12.1.77 पृ.11 अंत, 12 आदि)

3. यह मेले-(मलाखड़ों के दिखावे) प्रदर्शनियाँ सब जगह जावेंगे। तो जो तीखे (ज्ञानबाण वाले) बच्चे हैं, जिनके पास (तीखे-2) प्वॉइण्ट्स हैं, उनकी (राधा की तरह) मदद माँगते हैं। (अंदर-2) उन्हों के नाम जपते रहते हैं। एक तो शिवबाबा को जपेंगे, फिर (दूसरा) ब्रह्मा बाबा को, फिर (पीछे से) कुमारका को, गंगे को, मनोहर को, (जनक को) जपेंगे। भक्तिमार्ग में हाथ से (जैसे) माला फेरते हैं, अभी (B.K.) फिर मुख से नाम जपते हैं। (मु.ता.20.11.76 पृ.2 आदि)

4. बाप के आगे शिकायत करते हो? ऐसा मेरे से क्यों होता! मेरा ही ऐसा (अफ्रीका जाने का) पार्ट क्यों है! मेरे ही संस्कार ऐसे क्यों हैं! मेरे को ही ऐसे (हब्शी) जिज्ञासु क्यों मिले हैं या मेरे को ही ऐसा (अफरीका) देश क्यों मिला है? ऐसी शिकायत करने वाले तो नहीं? शिकायत माना भक्ति का अंश। कैसा भी हो; लेकिन परिवर्तन करना यह (आप जैसे) सेवाधारियों का विशेष कर्तव्य है। ..... (सर्वशक्तिवान को छोड़) अगर दूसरे की कमज़ोरी को देखा तो स्वयं भी कमज़ोर हो जाएँगे। (अ.वा.21.2.85 पृ.185 आदि)

5. भक्त जो होंगे, वह कभी भी स्वयं को अधिकारी अनुभव नहीं करेंगे। उनमें अंत तक भक्तपने के संस्कार रहेंगे और वे सदा माँगते ही रहेंगे- आशीर्वाद दो, शक्ति दो, कृपा करो, बल दो या दृष्टि दो आदि। ऐसे (भक्तों के) माँगने के संस्कार व आधीन होने के संस्कार उनके लास्ट तक दिखाई देंगे। वे सदैव जिज्ञासु रूप में ही रहेंगे। उन्हें बच्चेपन का नशा, मालिकपन का नशा और मास्टर सर्वशक्तिवान का नशा धारण कराते भी वे धारण नहीं कर सकेंगे। वे (भक्त) थोड़े में ही राज़ी रहने वाले होंगे। .....भक्त कभी भी डायरैक्ट बाप के कनेक्शन में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही सन्तुष्ट रहते हैं। (अ.वा.14.7.74 पृ.109 अंत, 110 आदि)

6. भक्त बहुत नाच-तमाशे करते हैं। (सा. से) खुशी भी होती है और फिर रोते भी हैं। भगवान के प्रेम में आँसू आ जाते हैं; परन्तु भगवान को (भग+वान रूप से) जानते नहीं। जिसके प्रेम में आँसू आते हैं उन (दोनों चेतन) को जानना चाहिए ना! (जड़) चित्रों से कुछ मिल नहीं सकता। हाँ, बहुत भक्ति करते हैं तो सा. हो जाता है। (मु.ता.15.2.75 पृ.1 मध्यादि)

7. जब तक (राम) बाप को न जाना है तो भक्ति भी करते रहेंगे। जब (2027 में) निश्चय पक्का हो जावेगा तो फिर भक्ति आपे ही छूट जावेगी। (मु.ता.31.10.78 पृ.2 आदि)

8. भक्तिमार्ग में (ल.-काली-सरस्वती आदि) देवियों का भी बहुत मान है। वास्तव में यह ब्रह्मा भी बड़ी माँ देवी है। (मु.ता.23.3.84 पृ.2 आदि)

9. तुमको भक्ति का अनुभव तो है। जानते हो, अनेकानेक साधु-सन्त आदि भक्तिमार्ग के (कागज़ी) शास्त्र सुनाते हैं। यहाँ तो बिल्कुल ही उनसे अलग है। यहाँ तुम किसके, (निराकार के) सामने बैठे हो? (साकार+निराकार) डबल बाप और माँ। वहाँ (B.K. में) तो ऐसे नहीं है, तुम जानते हो-

बेहद का बाप भी रहता है, मम्मा (जगदम्बा) भी रहती है, छोटी मम्मा (ल.) भी। (मु.ता.24.3.84 पृ.1 आदि)

भट्ठी

1. बहुत लोग समझते भी हैं, फिर भी सात रोज़ देते नहीं हैं। तो समझा जाता है- यह अपने (सूर्यवंशी) घराने का अनन्य नहीं है। (8 या 108 की माला में) अनन्य होगा तो उनको बड़ा अच्छा लगेगा। कई 8/10/15 दिन रह भी जाते हैं। ..... विनाश का समय नज़दीक आवेगा तो सभी को आना ही है। (मु.ता.19.8.72 पृ.2 आदि)

2. बाबा गैरण्टी करते हैं- तुम एक हफ्ता रेग्युलर पढ़ो तो पावन दुनिया में ज़रूर जावेंगे। बाकी मम्मा-बाबा जैसे राज्य-भाग्य चाहिए तो मेहनत करनी पड़े। (मु.ता.12.11.72 पृ.2 मध्य)

3. आगे, (आदि सो अंत) कहते थे- सात रोज़ भट्ठी में रहना पड़े। और कोई की याद न आए, न पत्र आदि लिखना है। रहो भल (साथियों में) कहाँ भी; परंतु सारा दिन भट्ठी में रहना है। ..... कोई की याद आई, चिट्ठी लिखी, खतम। फिर और सात रोज़। धंधा आदि याद आया, फिर सात रोज़ शुरू करो। (मु.ता.26.1.71 पृ.1 अंत, 2 आदि)

4. बाप कहते हैं- कम-से-कम सात/आठ दिन लिए आओ, रिफ्रेश होकर जाओ। गीता पाठ भी 8 रोज़ रखते हैं। 7/8 रोज़ की भट्ठी है। (मु.ता.28.6.71 पृ.4 मध्य)

5. सात रोज़ की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आए। किसको चिट्ठी भी नहीं लिख सकते। यह भट्ठी तुम्हारी शुरू की थी। यहाँ तो सभी को रख नहीं सकते। (मु.ता.24.11.70 पृ.3 मध्य)

6. यह है रूहानी भट्ठी। वह जो कराची में तुम्हारी (भक्तिमार्ग के सा. की) भट्ठी बनी, वह और बात थी। यह योग की भट्ठी और है। यह है योगबल की भट्ठी, जिसमें किचड़ा निकल जाता है। (मु.ता.11.9.77 पृ.2 मध्य)

7. सिर्फ प्रभावित होकर (प्रजा बन) जावेंगे, उससे क्या फायदा? पूरा रंग तब चढ़े जबकि 7 रोज़ एक्यूरेट सुनते रहें। (मु.ता.12.1.72 पृ.3 मध्यांत)

8. 7 दिन की भट्ठी (भक्ति में) भी मशहूर है। 7 रोज़ पूरा बैठ समझो। बाप को और अपने जन्मों को जानो। हम कैसे पतित बने हैं, फिर पावन बनना है। (मु.ता.4.8.72 पृ.2 अंत)

9. कोई को तो 7 रोज़ में बहुत अच्छा रंग चढ़ जाता है, कोई को बिल्कुल नहीं चढ़ता। (मु.ता.30.8.78 पृ.3 अंत)

भोग-ध्यान-दीदार

1. यह भोग आदि तो न ज्ञान है, न योग है। इन बातों से कोई कनेक्शन नहीं है। (मु.ता.18.7.70 पृ.4 अंत)

2. यह भोग आदि भी कोई समय (बाप प्रत्यक्ष होते ही) बन्द हो जावेगा। बापदादा की अवज्ञा का फल बहुत कड़ा है। (सर्वव्यापी की) गालियाँ तो आधा कल्प देते आए हो। अभी (एक व्यापी में) बाप सम्मुख आए हैं, उनको (दोनों को) भी पूरा न पहचाना तो बाक़ी क्या सीखेंगे! इसमें बहुत महीन (आत्मिक) बुद्धि चाहिए। बाप इस (अविनाशी) रथ द्वारा कहते हैं- मुझे याद करो। मैं पतित+पावन हूँ। गायन भी है- तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ। तो ज़रूर यहाँ रथ में होगा ना! ऊपर में कैसे होगा? (मु.ता. 9.1.69 पृ.4 मध्य)

3. यह भोग आदि की भी रसम-रिवाज़ है। बाकी इनमें कुछ है नहीं। इनमें माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। यह न ज्ञान है, न योग है। (मु.ता.13.11.70 पृ.2 अंत)

4. ऐसे कोई मत समझे, भोग लगता है, वह हम खाते हैं तो बुद्धियोग शिवबाबा (से) लग जावेगा। नहीं! यह तो शुद्ध भोजन है; परंतु वह (सन्मुख याद की) मेहनत न की, तो कुछ भी न हुआ। (मु.ता. 26.4.72 पृ.2 आदि)

5. जैसे पिछाड़ी की मुरली में यह भी डायरैक्शन था कि भोग के समय वैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है; क्योंकि यह घूमना-फिरना अब शोभता नहीं। अब तो (M. आबू में) निरन्तर याद की यात्रा और जो शिक्षा मिली है, उसे प्रैक्टिकल लाइफ़ में धारण करने का सबूत देना है। अगर ब्रह्मा बाबा के साथ स्नेह है तो स्नेह की निशानी क्या है? स्नेह यह नहीं कि दो आँसू बहा दिए; परन्तु स्नेह उसको कहा जाता है- जिस चीज़ (रथ) से उसका स्नेह था, उस (प्रजापिता) से आपका हो। (अ.वा.21.1.69 पृ.23 मध्य)

6. यह भी बच्चों को समझाया गया है- (ॐ मंडली में) पहले (भोग) खिलाने वाले को खिलाकर खाना है। शिवबाबा के यज्ञ से खाते हैं तो पहले उन (दोनों) को भोग लगाना पड़े। यह सब सूक्ष्मवतन में सा॰ होते हैं। ड्रामा में नूँध है। तुमको भोग लगाना है (अमर-नाथ) शिवबाबा को। वह (शिव बाप) तो निराकार (स्थिति वाला) है। (मु.ता.1.9.78 पृ.3 अंत)

7. ऐसे नहीं, ध्यान कोई अच्छा है। नहीं! योग ध्यान को नहीं कहा जाता। याद को ध्यान नहीं कहेंगे। (मु.ता.21.9.77 पृ.2 मध्यांत)

8. बाबा से तुमने (त्रिनेत्र से) ज़्यादा देखा है। मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा है, (मम्मा) कभी भी ध्यान में न गई है, ज्ञान में कितनी तीखी गई है। (मु.ता.20.5.78 पृ.3 आदि)

9. शुरू में यह संदेशी और गुलज़ार बहुत सा. करती थीं। इन्होंने बड़े पार्ट बजाए हैं; क्योंकि भट्ठी में इन्हों (बच्चियों) को बहलाना था। (मु.ता.25.1.75 पृ.3 आदि)

10. मूल बात है याद और ज्ञान। बाकी दीदार तो कोई काम का नहीं। (अविनाशी) बाप को पहचान लिया तो फिर पढ़ना शुरू करो। (मु.ता.11.6.75 पृ.3 अंत)

11. ध्यान में जास्ती जाने से माया के भूतों की प्रवेशता हो जाती है। ऐसे बहुत हैं जो फ़ालतू ध्यान में जाते हैं, क्या-2 बोलते हैं। उन पर विश्वास नहीं करना। ज्ञान तो बाबा की मुरली में मिलता रहता है। बाप ख़बरदार करते रहते हैं- ध्यान कोई काम का नहीं है। (मु.ता.17.6.75 पृ.2 आदि)

12. ध्यान में जो जाते हैं, (उनकी) अवस्था कच्ची है। घड़ी-2 मम्मा आई, बाबा आया, फिर कहेंगे- विश्वकिशोर आया। कब कुत्ता-बिल्ला भी आ जावेगा। (मु.ता.30.3.68 पृ.4 अंत)

13. यहाँ भी साक्षात्कार तो बहुतों को होते हैं; परन्तु उससे सद्गति नहीं हो सकती। जब तक रूबरू (सद्गति वाले दलाल से) ज्ञान-योग की शिक्षा पूरी (न) लेवे। शिक्षा बिगर सा॰ से कुछ नहीं होता। (मु.ता.29.5.72 पृ.1 मध्यांत)

14. ऐसे नहीं कि हमको साक्षात्कार हो तो माने। यह तो (त्रिनेत्री की) बुद्धि से समझने की बात है। (मु.ता.24.10.73 पृ.1 मध्यांत)

15. कई कहते हैं कि सा॰ हो। तो बाबा समझ जाते हैं कि कुछ भी समझा नहीं है। सा॰ करना है तो जाकर नौ+धा भक्ति करो। (मु.ता.24.9.70 पृ.3 आदि)

16. ध्यान का जो पार्ट चलता है कि फलाने में मम्मा आई, शिवबाबा आया, यह भी एक माया है। बड़ी ख़बरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं, उससे समझ जाना है। कोई-2 में भूत आ जाता है। चर्ये-खर्ये बालक में भी कहेंगे- शिवबाबा आया है। वह मुरली चलाते हैं। (मु.ता.13.11.72 पृ.2 मध्य)

17. सप्ताह पाठ का लास्ट में भोग पड़ता है, तो बापदादा भी अभी भोग डालें? आप लोग तो हर गुरुवार को भोग लगाते हो; लेकिन बापदादा तो (16 हज़ार का) महा+भोग करेंगे ना!.....

(आखिरी समर्पण समा. में) पहले स्वयं को (महा) भोग में समर्पण करो। भोग भी बाप के आगे समर्पण करते हो ना! अभी स्वयं को सदा प्रत्यक्ष फलस्वरूप बनाकर (एक सुप्रीम को) समर्पण करो, तब महा+भोग होगा। अपने-आप को सम्पन्न बनाकर ऑफर करो, सिर्फ स्थूल भोग की ऑफर नहीं करो, सम्पन्न आत्मा बन स्वयं को ऑफर करो। (अ.वा.28.4.82 पृ.398 आदि)

18. बाबा कहते हैं- यह सा॰ भी नुकसानकारक है। सा॰ में जाने (से) पढ़ाई और योग, दोनों बन्द हो जाते हैं, टाइम वेस्ट हो जाता है; इसलिए ध्यान आदि का शौक तो बिल्कुल नहीं रखना है। इसमें माया एकदम सत्यानाश कर देती है। यह भी बड़ी बीमारी है, जिससे फिर (कामी) काँटा हो जाते हैं। (मु.ता.26.1.75 पृ.3 आदि)

19. दीदीजी से→ भविष्य राज्य की रॉयल फैमिली अभी से प्रत्यक्ष होती जाएगी ना! जो बापदादा के बोल सुने हैं कि अंत में सब स्पष्ट (बुद्धि का) साक्षात्कार होगा, तो क्या वह दिव्य दृष्टि से होगा? साक्षात्कार में कि साक्षात् रूप में होगा? सबको (सर्वसामान्य को) दिव्य दृष्टि से साक्षात्कार होने का ड्रामा तो और होगा; लेकिन यह (बुद्धि का) साक्षात् रूप में साक्षात्कार होगा। (अ.वा.19.12.78 पृ.135 आदि)

20. एम-ऑब्जेक्ट सामने है ना → ल॰ना॰ का चित्र देख रहे हो ना! ऐसे नहीं कि हमको साक्षात्कार हो तो मानें। यह तो बुद्धि (के त्रिनेत्र) से समझने की बात है। (जैसे) इन आँखों से चित्र (सामने) देख रहे हो ना! (मु.ता.24.10.78 पृ.1 अंत)

चार्ट, पोतामेल

1. चार्ट रखेंगे तो बाबा (का) डर रहेगा कि बाबा को चार्ट भेजना है। (मु.ता.3.1.73 पृ.4 आदि)

2. बाप को तो पोतामेल भी बताना पड़े न- कितना क्या धंधा-धोरी करते हो, क्या मिलता है, कितना बचता है। .....अभी तुम्हारे पास क्या है, वह बाप को बताना पड़े। ऐसे नहीं, तेरा सो मेरा, मेरे को हाथ न लगाओ। ऐसे भी कई चालाक होते हैं। (मु.ता.12.7.73 पृ.2 आदि)

3. अगर बाबा का बनकर फिर कोई पाप कर्म करते हैं तो उसका सौगुणा दण्ड हो जावेगा। पाप होता है तो झट बाप को बता देने से एक तो सौगुणा दण्ड से छूट जाएँगे और पाप की वृद्धि नहीं होगी। (मु.ता.18.1.72 पृ.4 मध्य)

4. बाबा कहते हैं- सच्चा-2 चार्ट लिखो। कई बच्चे सच नहीं लिखते हैं देह-अभिमान के कारण। यह भी दण्ड मिल जावेगा ना! सच न बताने से फिर सज़ा भी हो जाती। (मु.ता.27.4.72 पृ.2 मध्यांत)

5. बाबा ने समझाया है- इस जन्म में भी किए हुए पाप अगर सुनावेंगे नहीं, तो वह अन्दर वृद्धि को पाती रहेगी। बतला देने से फिर वह वृद्धि को नहीं पावेंगी। (मु.ता.17.6.72 पृ.2 मध्य)

6. बाप कहते हैं- कोई पाप करता हुआ देखो तो भी बताओ, तो उनको सावधानी दी जाए; नहीं तो पाप वृद्धि को पाते जावेंगे, फिर उसका दोष न सुनाने वाले पर भी आ जाता है। कोई ने चोरी की, खुद तो बतावेंगे नहीं, तो देखने वाले को बताना चाहिए। (मु.ता.7.5.72 पृ.4 अंत)

7. कोई भी वाहियात बात करते हैं, अगर रिपोर्ट न करते हैं तो उनको न सुधारने का पाप तुम पर पड़ जाता है। (मु.ता.15.7.72 पृ.4 अंत)

8. कोई पाप करते हो तो झट साकार को बतलाओ। ऐसे नहीं, ईश्वर तो जानते हैं। साकार में तो बतलाना पड़ें। इस जन्म में जो पाप कर्म किए हैं, आत्मा जानती है। सभी कुछ याद रहता है- हमने क्या-2 काम किए हैं। साकार को बतलाओ- हमने क्या-2 पाप किए हैं। मुख्य बात है विकार की। (मु.ता.16.8.72 पृ.2 अंत)

9. देह में फँसने का विष सारी कमाई को ख़त्म कर देता है, पहले की हुई कमाई के रजिस्टर पर काला दाग पड़ जाता है जिसको मिटाना बहुत मुश्किल है। जैसे योग-अग्नि पिछले पापों को भस्म करती है वैसे यह विकारी भोग भोगने की अग्नि पिछले पुण्य को भस्म कर देती है। इसको साधारण बात नहीं समझना। यह पाँचवीं मंज़िल से गिरने की बात है। .....वर्णन भी ऐसा साधारण रूप में करते हैं कि मेरे से 4/5 बार यह हो गया, आगे नहीं करूँगा। वर्णन करते समय भी पश्चाताप का रूप नहीं होता, जैसे साधारण समाचार सुना रहे हैं। अन्दर में लक्ष्य रहता है कि यह तो होता ही है, मंज़िल तो बहुत ऊँची है, अभी यह कैसे होगा?.....अभी ही अपनी पिछली भूलों का पश्चाताप दिल से करके बाप से स्पष्ट कर अपना बोझ मिटाओ, अपने-आप को कड़ी सज़ा दो, ताकि आगे की सज़ाओं से भी छूट जाएँ। (अ.वा.24.10.75 पृ.249 मध्य, 250 मध्य)

10. भक्ति में कहते थे- सब कर दो राम हवाले। अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते?.....देने में फराकदिल बनो। अगर पुरानी किचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जाएगी। निश्चय-बुद्धि की निशानी है- सदा निश्चिन्त। (अ.वा.5.5.77 पृ.132 मध्य)

11. बाबा ने कहा है- इन(साकार) से मत छिपाओ। इनको तुम सभी सुनाओ तो माफ हो जावेगा। फिर भी यह मेरा बच्चा है, इनको सच बता दो। मैं तो जानता ही हूँ। इनको कैसे पता पड़े, इसलिए सभी इनको सुनाओ। (मु.ता.19.11.72 पृ.3 मध्य)

12. पोतामेल स्थायी वह रखेंगे जो ऊँच बनने वाले होंगे; नहीं तो सिर्फ शो करेंगे। 15-20 रोज़ बाद फिर लिखना छोड़ देंगे। (मु.ता.15.5.69 पृ.2अंत)

13. रात को सारे दिन का पोतामेल निकालो- क्या किया, हमने भोजन देवताओं मिसल खाया या गधों मिसल, चलन कायदेसिर चली या अनाड़ियों मिसल। रोज़ाना अपना पोतामेल न सम्भालेंगे तो तुम्हारी उन्नति कब न होगी। .....सच लिखें कि आज हमारा बुद्धियोग फलाने के नाम-रूप में गया, आज यह पाप कर्म हुए। ऐसे सच लिखने वाले कोटों में कोऊ हैं। (मु.ता.17.4.75 पृ.1 मध्य)

चित्र-प्रदर्शनी

1. यह प्रदर्शनी तो गाँव-2 में जावेगी। बाप ग़रीब निवाज़ है, उन्हों को ज़ोर से उठाना है। साहुकार तो कोटों में कोऊ निकलते हैं। प्रजा कितनी ढेर होती है। (मु.ता.11.4.72 पृ.1 अंत)

2. यह (चैतन्य) चित्र एक्युरेट रास्ता बताने वाले हैं। मेले-मलाखड़े आदि जो हैं, वह तो उनके आगे कुछ भी नहीं हैं। (मु.ता.11.4.72 पृ.1 मध्यांत)

3. प्रदर्शनी में कम-से-कम चार मुख्य चित्र तो ज़रूरी हैं। बाकी थोड़ी रेज़कारी रेज़गारी। बस, उनमें जास्ती टाइम न देना चाहिए। अच्छे चित्रों पर जास्ती खड़ा रहना होता है। (मु.ता.10.4.72 पृ.3 मध्य)

4. यह प्रदर्शनी तो सब तरफ ले जानी पड़े। कोई कारीगर निकले जो कपड़े पर ऐसे अच्छे बनावे, जो झट लपेट कर कहाँ भी ले जावे। (मु.ता.2.1.74 पृ.2 अंत)

5. अभी यह प्रदर्शनी भी देश-देशांतर जावेगी, ताकि सारी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन होगी। (मु.ता.4.3.77 पृ.3 आदि)

6. बाबा मुख्य (चैतन्य) चित्र बनवाने का प्रबन्ध कर रहे हैं। बड़ा (संगठित) किताब भी बनावेंगे। मैगज़ीन भी मुख्य चित्रों की निकलेगी, थोड़ी बड़ी होगी। (मु.ता.26.10.71 पृ.3 मध्य)

7. मुख्य जो अच्छे-2 चित्र हैं, वह (धर्मपिताओं जैसी) ट्रान्सलाइट में बनने चाहिए। ऐसे बड़े-2 चित्र देख मनुष्य खुश होंगे। सारी प्रदर्शनी ही ऐसी हो जावेगी। (मु.ता.5.11.76 पृ.3 अंत)

8. वह शास्त्र तो छपे हुए होते हैं, कोई भी जाकर पढ़ सकते हैं। यह (निराकारी) ज्ञान तो (एक ही) बाप देते हैं, फिर शास्त्र पढ़ने की बात ही नहीं। बाप से सुनकर और धारणा करनी है। (मु.ता.3.12.76 पृ.3 मध्य)

9. बाप को रहम पड़ता है कि बच्चे अपने बाप को जान लेवें। मालूम तो पड़ता है ना! ब्र.कु.कुमारियाँ वृद्धि को पाते रहेंगे। एक दिन यह (धर्मगुरु) भी सब आवेंगे। फेरा पहनते रहेंगे।

तुम्हारी प्रदर्शनी में सब आवेंगे। दिन-प्रतिदिन नाम बाला होता जाता है। (मु.ता.4.12.76 पृ.2 अंत)

10. जैसे देखो, (चैतन्य) प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली, यह रमेश बच्चे का इनवेन्शन है। तो बाबा उनका नाम कितना उठाते हैं। अब फिर प्रदर्शनी को भी अच्छा बना रहे हैं, फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु.ता.13.6.72 पृ.2 अंत)

11. ल.ना. के (चैतन्य) चित्र के साथ फिर राधे-कृष्ण (मम्मा-बाबा) भी हो तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। इसकी लिखत भी बड़ी अच्छी है। (मु.ता.2.1.73 पृ.3 अंत)

12. स्वर्ग बनाने वाला बाप का यादगार गुम कर दिया है। नर्क बनाने वालों के यादगार (जड़ चित्र) रख दिए हैं। दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार होता जाता है। (मु.ता.4.5.78 पृ.3 अंत)

13. बाबा कहते हैं- चित्रों को देखना बन्द करो। यह है भक्तिमार्ग। .....कोई भी चित्रों का सुमिरण न करना है। यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है; क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना! (मु.ता.2.3.78 पृ.2 मध्य)

14. ऐसे नहीं कि द्वापर से ही शास्त्र शुरू हुए हैं, नहीं। पहले तो (यादगार जड़) चित्र बनते हैं, फिर उनकी जीवन-कहानी बनाते हैं। पहले चीज़ बनावें तब उनके शास्त्र बनावे। कोई 500 वर्ष बाद बैठ शास्त्र बनाए हैं। (मु.ता.10.8.78 पृ.3 आदि)

15. प्रोजेक्टर की स्लाइड्स बनाए, खुश हो गए। अपनी मत पर जो आया सो किया। (मु.ता.18.11.72 पृ.2 अंत)

16. जो होकर गए हैं, उन्हों के चित्र भी हैं। (मु.ता.13.5.71 पृ.4 मध्य)

17. जो (ॐ मंडली में) पास्ट होकर गए हैं, उन्हों के जड़ चित्र (त्रिमूर्ति-ल.ना.) बने हुए हैं। कोई मरता है तो (भक्ति मार्ग में) झट उनके चित्र बना देते हैं। उनकी पोज़ीशन, उनकी बायोग्राफी का तो पता है नहीं। ऑक्युपेशन न लिखें तो वह चित्र किसी काम के न रहे। (मु.ता.1.2.75 पृ.1 मध्यादि)

18. त्रिमूर्ति भी ज़रूर चाहिए। कोई तो बाबा का चित्र देख डरते हैं। कृष्ण के 84 जन्म देख डरते हैं। फाड़ भी डालते हैं। अरे, यह तो बाप ने चित्र बनाए हैं। तुम चित्रों से लिखत निकाल देते हो। तुम तो कोई डैमफुल दिखाई पड़ते हो। (मु.ता.30.4.71 पृ.2 अंत)

19. एम-ऑब्जेक्ट सामने है ना! ल.ना. का चित्र देख रहे हो ना! ऐसे नहीं कि हमको सा. हो तो मानें। यह तो बुद्धि से समझने की बात है। (मु.ता.24.10.78 पृ.1 अंत)

20. हो सकता है अख़बारों आदि में भी यह (चैतन्य) चित्र पड़ जाए। कोई की बुद्धि में बैठ जाए। आर्टिफिशियल भी बहुत (जड़ चित्र) निकलेंगे। चित्रों को कॉपी कर रखेंगे पैसा कमाने लिए; परन्तु नॉलेज तो समझा न सकें। (मु.ता.2.1.74 पृ.3 आदि)

21. ढेर किताब हैं। उनमें नॉवेल्स भी हैं। मनुष्यों के अपने-2 विचार हैं। जिसको जो बुद्धि में आया, वह लिख देंगे। वैसे ही यह शास्त्र हैं। अपना-2 शास्त्र बना देते हैं। (मु.ता.26.8.72 पृ.1 अंत)

22. ज्ञानमार्ग में तो है पढ़ाई। पढ़ाई में (जड़) चित्रों की दरकार नहीं। आस्ते-2 यह भी उड़ जावेंगे। यह तो बेबियों को समझाने लिए चित्र रखे हुए हैं। (मु.ता.23.6.70 पृ.1 आदि)

23. शिवबाबा को याद करने में बड़ी मेहनत है। उनका यथार्थ रूप है बिन्दी; परन्तु उनका (नाग-बलाओं वाला यादगार जड़) चित्र बना दिया है राँग। तो यह समझाना पड़े। गुह्य बातें, गुह्य राज़ बाबा अब ही समझाते हैं। (मु.ता.6.8.78 पृ.4 अंत)

दान

1. यहाँ श्रेष्ठाचारी धंधा नहीं होता। दान करते हैं, वह भी पाप करते हैं; क्योंकि वि+कारी, पतित को दान दिया तो उनका और ही दण्ड पड़ेगा। बाप कहते हैं- पैसे तुम किसी पतित को दे नहीं सकते हो। (मु.ता.8.4.72 पृ.2 मध्य)

2. जब परमात्म बाप ग़ैर हाज़िर है, तो इण्डायरैक्ट अल्पकाल के लिए फल देते हैं; जब हाज़िर हैं तो 21 जन्म के लिए देते हैं। यह गाया हुआ है- शिवबाबा का भण्डारा भरपूर। देखो, ढेर बच्चे हैं, किसको भी मालूम नहीं है कि कौन और क्या देते हैं? बाप जाने और बाप की गोथरी जाने, जिसमें बाप रहते हैं। है बिल्कुल साधारण। (मु.ता.18.4.84 पृ.3 अंत)

3. पतित को पैसा न देना है; क्योंकि वह पैसे से पाप करेंगे।..... अगर पापात्माओं को दे दिया तो उसका बोझा चढ़ पड़ेगा। .....तुम ट्रस्टी हो राय पर चलो।..... देने वाले पर भी उसका असर आ जावेगा। (रात्रि मु.ता.16.4.72 अंत)

4. धनवान को अहंकार भी बहुत रहता है ना- मैं फलाना हूँ, यह-2 हमको (धन-सम्पत्ति) हैं। घमण्ड तोड़ने के लिए बाबा कहते हैं- यह जब आएँगे कुछ देने लिए तो बाबा कहेंगे कि दरकार ही नहीं है। यह अपने पास रख दो। जब ज़रूरत होगी, फिर ले लेंगे।..... देखेंगे, लायक है तो साहुकार बना देंगे, नालायक है तो कहेंगे- दरकार नहीं है। वण्डर खाएँगे कि ऐसा क्यों करते हैं? अरे, चाहिए ही नहीं, फेंक जाओ। हमारे काम में नहीं आएगा। ..... बाबा जो इतना ऊँचा बनाते हैं, ऐसे बाप को धोखा देकर फिर आ जाते हैं तो कहेंगे कि यह ट्रेटर बना था, धोखा दिया था, इनका

कुछ भी लेना ना है। भल यह ग़रीब बने। ऐसे-2 जिनको अपना अहंकार रहता था, मनहूस रहते थे, कहेंगे- मनहूस की दरकार नहीं। बाबा के हाथ में है ना- लेना वा न लेना। (मु.ता.17.12.70 पृ.3 आदि)

5. ऐसे थोड़े ही कि तुमको ग़रीबों को बैठ दान देना है। ग़रीबों को तो वह लोग दान देते हैं। ऐसे तो दुनियाँ में ढेर ग़रीब हैं। सब आकर बैठ जावें तो माथा ही ख़राब कर देवें। ऐसे तो बहुत कहते हैं; परन्तु सम्भाल कर लेना होता है, ऐसा न हो यज्ञ में आकर ऊधम मचावें। ..... यज्ञ का पैसा किसको देना बड़ा पाप है। यह पैसे हैं ही उनके लिए जो कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं, ईश्वरीय सर्विस में हैं। (मु.ता.23.3.76 पृ.3 मध्यांत)

6. कल्याणकारी बनना है। धन व्यर्थ नहीं गँवाना है। यह भी रसम है ना! जो लायक ही नहीं, ऐसे पतित को कब दान न देना चाहिए; नहीं तो दान देने वाले पर भी (पाप) आ जाता है। (मु.ता.30.6.75 पृ.3 अंत)

7. बिगर पूछे किसी को भी दान करने का हक नहीं है। बाप को सब-कुछ दिया तो राय पर फ़लाने को दे सकते हो। (मु.ता.12.5.73 पृ.4 मध्यादि)

8. अर्पण किया हुआ कुछ भी याद नहीं आए। बाप कहते हैं कि मैं ऐसी कोई चीज़ लेता ही नहीं हूँ, जो पिछाड़ी में रह जाए और भर कर देना पड़े। ..... 10-20 वर्ष बाद भी कहते हैं- हमारा यह दिया हुआ वापिस करो। अरे, तुमने कणा-दाना दिया अथाह लेने लिए, फिर कहते हो- हमने दिया! शर्म नहीं आती? कौड़ी देते हो, हीरे लेते हो, फिर भी तुम दी हुई कौड़ी माँगते हो! तुमने इतना खाया-पिया, निकालो पेट से। सर्विस कहाँ की? यह तो डिससर्विस करते हो ना! डिससर्विस करने से इतना दिन जो खाया, वह भी तुम्हारे ऊपर कर्ज़ा चढ़ गया। तुम जाकर दासियों के भी दास बनेंगे। (मु.ता.16.12.70 पृ.3 आदि)

9. अपनी सच्ची कमाई का जमा करना, इसी में बल है। सच्ची कमाई का धन बाप के कार्य में सफ़ल हो रहा है। अगर ऐसे ही धन आ जाए तो तन नहीं लगेगा और तन नहीं लगेगा तो मन भी नीचे-ऊपर होगा .....; इसलिए संगमयुग पर कमाया और ईश्वरीय बैंक में जमा किया- यह जीवन ही नं॰ वन जीवन है। कमाया और लौकिक विनाशी बैंकों में जमा किया तो वह सफ़ल नहीं होता। (अ.वा.27.2.85 पृ.198 आदि)

10. अगर किसको पैसा दिया और उसने जाकर शराब आदि पिया, बुरे कर्म किए तो उसका पाप तुम्हारे ऊपर आ जावेगा। पाप-आत्माओं से लेन-देन करते पापात्मा बन जाते हैं। कितना फर्क है! पापात्मा, पापात्मा से लेन-देन कर पापात्मा ही बन जाती है। (मु.ता.14.1.75 पृ.3 अंत)

11. यह भी कोई को अहंकार न आना चाहिए- हमने दिया। तुम कुछ भी न दो, बाबा तुमको कौड़ी के बदले हीरा देने से भी छूट जावेगा। (मु.ता.25.10.78 पृ.3 मध्यांत)

देह-देही

1. देही-अभिमानी बनने बिगर रिफ़ाइन बन न सके। देही-अभिमानी बनना, जीते जी पूरा मौत है। अपन को आत्मा समझना मासी का घर नहीं है। (मु.ता.5.2.68 पृ.2 अंत)

2. देही-अभिमानी तब रहेंगे जब कम्प्लीट सरेण्डर होंगे। बाबा, यह सब आपका है। .....यह देह जैसे कि हमारी है नहीं। इनको मैं छोड़ देता हूँ। बाबा, मैं आपका हूँ। (मु.ता.25.5.71 पृ.1 अंत)

3. जैसे राजाएँ लोग घर-बार छोड़ते हैं तो पहले गुरु पास जाते हैं। वह फिर उनसे काठी कराना, आश्रम की सफ़ाई आदि कराते हैं, तो देह-अभिमान टूट जाए। यहाँ भी ऐसे कायदे हैं। ग़रीब तो यह सब काम करते रहते हैं। बड़े घर वालों में बड़ा देह-अभिमान होता है। तो उन्हों की परीक्षा ली जाती है। शुरुआत में बाबा ने भी परीक्षा ली ना! देह-अभिमान तोड़ने लिए तुम सब-कुछ करते थे- मोटर साफ़ करना, धोबी का काम करना। कोई भी आवे, बोलो- पहले तो यह काम करना पड़ेगा। (मु.ता.21.9.73 पृ.2 अंत)

4. बहुतों को अपना अहंकार बहुत रहता है। दूसरे महारथी आते हैं तो समझते हैं- कहाँ यह हमारी जगह न भर लेवें। हमारा मान है। दूसरा कोई आवेगा तो हमारा मान कम हो जावेगा। यह नहीं समझते कि महारथी तो मदद करेंगे। अपना अहंकार रहता है। ऐसे भी बुद्धू हैं। बाप कहते हैं- सच्चे दिल पर ही साहिब राज़ी रहेगा। (मु.ता.25.11.73 पृ.5 आदि)

5. इस समय तुम अपनी दासियाँ बनावेंगी तो खुद को भी दासी बनना पड़ेगा। यहाँ महारानी बनना देह-अभिमान है। (मु.ता.11.12.73 पृ.3 अंत)

6. इतना तूफ़ान लग जाता जो आसमान से एकदम पट में गिर पड़ते। बाप समझाते हैं तो भी बिगड़ पड़ते हैं। देह-अभिमान बहुत है। किसकी गद्दी बदली करो तो मुख पीला हो जावेगा। (मु.ता.18.12.73 पृ.3 अंत)

7. कोई तो दो/तीन मास में देही-अभिमानी बन जाते हैं, कोई तो 25 वर्ष में भी नहीं बनते। ('मैं आत्मा' का) एक ही कोर्स बहुत बड़ा है, 40-50 वर्ष चलता है। (मु.ता.20.8.78 पृ.2 मध्य)

8. बहुतों को अहंकार आ जाता है कि मेरे जैसा कोई है नहीं। कई तो ऐसे बुद्धू हैं, समझते हैं कि ब्रह्मा भी क्या है? जैसे हम जिज्ञासु हैं वैसे यह भी एक जिज्ञासु है। कोई प्वॉइण्ट में हम तीखे हैं, कोई

प्वॉइण्ट में करके ब्रह्मा तीखा जावेगा। अरे, मम्मा-बाबा तो ज़रूर सभी से तीखे होंगे ना! हम उन्हों का सामना क्यों करते हैं? (मु.ता.14.11.72 पृ.3 अंत)

9. बच्चे, तुम देह-अभिमान में आते हो; इसलिए टकराते हो। इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहेगी और सर्विस में उन्नति करते रहेंगे। (मु.ता.3.2.71 पृ.2 अंत)

10. जब पूरा देही-अभिमानी बनेंगे तो रिगार्ड भी रखेंगे। अवस्था भी सुधरती जावेगी। खुशी में भी रहेंगे। (मु.ता.14.12.71 पृ.1 अंत)

11. बेहद का बाप तो समझाते रहेंगे ना! इसमें फंक न होना चाहिए- बाबा ने ऐसे क्यों कहा? हमारी इज़्ज़त गई। अरे, इज़्ज़त तो रावण-राज्य में (नं. वार सबकी) चट हो ही गई है। देह-अभिमान में आने से ही अपना ही नुकसान कर देंगे। (मु.ता.17.8.70 पृ.3 अंत)

12. कोई कुछ छी-2 बोले तो सुना-अनसुना कर देना चाहिए। हियर नो ईविल। .....मान-अपमान, दुःख-सुख- यह सहन करना है। सहन करने की युक्ति भी बता देते हैं- कुछ भी कहे तो सुना-अनसुना करना है। वह भी अवस्था चाहिए। (मु.ता.13.1.69 पृ.4 मध्यादि)

13. देह-अभिमान वाले सर्विस कर न सकें। उनसे खताएँ होती रहेंगी। (मु.ता.11.1.72 पृ.4 मध्यादि)

14. देह-अभिमान न हो तो ढोल भी गले में डाल दें, सभी को यह बताते जावे कि बाप आया है। (मु.ता.11.5.69 पृ.2 अंत)

देखना धोखा है

1. आँखें बड़ा धोखा देती हैं। देखने से ही एकदम रफूचक्कर हो जाते हैं। इन आँखों को कब्ज़े में रखना है। देखा गया- भाई-बहन में भी दृष्टि ठीक नहीं रहती, तो अब समझाया जाता है- भाई-2 समझो। (मु.ता.23.7.74 पृ.2 अंत)

2. तुम आकर भट्ठी में पड़े। कोई देख न सके, मिल न सके। कोई को देखते ही नहीं थे तो फिर दिल किससे लगावेंगे? (मु.ता.8.7.74 पृ.2 मध्य)

3. आँखे ऐसी धोखेबाज़ हैं, बात मत पूछो। कोई सुन्दर स्त्री देखी और लड्डू(लट्टू) हो जाते हैं। (मु.ता.11.4.84 पृ.1 अंत)

4. आत्मा को देखने से ही कट उतरेगी। शरीर को देखने से कट चढ़ती है। कब चढ़ती है, कब उतरती है, यह चलता रहता है। (मु.ता.29.6.74 पृ.3 आदि)

5. अख़बारें पढ़ते हैं। उनमें अच्छी-2 माइयों के चित्र देखते हैं तो वृत्ति उस तरफ जाती है- यह बड़ी अच्छी खूबसूरत है। .....ऐसे-2 चित्र आदि भी क्यों देखते हो? यह सब बातें वृत्ति को नीचे ले आती हैं। (मु.ता.23.6.74 पृ.2 मध्यांत)

6. कोई से आँख मिलाई, यह भी शैतान बने। आँखें मिलाने वालों की दिव्य चक्षु निकल जाती है। कोई से छिपकर बात करना भी ख़राब है। (मु.ता.2.5.73 पृ.2 अंत)

7. दुनियाँ तो बहुत गन्दी है। बड़ी खबरदारी रखते हैं। ऐसे-2 गन्दे हैं जो छिपकर जा आँख लड़ाते हैं। पहले-2 जब भट्ठी में रहे तो कितनी माता-पिता को सम्भाल करनी पड़ती थी। (मु.ता.7.5.73 पृ.3 मध्यादि)

8. यहाँ तो सच्चे, साफ़ दिल चाहिए। ऐसे नहीं, घर छोड़ आकर फिर ब्राह्मण कुल में रह कोई-न-कोई से आँख लड़ाती रहो वा फैमिलियरिटी में रहे।..... उन्हों की फिर अवस्था चढ़ती नहीं। (मु.ता.9.2.73 पृ.2 मध्य)

9. ऐसे मत समझो, यहाँ जो आते हैं तो उन्हों की विष से बुद्धि निकल जाती। एक/दो को देखते हैं तो अन्दर तूफान चलता गन्दे बनने लिए। (मु.ता.19.9.73 पृ.2 आदि)

10. गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल ज़िम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बापदादा टच कर सकता है? स्नेह दृष्टि दे सकता है? अर्ज़ी मान सकता है? कम्प्लेण्ट व उलाहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। (अ.वा.11.7.74 पृ.104 अंत)

11. अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ-न-कहाँ विकार की दृष्टि उठती है।..... कोई तरफ़ कुदृष्टि जावे तो उसके आगे खड़ा भी न होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है- इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊँच पद पाना है तो बहुत ख़बरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले-लंगड़े बन पड़ेंगे। (मु.ता.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)

12. भाई-बहन समझने से भी दृष्टि जाती नहीं। (मु.ता.4.10.74 पृ.3 मध्य)

ढांढस या हौसला/(उमंग-उत्साह)

1. सारी दुनियाँ दुश्मन बनेगी; परन्तु (निराकारी) बाप को न भूलना। (मु.ता.22.3.78 पृ.2 मध्यांत)

2. सबसे बड़े-ते-बड़े उत्साह की बात है कि अनेक जन्म-2 आपने बाप को ढूँढ़ा; लेकिन इस समय बाप+दादा ने आप लोगों (ल.ना.+6) को ढूँढा। भिन्न-2 (धर्मों के) पर्दों के अन्दर छिपे हुए थे। उन पर्दों के अन्दर से भी ढूँढ लिया ना? ..... तो सदा उमंग और उत्साह में रहने वाली आत्माओं को, एक बल, एक भरोसे में रहने वाले बच्चों को, 'हिम्मते बच्चे मददे बाप' का सदा ही अनुभव होता रहता है। ''होना ही है''- यह है हिम्मत। इसी हिम्मत से मदद के पात्र स्वतः ही बन जाते हैं। (अ.वा.18.2.83 पृ.71 आदि)

3. चाहे कितना भी कोई पीछे आए; लेकिन आगे जाकर नं. वन ले सकता है। .....सिर्फ हिम्मत और लगन की बात है। (अ.वा.24.2.83 पृ.85 मध्य)

4. अपने को नया नहीं समझना, अति पुराने हैं और वही पुराने अब फिर से अपना हक लेने के लिए आए हैं। यह नशा सदैव कायम रहे। ..... कब भी यह नहीं सोचना कि हम लोग तो पीछे आए हैं तो प्रजा बन जाएँगे। नहीं, पीछे आने वालों को भी अधिकार है राजपद पाने का। (अ.वा.22.1.70 पृ.172 मध्य)

5. ऐसा कोई है जिसमें कोई भी विशेषता न हो! पहली विशेषता तो यही है जो यहाँ पहुँचे हो। और कुछ भी न हो, फिर भी सम्+मुख मिलने का यह भाग्य कम नहीं है। यह तो विशेषता है ना! (अ.वा.24.3.85 पृ.267 मध्य)

6. कोई भी ब्राह्मण बच्चा ऐसा नहीं जिसमें कोई विशेषता न हो। सबसे पहली विशेषता तो यही है जो बाप को जान लिया, बाप को पा लिया। कोटों में कोऊ और कोऊ में भी कोई ने जाना। तो बाप भी उसी नज़र से देखते हैं कि यह विशेष आत्माएँ हैं। (अ.वा.12.11.79 पृ.17 मध्य)

7. सभी अपने को इस विश्व के अन्दर सर्व आत्माओं में से चुनी हुई श्रेष्ठ आत्मा समझते हो? यह समझते हो कि स्वयं बाप ने हमें अपना बनाया है? बाप ने विश्व के अन्दर से कितनी थोड़ी आत्माओं को चुना और उनमें से हम श्रेष्ठ आत्माएँ हैं। (अ.वा.9.3.81 पृ.34 आदि)

8. ब्रह्मा बाप बोले कि ऐसे बच्चों पर आपकी नज़र गई है, जिनके लिए दुनिया वालों को यह सोचना भी असम्भव है कि ऐसी आत्माएँ भी श्रेष्ठ बन सकती हैं, जो दुनिया की नज़रों में अति साधारण आत्माएँ हैं ..... सच्चे ब्राह्मण फिर भी साधारण आत्माएँ ही बनते हैं। जो वर्तमान समय के वी.आई.पीज़. गाए जाते, सबकी नज़रों में हैं; लेकिन बाप की नज़रों में कौन हैं? (अ.वा.17.3.82 पृ.296 आदि, 297 आदि)

9. कई आत्माएँ बहुत अच्छे हुल्लास, उमंग, हिम्मत और बाप के सहयोग से बहुत आगे मंज़िल के समीप तक पहुँच जाती हैं; लेकिन 63 जन्मों के हिसाब यहाँ ही चुक्तू होने हैं। अपने पिछले

संस्कार, स्वभाव बाहर इमर्ज हो सदा के लिए समाप्त हो रहे हैं। उस कर्मों की गुह्य गति को न जान घबरा जाते हैं- क्या लास्ट तक यही चलेगा? अब तक भी यह टक्कर क्यों होता? इन व्यर्थ संकल्पों की उलझन कारण प्यार नहीं कर पाते। सोचने में ही टाइम वेस्ट कर देते हैं। (अ.वा.3.5.77 पृ.118 अंत)

10. चक्र के वश होने वाले बच्चों के भी बहुत पत्र आते हैं। ऐसे बच्चों को भी बापदादा यादप्यार दे रहे हैं और फिर से यही याद दिला रहे हैं, जैसे भारत में कहावत है कि (अज्ञान की) रात का भूला हुआ अगर (ज्ञान-) दिन में घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता। ऐसे फिर से जागृति आ गई, तो बीती सो बीती। फिर से नया उमंग, नया उत्साह, नई जीवन का अनुभव कर आगे बढ़ सकते हैं। (अ.वा.20.2.84 पृ.146 मध्य)

11. कोटों में कोई बाप के बनते हैं, वह हम हैं। यह खुशी सदा रहती है? विश्व की अनेक आत्माएँ बाप को पाने का प्रयत्न कर रही हैं और हमने पा लिया! बाप का बनना अर्थात् बाप को पाना। दुनियाँ ढूँढ़ रही है और हम उनके बन गए। (अ.वा.12.12.84 पृ.64 मध्य)

12. नाउम्मीद आत्माओं को उम्मीदवार बनाना- यही बाप की विशेषता है। ..... इसलिए जो भी हो, जैसे भी हो; लेकिन परमात्मा को पसन्द हो; इसलिए अपना बना लिया। दुनियाँ वाले अभी इन्तज़ार ही कर रहे हैं- बाप आएगा, उस समय ऐसा होगा, वैसा होगा; लेकिन आप सबके मुख से, दिल से क्या निकलता है? ..... आप सम्पन्न बन गए और वह बुद्धिमान अब तक परखने में ही समय समाप्त कर रहे हैं; इसलिए ही कहा गया है- भोलानाथ बाप है। पहचानने की विशेषता ने विशेष आत्मा बना लिया। पहचान लिया, प्राप्त कर लिया, अब आगे क्या करना है? सर्व आत्माओं पर रहम आता है? हैं तो सभी आत्माएँ, एक ही बेहद का परिवार है। अपने परिवार की कोई भी आत्मा वरदान से वंचित न रह जाए। (अ.वा.30.12.85 पृ.116 आदि)

13. सौदागरों की लिस्ट में कौन-2 नामी-ग्रामी हैं? दुनियाँ वाले भी नामी-ग्रामी लोगों की लिस्ट बनाते हैं ना! विशेष डायरेक्ट्री भी बनाते हैं। बाप की डायरेक्ट्री में किन्हों के नाम हैं? जिनमें दुनियाँ वालों की आँख नहीं जाती, उन्होंने ही बाप से सौदा किया और परमात्म नयनों के सितारे बन गए, नूरे रत्न बन गए। नाउम्मीद आत्माओं को विशेष आत्मा बना दिया। ..... परमात्म डायरेक्ट्री के विशेष वी.आई.पी. हम हैं; इसलिए ही गायन है- भोलों का भगवान। है चतुर सुजान; लेकिन पसन्द भोले ही आते हैं। दुनियाँ की बाहरमुखी, चतुराई बाप को पसन्द नहीं। (अ.वा.15.1.86 पृ.155 अंत, 156 आदि)

14. बापदादा के साथ निमित्त कौन बने हैं? हैं विश्व के आधार; लेकिन बने कौन हैं? साधारण। जो दुनियाँ के लोगों की नज़रों में हैं, वह बाप की नज़रों में नहीं हैं और जो (दोनों बेहद के) बाप की नज़रों में हैं, वह दुनियाँ वालों की नज़रों में नहीं हैं। आपको देखकर पहले तो मुस्कुराएँगे कि यह हैं; लेकिन जो दुनियाँ वाले करते, वह बाप नहीं करते। उन्हों को नामी-ग्रामी चाहिए और बाप को, जिनका नाम-निशान खत्म कर दिया, उनका ही नाम बाला करना है। असम्भव को सम्भव करना है, साधारण को महान बनाना, निर्बल को महान बलवान बनाना, दुनियाँ के हिसाब से जो अनपढ़ हैं, उन्हों को नॉलेजफुल बनाना- यही बाप का पार्ट है। (अ.वा.13.3.86 पृ.256 अंत, 257 आदि)

15. एक-2 रत्न वैल्युएबल है; क्योंकि अगर वैल्युएबल रत्न नहीं होते तो कोटों में कोई आप ही कैसे आते? जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है ....., आप तो बच्चे बन गए, तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए! (अ.वा.14.2.78 पृ.48 अंत, 49 आदि)

धर्मराज

1. मंसा में तूफान तो बहुत आवेगा; परन्तु कर्मेन्द्रियों से न करना है। कर्मेन्द्रियों से कर बैठे तो उन कर्मेन्द्रियों को काटा जावेगा। वह अंग काटा जावेगा। अगर दान देकर फिर किस पर क्रोध किया तो वहाँ जबान काटी जावेगी। धर्मराज बाबा घड़ी-2 इन्द्रियाँ कटवाते जावेंगे। (मु.ता.14.4.73 पृ.2 मध्य)

2. बाबा ने समझाया है- मैं धर्मराज भी हूँ। इण्डायरैक्ट (ब्रह्मा या कोई भी देहधारियों द्वारा) कुछ करते थे तो हद के अल्पकाल की सज़ा भोगते थे। अब डायरैक्ट (साक्षात्=सन्मुख) आकर, फिर भी बाबा की मेहनत बरबाद करते हो तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। धर्मराज बाबा कहते हैं- मैं खाल उतार दूँगा। (मु.ता.17.4.73 पृ.3 आदि)

3. चाहे खुशी से चलो, चाहे नाराज़ होकर चलो। चलना है ज़रूर। बेहद का बाप कालों का काल है। (मु.ता.14.9.73 पृ.1 मध्यांत)

4. बाबा ने समझाया है- सज़ा कैसे मिलती है। सूक्ष्म शरीर भी नहीं, स्थूल शरीर धारण करके सज़ा देते हैं। (मु.ता.4.10.73 पृ.2 अंत)

5. बाप कहते हैं कि मैं सुख देता हूँ। (देह का) दुःख अर्थात् सज़ाएँ धर्मराज देते हैं। मुझे (अशरीरी को) सज़ा देने का अख्तियार नहीं है। (बेताज बादशाह) मुझे सुनाओ। सज़ा (धारणावान) धर्मराज देंगे।.....बाकी आपस में मत लड़ो। (मु.ता.12.11.73 पृ.2 मध्य)

6. अब श्रीमत पर चलेंगे तो मुक्ति-जीवनमुक्ति में चलेंगे; नहीं तो शांतिधाम में सबको जाना ही है। .....पसन्द करो, न करो, मैं आया हूँ, सबको ज़रूर ले चलूँगा। ज़बरदस्ती भी हिसाब-किताब चुक्तू कराकर ले जाऊँगा। ..... छोड़ेंगे कोई को भी नहीं। न चलेंगे तो भी सज़ा देकर, मा कर(मारकर) भी ले चलूँगा। (मु.ता.22.6.74 पृ.2 अंत)

7. बाबा बड़ा मार्शल भी है। बाबा के साथ धर्मराज भी है। अगर (साकारी+निराकार) बाबा की श्रीमत पर न चले तो उन (दोनों) का राइट हैण्ड धर्मराज है। (मु.ता.24.4.72 पृ.2 अंत)

8. अभी यह भी ध्यान रखना, सूक्ष्म सज़ाओं के साथ-2 स्थूल सज़ाएँ भी होती हैं। ऐसे नहीं समझना, सूक्ष्म सज़ा तो अपने अन्दर भोगकर खत्म करेंगे। नहीं! सूक्ष्म सज़ाएँ सूक्ष्म में मिलती रहती हैं और दिन-प्रतिदिन ज्यादा मिलती जाएँगी; लेकिन ईश्वरीय मर्यादाओं के प्रमाण कोई भी अगर अमर्यादा का कर्तव्य करते हैं, मर्यादा का उल्लंघन करते हैं, तो ऐसी अमर्यादा से चलने वाले को स्थूल (देह की) सज़ाएँ भी भोगनी पड़ें। (अ.वा.3.5.72 पृ.265 आदि)

9. धर्मराज बाबा भी सा. करावेंगे, फिर कहेंगे- अब खाओ सज़ा। तुमको (40 से 50 साल तक) इतना समझाते थे- यह मत करो, फिर भी करते रहे। अब खाओ सज़ा। (मु.ता.10.7.72 पृ.4 अंत)

10. ट्रेटर (दगाबाज/धोखेबाज) लिए बड़ी भारी सज़ा होती है। तो यहाँ भी ऐसे हैं। अगर कोई बाप का बनकर कोई ट्रेटर बन जाते हैं तो धर्मराज पुरी में बहुत भारी सज़ा मिलती है, चमरी(चमड़ी) उतारते हैं। (मु.ता.6.10.72 पृ.3 अंत)

11. धर्मराज भी क्रियेशन है। धर्मराज का रूप भी बाबा सा॰ कराते हैं ना! फिर उस समय सिद्ध कर बतलाते हैं- देखो, तुमने प्रतिज्ञा की थी- हम क्रोध न करेंगे, किसको दुःख न देंगे, फिर भी तुमने इनको दुःख दिया, तंग किया। अब खाओ सज़ा। बिगर सा. सज़ा दे नहीं सकते। प्रूफ तो चाहिए ना! वह भी समझते हैं- बरोबर मैंने बाप को छोड़ कुकर्म किया। (मु.ता.28.5.71 पृ.2 मध्यादि)

12. बेहद के बाप साथ प्रतिज्ञा कर, फिर गिरते हैं तो धर्मराज द्वारा डण्डे भी बहुत लगते हैं। यह बेहद का बाप, बेहद का धर्मराज है, फिर बेहद की सज़ा मिलती है। कोई बात में आनाकानी करेंगे, कोई उल्टा काम करेंगे तो सज़ा ज़रूर खावेंगे। समझते नहीं हैं, हम भगवान की अवज्ञा करते हैं। धर्मराज तो बड़ा ज़बरदस्त दण्ड देने वाला है। (मु.ता.8.10.71 पृ.3 मध्य)

13. याद रखना, अभी न मानेंगे तो धर्मराज द्वारा हड्डी-2 तोड़ूँगा। बात मत पूछो। बहुत बच्चे हैं, विकार में जाने बिगर रह नहीं सकते, डरते ही नहीं। वह कितने हण्टर खावेंगे, बात मत पूछो। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। संगदोष में ऐसा गिर पड़ते हैं जो एकदम चण्डाल बनने लायक बन जाते हैं। (मु.ता.13.10.71 पृ.3 अंत)

14. थोड़े समय के बाद यह बातें अर्थात् लिफ्ट का मिलना भी बन्द हो जाएगा; इसलिए अभी जो कुछ भी लेना चाहो, वह ले सकते हैं। फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस का रूप हो जावेगा। जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बन्धी हो; लेकिन लॉ इज़ लॉ। अभी लव का समय है, फिर लॉ का समय होगा। फिर उस समय लिफ्ट नहीं मिल सकेगी। (अ.वा.30.5.73 पृ.80 मध्य)

15. बाप को भूले तो धर्मराज के रूप में ही बाप मिलेगा, बाप का सुख कभी पा नहीं सकेंगे; इसलिए छिपाओ नहीं, चलाओ नहीं, दूसरे को दोषी नहीं बनाओ। ..... इस पवित्रता के फाउण्डेशन में बापदादा धर्मराज द्वारा एक का सौ गुणा, पदमगुणा दण्ड दिलाता है। इसमें रियायत कभी नहीं हो सकती। इसमें रहमदिल नहीं बन सकते; क्योंकि बाप से नाता तोड़ा तब तो किसी के ऊपर प्रभावित हुए। परमात्म प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आना अर्थात् बाप को जाना नहीं, पहचाना नहीं। ऐसे के आगे बाप, बाप के रूप में नहीं, धर्मराज के रूप में है। (अ.वा.12.4.84 पृ.239 अंत, 240 आदि)

16. अभी फिर भी कोई व्यर्थ अथवा अशुद्ध संकल्प चलने की प्रत्यक्ष रूप में कोई सज़ा नहीं मिल रही है; लेकिन थोड़ा आगे चलेंगे तो कर्म की तो बात ही छोड़ो; लेकिन अशुद्ध वा व्यर्थ संकल्प जो हुआ, किया, उसकी प्रत्यक्ष सज़ा का भी अनुभव करेंगे। (अ.वा.3.5.72 पृ.262 अंत, 263 आदि)

17. बाप समझाते हैं, साथ में धर्मराज भी इकट्ठा है, राइट हैण्ड। बच्चों की चलन नोट करते जाते हैं। ड्रामा में पार्ट है। सज़ा देने वाला वही है। (मु.ता.1.7.74 पृ.2 मध्यांत)

धर्मशाला, कोस+घर

1. शादी के लिए जो हॉल आदि बनाते हैं, उनको भी समझाओ। यहाँ भी शादी के लिए धर्म+शाला आदि बना रहे हैं न! कोई अपने कुल के हैं तो झट समझ जाते हैं, कोई नहीं हैं। जो इस कुल के न होंगे वह विघ्न डालेंगे; जो इस कुल के होंगे वह मानेंगे। ..... यह तो हम (संकल्पों का) खून कराने के लिए प्रबन्ध देते हैं। जो इस धर्म के न होंगे वह लड़ेंगे। कहेंगे, यह तो (मम्मा-बाबा से) रसम चली आ रही है। (मु.ता.12.4.74 पृ.2 अंत, 3 आदि)

दिल्ली

1. दिल्ली है दिलाराम की दिल लेने वाली। नाम भी दिल्ली है- दिल ली। तो बापदादा की दिल क्या है? विश्व पर सदा (चतुर्युगी) के लिए सुख और शान्ति का झण्डा लहर जाए। ..... देहली में

सभी (धर्मों) का हक है; क्योंकि सब राज्य-अधिकारी बन रहे हो ना! तो सेवा के नए-2 कार्य में दिल लेने वाले। (अ.वा.15.4.81 पृ.158 अंत, 159 आदि)

2. दिल्ली वाले भी कोई नई बातें करो। कॉन्फ्रेन्स तो बहुत पुरानी बात हो गई है, अभी नई इनवेन्शन निकालो। कम खर्च, बाला नशीन; खर्चा भी कम हो, रिज़ल्ट अच्छी निकले। अब देखेंगे, यू.पी. ऐसी इनवेन्शन निकालता है या दिल्ली। अगर खर्चा ज़्यादा और रिज़ल्ट कम होती है तो आने वाले स्टूडेण्ट दिलशिकस्त हो जाते हैं। अभी उनको भी उत्साह में लाने के लिए कम खर्चा और अच्छी रिज़ल्ट निकालो। जिसमें बिज़ी भी सब हो जाएँ, खर्चा भी कम हो। तन और मन बिज़ी हो जाए, धन कम लगेगा। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 अंत, 155 आदि)

3. देहली निवासी जैसे स्थापना के कार्य में आदि-रत्न बन निमित्त बने, अब सम्पूर्ण समाप्ति के कार्य में भी निमित्त बनो। ..... देहली 80 के वर्ष में क्या कमाल कर दिखाएगी? किस विधि से सम्पूर्णता लाएगी? कुम्भकरणों को कैसे जगाएगी? 80 के लिए नई सौगात क्या तैयार की है? जो जनवरी की 18 तारीख़ को वह सौगात बापदादा के सामने लाओ। देखेंगे, 18 जनवरी के दिन किस सेण्टर से क्या सौगात आती है? ..... स्थापना के आदि में पहले देहली आई है, तो सौगात देने में भी देहली को नं. वन होना चाहिए।..... प्रैक्टिकल प्लान बताओ, कुछ भी करो; लेकिन सौगात रूप में लाना ज़रूर है। फिर देखेंगे, हर ज़ोन से नं. वन सौगात किसकी है। ..... पहले देहली हिलेगी, तब सब गद्दियाँ हिलेंगी। कोई ऐसा लाइट हाउस बनाओ जो सबकी नज़र जाए। ..... देहली से जो आवाज़ निकलेगी तो छोटे-2 स्थानों में आपे ही पहुँचेगी। पहले देहली को पावरफुल बनाना है। फॉरेन से आवाज़ निकलेगा तो वह पहुँचेगा कहाँ? देहली ही आवाज़ को रिसीव करेगी। देहली का कनेक्शन बहुत है। अब देहली की शक्तियाँ थोड़ा मैदान पर आएँ तो आवाज़ सहज निकल सकता है। (अ.वा.28.12.79 पृ.159 आदि, 160 आदि)

4. दिल्ली को कहते हैं बाप+दादा की दिल। जैसे दिल की धकड़न से तन्दुरुस्ती का मालूम पड़ता है, वैसे दिल्ली की आवाज़ से समाप्ति का आवाज़ सुनेंगे। दिल्ली है दर्पण। तो दिल्ली वालों की कितनी ज़िम्मेवारी है। जितना बड़ा ज़िम्मेवारी का ताज, उतना ही सतयुग में भी बड़ा ताज मिलेगा। (अ.वा.11.7.70 पृ.289 अंत)

5. देहली पर सबको चढ़ाई करनी है, देहली की धरणी को प्रणाम ज़रूर करना है। देहली का विशेष पार्ट स्थापना में है और बॉम्बे का विशेष पार्ट विनाश में है। कलकत्ते का पार्ट भी आवाज़ फैलाने में अच्छा सहयोगी रहेगा।..... देहली को दिल कहते हैं।..... बापदादा की दिल अर्थात् स्थापना की दिल। ..... देहली के तरफ सभी (धर्मों) की नज़र है। बाप की भी नज़र है तो सर्व की भी नज़र है। ..... देहली से सेवा की प्रेरणा मिलनी चाहिए। जैसे सेण्ट्रल

गवर्मेण्ट है तो सेण्टर द्वारा सर्व स्टेशन को डायरैक्शन मिलते हैं, वैसे सेवा के प्लैन्स वा सेवा को नवीनता में लाने के लिए पार्लियामेण्ट होनी चाहिए।.....देहली से हर मास विशेष प्लैन्स आउट होने चाहिए, तब समाप्ति समीप आवेगी और इसी पार्लियामेण्ट हाउस में जय-जयकार होगी। पाण्डवों ने अच्छी तरह सुना! शक्तियों के बिना पाण्डव कुछ कर ही नहीं सकते। शक्तियाँ पाण्डवों को आगे रखें और पाण्डव शक्तियों को आगे रखें तब विष्णुपुरी स्थापन होगी। ..... जैसे स्थापना में नं॰ वन देहली रही वैसे विशेषताओं के गुलदस्ते में भी नं. वन बनना है। .....देहली की धरणी की विशेषताएँ बहुत हैं। पहले तो प्लानिंग पार्टी बनाओ, जिसमें चारों ओर के महारथी और शक्तियों का भी सहयोग लो। सेवा के प्रति समय-प्रति-समय देहली में संगठन होना ही चाहिए। धरणी पर महारथियों का इकट्ठा होना भी स्थापना के कार्य को वृत्ति और वातावरण से समीप लाने का कार्य करता है। जैसे मधुबन चरित्र भूमि है, मिलन भूमि है, बाप को साकार रूप में अनुभव कराने वाली भूमि है, वैसे देहली की धरणी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है, तब देहली से आवाज़ निकलेगा। अभी सबकी बुद्धियों में यह संकल्प तक उत्पन्न हुआ है कि जो कुछ कर रहे हैं, जो चल रहा है, उससे कुछ होना नहीं है। अभी सब सहारे टूटने लगे हैं; इसलिए ऐसे समय पर यथार्थ सहारा अभी जल्दी ढूँढ़ेंगे, माँग करेंगे- ऐसी नई बात कोई सुनावे और आखरीन में चारों तरफ भटकने के बाद बाप के सहारे के आगे सब माथा झुकावेंगे। (अ.वा.26.12.78 पृ.155 आदि, 156,157)

6. आज देहली दरबार वाले हैं। राज्य दरबार वाले हो या दरबार में सिर्फ देखने वाले हो? दरबार में राज्य करने वाले और देखने वाले, दोनों ही बैठते हैं। आप सब कौन हो? देहली की दो विशेषताएँ हैं, एक- देहली दिलाराम की दिल है, दूसरी- गद्दी का स्थान है। दिल है तो दिल में कौन रहेगा? दिलाराम। तो देहली निवासी अर्थात् दिल में सदा दिलाराम को रखने वाले। ऐसे अनुभवी आत्माएँ और अभी से स्वराज्य अधिकारी सो भविष्य में विश्व-राज्य अधिकारी। दिल में जब दिलाराम है तो राज्य-अधिकारी अभी हैं और सदा रहेंगे। तो सदा अपनी जीवन में देखो कि यह दोनों विशेषताएँ हैं? दिल में दिलाराम और फिर अधिकारी भी। ऐसे गोल्डन चान्स, गोल्डन से भी डायमण्ड चान्स लेने वाले कितने भाग्यवान हो! (अ.वा.14.10.87 पृ.83 मध्य)

7. दिल्ली को दरबार बनाया है? .....दरबार में कौन बैठेंगे? दरबार में पहले तो महाराजा-महारानियाँ चाहिए। कितने महाराजा-महारानियाँ तैयार हुए हैं? दिल्ली वालों को राज्य का फाउण्डेशन लगाना है। ..... विदेश से तो नाम निकलेगा; लेकिन नाम पहुँचेगा कहाँ? (दिल्ली में) तो दिल्ली वालों को नवीनता करनी चाहिए; क्योंकि सेवा का आदि स्थान है। सेवा का बीज-रूप दिल्ली है।..... और राज्य का स्थान राजस्थान भी है। तो दोनों ही हिसाब से दिल्ली वालों की विशेषता करनी चाहिए। तो क्या कहेंगे? मेला करेंगे? कॉन्फ्रेन्स करेंगे? यह तो पुरानी बातें हो गईं। नवीनता क्या करेंगे? पहली बात तो दिल्ली वालों का एक दृढ़ संकल्प

संगठित रूप से होना चाहिए कि हम सब दिल्ली का किला मज़बूत कर सफलता होनी ही है। ..... एक दृढ़ संकल्प की भट्ठी हो, फिर सब दिल्ली को कॉपी करेंगे। ..... अब डबल स्टेज स्वयं की और दूसरी, स्थान की तैयार करो। .....(ज्ञान-) यज्ञ की स्थापना के कार्य में दिल्ली की शक्ति सेना का सुदामा मिसल जो चावल चपटी काम में आई है, वह बहुत महत्व के समय काम आई है। .....दिल्ली वालों को सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त है। दिल्ली की धरणी का फाउण्डेशन अच्छा है। एग्ज़ाम्पल बनने वालों को विशेष सहयोग मिलता है। दिल्ली की निमित्त सेवा अन्य सेवा स्थानों के निमित्त एग्ज़ाम्पल बने। जैसे आदि में (बेसिक ज्ञान में) विशेषता दिखाई वैसे (एडवांस ज्ञान में) अभी भी दिखाओ, तो उसका सहयोग मिल जाएगा। दिल्ली वाले फॉरेन वालों से भी अच्छे प्लैन बना सकते हैं; क्योंकि यहाँ बहुत सेवा के साधन हैं। यहाँ मेहनत की ज़रूरत नहीं, सिर्फ (संगठन का) किला मज़बूत की बात है।.... (धर्मों में) सबकी नज़र दिल्ली पर है। जब (सभी धर्म) एक/दो के समीप हों, हाथ में हाथ मिलाएँगे तब घेराव डाल सकेंगे। हाथ में हाथ मिलाना अर्थात् संकल्प मिलाना। (अ.वा.27.5.77 पृ.177 मध्य, 178,179)

8. बाप के हो तो सबके हो। पाकिस्तान में भी यही कहते थे ना- आप तो अल्लाह के बन्दे हो, आपका किसी बात से कनेक्शन नहीं; इसलिए आप ईश्वर के हो, और किसी के नहीं। क्या भी हो; लेकिन डरने वाले नहीं। कितनी भी आग लगे .....; लेकिन जो योगयुक्त होंगे वही सेफ़ रहेंगे। ऐसे नहीं, कहे- मैं बाप की हूँ और याद करे दूसरे को। ऐसे को मदद नहीं मिलेगी। (अ.वा.17.4.84 पृ.251 अंत)

9. सभी के दिल में बाप का स्नेह समाया हुआ है। स्नेह ने यहाँ तक लाया है! दिल का स्नेह दिलाराम तक लाया है। दिल में सिवाय बाप के और कुछ रह नहीं सकता। जब बाप (राम) ही संसार है, तो बाप का दिल में रहना अर्थात् (राम) बाप में संसार समाया हुआ है; इसलिए एक मत, एक बल, एक भरोसा। जहाँ एक है वहाँ ही हर कार्य में सफलता है। कोई भी परिस्थिति को पार करना सहज लगता है या मुश्किल? अगर दूसरे को देखा, दूसरे को याद किया तो दो में एक भी नहीं मिलेगा; इसलिए मुश्किल हो जाएगा।.....ब्राह्मण जीवन है तो प्यारी है, ब्राह्मण जीवन नहीं तो प्यारी नहीं लगेगी; लेकिन परेशानी की जीवन लगेगी। तो प्यारी जीवन है या थक जाते हो? सोचते हो, संगम कब तक चलेगा? शरीर नहीं चलता, सेवा नहीं करते, इससे परेशान तो नहीं होते? .....कभी जीवन से तंग होते हो? तंग होकर यह तो नहीं सोचते हो कि अभी तो चलें। बाप अगर सेवा के प्रति ले जाते हैं तो और बात है; लेकिन तंग होकर नहीं जाना। एडवांस पार्टी में सेवा का पार्ट है और ड्रामानुसार गए तो परेशान होकर नहीं जाएँगे, शान से जाएँगे। सेवा अर्थ जा रहे हैं। तो कभी भी (विधर्मी-विदेशी) बच्चों से वा अपने-आप से तंग नहीं होना। माताएँ कभी बच्चों से तंग तो नहीं होती हो? जब हैं ही तमोगुणी तत्वों से पैदा हुए, तो

वह (विधर्मी-विदेशी) क्या सतोप्रधानता दिखाएँगे! वह भी परवश हैं। आप भी बाप की आज्ञाएँ कभी-2 भूल तो जाते हो ना! तो जब आप (जगदम्बा) भूल कर सकते हो तो बच्चों ने भूल की तो क्या हुआ?.....वह (विधर्मी-विदेशी) कितना भी परेशान करें, आप (आत्म-स्थिति की) शान से क्यों उतरते हो! कमज़ोरी आपकी या बच्चों की? वह तो बहादुर हो गए जो (हिडमबाजी) आपको (आत्मिक) शान से उतार देते हैं और परेशान कर देते हैं। तो कभी भी, स्वप्न में भी परेशान नहीं होना। ..... चाहे बीमारी से, चाहे बच्चों से, चाहे अपने संस्कारों से या औरों से। औरों से भी परेशान हो जाते हैं ना! कई कहते हैं- और सब ठीक हैं, एक ही यह ऐसा है जिससे परेशान हो जाते हैं। तो परेशान करने वाले बहादुर नहीं बनें, आप बहादुर बनो। चाहे एक (धर्मपिता) हो, चाहे दस हों; लेकिन मैं (प्रैक्टिकल) मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, कमज़ोर नहीं। .....वह कुर्सी के पीछे मरते हैं, आपको तो (राम बाप का दिल-)तख़्त मिला है। तो अकाल-तख़्त-नशीन श्रेष्ठ शान में रहने वाले बाप के दिल-तख़्त-नशीन आत्मा हैं- इसी शान में रहना। तो सदा खुश रहना और खुशी बाँटना। अच्छा! दिल्ली फाउण्डेशन है सेवा का। फाउण्डेशन कच्चा हुआ तो सभी कच्चे हो जाते हैं; इसलिए सदा पक्के रहना। (अ.वा.15.11.89 पृ.23 मध्य, 24,25)

दृष्टि-वृत्ति

1. विकारी भावना रखते हैं, तो ऐसी भावना रखने वाले भी महापापी की लिस्ट में आ जाते हैं। ब्राह्मण जीवन में बड़े-से-बड़ा पाप व दाग इस विकारी भावना का गिना जाता है। (अ.वा 19.9.75 पृ.119 मध्य)

2. इतनी हिम्मत अपने में समझते हो कि अपनी शुभ वृत्ति द्वारा प्रवृत्ति को, परिस्थिति को, प्रकृति को बदल सकते हो? अगर अपनी वृत्ति श्रेष्ठ है तो इसके आगे प्रवृत्ति वा परिस्थिति कोई भी प्रकार का वार कर नहीं सकती। (अ.वा.6.8.72 पृ.356 मध्य)

3. जब भाई-2 की दृष्टि हो जाती है, तब ही सृष्टि बदलती है।..... पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज़ का है, दृष्टि बदलने का। अगर यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है। ..... पहले अपने को बदलने से सृष्टि आपे ही बदल जावेगी। ..... देहली में यह धूम मचाओ। कौन-सी? रूहानी दृष्टि से सृष्टि बदलो। जितना स्वयं इस धुन में रहेंगे तो धूम मचा सकेंगे, फिर सर्विस आप लोगों के समीप स्वयं आवेगी। जैसे चुम्बक के आगे सूई स्वयं आती है, मेहनत कम और सफलता ज़्यादा। (अ.वा.16.9.76 पृ.1 आदि)

4. दृष्टि से सृष्टि रचने आती है? आपकी रचना कैसी है, कुख की वा नैनों की? दृष्टि से रचना रचेंगे? यह जो कहावत है कि दृष्टि से सृष्टि बनेगी। ऐसी दृष्टि जिससे सृष्टि बदल जाए। ऐसी दृष्टि में

दिव्यता अनुभव करते हो? दृष्टि धोखा भी देती और दृष्टि पतितों को पावन भी करती है। (अ.वा.6.8.70 पृ.305 अंत)

5. बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कब भी विकार की कुदृष्टि न जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ-न-कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। (मु.ता.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)

एक बाप के सिवाय कोई योग सिखा न सके

1. कोई भी देहधारी कब राजयोग का ज्ञान वा याद की यात्रा सिखला नहीं सकते। (मु.ता.19.4.74 पृ.1 मध्यांत)

2. बाप जब तक न आए तो राजयोग कहाँ से आए? (मु.ता.3.2.74 पृ.1 अंत)

3. जब समय होगा तब बाप खुद ही आकर नॉलेज देते हैं। मनुष्य दे नहीं सकते हैं। ऐसे बहुत संन्यासी बाहर में जाते हैं। कहते हैं- भारत का योग सिखाने आए हैं; परन्तु वे कोई राजयोग नहीं (सिखाते); लेकिन गपोड़ा मारते हैं। (मु.ता.15.5.73 पृ.2 अंत)

4. राजयोग मनुष्य, मनुष्यों को सिखला न सके। (मु.ता.16.9.77 पृ.2 आदि)

5. राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं; कोई शरीरधारी सिखला न सके। (मु.ता.28.6.74 पृ.3 अंत)

6. तुम जानते हो, निराकार परमपिता परमात्मा इस ब्रह्मा दलाल द्वारा हमको योग सिखलाते हैं अथवा हम आत्माओं की सगाई करते हैं। सहज राजयोग सिखलाते हैं। यह है ईश्वरीय योग। बाकी सभी योग सिखलाने वाले मनुष्य हैं। मनुष्य जो भी योग सिखावेंगे, वह राँग। दुर्गति तरफ ही ले जावेंगे। मनुष्य, मनुष्य को दुर्गति का रास्ता बताते हैं आसुरी मत पर; इसलिए उसको आसुरी योग कहा जाता है। (मु.ता.22.4.72 पृ.1 मध्यादि)

7. बाप के सिवाय जो भी योग सिखलाते हैं, वह खुद भी दुर्गति को पाते हैं, फॉलोअर्स को भी दुर्गति दिलाते हैं। भगवान ने जब योग सिखाया तो स्वर्ग बन गया। मनुष्यों के योग सिखलाने से तो स्वर्ग से नर्क बन गया। दूसरा कोई सिखला न सके। उल्टी चलन कोई चलते हैं तो बुद्धि का ताला ही बन्द हो जाता है। (मु.ता.22.4.72 पृ.3 अंत)

फाइनल पेपर

1. फाइनल पेपर में चारों ओर की हल+चल होगी। एक तरफ वायुमण्डल व वातावरण की हलचल, दूसरी तरफ व्यक्तियों की हलचल, तीसरी तरफ सर्व सम्बन्धों में हलचल और चौथी

तरफ आवश्यक साधनों की अप्राप्ति की हलचल। ऐसे चारों तरफ की हलचल के बीच अचल रहना- यही फाइनल पेपर होना है। (अ.वा.1.9.75 पृ.85 अंत)

2. परिस्थिति के आधार पर स्थिति व किसी भी प्रकार का साधन हो तब सफलता हो- ऐसा पुरुषार्थ फाइनल पेपर में फ़ेल कर देगा। (अ.वा.1.9.75 पृ.86 आदि)

3. जितना तुम नज़दीक (किसके?) आवेंगे उतना आफ़तें आदि भी आती जावेंगी। (मु.ता.19.2.69 पृ.2 मध्यांत)

4. जब चाहें शरीर का आधार लें और जब चाहें शरीर का आधार छोड़कर अपने अशरीरी स्वरूप में स्थित हो जाएँ, क्या ऐसे अनुभव चलते-फिरते करते रहते हो? जैसे शरीर धारण किया वैसे ही फिर शरीर से न्यारे हो जाना, इन दोनों का क्या एक ही अनुभव करते हो? यही अनुभव अन्तिम पेपर में फर्स्ट नं. लाने का आधार है। (अ.वा.15.7.73 पृ.131 अंत)

5. अब तो यह दूसरी/तीसरी चौपड़ी या दूसरी/तीसरी क्लास (बेसिक ज्ञान) के पेपर्स हैं। (एडवांस में) फाइनल पेपर की रूप-रेखा तो इससे कई गुना भयानक रूप की होगी .....; लेकिन शक्ति-स्वरूप का प्रैक्टिकल पार्ट व शक्ति अवतार की प्रत्यक्षता का पार्ट, स्वयं द्वारा सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने का पार्ट ऐसी ही परिस्थिति में होना है। (अ.वा.13.9.75 पृ.107 मध्य)

6. समय कभी भी बताके नहीं आएगा, अचानक ही आएगा। जब समझेंगे, समीप है तो नहीं आएगा। .....आने की निशानी अलबेलेपन वाले अलबेलेपन में आएँगे; नहीं तो नं॰ कैसे बनेंगे? ..... जो महारथी हैं, उन्हों को टचिंग आएगी; लेकिन बाप नहीं बताएगा। टचिंग ऐसे ही आएगी जैसे बाप ने सुनाया; लेकिन बाप कभी एनाउन्स नहीं करेंगे। (अ.वा.31.12.87 पृ.199 मध्य)

7. फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आवेंगी, तब तो पास और फ़ेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न न हों, यही तो पेपर है। और है भी एक सेकेण्ड का ही पेपर। (अ.वा.15.4.74 पृ.25 आदि)

8. प्रकृति का पेपर है- साधनों द्वारा आप सभी को हलचल में लाना; जैसे- पानी। अभी यह कोई बड़ा पेपर नहीं आया है; लेकिन पानी से बने हुए साधन, अग्नि द्वारा बने हुए साधन, ऐसे हर प्रकृति के तत्वों द्वारा बने हुए साधन मनुष्य-आत्माओं के जीवन का अल्पकाल के सुख का आधार हैं। तो यह सब तत्व पेपर लेंगे। अभी तो सिर्फ पानी की कमी हुई है; लेकिन पानी द्वारा बने हुए पदार्थ जब प्राप्त नहीं होंगे तो असली पेपर उस समय होगा। (अ.वा.25.10.87 पृ.102 अंत)

9. प्रकृति के पेपर तो अभी और रफ्तार से आने वाले हैं; इसलिए पहले से ही पदार्थों के विशेष आधार- खाना, पीना, पहनना, चलना, रहना और सम्पर्क में आना- इन सबकी चैकिंग करो कि कोई भी बात महीन रूप में भी विघ्न-रूप तो नहीं बनती? (अ.वा.25.10.87 पृ.103 मध्य)

10. यह तो अभी कुछ नहीं हुआ, अब तो बहुत-कुछ होना है। आप सोचेंगे, अचानक हो गया; इसलिए थोड़ा-सा हुआ; लेकिन पेपर तो अचानक आवेंगे, पेपर कोई बता कर नहीं आवेंगे।..... लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। (अ.वा.19.9.72 पृ.363 आदि, 364 अंत)

11. कभी भी फाइनल विनाश (III या IV विश्वयुद्ध) की डेट फिक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फिक्स हो जाए तो सब सीट्स भी फिक्स हो जाएँ, फिर तो (अष्टदेवों के) पास विद् ऑनर्स की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जावेगी। जब सभी इस संकल्प से निःसंकल्प होंगे, वही डेट विनाश की होगी। (अ.वा.18.1.77 पृ.25 आदि)

12. फाइनल (नष्टोमोहा के) पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी, अपने तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। उनके भेंट में जो आजकल की परिस्थितियाँ हैं, वह कुछ नहीं हैं। (अ.वा.16.10.69 पृ.122 मध्य)

13. यह फाइलन पेपर का पहले एनाउन्स कर रहे हैं- हर समय निर्बन्धन। सर्विस के बन्धन से भी निर्बन्धन। एलान निकले और एवररेडी बन मैदान पर आ पहुँचा- यह फाइनल पेपर है, जो (1947 की तरह) समय पर निकलेगा प्रैक्टिकल में। इस पेपर में अगर पास हो गए, तो और कोई बड़ी बात नहीं। (अ.वा.20.12.69 पृ.157 मध्य)

14. घबराते तो नहीं हो- सामना करना पड़ेगा? पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब (76-17&27 में) यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। (अ.वा.8.2.75 पृ.55 अंत, 56 आदि)

फॉलो फादर

1. अज़ीं को खत्म करने का सहज साधन है- सदा बाप की मर्ज़ी पर चलो। ‘‘मेरी मर्ज़ी यह है’’ तो वह मनमर्जी अर्ज़ी की फाइल बना देती है। जो बाप की मर्ज़ी वह मेरी मर्ज़ी। .....जैसे कहा जाता है- आँख बन्द करके चलते चलो। ऐसा तो नहीं, वैसा तो नहीं होगा, यह आँख नहीं खोलो। यह व्यर्थ चिन्तन की आँख बन्द कर बाप की मर्ज़ी अर्थात् बाप के कदम पीछे कदम रखते चलो। .....तो ऐसे सदा फॉलो फादर करो। फॉलो सिस्टर, फॉलो ब्रदर, यह नया स्टैप नहीं

उठाओ। इससे मंज़िल से वंचित हो जाएँगे। रिगार्ड दो; लेकिन फॉलो नहीं करो। (अ.वा.6.4.82 पृ.348 मध्य)

2. एक ही शब्द याद रहे- फॉलो फादर। जो भी कर्म करते हो, चेक करो कि यह बाप का कार्य है? अगर बाप का है तो मेरा भी है, बाप का नहीं तो मेरा भी नहीं। .....तो फॉलो फादर करने वाले अर्थात् जो बाप का संकल्प वही मेरा संकल्प, जो बाप का बोल वही मेरा। .....तो फॉलो फादर करने वाले मेहनत से छूट जाएँगे और सदा सहज प्राप्ति की अनुभूति होती रहेगी। (अ.वा.16.4.82 पृ.376 आदि)

3. निराकार स्वरूप की बात अलग है। साकार में निमित्त बन करके जो कुछ करके दिखाया, वह सब फॉलो कर सकते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। (अ.वा. 2.1.78 पृ.1 अंत)

4. जो मदर-फादर को फॉलो करेंगे वही तख्त पर भी बैठेंगे। (मु.ता.22.8.78 पृ.2 आदि)

फोटो रखना राँग

1. कोई भी गुरु-गोसाईं आदि का फोटो भी न रखना है; इसलिए बाबा फोटो निकालने की भी मना करते हैं। फोटो में तुम इस मम्मा-बाबा को देखते रहेंगे, और ही वह समय तुम्हारा नुकसान हो जावेगा। ..... बाबा को यह फोटो आदि निकालना अच्छा नहीं लगता, कहाँ साकार में फँस कर मर न जाएँ। (मु.ता.16.7.72 पृ.2 मध्य)

2. फोटो के लिए कहते हैं, मैं समझता हूँ- पूरा ज्ञान नहीं उठाया है तब फोटो माँगते हैं। यह चित्र आदि तो दुनियाँ वाले रखते हैं। (मु.ता.17.7.72 पृ.3 अंत)

3. बहुत बच्चे फोटो निकालते हैं, तो भी मना करते हैं। फोटो देख यह बाबा याद पड़ेगा, शिवबाबा भूल जावेगा। तुमको सिवाय शिवबाबा के और कोई चित्र रखना नहीं है। (मु.ता.15.5.71 पृ.3 अंत)

4. यह ज्ञान बुद्धि में है। इसमें चित्र की कोई दरकार नहीं है। बाबा धीरे-2 चित्रों को भी उड़ाते जावेंगे; क्योंकि यह चित्र सब हैं भक्तिमार्ग के। उन पर करेक्शन आदि करके फिर बच्चों को समझाने लिए यह बनाए गए हैं; नहीं तो इनकी दरकार है नहीं। (मु.ता.23.6.75 पृ.1 आदि)

5. चित्र भी कोई का न रखना है। (मु.ता.16.11.74 पृ.3 अंत)

6. बाबा समझते हैं- इनमें अज्ञान है, जो फोटो के लिए ज़िद्द करते हैं। इनमें तो कोई फायदा नहीं। यह देह तो मिट्टी है। इनका फोटो क्या देखना है? भक्तिमार्ग की जो रसम है, वह ज्ञानमार्ग में हो न सके। कब भी फोटो न माँगो। (मु.ता.13.11.70 पृ.2 मध्यांत)

7. वास्तव में तुमको इनका(ब्रह्मा) फोटो भी न रखना चाहिए। बाबा का फोटो कोई माँगते हैं, तो बाबा समझ जाते हैं, यह शिवबाबा को याद नहीं करते हैं तब इनका चित्र माँगा है। तुम्हारा वास्तव में इनसे कोई काम नहीं है। (मु.ता.24.1.75 पृ.1 अंत)

फुल सरेण्डर

1. जो पूरा बलि चढ़ते हैं उनको 21 जन्म का (राजाई वाला) वर्सा मिलता है। पूरा बलि चढ़ने का मतलब है, उसके? साथ बुद्धि रहे। यह बच्चे आदि जो कुछ हैं, सभी से बुद्धि हट जाए। (मु.ता.9.4.72 पृ.3 अंत)

2. एक तो अपना हर संकल्प समर्पण, दूसरा- हर सेकेण्ड समर्पण अर्थात् समय समर्पण, तीसरा- कर्म भी समर्पण और चौथा- सम्बन्ध और सम्पत्ति जो है, वह भी समर्पण। सर्व सम्बन्ध का भी समर्पण चाहिए। (अ.वा.29.6.70 पृ.279 आदि)

3. जब मेरा-2 है तो फ़िक्र है, जब 'तेरा' कह दिया तो बाप जाने, बाप का काम जाने, आप निश्चिन्त हो गए। 'तेरा' और 'मेरा' शब्द में थोड़ा-सा अन्तर है। 'तेरा' कहना- सब प्राप्त होना, 'मेरा' कहना- सब गँवाना। द्वापर से मेरा-2 कहा तो क्या हुआ? सब गँवा दिया ना! तन्दुरुस्ती भी चली गई, (किसकी?) मन की शान्ति भी चली गई और धन भी चला गया। कहाँ विश्व के राजन और कहाँ छोटे-मोटे दफ्तर के क्लर्क बन गए! (कौन?) बिजनेसमैन हो गए, (बौद्धी) जो विश्व के महाराजा के आगे कुछ भी नहीं है। (अ.वा.17.10.87 पृ.92 अंत)

4. अगर मन सम्पूर्ण समर्पण है तो तन, मन, धन, समय, सम्बन्ध शीघ्र ही उस तरफ लग जाते हैं। तो मुख्य बात ही है- मन को समर्पण करना अर्थात् व्यर्थ संकल्प-विकल्पों को समर्पण करना। वो ही परख है सम्पूर्ण परवाने की। (अ.वा.3.10.69 पृ.116 आदि)

5. बेहद (विश्वनाथ) का वर्सा लेना है तो हद का सब-कुछ देना पड़े। (मु.ता.5.6.78 पृ.1 मध्य)

6. जब सर्व समर्पण किया तो सर्व अर्थात् संकल्प, श्वास, बोल, कर्म, सम्बन्ध, सर्व व्यक्ति, वैभव, संस्कार, स्वभाव, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति- सबको अर्पण किया। इसको ही कहा जाता- समर्पण। (अ.वा.4.10.75 पृ.150 अंत)

7. तुम ज्ञान में आए, सरेण्डर हुए तो तुम ट्रस्टी ठहरे। तुम क्यों फिक्र करते हो? सरेण्डर किया है और फिर सर्विस भी करता है तो रिटर्न में मिलेगा। अगर सरेण्डर हुआ है, सर्विस नहीं करते तो भी उनको खिलाना तो पड़े। तो उन पैसे से ही खाते, अपना खत्म कर लेते हैं। (मु.ता.22.11.73 पृ.3 आदि)

8. जब सम्पूर्ण स्वाहा नहीं तो सम्पूर्ण सफल नहीं होता। सोचते ज़्यादा हो, करते कम हो। तो फल भी कम मिलेगा। पहले हिम्मत कम है, संकल्प पावरफुल नहीं है, तो कर्म में बल भी नहीं होगा और इसीलिए फल भी कम ही होगा। (अ.वा.18.1.75 पृ.23 मध्य)

9. जबकि तन, मन और धन- सभी बाप को समर्पण कर दिया, तो देने के बाद फिर 'मेरा विचार', 'मेरी समझ' और 'मेरा स्वभाव', यह शब्द ही कहाँ से आया? (अ.वा.15.7.73 पृ.134 आदि)

10. सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है- मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन, मन, धन सब-कुछ अर्पण। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हैं? तन से विकर्म कर ही कैसे सकते हैं और धन को भी विकल्प अथवा व्यर्थ कार्यों में लगा ही कैसे सकते हो? इससे सिद्ध है कि देकर फिर वापस ले लेते हैं। (अ.वा.18.9.69 पृ.108 मध्य)

11. सम्पूर्ण सरेण्डर या सम्पूर्ण समर्पण का छाप अगर नहीं लगा तो मालूम है कि क्या होगा? जैसे छापा न लगी चीज़ की वैल्यू कम होती जाती है, उसी रीति से आप आत्माओं की भी स्वर्ग में वैल्यू कम हो जावेगी। ..... सम्पूर्ण समर्पण पाण्डवों का ही गायन है कि गल कर खत्म हो गए। पहाड़ों पर नहीं; लेकिन ऊँची स्थिति में गल कर अपने को निचाई से बिल्कुल ऊपर जो अव्यक्त स्थिति है, उसमें गल गए। .....जो सम्पूर्ण समर्पण अर्थात् तन, मन, धन और सम्बन्ध, समय सबमें अर्पण। ..... मन सिवाय श्रीमत के एक भी संकल्प उत्पन्न नहीं करे, इस स्थिति को कहा जाता है- सम्पूर्ण। (अ.वा.3.10.69 पृ.115 मध्य)

12. विल करने में देरी तो नहीं की? जो भी बुराई है अन्दर वा बाहर, वह सम्पूर्ण विल नहीं की है, तब तक विल पावर आ नहीं सकती। साकार ने कुछ सोचा क्या कि कैसे होगा, क्या होगा, यह कब सोचा? अगर कोई सोच-2 कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता। जैसे झाटकू और बिगर झाटकू का फर्क होता है। .....जो पहले स्वीकार होता है, उनको नं॰ वन की शक्ति मिलती है। जो पहले स्वीकार नहीं होते उनको शक्ति भी इतनी प्राप्त नहीं होती है। (अ.वा.18.1.70 पृ.167 अंत)

13. दर्पण तब बनेंगे जब सम्पूर्ण अर्पण होंगे। सम्पूर्ण अर्पण तो श्रेष्ठ दर्पण, जिस दर्पण में स्पष्ट सा. होता है। अगर यथायोग्य, यथाशक्ति अर्पण हैं तो दर्पण भी यथायोग्य, यथाशक्ति है। सम्पूर्ण अर्पण अर्थात् स्वयं के भान से भी अर्पण। (अ.वा.5.4.70 पृ.244 मध्य)

14. जब सम्पूर्ण निर्विकारीपन का कसम उठावें और रहकर दिखावें तब बाबा रजिस्टर्ड करते हैं। (मु.ता.20.1.78 पृ.3 अंत)

फुल सरेण्डर भूख न मरेंगे

1. बच्चों को खाना नहीं मिलता है तो खुद भी नहीं खाते हैं, भूख में मर जाते हैं। बच्चों का दुःख बाप कैसे सहन कर सकेंगे? पहले बच्चे, पीछे बाप। माँ तो सबसे पिछाड़ी में खाती है। कुछ न बचा तो रूखा-सूखा भी खा लेगी। हमारी भंडारी भी ऐसे करती है न! (मु.ता.23.1.74 पृ.3 अंत)

2. जो जास्ती मदद करेंगे वह ऊँच पद पावेंगे। भूख तो कब कोई मर न सके। पहले तो बाप भूख मरे, फिर बच्चे मरें। अच्छे-2 बाप जो होते हैं, जब तक बच्चे न खाएँ तब तक खुद खाते नहीं; क्योंकि बच्चे वारिस हैं ना! तो उन पर लव रहता है। (मु.ता.23.2.69 पृ.4 आदि)

3. अपने को बचाने की कोशिश करनी है। अत्याचार तो होंगे। हिम्मत चाहिए। भूख तो कब कोई मर न सकें। शिवबाबा का बन और भूख मरे, यह कब हो नहीं सकता। जैसे ग़रीबों की परवरिश होती है वैसे ही साहुकारों की होती है। कोई भी भूख मर न सके। सरेण्डर कर दिया, सभी कुछ शिवबाबा को दे दिया उससे वर्सा लेने लिए। (मु.ता.3.11.68 पृ.4 मध्य)

4. कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं, कहाँ रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खाएँगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। (अ.वा.14.2.78 पृ.47 अंत)

5. बाबा की सर्विस में लग जाने से तुम कब भूख नहीं मरेंगे। हमारा खर्चा कुछ है थोड़े ही। तुम सिर्फ पेट (भर) खाते हो और क्या! (मु.ता.16.10.77 पृ.3 मध्यांत)

6. ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरण्टी है- ब्राह्मण बच्चा दाल-रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा; लेकिन दाल-रोटी ज़रूर मिलेगी। (अ.वा.24.2.85 पृ.190 अंत)

7. बाप कभी भी बच्चों को भूखा रहने न देंगे; परन्तु सपूत बच्चे भी हों ना! ब्राह्मण कब भूख मर न सके। बाप तो बैठा है ना! (मु.ता.13.10.78 पृ.3 अंत)

फुटकर प्वॉइण्ट्स

1. यहाँ भी तुमको रोना न है। गायन भी है- अम्मा मरे तो भी हलवा खाओ। जिन रोया तिन खोया। पद भी भ्रष्ट हो जावेगा। ..... जो रोने प्रूफ बनते हैं वही बादशाही लेते हैं। बाकी तो प्रजा में चले जावेंगे। (मु.ता.1.10.76 पृ.2 अंत, 3 आदि)

2. वास्तव में तुम भी सब नर्सेज़ हो ना! छी-2 गंदे मनुष्यों को देवता बनाना- यह नर्सपना है ना! बाप भी कहते हैं- मुझे डर्टी, पतित मनुष्य बुलाते हैं कि आकर पावन बनाओ। (मु.ता.7.1.75 पृ.2 अंत)

3. पु. संगम है तो बाबा भी ज़रूर होगा। वही इस दुनिया को बदलाने वाला है। (मु.ता.16.10.76 पृ.3 आदि)

4. कृष्ण को सभी का बाप नहीं कहेंगे। वह है विश्व का मालिक। उनको भी बनाने वाला शिव है। दोनों ही प्यारे हैं; परंतु दोनों से भी ज़्यादा प्यारा कौन है? कहेंगे, शिव। (मु.ता.13.9.73 पृ.3 अंत)

5. माँ-बाप जब अकेले होते हैं तो जो भी करें; लेकिन अपनी रचना के सामने होते हैं तो कितना ध्यान देते हैं। तो आप भी रचयिता हो। जो रचयिता करेंगे वही रचना करेगी। (अ.वा.16.7.69 पृ.87 अंत)

6. तुम तो जब से आए हो, युद्ध शुरू है। पुरानों से कितनी युद्ध चलती है। नए जो आएँगे, उनसे भी युद्ध चलेगी। उस लड़ाई में भी मरते रहते हैं, दूसरे शामिल होते रहते हैं। यहाँ भी मरते हैं, वृद्धि को भी पाते रहते हैं। (मु.ता.2.1.75 पृ.1 अंत)

7. कल्याण अर्थ झूठ बोलना, वह पाप नहीं होता है। बच्चियाँ छुपकर आती हैं, बहाना हॉस्पिटल का कर सेण्टर पर आ जाती हैं। वह हुआ कल्याण के लिए झूठ बोलना। (मु.ता.10.1.75 पृ.1 अंत)

गंधर्व विवाह

1. कोई बच्चे की आपस में दिल लग गई तो आपस में प्लान बनाते- अच्छा, हम गंधर्व विवाह करेंगे। मैं तुमको बचाता हूँ, बंधन से छुड़ाता हूँ। मुट्ठा, तुम कैसे बचा सकता? पहले तुम माया से बचा है? बाबा से राय ली है? श्रीमत ली नहीं है और आपस में सगाई की बातें करते हो, तो मुर्दे माया घसीट ले जावेगी। सूक्ष्म में दिल लग जाती है तो ऐसी बातें करते हो। बाबा समझ जाता है- यह रसातल जा रहे हैं। सगाई तो माता-पिता करते हैं कि मुट्ठी आपस में ही सगाई कर देते गुप्त चुप से। (मु.ता.9.10.72 पृ.3 मध्यादि)

2. पापात्माएँ पाप का ही धंधा करते। गंधर्व विवाह करेंगे तो भी बुद्धि लटकी रहेगी। यह भी क्यों करें? पिछाड़ी में तो सिवाय बाप के कुछ भी याद ना आए तब स्कॉलरशिप मिल सकती। विश्व के मालिक बनते हो। (मु.ता.2.7.70 पृ.4 मध्य)

3. गंधर्व विवाह करने बाद फिर माया एकदम तवाई बना देती है। माया भी (पतित बनाने में) बड़ी प्रबल है न! बाबा प्रबल है पावन बनाने में; इसलिए उनको सर्वशक्तिवान, पतित-पावन कहा जाता है। (मु.ता.19.12.73 पृ.1 अंत)

4. अगर कोई कहते हैं- मैं शादी करता हूँ तो आसुरी राह पर चलने वाला हो गया। बाप तो तुमको ले जाते हैं बहिश्त में। फिर अगर दोजख की याद आई, गटर में जाकर पड़े, तो उनको कहेंगे- डर्टी ब्रूट्स। तुमको तो दैवी परिवार का बनना है। गटर में जाने की कब आस भी न रखना है। (मु.ता. 27.1.75 पृ.1 मध्य)

5. बाप से प्रतिज्ञा कर फिर अगर शादी कर ली तो पूरी बरबादी हो जावेगी। स्वर्ग का मुँह भी नहीं देख सकेंगे। (मु.ता. 24.5.71 पृ.4 अंत)

6. कई गंदे खयालात वाले बच्चे समझते हैं- हमको यह फलाना बहुत अच्छा लगता है, इनसे हम गंधर्वी विवाह कर लें; परंतु यह गंधर्वी विवाह तो तब कराते हैं जबकि मित्र-सम्बंधी आदि बहुत तंग करते हैं तो उनको बचाने लिए। ऐसे थोड़े ही सब कहेंगे- हम गंधर्वी विवाह करेंगे। वह कब रह न सकें। पहले दिन ही जाय गटर में गिर पड़ेंगे। .....गंधर्वी विवाह करना कोई मासी का घर नहीं। एक/दो से दिल लगी तो कह देते- गंधर्व विवाह करें। इसमें माइयों को बड़ा खबरदार रहना चाहिए। समझना चाहिए- यह बच्चे काम के नहीं। जिससे दिल लगी है, उससे हटा देना चाहिए; नहीं तो बातें कर देंगे। इस सभा में बड़ी खबरदारी रखनी होती है। आगे चल बड़े कायदेसिर सभा लगेगी। ऐसे-2 (बरबादी के) खयालात वाले को आने न देंगे। (मु.ता.20.4.75 पृ.3 आदि)

7. कुमारी को तो शादी कराने की दरकार नहीं, और ही झंझट पड़ता। कन्या को बंधन डालते हैं, तो कसाइयों से बचाने लिए कोशिश करनी पड़ती है। मनुष्य एक/दो का कोस कैसे करते हैं, यह कोई को पता नहीं। (मु.ता.3.2.78 पृ.2 अंत)

8. कन्या की शादी के लिए पूछते हैं। अगर ज्ञान में नहीं चल सकती तो भल करा दो। बच्ची की शादी करानी है। बाकी बच्चा पवित्र नहीं बनता, तुम्हारी आज्ञा नहीं मानता तो फिर हंस-बगुले इकट्ठे कैसे रहेंगे? बोलो- पवित्र बनो तो रहो, नहीं तो निकलो बाहर। आज्ञाकारी बनना है। बाप हमेशा सही डायरैक्शन देंगे, अगर राँग दिया तो भी रेस्पॉन्सिबल बाप है। (मु.ता.12.7.73 पृ.2 मध्यांत)

9. कहते हैं- बाबा, बंधन है। शादी करूँ? साथी चाहिए। शादी करनी है, जाकर करो, जाकर मरो। बाबा क्या करेंगे? तुमको वर्सा पाना है तो पवित्र रहना है। पवित्रता के लिए कोई कुछ कर न सकता। अगर कोई मारता है तो रिपोर्ट करो। शादी के लिए पूछते हैं, यह भी बहाना है। चल न सके। गंधर्वी विवाह कर फिर अंदर घुटके खाते रहते। इससे तो बैचलर रहना अच्छा है। (मु.ता.30.11.73 पृ.3 अंत)

10. शादी करना चाहते हो तो वर्सा नहीं मिलेगा। (मु.ता.27.11.77 पृ.2 अंत)

11. बच्ची की शादी करानी है तो साक्षी होकर पार्ट बजाओ; नहीं तो झगड़ा हो पड़ेगा, मार-पीट चलेगी। बच्चियाँ निर्विकारी नहीं बनना चाहती हैं तो लाचारी हालत में उनकी शादी-बरबादी करा दो। पवित्र रहना न चाहती हैं तो जावें जहन्नुम में। रवाना कर देना चाहिए; नहीं तो वेश्या बन पड़ेगी। (मु.ता.19.8.73 पृ.3 मध्य)

12. अभी एक जोड़ी का स्वयंवर हुआ है। बाबा ने पहली बारी ही ऐसा देखा। आपस में भाकी भी नहीं पहनते। जैसे बाजू में कोई सोते हैं, यां तो कहते थे- अलग जाकर सो जाओ। शुरू से ही कितनी हिम्मत दिखाई है। कमाल है ना! ऐसे चलते रहें तो कितना ऊँच पद पावेंगे। (मु.ता.17.6.70(67) पृ.2 मध्यांत)

13. बहुत करके माताएँ ही लिखती हैं- बाबा, हमको बहुत तंग करते हैं, हम इस बंधन से कैसे छूटें? पुरुष कोई एकर-बेकर(एक/दो) होगा जो कहेंगे। अंदर में दिल होती है, बाहर से आकर कहते- बाबा, हमको शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। हम क्या करें? अरे, तुम कोई जानवर थोड़े ही हो जो ज़बरदस्ती करेंगे। अंदर में दिल है तब पूछते हो- क्या करें। तो बाबा भी कहेगा- अच्छा, भल शादी करो। तुम रह न सकेंगे। इसमें तो पूछने की भी बात नहीं रहती। जीवात्मा अपना मित्र है, अपना शत्रु है। जो चाहे सो करे। पूछना माना (शादी की) दिल है। (मु.ता. 29.3.75 पृ.3 आदि)

14. विकार के लिए शादी बरबादी है। .....आधा कल्प भक्तिमार्ग में विकार के लिए शादी चली। अब संगम पर हैं। अब विकार के लिए शादी करना बरबादी है। परमपिता परमात्मा शिव के साथ सगाई आबादी कर देती है। (मु.ता.9.3.78 पृ.3 अंत)

15. इस समय शादी करना पूरी बरबादी है। यहाँ शिव साजन साथ सगाई करने से पूरी आबादी हो जावेगी स्वर्ग में। (मु.ता.23.3.78 पृ.3 अंत)

गृहस्थ-व्यवहार

1. यहाँ वह रसम नहीं (है) कि पियर घर, ससुर घर को छोड़ यहाँ आकर बैठे। यह हो नहीं सकता। यहाँ तो गृहस्थ-व्यवहार में रहते कमल-फूल समान रहना है। कुमारी है वा कोई भी है, उनको कहा जाता है- घर में रह रोज़ ज्ञानामृत पीने आओ। (मु.ता.5.2.73 पृ.1 मध्य)

2. पुराना सम्बन्धी से भी तोड़ निभाना है युक्ति से। गृहस्थ-व्यवहार में रहते कमल-फूल समान रहना है। (मु.ता.30.4.73 पृ.4 अंत)

3. घर में रहने वालों की यहाँ रहने वालों से अच्छी उन्नति होती है। तुमको कब मना नहीं की जाती है कि घर में न जाओ। (मु.ता.7.2.68 पृ.2 अंत)

4. दोनों तरफ तोड़ निभाओ। गृहस्थ-व्यवहार में भी रहना है। अंत तक दोनों तरफ निभाना है। (मु.ता.3.2.78 पृ.1 मध्य)

5. बाप कहते हैं- गृहस्थ-व्यवहार में रहो; परन्तु इतना कमज़ोर नहीं होना है, जो स्त्री, बच्चे आदि आज्ञा ही न मानें। (मु.ता.14.11.73 पृ.2 मध्यांत)

6. भल गृहस्थ-व्यवहार में रहो, कहाँ शादी आदि पर भी जाओ। जब फुर्सत मिले तो बाप को याद करो। शरीर निर्वाह अर्थ कोई भी कर्म करते हुए, तुम्हारी जिससे सगाई हुई है, उनको और उनके घर को याद करना है। (मु.ता.27.7.77 पृ.3 अंत)

7. गृहस्थ-व्यवहार में रहते पवित्र रहने का व्रत पालना है। घर में घोटाला तो ज़रूर पड़ेगा। कुछ भी हो जाए, तुम पवित्रता का व्रत ज़रूर पालन करो; नहीं तो पद भ्रष्ट हो जाएगा। (मु.ता.16.10.73 पृ.2 मध्य)

8. गृहस्थ-व्यवहार में रह पुरुषार्थ करना है। वह भी छोड़ना न है। सर्विस करनी है पवित्र बनने की। फिर अपने मित्र-सम्बन्धियों आदि को भी लायक बनाओ। (मु.ता.15.10.73 पृ.4 आदि)

9. गृहस्थ-व्यवहार में रहते हुए, इसका मतलब यह नहीं कि कोई को गृहस्थ न है तो ज़रूरी जाना ही पड़े। नहीं। (मु.ता.28.11.73 पृ.2 अंत)

10. जो गृहस्थ-व्यवहार में रहते हैं, सर्विस करते हैं, वह यहाँ रहने वालों से भी अच्छा पद पा सकते हैं। (मु.ता.2.1.72 पृ.1 अंत)

11. गृहस्थ-व्यवहार में रहते पवित्र रह दिखाओ, तब ऊँच-ते-ऊँच पद पावेंगे। (मु.ता.28.4.72 पृ.1 मध्यांत)

12. बाबा सभी को तो यहाँ बिठा न देंगे, गृहस्थ-व्यवहार में अपने घर में रहना है। यहाँ रिफ्रेश होने भल आओ। (मु.ता.15.5.72 पृ.3 आदि)

13. ऐसे नहीं कि (स्त्री-पुरुष) दोनों को अलग-2 रहना है। नहीं! साथ में रहकर अपनी जाँच करनी है कि आग तो नहीं लगती। नगन नहीं होना है। (मु.ता.8.10.72 पृ.1 अंत, 2 आदि)

14. बहुत कहते हैं- हम यहाँ ही बैठ जावें। फिर तेरे कर्मबन्धन, बाल-बच्चे कहाँ जावेंगे? कहते हैं- वह भी आप सम्भालो। ऐसे कितने के बच्चे सम्भालेंगे? लेकिन ठहरो, तुम पहले सर्विसएबुल बनो तो तेरे बच्चों का भी प्रबन्ध हो जावेगा। जैसे-2 आदि में हुआ था वैसे अंत में होगा। बच्चों की भी फिर हॉस्टल खोलेंगे। यह प्रोग्राम ध्यान पर है। (मु.ता.18.10.72 पृ.3 मध्यादि)

15. यहाँ सभी को तो बैठ नहीं जाना है। वह तो जिनको पतित तंग करते हैं तब यहाँ भाग आती हैं। पहले भी उन्होंने तंग किया था तब भागी थीं। कोई साहुकार घर की होती तो बाबा उन्हों को भी कहते कि बर्तन माँजना पड़ेगा, झाड़ू लगाना पड़ेगा। (मु.ता.17.11.71 पृ.3 अंत)

16. बाप आते ही हैं बच्चों को सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाने। बाकी और गृहस्थ-व्यवहार की बातों को तो हर एक को खुद ही सुलझाना है। (मु.ता.2.9.69 पृ.2 अंत)

17. गृहस्थ-व्यवहार में रहने से फर्क तो रहता है ना! वह इतना नहीं समझा सकते हैं जितना तुम; परन्तु सभी तो नहीं छोड़ सकते। (मु.ता.2.12.70 पृ.3 आदि)

18. रहो भल अपने गृहस्थ-व्यवहार में। गाया हुआ है कि शरण पड़ी मैं तेरे। यह भी होता है, जब कोई दुःखी होते हैं तो ऊँच ताकत वाले की जा(ए) शरण लेते हैं। यहाँ तो प्रैक्टिकल में है। जब बहुत दुःख देखते हैं, सहन नहीं कर सकते हैं, लाचारी होती (है) तो फिर भाग आकर बाप की शरण लेते हैं सद्गति के लिए। यह ही राइट है शरणागति। (मु.ता.5.8.76 पृ.3 आदि)

19. गृहस्थ-व्यवहार में रहने वाले यहाँ रहने वालों से अच्छा पुरुषार्थ कर सकते हैं, बहुत अच्छी-2 बहादुरी दिखा सकते हैं। उनको ही महावीर कहा जाता है, जो गृहस्थ-व्यवहार में रहते कमल-फूल समान रह दिखावें। (मु.ता.5.4.71 पृ.2 आदि)

20. गाते भी हैं- तुम पर बलिहार जाऊँ, तो ज़रूर इन एडवांस बलिहार जावेंगे ना! .....बलिहारी भी पूरी चाहिए। वह भी राज़ तो समझाया है। ऐसे नहीं कि सभी बाबा के पास ले आकर बैठ जाना है। तुमको अपना शरीर निर्वाह भी करना है, बाल-बच्चों को सम्भालना है; परन्तु श्रीमत पर चलना है। (मु.ता.7.3.78 पृ.1 अंत)

1. सबसे ज़्यादा समीप (चेतन) गुज+रात है ना! (उसी) समीप के साथ सहयोगी भी गुजरात वाले (8) हैं। सहयोग में गुजरात का नं. राज+स्थान से आगे है। .....गुजरात का जन्म कैसे हुआ, पता है? गुजरात को पहले (ब्रह्मा कुमारी) सहयोग दिया गया। सहयोग के (बेसिक ज्ञान-)जल से बीज पड़ा हुआ है, तो फल भी सहयोग का ही निकलेगा ना! गुजरात को डायरैक्ट बाप+दादा के संकल्प (पालडी से.) के सहयोग का पानी मिला है। ..... गुजरात में बाप+दादा ने सेण्टर खोला है, गुज+रात ने नहीं खोला है। .....किसी भी कार्य में आपको, (गुजरात को) मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। (सारी) धरणी (माता) सहयोग के फल की है। (अ.वा.12.12.83 पृ.44 अंत, 45 आदि)

2. गुजरात से बहुत (राजयोग के) सेवाधारी निकले हैं; लेकिन गुजरात की (चेतन ज्ञान-)नदियाँ गुजरात में ही बह रही हैं। गुजरात कल्याणकारी नहीं, विश्व(नाथ-) कल्याणकारी बनो। सदा एवररेडी रहो।..... चाहे कहाँ (विदेश में) 20 वर्ष भी रहो; लेकिन स्वयं सदा एवररेडी रहो, स्वयं नहीं सोचो कि कैसे होगा। इसको कहा जाता है- महात्यागी। (अ.वा.26.4.82 पृ.393 आदि)

3. गुजरात के सच्चे सेवाधारी। सच्चे सेवाधारी कहो वा रूहानी सेवाधारी कहो। ..... गुजरात के रूहानी सेवाधारियों की विशेषता क्या है? (एवररेडी हैं) एवररेडी (फाइनेन्स-सप्लाई आदि की) स्थूल सेवा में तो हैं; क्योंकि सेवा के जो भिन्न-2 साधन हैं, उसमें जहाँ बुलावा होता है वहाँ पहुँचने वाले हैं; लेकिन मंसा से भी जो संकल्प धारण करने चाहो, उसमें भी सदा एवररेडी हो? जो सोचो, वह करो उसी समय। इसको कहा जाता है- एवररेडी। मंसा से भी एवररेडी, संस्कार-परिवर्तन में भी एवररेडी, रूहानी सम्बन्ध और सम्पर्क निभाने में भी एवररेडी। तो ऐसे एवररेडी हो या (60 साल का) टाइम लगता है? संस्कार मिटाने में वा संस्कार मिलाने में टाइम लगता है? इसमें भी एवररेडी बनो; क्योंकि गुजरात की रास मशहूर है। वह (डंडी वाली) रास तो बहुत अच्छी करते हो; लेकिन रास मिलाना, बाप से संस्कार मिलाना, यह है (राम) बाप के संस्कारों से रास मिलाने की रास। .....संस्कार मिलाना यही बड़े-ते-बड़ी रास है। .....लक्ष्मी के साथ गणेश की भी पूजा करते हैं। गणेश बच्चा है ना! तो सिर्फ लक्ष्मी की पूजा नहीं; लेकिन आप सब गणेश अर्थात् बुद्धिवान हो। तीनों कालों के नॉलेजफुल, इसको कहा जाता है- गणेश अर्थात् बुद्धिवान/समझदार। ..... तो नॉलेजफुल भी हो और विघ्न-विनाशक भी हो; इसलिए पूजा होती है। .....तो सदा किसी भी परिस्थिति में विघ्न रूप न बन विघ्न-विनाशक बनो। ..... गुजरात विघ्न-विनाशक हो गया तो फिर कोई भी विघ्न की बातचीत ही नहीं होगी ना! .....जैसे गुजरात सेवा में नं॰ वन है, ऐसे विघ्न-विनाशक में नं॰ वन हो तब प्राइज़ देंगे, बहुत बढ़िया (अष्टदेव की) प्राइज़ देंगे। जो बाप को (सिर पर) सौगात मिलती है ना, वह आप गुजरात को देंगे। (अ.वा.27.10.81 पृ.82अंत, 83आदि)

4. अभी (सन 81) तक गुजरात को दहेज में सेण्टर नहीं मिले हैं, बॉम्बे को मिले हैं। गुजरात जब (ज्ञान-योगादि) सबमें नम्बरवन है तो इसमें क्यों नहीं? वैसे गुजरात (का कुमार) जो चाहे वह कर सकता है। (लाखों AIVV सें. बना सकता है।) (अ.वा.29.10.81 पृ.97 आदि)

5. गुजरात अर्थात् जहाँ (अज्ञान की) रात गुज़र गई, सदा दिन है, सदा रोशनी-ही-रोशनी है, अन्धकार मिट गया। (अ.वा.15.4.81 पृ.158 मध्य)

6. (परमपिता का) स्नेही और सहयोगी बनने की तकदीर अच्छी है। (नौलखा) परिवार-का-परिवार एकमत हो जाए तो यह भी तकदीर की निशानी है। परिवार के सब साथी पुरुषार्थ की रेस में एक/दूसरे से आगे निकलने की लगन में लगे हुए हैं। हिम्मत से मदद स्वतः ही प्राप्त होती है। (वीर+चंद को) यह (8 का नष्टोमोहा वाला) मोहजीत परिवार है। ऐसे मोहजीत परिवार कितने बनाए हैं? (9 का) लक्ष्य श्रेष्ठ रखा हुआ है। अब ऐसे परिवारों का गुलदस्ता बनाओ। अगर (रूद्रगणों के) दस-ग्यारह ऐसे परिवार हो जाएँ तो अहम+दा+बाद का नं. आगे हो जावेगा। गुजरात को परिवारों को चलाने का वरदान ड्रामानुसार मिला हुआ भी है; लेकिन मोहजीत परिवार और सब एक लगन में श्रेष्ठ पुरुषार्थ की लाइन में हो- ऐसा गुलदस्ता बनाओ। (अ.वा.9.2.75 पृ.61 अंत)

7. गुजरात तो बड़ा (विश्वनाथ-जगन्नाथ) है ना! संख्या में तो बड़ा (5-7 अरब) है ही, अब साक्षात् रूप में भी बड़े (विराट रूप) बनकर दिखाना। (त्रिनेत्री) गुजरात की धरणी (ल./पार्वती) अच्छी है। जहाँ धरणी अच्छी होती है वहाँ पावरफुल बीज डाला जाता है। पावरफुल बीज है वारिस क्वालिटी का बीज (सारे विश्व का मालिक)। ..... क्वाण्टिटी तो बहुत अच्छी है (7 अरब), क्वालिटी भी है; लेकिन और निकालो। एक-2 क्वालिटी वाले को वारिस ग्रुप का सबूत देना है। गुजरात में सहज निकल भी सकते हैं। अब (प्रजा का) विस्तार ज़्यादा हो रहा है; इसलिए (8 या 108) वारिस छिप गए हैं। अब उनको प्रत्यक्ष करो। समझा, गुजरात को क्या करना है? दूसरे (प्रजा को) सम्पर्क में लावें, आप (सर्व) सम्+बन्ध में लाओ तो नं॰ वन हो जाएँगे। इस वर्ष का प्लैन भी बता दिया। अभी विस्तार में बिज़ी हो गए हैं। ..... (आदि जैसे) अब फिर से बीज अर्थात् वारिस क्वालिटी निकालो। जो आदि में सो अंत में करो। (अ.वा.21.1.80 पृ.230 मध्य, 231 आदि)

8. गुजरात की क्या विशेषता है? गुजरात की यह विशेषता है- (जो राजा) छोटा-बड़ा, खुशी में ज़रूर नाचते हैं। ..... (डांडिया) रास के लगन में मगन हो जाते, सारी-2 रात भी मगन रहते। .....इस अविनाशी लगन में मगन रहने के भी नं॰ वन अभ्यासी हो ना! विस्तार भी अच्छा है। इस बारी मुख्य स्थान (मधुबन) के समीप के साथी दोनों ज़ोन (गुज..राज.) आए हैं। एक तरफ है

गुजरात, दूसरी तरफ है राजस्थान। दोनों समीप हैं ना! सारे (ईश्वरीय) कार्य का सम्बन्ध राजस्थान और गुजरात से है। (अ.वा.24.4.84 पृ.268 मध्यांत)

9. गुजरातियों ने (तन-मन-धन से) बाप का बनने में, स्वयं को सेवा में लगाने में नं. अच्छा लिया है। सहज ही सहयोगी बन जाते हैं। यह भी भाग्य है। संख्या गुजरातियों की अच्छी है। (रूद्र गण रूप से) बाप का बनने की लॉटरी कोई कम नहीं है। (दुनियाँ के) हर स्थान पर कोई-न-कोई बाप के बिछुड़े हुए रत्न हैं ही। जहाँ भी पाँव रखते हैं तो कोई-न-कोई निकल ही आते। बेपरवाह, निर्भय हो करके सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो पदमगुणा मदद भी मिलती है। ऑफिशियल निमन्त्रण तो फिर भी यहाँ (गुजरात) से ही आरम्भ हुआ। फिर भी सेवा का जमा तो हुआ ना! वह जमा का खाता समय पर खींचेगा ज़रूर। तो सभी नं॰ वन तीव्र पुरुषार्थी आफरीन लेने वाले हो ना! नं॰ वन (बाप-टी.-सद. का) सम्बन्ध निभाने वाले, नं॰ वन सेवा में सबूत दिखाने वाले, सबमें नं॰ वन होना ही है। तब तो आफरीन लेंगे ना! (अ.वा.27.2.86 पृ.238 अंत, 239 आदि)

10. गुजरात को (सदा) सहज+योगी का वरदान मिला हुआ है। गुजरात की धरणी (भारतमाता) सात्विक होने के कारण बनी-बनाई धरणी है। बनी-बनाई धरणी में बीज पड़ने से फल सहज निकल आता है।.....सदा विजय का झण्डा (भारत माता के) हाथ में हो। अब ऐसी विशेष (V.I.P.) आत्माओं को सम्पर्क में लाओ, जिन्हों से सेवा का आवाज़ दूर तक फैले। ज्ञान के हिसाब से विशेष व्यक्ति नहीं; लेकिन दुनिया के हिसाब से जो (धर्मपिताएँ) विशेष व्यक्ति हैं, उनकी सेवा करो। इससे स्वतः ही अख़बार वाले, रेडियो, टी.वी. वाले आवाज़ फैलाते हैं। ऐसी कोई (विजयमाला की) विशेष आत्मा निकालो, जिनके आवाज़ से अनेक आत्माओं का कल्याण हो जाए। .....अभी ऐसी स्पीड चाहिए। राज्याधिकारी (राजाएँ) तो अपना भाग्य लेते रहेंगे; लेकिन संदेश तो सभी को देते जाओ, जो उल्लाहना न रह जाए। (अ.वा.6.1.79 पृ.183 मध्य)

गुण-अवगुण

1. खुद मीठा बन फिर औरों को भी मीठा बनाता हूँ। खुद ही कड़ुवा होगा तो दूसरों को मीठा कैसे बनावेंगे? (मु.ता.15.10.76 पृ.1 मध्य)

2. गीत गाना नहीं है। वास्तव में सुनना भी नहीं है। (मु.ता.15.4.71 पृ.1 आदि)

3. हवस होती है; परंतु कर्मेन्द्रियों से चोरी आदि नहीं करना है। छिपाय कर उठाना न चाहिए। बिगर छुट्टी यज्ञ से कोई चीज़ उठाई, वह भी चोरी है। बहुत हैं जो छिपकर खाते हैं, चोरी करते हैं। यह तो शुरू से ही चला आया है। (मु.ता.10.2.68 पृ.1 अंत)

4. कोई का सिगरेट पीना नहीं छूटता, कोई का शराब पीना, जुआ खेलना नहीं छूटता, विकार नहीं छूटते। तो समझो, हम लायक नहीं हैं ऊँच पद के। धणी का बनकर फिर ऐसा कोई गंदा काम न करना चाहिए। (मु.ता.10.2.68 पृ.1 मध्यांत)

5. आवाज़ से हँसना न है। ल.ना. को हर्षितमुख कहा जाता है। हर्षितमुख रहना और हँसना, अलग बात है। .....खिल-खिल करना भी एक विकार है। (मु.ता.8.9.73 पृ.3 अंत)

6. जो खुद ही रोते हैं तो और की क्या सर्विस कर उनको हँसावेंगे! यहाँ हँसना सीखना है अर्थात् मुस्कुराना। आवाज़ से भी हँसना न है। (मु.ता.10.1.72 पृ.3 अंत)

7. आपस में लड़ना-झगड़ना तो आरफ़न का काम है। (मु.ता.29.4.72 पृ.2 मध्य)

8. सारा दिन कोई की निन्दा करना, परचिंतन करना, इनको दैवीगुण नहीं कहा जाता। देवताएँ ऐसे काम नहीं करते हैं। (मु.ता.1.1.71 पृ.2 मध्य)

गुरु-गोसाई भ्रष्टाचारी

1. माइयों को भी सिखलाते हैं, फिर जो कुछ मिलता है, आपस में हिस्सा कर लेते हैं। बहुत कॉपी करते हैं और बहुत कॉपी करेंगे। तुम देखना, कितनी ब्र.कु. बन जाती हैं। फायदा कुछ भी नहीं। .....कौड़ी बदले हीरा देना- यह तो बाप का ही (काम) है। बाकी तो ठग लेते हैं, पैसा लेकर खा जाते हैं, और ही तमोप्रधान बन जाते। (मु.ता.27.2.74 पृ.2 मध्य)

2. बाप जब तक न आए तो राजयोग कहाँ से आए? दुनियाँ में करप्शन, एडल्ट्रेशन तो बहुत है, राजयोग भी नहीं तो हठयोग भी नहीं। यह फिर नई कुछ रिद्धि-सिद्धि सीखते हैं (आँख लड़ाने आदि) अनेक प्रकार की। (मु.ता.3.2.74 पृ.1 अंत)

3. वे लोग कंस, जरासन्धी, हिरण्यकश्यप आदि को सतयुग में ले जाते हैं और कृष्ण को फिर द्वापर में ले गए हैं। ..... सभी असुरों का अलग-2 नाम देते हैं। कुम्भकरण आदि यह सभी असुरों के नाम हैं। अभी है आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् आसुरी मत पर चलने वाले। (मु.ता.5.5.73 पृ.2 मध्यादि)

4. आगे भिक्षा लेने जाते थे, स्त्री का मुँह नहीं देखते थे। आँखें बन्द कर ले जावेंगे, फिर आँख खोलेंगे। शुरू-2 में ऐसे थे। (मु.ता.15.5.73 पृ.1 अंत)

5. एक दिन तुम बच्चे इन सबकी पोल पदरी करेंगे। बड़े-2 गुरू-गोसाईं, पण्डित आदि हैं। आख़रीन यह सब ठण्डे हो जावेंगे। (मु.ता.22.10.78 पृ.3 आदि)

6. बाप अपनी बच्ची को भी गंदा कर देते हैं। बाबा के पास तो सब अपना समाचार देते हैं ना- हमने यह ख़राब काम किया। ऐसे बहुत मिसाल होते हैं- कोई गुरू से ख़राब, कोई भाई से, कोई मामे से ख़राब हो पड़ते। इनको कहा ही जाता है- वेश्यालय। (मु.ता.8.2.75 पृ.2 आदि)

7. नामी-ग्रामी बड़े-2 साधु-संत आदि जो अपनी पूजा कराते हैं, उनको हिरण्याकश्यप कहा हुआ है। जिनको ही नर+सिंह रूप धारण कर फिर विनाश कराते हैं। (मु.ता.25.10.78 पृ.1 मध्य)

8. तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। भल बड़े-2 महारथी म्यूज़ियम सम्भालने वाले हैं; परन्तु कुछ भी समझते नहीं। (मु.ता.24.9.70 पृ.2 मध्यांत)

9. गुरुओं ने तो सत्यानाश कर दी है। एक गुरु (ब्रह्मा) मर गया, फिर जो (कुमारिका-जनकादि) गद्दी पर बैठा, उनको गुरू कर लेते। यह तो (शुरू से) एक ही सत+गुरु है। (मु.ता.19.9.73 पृ.3 अंत)

10. नीचे-ते-नीचे भ्रष्टाचारी हैं कलियुगी गुरु, जो भगवान को सर्वव्यापी कह, भगवान जो भारत को स्वर्ग बनाते हैं, उनसे विमुख कर देते और ईश्वर को गालियाँ देने सिखलाते हैं। (मु.ता.31.10.73 पृ.1 मध्य)

11. एक गुरू मरा तो अपने शिष्य को अपना गुरू कर देते। (ब्रह्मा) गुरू मर गया, उसने पार न किया तो उनके शिष्य (जगदीश) को गुरू करने से फिर क्या होगा? (वह भी मरेगा) यह तो बाप गैरण्टी करते हैं- हम कल्प-2 सभी को ले जाता हूँ। (मु.ता.11.6.72 पृ.3 मध्यादि)

जानी-जाननहार

1. शरीर बिगर बाप बात कैसे करेंगे? सुनेंगे कैसे? आत्मा को शरीर है तब सुनती-बोलती है। बाबा कहते- मुझे ऑरगन्स ही नहीं तो सुनूँ, देखूँ, जानूँ कैसे? समझते हैं- बाबा तो जानते हैं, हम विकार में जाते हैं। अगर नहीं जानते हैं तो भगवान ही नहीं मानेंगे। ऐसे भी बहुत होते हैं। (मु.ता.30.6.75 पृ.3 मध्य)

2. यह ख्याल कब नहीं करना है कि बाबा तो सब-कुछ जानते ही हैं। बहुत हैं जो विकार में जाते, पाप करते रहते हैं और फिर यहाँ अथवा सेण्टर्स पर आ जाते हैं। समझते हैं, बाबा तो जानते हैं; परन्तु बाबा कहते- हम जानते नहीं। हम यह धंधा ही नहीं करते। जानी-जाननहार अक्षर भी राँग है। (मु.ता.30.6.75 पृ.1 आदि)

3. यह कब ख्याल न करो कि बाबा तो सब-कुछ जानता है। बाबा को जानने की क्या दरकार है? जो करेंगे सो पावेंगे। बाबा साक्षी हो देखते रहते हैं। (मु.ता.30.6.75 पृ.2 आदि)

4. जानी-जाननहार का यह मतलब नहीं कि वह हमारे अन्दर को जानते हैं। बाप कहते हैं- मैं कोई थॉट रीडर नहीं हूँ। (मु.ता.11.6.75 पृ.1 अंत)

5. भारतवासी यह भी बहुत भूल करते हैं, जो कहते हैं- वह अन्तर्यामी हैं, सभी के अन्दर को जानते हैं। बाप कहते हैं- मैं कोई के भी अन्दर की नहीं जानता हूँ। मेरा तो काम ही है पतितों को पावन बनाना। (मु.ता.1.1.73 पृ.1 मध्यांत)

6. कई बच्चे बाबा को लिखते हैं- बाबा, आप तो जानी-जाननहार हो, सब-कुछ जानते होंगे। बाबा ऐसे लिखने वाले को मूर्ख समझते हैं। मैं तो नॉलेज देने आया हूँ, एक-2 के अन्दर की बात को रीड करने थोड़े ही आया हूँ। (मु.ता.30.11.73 पृ.3 आदि)

जिम्मेवारी

1. ऑफिसरों के गफ़लत से अनाज के गोदाम खराब हो जाते हैं। फिर जला देते हैं। यहाँ मनुष्य भूख मरते हैं। (मु.ता.24.4.72 पृ.1 अंत)

2. तुम अपनी स्त्री को ही वश नहीं कर सकते हो तो विकारों को कैसे वश करेंगे? तुम्हारा फ़र्ज़ है स्त्री को अपने हाथ में रखना। (मु.ता.24.4.72 पृ.2 आदि)

3. (सृष्टिवृक्ष की) कलम में जो कमज़ोरी होगी, वह सारे वृक्ष में कमज़ोरी होगी। इतनी ज़िम्मेवारी हर एक अपनी समझते हो? यह तो नहीं समझते कि हम छोटे हैं वा पीछे आने वाले हैं, ज़िम्मेवारी बड़ों के ऊपर है। ..... ज़िम्मेवारी में भी छोटे-बड़े सब अधिकारी हो। सब साथी हो। तो इतनी ज़िम्मेवारी के अधिकारी समझ करके चलो। स्व-परिवर्तन, विश्व-परिवर्तन- दोनों के ज़िम्मेवारी के ताजधारी सो विश्व के राज्य के ताज अधिकारी होंगे। (अ.वा.12.10.81 पृ.36 मध्य, 37 आदि)

4. बापदादा हर एक के ज़िम्मेवारी समझने का चार्ट देख रहे हैं कि हर एक अपने को कितना ज़िम्मेवार समझते हैं? विश्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी का ताज धारण किया है वा नहीं?..... सदा पहनते हो वा कभी-2 पहनते हो? अलबेले तो नहीं बनते? ऐसा तो नहीं समझते कि ज़िम्मेवारी बड़ों की है, हम तो छोटे हैं। .....सभी हाथ उठाते हो ल॰ना॰ बनने के लिए, तो जब वह राज्य का ताज पहनना है तो उस ताज का आधार सेवा की ज़िम्मेवारी के ताज पर है। (अ.वा.2.1.82 पृ.207 मध्य)

{ देखिए प्रकरण 'अधिकारी अधीन नहीं' में प्वॉइण्ट नं॰1 }

काम कटारी

1. विकार में गया और बुद्धि से प्वॉइण्ट एकदम निकल जावेगी। जैसे गूँगा बन जावेगा। (मु.ता.13.2.73 पृ.1 अंत)

2. कुमारियाँ भी पतित बन पड़ती हैं। दोनों पतित बनते हैं। दोनों की दिल होती है तब ताली बजती है। अगर अपनी हिम्मत हो तो रड़ी ऐसे करे जो वह एकदम भाग जाए। (मु.ता.4.3.69 पृ.4 आदि)

3. अक्सर करके स्त्री-पुरुष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ-न-कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। (मु.ता.31.1.75 पृ.1 मध्यादि)

कर्मातीत अवस्था

1. ऐसे नहीं कि मम्मा-बाबा कोई परिपूर्ण हो गए। परिपूर्ण अवस्था अंत में होगी। इस समय कोई भी अपने को परिपूर्ण कह न सके। (मु.ता.14.11.78 पृ.3 अंत)

2. अभी कोई भी कम्प्लीट फूल नहीं बने हैं। वह तो कर्मातीत अवस्था हो जाती है। देही-अभिमानी वह तो अंत में ही बनना है। (मु.ता.8.10.78 पृ.1 आदि)

3. जब तक कर्मातीत अवस्था आए, मंसा, वाचा, कर्मणा कुछ-न-कुछ भूलें होती ही रहती हैं। पिछाड़ी में कर्मातीत अवस्था होगी। (मु.ता.6.11.77 पृ.2 मध्य)

4. 16 कला कोई भी बना न है। जब तक विनाश हो तब तक पुरुषार्थ चलता ही है। किसकी भी ताकत नहीं जो कह सके कि हम 16 कला सम्पूर्ण बने हैं। बन ही नहीं सकते। यह तो अवस्था होगी अंत में। (मु.ता.27.9.77 पृ.3 अंत)

5. जब नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तब लड़ाई भी शुरू होगी। (मु.ता.22.6.75 पृ.3 अंत)

6. यह भी सम्पूर्ण नहीं हुआ है। जब तक यह भी कर्मातीत अवस्था में न आए हैं, पढ़ाते रहेंगे। तुम भी पढ़ते-पढ़ाते रहेंगे। (मु.ता.26.6.75 पृ.3 मध्यांत)

7. बाबा की कर्मातीत अवस्था होगी तो तुम बच्चों की भी हो जावेगी।..... यह कर्मातीत अवस्था अंत में आएगी। (रात्रि मु.ता.3.5.73 अंत)

8. कर्मातीत अवस्था वह जो शरीर को भी कोई दुःख न हो। पुराने शरीर को तो अंत तक दुःख होता ही है। (मु.ता.24.7.73 पृ.1 अंत)

9. यह पढ़ाई पूरी हो जाएगी, फिर नं.वार पुरुषार्थ अनुसार कर्मातीत अवस्था को पाएँगे। (मु.ता.8.10.73 पृ.2 आदि)

10. ऊपर में थोड़ी आत्माएँ भी हैं, वह आती रहती हैं। जब वहाँ से भी आत्माओं का आना पूरा हो जावेगा तब तुम कर्मातीत अवस्था को पावेंगे। (मु.ता.11.7.71 पृ.3 अंत)

11. साहुकार लोग कब सरेण्डर होकर कर्मातीत अवस्था को पा न सकें। (मु.ता.5.9.70 पृ.3 अंत)

12. बाप कहे और फट से करें, तब कर्मातीत अवस्था हो। ऐसे बाप के साथ लव भी कितना चाहिए। फौरन करके दिखावें तो बाबा भी समझें- इनका लव है। (मु.ता.15.5.69 पृ.1 अंत)

13. जब तक कर्मभोग है, यह निशानी है कर्मातीत अवस्था नहीं हुई है। (मु.ता.24.2.69 पृ.3 अंत)

14. कर्मातीत बनने की स्टेज की निशानी क्या है? सदा सफलतामूर्त। समय भी सफल, संकल्प भी सफल, सम्पर्क और सम्बन्ध भी सदा सफल। इसको कहते हैं- सफलतामूर्त। (अ.वा.29.1.75 पृ.30 अंत, 31 आदि)

15. एक तरफ लड़ाई तैयार होगी, दूसरे तरफ कर्मातीत अवस्था होगी। पूरा कनेक्शन है। फिर पढ़ाई पूरी हो जाती। (मु.ता.7.1.76 पृ.1 अंत)

16. ऐसे भी मत समझना, कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गए हैं। नहीं! रेस चल रही है। रेस जब पूरी होगी तब फाइनल रिटर्न होंगे। फिर विनाश भी शुरू हो जावेगा। जब तक यह रिहर्सल होती रहेगी, जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए, हम किसकी बुराई नहीं कर सकते। (मु.ता.25.7.76 पृ.1 मध्य)

17. बच्चे कर्मातीत अवस्था को पावेंगे तो ज्ञान खत्म हो जाएगा, लड़ाई आरम्भ हो जावेगी। मैं भी अपना पावन बनाने का कार्य पूरा करके जाऊँगा। देवी-देवता धर्म स्थापन करना, यह मेरा ही पार्ट है। (मु.ता.29.1.78 पृ.2 आदि)

कर्नाटक

1. कर्नाटक का भी विस्तार बहुत हो गया है। अब कर्नाटक वालों को विस्तार से सार निकालना पड़े। जब मक्खन निकालते हैं तो पहले तो विस्तार होता है, फिर उससे मक्खन सार निकलता है। तो कर्नाटक को भी विस्तार से अब मक्खन निकालना है। (अ.वा.24.4.84 पृ.269 मध्य)

2. दूसरे हैं सिकीलधे कर्नाटक वाले। वह भावना और स्नेह के नाटक बहुत अच्छे दिखाते हैं। एक तरफ अति भावना और अति-2 स्नेही आत्माएँ हैं, दूसरी तरफ दुनियाँ के हिसाब से एज्युकेटेड

नामी-ग्रामी भी कर्नाटक में हैं। तो भावना और पद-अधिकारी दोनों ही हैं; इसलिए कर्नाटक से आवाज़ बुलन्द हो सकता है। धरणी आवाज़ बुलन्द की है। .....कर्नाटक की धरणी इस विशेष कार्य के लिए निमित्त है। .....इस विशेषता को किसी भी वातावरण में छोड़ नहीं दें। (अ.वा.1.5.84 पृ.283 अंत, 284 आदि)

3. मैसूर की विशेषता क्या है? वहाँ चन्दन भी है और विशेष गार्डन भी है। तो कर्नाटक वालों को विशेष सदा रूहानी गुलाब, सदा खुशबूदार चन्दन बन विश्व में चन्दन की खुशबू कहो अथवा रूहानी गुलाब की खुशबू कहो, विश्व को गार्डन बनाना है और विश्व में चन्दन की खुशबू फैलानी है।.....तो सबसे ज़्यादा रूहानी गुलाब कर्नाटक से निकलेंगे ना! यह प्रत्यक्ष प्रमाण लाना है। (अ.वा.17.4.84 पृ.250 आदि)

4. कर्नाटक वाले सिकीलधे हैं ना! तो सिकीलधों को खास गुह्य राज़ सुनाया जाता है। कर्नाटक की सेवा में जोड़ी भी मज़ेदार बनी हुई है। करनहार और करावनहार, दोनों की ही जोड़ी है। वह प्रेम-स्वरूप, वह नॉलेज-स्वरूप। वह लव और लॉ फुल, वह सिर्फ लवफुल। .....भिन्न धर्म में कन्वर्ट होते हुए भी अपने प्राचीन धर्म को पहचानने और अपनाने में तीव्र पुरुषार्थी बन चल रहे हैं। मैज़ॉरिटी स्नेह और शान्ति की प्राप्ति के आधार पर संशय-बुद्धि कम बनते हैं। यह डबल विदेशियों की विशेषता है। .....कर्नाटक वाले भी भावना और प्रेम से सहज ही बाप के बन जाते हैं। .....बापदादा भाषा को नहीं देखते, भावना को देखते हैं। (अ.वा.1.2.80 पृ.260 आदि)

5. कर्नाटक वाले सदा बाप के स्नेहमूर्त रहते हैं। कर्नाटक की धरणी बहुत सहज है। भावना के कारण धरणी फलीभूत है; इसलिए वृद्धि बहुत होती है। कर्नाटक की धरणी को सहज संदेश मिलने का ड्रामानुसार वरदान है। विशेष आत्माएँ भी इस धरणी से सहज निकल सकतीं।.....स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रखना, यह विशेषता लानी है। वैसे भोलानाथ बाप के भोले बच्चे अच्छे हैं, परवाने अच्छे हैं, बापदादा को पसंद हैं। अभी बाप पसंद के साथ लोक पसंद भी बनना है। (अ.वा.25.1.79 पृ.245 मध्य)

6. एक बाप, दूसरा न कोई- ऐसे अनुभव होता है कि और भी सम्बन्ध स्मृति में आते हैं? जिसके सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ होंगे, उसको और सब सम्बंध निमित्त मात्र अनुभव होंगे। वह सदा खुशी में नाचने वाले होंगे, कभी भी थकावट का अनुभव नहीं करेंगे। .....कम्प्लीट आत्माओं की सब कम्प्लेण्ट खत्म हो जाती है। सम्पन्न होना अर्थात् संतुष्ट। असंतुष्ट होने का कारण है- अप्राप्ति। अप्राप्ति ही असंतुष्टता को जन्म देती है। .....सभी सदा हँसते रहते हो, रोते तो नहीं हो! रोने वाले बाप के युगल नहीं बन सकते। क्या करूँ, चाहता हूँ, यह होने नहीं देते, मदद करो, कृपा करो- यह भी रोना है। ऐसे रोने वालों को बाप अपने साथ कैसे ले जाएँगे! साथ

चलने के लिए जैसा बाप वैसे बच्चे बनो। .....जो भी कर्म करो, पहले चैक करो- यह बाप-समान है? बाप-समान नहीं है तो कट कर दो, आगे नहीं बढ़ो। (अ.वा.12.1.79 पृ.206 आदि, 207 आदि)

7. कर्नाटक के बच्चे भी आए हैं! यह भी भारत का विदेश ही है। लण्डन से सहज आ सकते हैं; लेकिन यह बहुत मेहनत से आते हैं। (अ.वा.8.1.79 पृ.189 अंत, 190 आदि)

खान-पान, रहन-सहन

1. जो चीज़ देवताओं को स्वीकार नहीं कराते हैं, वह नहीं खानी चाहिए। जैसे चाय का भोग मन्दिरों में थोड़े ही लगता है। इससे भी और तमोगुणी चीज़ें हैं, जो नहीं खानी चाहिए। (मु.ता.6.12.71 पृ.2 आदि)

2. एक तो बाज़ार की गुछी(गन्दी), छी-2 चीज़ न खाओ। गन्द खाते-2 तुम डेड-चमार बन गए हो। (मु.ता.22.5.70 पृ.2 आदि)

3. तुम यहाँ आते ही हो मनुष्य से देवता बनने। देवताएँ कब अशुद्ध खान-पान, बीड़ी आदि नहीं पीते। (मु.ता.13.1.71 पृ.2 आदि)

4. ऐसी कोई अशुद्ध चीज़ न खाना चाहिए। पान में भी तम्बाकू न होना चाहिए। खुशबुएँ जैसी चीजें हों। .....ल.ना. के मन्दिर में भी पान बहुत खुशबूएँदार चीज़ों का बना हुआ देते हैं। .....उनका कोई हर्जा नहीं है। यह कोई खराब चीज़ नहीं है। यह तो बिल्कुल साधारण बात है। ..... बीड़ी पीने वालों में तो बास रहती है। .....मूली की भी उगराई बहुत छी-2 आती है। तो ऐसी-2 खटाई आदि तमोगुण चीज़ नहीं खानी चाहिए। (मु.ता.16.11.70 पृ.2 मध्यादि)

5. बहुत बच्चे हैं जिनके पास इतने पैसे हैं, जो ब्याज मिलता रहे, उनसे ही रोटी-टुकड़ खाते रहे और बाप को याद करते रहें, बस; परन्तु माया करने न देती। (मु.ता.10.3.69 पृ.2 मध्यांत)

6. पेट कोई जास्ती थोड़े ही खाता है। जो मिले उसमें राज़ी रहना चाहिए। (मु.ता.3.1.73 पृ.4 अंत)

7. जास्ती खातरी करना, भोजन आदि खिलाना- यह भी नहीं होना चाहिए। हमारा भोजन तो है ज्ञान का। बाकी यह खिलाना-करना ठीक नहीं है। जास्ती टू-मच में न जाना चाहिए। जास्ती महिमा भी नहीं करना चाहिए। (मु.ता.8.1.73 पृ.3 मध्यांत)

8. जास्ती तमन्नाएँ न रखनी चाहिए। यज्ञ से जो मिले सो खा लेना चाहिए। हवस है, कर्मेन्द्रियाँ बस में न हैं तो पद भी ऊँच पा न सकेंगे। (मु.ता.11.4.72 पृ.3 अंत)

9. शरीर को निरोगी, तन्दुरुस्त रखो। गफ़लत न करनी है। खान-पान की सम्भाल रखेंगे तो कुछ न होगा। एकरस चलने से शरीर भी तन्दुरुस्त रहेगा। यह अमूल्य तन है। इसमें पुरुषार्थ कर यह देवी-देवता बनते हो। (मु.ता.25.7.76 पृ.1अंत, 2आदि)

10. बच्चों को कब ईर्ष्या भी नहीं होनी चाहिए कि बाबा बड़े आदमियों की खातिरी क्यों करते हैं। बाप हर एक बच्चे की नब्ज़ देख उनके कल्याण अर्थ हर एक को उसी अनुसार चलाते हैं। (मु.ता.7.11.75 पृ.3 अंत)

11. बाप तुम बच्चों को समझाते हैं- तमोप्रधान जिस्मानी श्रृंगार ज़रा भी न करो। दुनियाँ बहुत खराब है। गृहस्थ-(व्यवहार) में रहते फैशनेबल मत बनो। फैशन कशिश करती है। इस समय खूबसूरती अच्छी नहीं है। काली कुंझी हो तो अच्छा है, कोई झम्पा नहीं मारेगा। खूबसूरत पिछाड़ी तो फिरते रहते हैं। (मु.ता.5.6.71 पृ.1 अंत, 2 आ)

12. यह श्रृंगार सब वाहियात है। अब तुम सबकी सगाई शिवबाबा से है। जब शादी होती है तो उस दिन पुराने कपड़े पहनते हैं। अब इस शरीर को श्रृंगारना न है। ज्ञान और योग से अपने को सजावेंगे तो फिर भविष्य में प्रिंस-प्रिंसेज बनेंगे। (मु.ता.30.11.78 पृ.2 अंत)

13. अभी दोनों ही बाप (निराकार और साकार) तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेला था, शरीर बिगर था। ऊपर से तो तुम्हारा श्रृंगार कर न सके। (मु.ता.5.12.70 पृ.1 अंत)

14. तुमको तो घर-बार छोड़ना न है। न कोई सफेद कपड़े आदि का बन्धन है; परन्तु सफेद अच्छा है। तुम भट्ठी में रहे हो तो ड्रेस यह हो गई। आजकल सफेद बहुत पसन्द करते हैं। मनुष्य मरते हैं तो भी सफेद चादर डालते हैं। (मु.ता.13.9.71 पृ.2 अंत)

15. तुम बच्चों को तो अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। यह तो पुरानी छी-2 दुनियाँ है। इस दुनियाँ में अच्छे कपड़े पहनें, सुख ले लेवें, ख्याल भी न आना चाहिए। इसको कहा जाता है- इच्छा मात्रम् अविद्या। (मु.ता.27.7.70 पृ.4 अंत)

16. कौन कहता है कि तुम कपड़े आदि बदली करो। भल कुछ भी पहनो। बहुतों से कनेक्शन में आना पड़ता है। रंगीन कपड़े के लिए कोई मना नहीं करते हैं। कोई भी कपड़ा पहनो। इनसे कोई ताल्लुक नहीं। बाबा सिर्फ कहते हैं- देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो। (मु.ता.10.12.70 पृ.2 अंत)

17. यहाँ तुम वनवा में हो। कोई बात का शौक न रखना चाहिए। हम अच्छे कपड़े डायकरान आदि की पहनें, अच्छी साड़ी पहनें, यह भी देह-अभिमान है। जो मिले सो अच्छा। (मु.ता.8.3.69 पृ.1 अंत)

18. कपड़ा आदि साधारण। अच्छे-2 कपड़ों से भी देह-अभिमान आता है; इसलिए ऐसी चीज़ न पहनना अच्छा है। सुहेनी होगी तो सभी की नज़र चढ़ेगी। (मु.ता.9.5.69 पृ.4 मध्य)

19. अगर मित्र-सम्बन्धियों आदि की चीज़ पहनेंगे तो वह याद आवेंगे, पद भ्रष्ट हो जावेगा। यह है शिवबाबा का भण्डारा। पतित-पावन बाप के यज्ञ से परवरिश होनी है, न कि पतित के घर से। और किसी की दी हुई चीज़ होगी तो वह याद ज़रूर पड़ेंगे। (मु.ता.4.10.76 पृ.2अंत, 3आदि)

20. ग़रीबों को ही बाप आकर पढ़ाते हैं। गरीबों के कपड़े आदि मैले होते हैं ना! .....इसमें कोई भभका, ड्रेस आदि बदलने की बात नहीं। देह साथ कोई कनेक्शन ही नहीं। (मु.ता.12.10.76 पृ.2 मध्य)

क्लास

1. यहाँ रहते हुए भी क्लास में न आते तो समझा जाता है- यह स्वर्ग के मालिक बन न सकेंगे। (मु.ता.8.5.72 पृ.3 मध्य)

2. क्लास में ही न आवेंगे तो क्या पढ़ेंगे? न पढ़ेंगे, न पढ़ावेंगे तो पद क्या पावेंगे? बच्चा वह जो अच्छी तरह पढ़कर और पढ़ावे। सबूत दें। (मु.ता.16.8.72 पृ.3 अंत)

3. कई हैं जिन्हों को पढ़ाई की कद्र नहीं है। समझो, कोई सख़्त बीमार है, मरने पर है, उसको भी क्लास में आ(ला)कर बिठाना चाहिए ना! (मु.ता.6.10.72 पृ.1 अंत)

4. यह है बेहद के बाप का स्कूल। इसमें तो एक दिन भी बच्चों को क्लास मिस न करना चाहिए। बाप आ+कर पढ़ाते हैं। (मु.ता.18.1.71 पृ.3 अंत)

5. कोई-2 ऐसे होते हैं जो समय बिल्कुल दे नहीं सकते। बुद्धि में काम बहुत रहता है। फिर याद की यात्रा होवे कैसे? (मु.ता.24.11.70 पृ.3 अंत)

6. बाप कहते हैं- जो घर में बैठ पुरुषार्थ करे कर्मातीत अवस्था को पाने का, तो हो सकता है मुक्ति में जाए। जीवन-मुक्ति में जा न सके। ज्ञान-धन धारण कर और दान करेंगे तब तो धनवान बनेंगे; नहीं तो एवर वेल्दी कैसे बनेंगे? मुरली का भी आधार ज़रूर लेना पड़े। पढ़ाई तो पढ़नी पड़े ना! ऐसे बहुत आवेंगे, सिर्फ लक्ष्य लेकर जावेंगे मुक्ति में। (मु.ता.27.11.71 पृ.5 आदि)

7. पढ़ाई में पूरा ध्यान देना चाहिए। इसमें बहाना न देना चाहिए- दूर है, यह है। पैदल करने में छः घण्टा भी लगे तो भी पहुँचना चाहिए। .....यह बाप की कितनी बड़ी यूनिवर्सिटी है! जिससे तुम यह (ल०ना०) बनते हो। ऐसी ऊँच पढ़ाई के लिए कोई कहे- दूर पड़ता है या फुर्सत नहीं। बाप क्या कहेंगे- यह तो ना+लायक बच्चा है। (मु.ता.21.2.75 पृ.1 अंत)

8. बाप को और पढ़ाई को छोड़ना, यह तो बड़े-ते-बड़ा आप+घात है। बाप का बन+कर और फिर फारकती देना! इन जैसा महान पाप कोई होता नहीं, इन जैसा कम+बख़्त कोई होता नहीं। ऐसे का तो मुँह भी नहीं देखना चाहिए। (मु.ता.21.3.75 पृ.3 मध्यांत)

9. अच्छी रीति पढ़ना, यह गॉड फादरली यूनिवर्सिटी है। ऐसे नहीं, आज पढ़ा, कब फिर कोई काम पड़ा तो पढ़ाई मिस कर दी। वो सब काम हैं पाई-पैसे के। इस दुनियाँ में मनुष्य जो भी कमाई करते हैं, वो कोई रहने वाली न है, सब खतम हो जाना है। (मु.ता.3.3.77 पृ.1 मध्यांत)

10. पढ़ाई से कब भी रूठना न है। कोई से भी अन+बन हो, तो भी पढ़ाई नहीं छोड़नी है। पढ़ाई से लड़ने-झगड़ने का ताल्लुक नहीं है। (मु.ता.9.2.74 पृ.2 आदि)

11. स्कूल में जो अच्छे-2 बच्चे होते हैं, वह कब शादियों पर इधर-उधर जाने की छुट्टी नहीं लेते हैं। बुद्धि में रहता है कि हम अच्छी रीति पढ़कर स्कॉलरशिप लेंगे; इसलिए पढ़ते रहते हैं, मिस करने का ख़याल नहीं करते। ..... यहाँ एक ही टीचर (सम्मुख) पढ़ाने वाला है, तो कब पढ़ाई मिस नहीं करनी चाहिए। (मु.ता.5.4.84 पृ.2 मध्य)

क्रोधी नहीं, मीठे बनो

1. काम अथवा क्रोध में आए तो गोया सतगुरू की निन्दा कराई। फिर पद पा न सकेंगे। (मु.ता.12.2.78 पृ.2 मध्यांत)

2. कब क्रोध न करना है। उसी समय तुम ब्राह्मण नहीं, चाण्डाल हो; क्योंकि क्रोध का भूत है।..... ऐसे नहीं, क्रोध किया तो हर्जा नहीं। यह भूत आया तो तुम ब्राह्मण नहीं। (मु.ता.7.5.77 पृ.3 मध्य)

3. यज्ञ की सम्भाल करने वाले ब्राह्मणों में क्रोध आदि कोई भी विकार न होना चाहिए। (मु.ता.7.5.77 पृ.3 मध्यादि)

4. अन्दर में क्रोध, लोभ आदि होगा तो सज़ा बहुत कड़ी मिलेगी; क्योंकि तुम सुख देने निमित्त बनी हुई हो। (मु.ता.25.6.72 पृ.2 अंत)

5. कोई कुछ भी कहे, सुना न सुना कर देना है; सामना न करना चाहिए जो लड़ाई हो जाए। हर बात में सहनशीलता होनी चाहिए। (मु.ता.12.11.73 पृ.2 मध्य)

6. अगर कोई में क्रोध का भूत है तो वह रावण का बच्चा हो गया। यह काम-क्रोध ...यह किसके बच्चे हैं? रावण के। ..... किस पर क्रोध करते हो तो जैसे कि तुम आसुरी रावण सम्प्रदाय बन गए। (मु.ता.3.4.72 पृ.4 आदि)

7. काम के कारण क्रोध भी आ जाता है। (मु.ता.26.6.72 पृ.3 अंत)

8. पहले अपन को मीठा बनना चाहिए; नहीं तो फिर औरों को कहने का अधिकार नहीं है। बाबा साफ कहते हैं- तेरे में क्रोध है तो औरों को कह न सकेंगे। खुद को मीठा बनना है। (मु.ता.1.10.72 पृ.2 अंत, 3 आदि)

9. कोई भी क्रोध वा भूल आदि करते हैं तो बाबा पास रिपोर्ट करनी है। खुद किसको न कहना चाहिए। फिर जैसे कि लॉ अपने हाथ में ले लिया। .....यहाँ भी बच्चों को कब सामने कुछ कहना न चाहिए। बाबा को बोलो। सभी को सावधानी देने वाला एक बाबा है। (मु.ता.18.1.71 पृ.1 मध्यांत)

10. तुम बच्चे जानते हो, अच्छे-2 सर्विस करने वाले हैं, वह तो नामी-ग्रामी हैं। बाबा सर्विस पर भेज देते हैं। बहुत मीठा बोलना होता है। कोई से लड़ना-झगड़ना नहीं है। ब्राह्मण अगर कड़ुवा बोले तो वह कहेंगे- इनमें तो क्रोध का भूत है। निन्दा-स्तुति में समान रहना चाहिए। बहुतों में क्रोध का भूत है, उससे नाराज़ होते हैं। ऐसे नहीं कि सभी का क्रोध निकल गया है। ..... ऐसे कोई कह न सके कि हमारे में क्रोध नहीं है। कोई में जास्ती, कोई में कम होता है। कोई-2 का आवाज़ ही ऐसा होता है जैसे डांटते हैं। बच्चों को बहुत-2 मीठा बनना है। (मु.ता.13.10.71 पृ.2 आदि)

11. क्रोध करेंगे गोया बाप की निन्दा कराई। क्रोध का भूत आया तो बाप को भूल जाते हैं। बाप की याद हो तो कोई भी भूत आवे ही नहीं। .....एक बार क्रोध किया तो वह छः मास बुद्धि में रहता है कि यह क्रोधी है, फिर दिल से उतर जाते हैं। गन्दी आदत है ना! (मु.ता.11.5.69 पृ.1 अंत)

12. अगर किस पर क्रोध करते होंगे तो डिस्ट्रक्टिव काम किया ना! कहेंगे- तुम अपना मुँह तो देखो। तुम्हारे में क्रोध का भूत है तो तुम स्वर्ग में कैसे नारायण को वरेंगे! अपना मुँह देखो- हम श्री ना. को वरने लायक हैं? (मु.ता.2.1.73 पृ.4 मध्य)

कुमारियों से

1. कुमारियों ने पक्का वायदा किया है? पक्का वायदा किया और वरमाला गले में पड़ी। वायदा किया और वर मिला। वर भी मिला और घर भी मिला। तो वर और घर मिल गया। ..... तो पक्की वरमाला पहनी है? ऐसी कुमारियों को कहा जाता है समझदार। .....बापदादा को कुमारियों को देखकर खुशी होती है; क्योंकि बच गईं। (अ.वा.7.12.83 पृ.38 अंत, 39 आदि)

2. कन्या के पास तो पैसा होता नहीं। वह फिर इस सर्विस में लग जाएँ, तो सभी से ऊँच जा सकती हैं। मम्मा ने कुछ भी इन्श्योर नहीं किया। हाँ, शरीर इस सर्विस में दे दिया। तो कितना ऊँच पद पाती हैं। (मु.ता.4.4.72 पृ.3 अंत)

3. शिव के साथ रहती हो ना! जो जिसके साथ रहते, उसके संग का रंग तो उन पर ज़रूर लगेगा ना! तो जो बाप का गुण, जो बाप का कर्तव्य, वही आपका है ना! .....हर बात में चैक करो कि यह बाप का कर्म वा बाप का संकल्प, बोल है। अगर है तो करो; नहीं तो परिवर्तन कर दो। .....सदा उमंग और उल्लास में रहने वाले हर बात में नम्बर वन होंगे। ..... नं॰ वन उमंग-उल्लास वाले घरों में कैसे रहेंगे? निर्बन्धन होंगे ना! सभी कौन हो- पिंजरे के पंछी हो या स्वतंत्र पंछी? पढ़ाई का पिंजरा है? माँ-बाप का पिंजरा है? ऐसे पिंजरों में बंधने वाली को नं॰ वन कैसे कहेंगे? अभी निर्बन्धन हो जाओ।..... इतना बड़ा ग्रुप जो आया है, तो ज़रूर कमाल करेगा ना! इतने हैण्ड्स निकल आवें तो वाह-2 हो जाए। (अ.वा.4.5.83 पृ.181 आदि)

4. कुमारियों को देखकर बापदादा बहुत हर्षित होते हैं, क्यों? क्योंकि एक-2 कुमारी अनेकों को जगाने के निमित्त बनने वाली है। .....कुमारीपन का, कुमारी जीवन का बहुत महत्व है। कुमारियों को ब्राह्मण जीवन में लिफ्ट भी है। कुमारियाँ कितना जल्दी सेवाकेन्द्र की इन्चार्ज बन जाती हैं। कुमारों को देरी से चान्स मिलता है। .....कुमारी जीवन अर्थात् सम्पूर्ण पावन। अगर कुमारी जीवन में यह विशेषता नहीं तो उसका कोई महत्व नहीं। ब्रह्माकुमारी अर्थात् मंसा में भी अपवित्रता का संकल्प न हो, तभी पूज्य है; नहीं तो खण्डित हो जाती है और खण्डित की पूजा नहीं होती। तो इस विशेषता को जानती हो?..... बापदादा किसी को लौकिक सेवा छोड़ने के लिए भी नहीं कहते; लेकिन बैलेन्स हो। जितना-2 इस सेवा में बिज़ी होती जाएँगी तो वह आपे ही छूट जाएगी। किसी को कहो- नौकरी छोड़ो, तो सोच में पड़ जाते। जैसे अज्ञानी को कहो- बीड़ी छोड़ो, सिगरेट छोड़ो, तो छोड़ने से नहीं छूटती, अनुभव से छोड़ देते हैं। ऐसे ही आप भी जब इस सेवा में बिज़ी हो जाएँगे तो वह छूट जाएगी। (अ.वा.29.10.81 पृ.96 आदि, 97 आदि)

5. वैसे भी सेवाधारी मैजॉरिटी कुमारियाँ हैं। कुमारियाँ डबल कुमारियाँ हो गईं- ब्रह्माकुमारी भी और कुमारी भी। तो कितनी महान हो गईं। कुमारी की अब 84वें अन्तिम जन्म में भी चरणों की पूजा

होती है। तो इतनी पावन बनी हो तब इतनी पूजा हो रही है। कुमारियों को कभी भी झुकने नहीं देंगे। कुमारियों के चरणों में सब झुकते हैं, चरण धोकर पीते हैं। .....तो इतनी पूज्य हो तब तो बाप भी नमस्ते करते हैं। (अ.वा.8.11.81 पृ.125 आदि)

6. कुमारियों को कौन-सी कमाल करके दिखानी चाहिए? सबसे बड़े-ते-बड़ी कमाल है- बाप ने कहा और बच्चों ने किया। जैसे चात्रक होता है ना, बूँद आई और धारण की। तो सबसे बड़ी कमाल है- बाप का हर बोल करके दिखाना। कर्म से बाप के बोल को प्रत्यक्ष करना। यह है कुमारियों की कमाल। इसीलिए यादगार में भी दिखाते हैं- कुमारियों ने बाप को प्रत्यक्ष किया। (अ.वा.28.11.81 पृ.188 अंत, 189 आदि)

7. सभी कुमारियाँ अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ आगे बढ़ती रहती हो? .....यह भी संगम में बड़ा भाग्य है, जो कुमारी बनी। कुमारी अपने जीवन द्वारा औरों का जीवन बनाने वाली, बाप के साथ रहने वाली, सदा स्वयं को शक्तिशाली अनुभव कर औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाली, सदा श्रेष्ठ संकल्प द्वारा वायुमण्डल को बदल नाम बाला करने वाली, सदा एक बाप दूसरा न कोई- ऐसे नशे में हर कदम आगे बढ़ाने वाली, तो ऐसी कुमारियाँ हो ना? (अ.वा.27.11.85 पृ.67 आदि)

8. सभी का लक्ष्य तो श्रेष्ठ है ना! ऐसे तो नहीं समझती हो कि दोनों तरफ चलती रहेंगी; क्योंकि जब कोई (नाबालिग पने का) बन्धन होता, तो दोनों तरफ चलना दूसरी बात है; लेकिन निर्बन्धन आत्माओं का दोनों तरफ रहना अर्थात् लटकना है।..... कुमारियों का संगमयुग पर विशेष पार्ट है। .....विशेषता है सेवाधारी बनना। .....सेवाधारी नहीं हो तो साधारण हो गईं। ..... संगमयुग पर ही यह चान्स मिलता है। अगर अभी यह चान्स नहीं लिया तो सारे कल्प में नहीं मिलेगा। .....लौकिक पढ़ाई पढ़ते भी लगन इस पढ़ाई में हो, तो वह पढ़ाई विघ्न रूप नहीं बनेगी। (अ.वा.2.12.85 पृ.74 आदि)

9. कुमारियाँ निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। .....जितना-2 अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जाएँगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियाँ बाप को अति प्रिय हैं; क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियाँ हैं। तो बाप-समान हो गईं ना! (अ.वा.14.2.78 पृ.49 अंत)

10. कुमारियों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। एक अनेकों के कल्याण प्रति निमित्त बन सकती हैं। ब्रह्माकुमारी वह जो विश्व के कल्याण के निमित्त बने। बेहद विश्व के कल्याणकारी, न कि हद के। लगन में कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा। .....लगन है तो विघ्न नहीं रह सकता।

कर्मयोग से कर्मभोग भी परिवर्तन हो जाता। परिवर्तन करना अपनी हिम्मत का काम है। कुमारियों में तो सदैव बापदादा की उम्मीद है। (अ.वा.29.11.78 पृ.86 मध्य)

11. सभी कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि एक बाप, दूसरा न कोई- वह निभाती हैं? इसी वायदे को सदा निभाने वाली कुमारी विश्व-कल्याण के अर्थ निमित्त बनती है। कुमारियों का पूजन होता है। पूजन का आधार है- सम्पूर्ण पवित्र। तो कुमारियों का महत्व पवित्रता के आधार पर है। अगर कुमारी, कुमारी होते हुए भी पवित्र नहीं तो कुमारी जीवन का महत्व नहीं। .....जब सदा कुमारी जीवन का महत्व स्मृति में रखेंगी तो सफल टीचर व ब्रह्माकुमारी बन सकेंगी। .....कुमारी निर्बन्धन तो है; लेकिन डर रहता है कि कहीं कुमारी होते माया के वश नहीं हो जाएँ। अगर इस कारण को कुमारी मिटा देवे तो देखने की, ट्रॉयल करने की ज़रूरत नहीं। दूसरी, परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। कोई भी आत्मा हो, कैसी भी परिस्थिति हो; लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति हो तब ही सफल टीचर और सेवाधारी बन सकेंगी। सम्पूर्ण पवित्रता और परिवर्तन शक्ति- इन दोनों विशेषताओं से सेवा, स्नेह और सहयोग में विशेष आत्मा बन सकेंगी; नहीं तो ट्रॉयल की लिस्ट में रहेंगी, सरेण्डर की लिस्ट में नहीं आ सकेंगी। इन दोनों विशेषताओं को कायम रखने वाली कुमारी ही गायन-पूजन योग्य होगी। (अ.वा.28.10.75 पृ.243 आदि, 244 आदि)

12. कुमारियाँ अगर ज़िद पर रहें कि हम शादी करना नहीं चाहते तो गवर्मेण्ट कुछ कर नहीं सकती। समझा सकते हैं- हम ससुर घर जावें ही क्यों, जो पुजारी बन सबके आगे झुकना पड़े! मैं कुमारी हूँ तो सब मेरे आगे सिर झुकाते हैं, तो हम क्यों न पूज्य रहें? (मु.ता.7.11.73 पृ.3 अंत)

13. कमाई करने वाला न हो तो अपने पैर पर खड़ी रह सके, भीख न लेनी पड़े; इसलिए पढ़कर नौकरी करती हैं। नहीं तो कायदा नहीं। कायदे अनुसार बाप बच्चियों की कमाई खा नहीं सकते। बच्चियों को घर का काम सिखलाया जाता था। अभी तो बैरिस्टरी, डॉक्टरी आदि सीखती रहती हैं। यहाँ तुमको कुछ भी करना नहीं है। (मु.ता.7.5.72 पृ.2 आदि)

14. कई बच्चियाँ लिखती हैं कि शादी के लिए बहुत तंग करते हैं। क्या करें? जो मज़बूत सेन्सिबुल बच्चियाँ होंगी वो कब ऐसे लिखेंगी नहीं। लिखती हैं तो बाबा समझ जाते हैं कि कोई रीढ़-बकरी है। यह तो अपने ही हाथ में है जीवन को बचाना। (मु.ता.23.9.70 पृ.3 मध्य)

15. विशेष कुमारियों को शीतला नहीं बनना है, काली बनना है। शीतला भी किस रूप में बनना है, वह अर्थ भी तो समझती हो; लेकिन जब सर्विस पर हो, कर्तव्य पर हो तो काली रूप चाहिए। काली रूप होंगी तो कभी भी किस पर बलि नहीं चढ़ेंगी; लेकिन अनेकों को अपने ऊपर बलि चढ़ावेंगी। (अ.वा.28.5.70 पृ.255 मध्य)

16. कुमारियाँ अर्थात् कमाल करने वाली। साधारण कुमारियाँ नहीं, अलौकिक कुमारियाँ हो! .....वह देह-अभिमान में रह औरों को भी देह-अभिमान में गिरातीं और आप सदा देही-अभिमानी बन स्वयं भी उड़तीं और दूसरों को भी उड़ातीं- ऐसी कुमारियाँ हो ना! जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से सदा हैं ही। पहले कहने मात्र थे, अभी प्रैक्टिकल हैं। भक्तिमार्ग में भी गायन ज़रूर करते थे कि सर्व सम्बन्ध बाप से हैं; लेकिन अब प्रैक्टिकल सर्व सम्बंधों का रस बाप द्वारा मिलता है। .....कुमारियों का झुण्ड है। सेना तैयार हो रही है। वह तो लेफ्ट-राइट करते, आप सदा राइट-ही-राइट करते। .....तो हो सभी बहादुर; लेकिन मैदान पर नहीं आई हो। (अ.वा.19.12.84 पृ.77 मध्य, 78 मध्य)

17. साधारण कुमारियाँ या तो नौकरी की टोकरी उठातीं या तो दासी बन जाती हैं; लेकिन श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व-कल्याणकारी बन जाती हैं।.....संगदोष या सम्बन्ध के बन्धन से मुक्त होना, यही लक्ष्य है ना! बन्धन में बंधने वाली नहीं।.....दोनों बन्धन से न्यारे, वही बाप के प्यारे बनते हैं। ..... साधारण कुमारियों का भविष्य और विशेष कुमारियों का भविष्य, दोनों सामने हैं। तो दोनों को देख स्वयं ही जज कर सकती हो। जैसे कहेंगे वैसे करेंगे, यह नहीं; अपना फैसला स्वयं जज होकर करो। .....श्रीमत के साथ-2 अपने मन के उमंग से जो आगे बढ़ते हैं, वह सदा सहज आगे बढ़ते हैं। .....संगमयुग पर कुमारी बनना, यह पहला (नं.) भाग्य है। .....और इसी पहले भाग्य को गँवाया तो सदा के सर्व भाग्य को गँवाया। (अ.वा.30.1.85 पृ.154अंत, 155आदि, 156आदि)

18. देह-अभिमान वाली कुमारियाँ तो बहुत हैं; लेकिन आप रूहानी (गुलाब) कुमारियाँ हो। .....रूहानी स्मृति में रहना अर्थात् बाप के समीप आना। गिरने वाले नहीं, बाप के साथ रहने वाले। बाप के साथ कौन रहेंगे? रूहानी कुमारियाँ ही बाप के साथ रह सकतीं।..... जिनका बाप से प्यार है, वह रोज़ प्यार से याद करते हैं, प्यार से ज्ञान की पढ़ाई पढ़ते हैं। जो प्यार से कार्य किया जाता है, उसमें सफलता होती है। .....प्यार से, अपने मन से चलने वाले सदा चलते। जब एक बार अनुभव कर लिया कि बाप क्या और माया क्या, तो एक बार के अनुभवी कभी भी धोखे में नहीं आ सकते। माया भिन्न-2 रूप में आती है- कपड़ों के रूप में आएगी, माँ-बाप के मोह के रूप में आएगी, सिनेमा के रूप में आएगी, घूमने-फिरने के रूप में आएगी। माया कहेगी- यह कुमारियाँ हमारी बनें, बाप कहेंगे- हमारी बनें, तो क्या करेंगी? माया को भगाने में होशियार हो? घबराने वाली, कमज़ोर तो नहीं हो?.....सदा अपने को भाग्यवान आत्मा समझो, जो बाप ने बचा लिया। बच गए, बाप के बन गए, ऐसी खुशी होती है ना! बापदादा को भी खुशी होती है। (अ.वा.9.5.84 पृ.304 अंत, 305 आदि)

19. विश्व-कल्याणकारी कुमारियाँ हो, घर में रहने वाली कुमारियाँ नहीं, (मूतपलीती) टोकरी उठाने वाली कुमारियाँ नहीं; लेकिन विश्व-कल्याणकारी कुमारियाँ। कुमारियाँ वह, जो कहते हैं- कुल का कल्याण करें। सारा विश्व आपका कुल है। बेहद का कुल हो गया। साधारण कुमारियाँ अपने हद के (स्लामी-बौद्धी आदि) कुल का कल्याण करती हैं और श्रेष्ठ कुमारियाँ विश्व (पिता) के कुल का कल्याण करेंगी। ऐसी हो ना! कमज़ोर तो नहीं? डरने वाली तो नहीं? सदा बाप साथ है। जब बाप साथ है तो कोई डर की बात नहीं। अच्छा है, कुमारी जीवन में बच गई। यह बहुत बड़ा भाग्य है। रास्ते उल्टे पर जाकर फिर लौटना, यह भी समय वेस्ट हुआ ना! तो समय, शक्तियाँ सब बच गई। भटकने की मेहनत भी छूट गई। कितना फायदा हुआ। बस, वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य- यह देखकर सदा हर्षित रहो। किसी भी कमज़ोरी से अपनी श्रेष्ठ सेवा से वंचित नहीं होना। (अ.वा.9.5.84 पृ.306 आदि)

20. कन्याएँ 100 ब्राह्मणों से उत्तम गाई हुई हैं। ..... जितना स्वयं श्रेष्ठ होंगे, उतना ही औरों को भी श्रेष्ठ बना सकेंगे। तो श्रेष्ठ आत्माएँ हैं, यह खुशी रहती है?.....अगर खुशी नहीं तो जीवन नहीं।..... बापदादा खुश होते हैं कि कुमारियाँ समय पर बच गईं, नहीं तो उल्टी सीढ़ी चढ़कर फिर उतरनी पड़ती। चढ़ो और उतरो, मेहनत है ना! ..... बहुत भाग्यवान हो, समय पर बाप मिल गया। कुमारी ही पूजी जाती है। कुमारी जब गृहस्थी बन जाती तो बकरी बन सबके आगे सिर झुकाती रहती है। तो बच गई ना! तो सदा अपने को ऐसे भाग्यवान समझ आगे बढ़ते चलो। (अ.वा.22.1.88 पृ.231 आदि)

21. कुमारियाँ तो हैं ही सदा भाग्यवान। डबल भाग्य है, एक- कुमारी जीवन का भाग्य, दूसरा- बाप का बनने का भाग्य। कुमारी जीवन पूजी जाती है। जब कुमारी जीवन खत्म होती है तो सबके आगे झुकना पड़ता। गृहस्थी जीवन है ही बकरी समान जीवन, कुमारी जीवन है पूज्य जीवन। अगर कोई एक बार भी गिरा तो गिरने से हड्डी टूट जाती है ना! .....टेस्ट करके फिर समझदार नहीं बनना। (अ.वा.26.1.88 पृ.236 मध्य)

22. कुमारियों लिए तो जैसे मेहनत है ही नहीं, फ्री हैं। विकार में गए तो बड़ी पंचायत हो जाती है। कुमारी रहना अच्छा है; नहीं तो फिर अधरकुमारी नाम पड़ जाता। युगल भी क्यों बनें? इसमें भी नाम-रूप का नशा चढ़ता है। यह भी मूर्खता है। भल बहादुरी दिखाते हैं, इसमें कोई संशय नहीं; परन्तु बड़ी अच्छी हिम्मत चाहिए, ज्ञान की पूरी पराकाष्ठा चाहिए। बहुत हैं जो हिम्मत करते हैं; परंतु आग की आँच आ जाती है तो खेल खलास; इसलिए बाबा कहते हैं- कुमारी फिर भी अच्छी है। अधरकुमारी बनने का ख़याल भी क्यों करना चाहिए? कुमारियों का नाम बाला है, बाल ब्रह्मचारी हैं। बाल ब्रह्मचारी रहना अच्छा है, ताकत रहती है। दूसरे कोई की याद नहीं आवेगी।..... कुमारी है तो अकेली है। दो से द्वैत आ जाता है। जितना हो सके, कुमारी रहना

अच्छा है। उसमें तो घर आदि बनाना पड़ता है। कुमारी सर्विस में निकल सकती है। बन्धन में पड़ने से फिर बंधन वृद्धि को पाते रहते हैं। (मु.ता.6.8.76 पृ.3 मध्य)

23. कुमारियों का लक्ष्य क्या है? सेवा। सेवा करने के लिए पहले स्वयं में सर्व प्राप्ति का अनुभव कर रही हो? .....इस समय के हिसाब से गृहस्थी जीवन क्या है, उसको भी देख रही हो ना! ..... बहुत भाग्यवान हो जो कुमारी जीवन में बाप की बनी हो। तो राइट हैण्ड बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं। (अ.वा.16.4.82 पृ.376 मध्य, 377 आदि)

24. कुमारी है, कोई कुमार को याद किया तो कब मन शान्त न होगा, बुद्धि चलती रहेगी, उसकी याद आती रहेगी। बाप समझाते हैं- यह 5 भूत कम नहीं हैं। कहा जाता है- इनमें भूतों की प्रवेशता है। एक भूत नहीं है, पाँचों भूतों की प्रवेशता है। (मु.ता.1.3.78 पृ.2 आदि)

25. तुम कन्याएँ भी अपना पुरुषार्थ कर रही हो। जितना पढ़ेंगे, श्रीमत पर चलेंगे तो 21 जन्म राज्य करेंगे। कन्याओं को शरीर निर्वाह नहीं करना है। उन्हों का काम है- पढ़ना और ससुर घर जाना। (मु.ता.22.3.78 पृ.3 मध्य)

26. ऐसे नहीं कहा जाता कि कन्या को भी शरीर निर्वाह अर्थ माथा मारना है। कन्या को पति पास रहना है। शरीर निर्वाह पति को करना है। .....एक कहानी है ना- एक कन्या ने बाप को कहा, मैं अपने नसीब (का) खाती हूँ। .....वह तो ऐसे ही करके कहानी सुनाते हैं, सच्ची-2 बात यहाँ की है। (मु.ता. 18.3.73 पृ.3 अंत, 4 आदि)

27. कन्याएँ तो फ्री हैं। उनको नौकरी तो करनी नहीं है। उस नॉलेज के बदली यह लो तो 21 जन्म लिए वर्सा मिल जावेगा; नहीं तो स्वर्ग की बादशाही भी गँवा देंगे। (मु.ता.11.4.75 पृ.3 अंत)

कुमारों से

1. कुमार हैं ही उड़ती कला वाले। जो सदा निर्बंधन हैं, वही उड़ती कला वाले हैं। तो निर्बंधन कुमार हो। मन का भी बंधन नहीं। .....हलचल मचाने वाले नहीं; लेकिन शांति स्थापन करने वाले। ऐसे श्रेष्ठ कुमार हो?.....ऐसे तो क्वेश्चन नहीं करते हो कि व्यर्थ संकल्प आते हैं- क्या करें? भाग्यवान कुमार हो। 21 जन्म भाग्य का खाते रहेंगे। स्थूल, सूक्ष्म दोनों कमाई से छूट जाएँगे।.....कुमार अर्थात् अपने हर कर्म द्वारा अनेकों की श्रेष्ठ कर्मों की रेखा खींचने वाले।.....इसको कहा जाता है- सच्चे सेवाधारी। (अ.वा.25.12.85 पृ.112 अंत, 113 आदि)

2. कुमार अर्थात् निर्बंधन। सबसे बड़ा बंधन मन के व्यर्थ संकल्पों का है। .....व्यर्थ संकल्प मन की शक्ति को कमज़ोर कर देते हैं; इसलिए इस बंधन से मुक्त। कुमार अर्थात् सदा तीव्र पुरुषार्थी; क्योंकि जो निर्बन्धन होगा, उसकी गति स्वतः तीव्र होगी। बोझ वाला धीमी गति से चलेगा। (अ.वा.18.11.85 पृ.45 मध्य)

3. सदा अपने को हर कदम में साक्षी और सदा बाप के साथी- ऐसे अनुभव करते हो? .....कोई भी कर्मेन्द्रियाँ अपने बंधन में नहीं बाँधे, इसको कहा जाता है- साक्षी। ..... साक्षी रहें और सदा बाप के साथी रहें। हर बात में बाप याद आवे। .....सदा एक बाप, दूसरा न कोई। आत्माएँ सहयोगी हैं; लेकिन साथी नहीं हैं, साथी तो बाप है। .....किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। .....कुमार डबल लाइट हैं। संस्कार, स्वभाव का भी बोझ नहीं। व्यर्थ संकल्प का भी बोझ नहीं। .....अगर ज़रा भी मेहनत करनी पड़ती है तो ज़रूर कोई बोझ है। बच्चे सदा बाप की उम्मीदें पूरी करने वाले होंगे। तो सफलता के सितारे बन गवर्मेण्ट तक यह आवाज़ बुलंद करना कि हम विजयी रत्न हैं। अभी देखेंगे कि कौन-से ग्रुप और कहाँ यह पहले झण्डा लहराते हैं। .....सभी कुमार फर्स्ट नं. में आने वाले हो ना! .....फर्स्ट में आने वाले सदा बाप-समान होंगे। समानता ही समीपता लाती है। समीप अर्थात् समान बनने वाले ही फर्स्ट डिवीज़न में आ सकते हैं। .....एक बाप सर्व सम्बन्ध से मेरा है, यही स्मृति समर्थ आत्मा बना देती है। कुमार अब ऐसा जीवन का नक्शा तैयार करके दिखाओ जो सब कहें- निर्विघ्न आत्माएँ हैं तो यहाँ हैं। .....जहाँ यूनिटी है वहाँ सहज सफलता है; लेकिन गिराने में यूनिटी नहीं करना, चढ़ाने में। .....कुमार अर्थात् सदा आज्ञाकारी, वफ़ादार। हर कदम में फॉलो फादर करने वाले। .....तो जो भी संकल्प करो, पहले चैक करो कि बाप-समान हैं? अगर नहीं हैं तो चेन्ज कर दो; अगर हैं तो प्रैक्टिकल में लाओ। .....माया आती है तो जीत प्राप्त करो, घबराओ नहीं। (अ.वा.9.5.83 पृ.190 अंत, 191,192,193)

4. कुमार यदि विजयी बन जाएँ तो सबसे महान हैं। .....संकल्प और स्वप्न में बाप के सिवाय और कोई नहीं तब कहेंगे नं. वन कुमार। कुमार निर्विघ्न हो गए तो सबको निर्विघ्न बना सकते हैं। कुमारों का टाइटल ही है- विघ्न-विनाशक। किसी भी प्रकार का विघ्न, मंसा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा, किसी भी विघ्न के वशीभूत न हों। इसलिए बच्चों का ही टाइटल है- विघ्न-विनाशक। गणेश बच्चा है ना! .....प्रैक्टिकल बने हो तब यादगार बना है। .....कुमार अगर फ्री हुए तो खिट-2 हो जाएगी। कुमार बिज़ी रहे तो स्व का भी कल्याण, विश्व का भी कल्याण। (अ.वा.29.10.81 पृ.94 अंत, 95 आदि)

5. कुमार जीवन में बाप का बनना, कितने भाग्य की निशानी है। ..... तो सदा अपने को आत्मा भाई-2 हैं, ऐसे ही समझकर चलते रहो। इसी स्मृति से कुमार जीवन सदा निर्विघ्न आगे बढ़ सकती है। .....कुमार सेवा में तो बहुत आगे चले जाते हैं; लेकिन सेवा करते अगर स्व की सेवा भूले तो फिर विघ्न आ जाता है। कुमार अर्थात् हार्ड वर्कर तो हो ही; लेकिन निर्विघ्न बनना है। ..... कुमारों में शारीरिक शक्ति भी है और साथ-2 दृढ़ संकल्प की भी शक्ति है; इसलिए जो चाहे, कर सकते हैं। इन दोनों शक्तियों द्वारा आगे बढ़ सकते हैं।.....कुमार सदा अपने को बाप के साथी समझते हो?.....वैसे भी जीवन में सदा कोई-न-कोई साथी बनाते हैं। तो आपके जीवन का साथी कौन? (बाप) ऐसा सच्चा साथी कभी भी मिल नहीं सकता। कितना भी प्यारा साथी हो; लेकिन देहधारी साथी सदा का साथ नहीं निभा सकते और यह रूहानी सच्चा साथी सदा साथ निभाने वाले हैं। ..... जिसे आज साथी समझकर साथी बनाएँगे, कल उसका क्या भरोसा! इसलिए विनाशी साथी बनाने से फायदा ही क्या! तो सदा कम्बाइण्ड समझने से और संकल्प समाप्त हो जाएँगे; क्योंकि सर्वशक्तिवान साथी है। (अ.वा.8.4.82 पृ.359 मध्यांत, 360 आदि)

6. कुमार सब रीति से निर्बंधन हैं। लौकिक ज़िम्मेवारी से भी निर्बंधन और माया के बंधनों से भी निर्बन्धन। .....बंधनमुक्त की निशानी है- सदा योगयुक्त। .....अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ। ..... कभी भी पूँछ लगाने का संकल्प नहीं करना; नहीं तो बहुत परेशान हो जाएँगे। ..... अभी तो स्वतंत्र हो, फिर ज़िम्मेवारी बढ़ जाएगी। सभी ने बाप को कम्पैनियन बनाया है ना? तो एक कम्पैनियन छोड़कर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक में भी अच्छा नहीं माना जाता। ..... कुमार ज्वाला रूप बनकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जाएगा। .....कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। रूहानी यूथ ग्रुप हो ना! आजकल के यूथ गवर्मेण्ट को भी बदलना चाहते हैं तो बदल देते। वह करते हैं डिस्ट्रक्शन, नुकसान और आप करेंगे कंस्ट्रक्शन। .....हरेक कुमार को अपना ग्रुप तैयार करना चाहिए।.....कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-2 पास विद् ऑनर हो जाएँगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लेना चाहिए। (अ.वा.30.11.79 पृ.67 आदि, 68,69)

7. कुमार जीवन श्रेष्ठ जीवन है। .....सबसे निर्बन्धन कुमार और कुमारियाँ हैं। कुमार जो चाहे वह अपना भाग्य बना सकते हैं। .....जितना सेवा में बिज़ी रहेंगे उतना सहजयोगी रहेंगे; लेकिन याद सहित सेवा हो तो सेफ्टी है। याद नहीं तो सेफ्टी नहीं। .....माया को कुमार बहुत पसंद आते हैं। ..... माया को कुमारों से एक्स्ट्रा प्यार है; इसलिए चारों ओर से कोशिश करती है मेरे बन जाएँ। .....सदा एक ही बात पक्की करो कि कुमार जीवन अर्थात् मुक्त जीवन। जो

जीवनमुक्त है वह संगमयुग की प्राप्ति युक्त होगा। .....कुमार जीवन हल्की जीवन है। इस जीवन में अपनी तकदीर बनाना, यह सबसे बड़ा भाग्य है। (अ.वा.3.12.84 पृ.44 अंत, 45,46)

लण्डन

1. सदा रूहानी गुलाब बन औरों को भी खुशबू देने वाले अविनाशी बगीचे के पुष्प हो ना! ..... एक-2 रूहानी गुलाब कितना वैल्युएबल है। .....हैं तो साधारण पत्थर या चाँदी या सोना; लेकिन वैल्यू कितनी है। सोने की मूर्ति कितनी वैल्यू से देंगे। इतने वैल्युएबल कैसे बने! क्योंकि बाप का बनने से सदा ही श्रेष्ठ बन गए। .....बापदादा को लण्दन निवासियों पर नाज़ है, सेवा के वृक्ष का बीज जो है वह लण्दन है। तो लण्दन निवासी भी बीज-रूप हो गए।.....जब बाप के बने तो सदा बाप का साथ और बाप का हाथ है।.....जिसके ऊपर बाप का हाथ है, वह सदा ही सेफ़ है। (अ.वा.14.1.84 पृ.109 मध्यादि)

2. लण्दन है सेवा का फाउण्डेशन स्थान। तो फाउण्डेशन के स्थान पर रहने वाले भी फाउण्डेशन के समान सदा मज़बूत हैं। क्या करें, कैसे करें- ऐसी कोई की कम्प्लेण्ट तो नहीं है ना! बहुत करके ड्रामा भी माया के ही करते हो ना! हर ड्रामा में माया न आने वाली भी आ जाती है। माया के बिना शायद ड्रामा नहीं बना सकते हो। माया के भी भिन्न-2 स्वरूप दिखाते हो ना!.....लेकिन मायाजीत बनने के बाद वही माया के स्वरूप कैसे बदल जाते हैं, वह ड्रामा दिखाओ। .....लण्दन निवासियों की महिमा तो सभी जानते हैं। आपको सब किस नज़र से देखते हैं? सदा मायाजीत; क्योंकि पावरफुल डबल पालना मिल रही है। बापदादा की तो सदा पालना है ही; लेकिन बाप ने जिन्हों को निमित्त बनाया है, वह भी पावरफुल पालना मिल रही है। निराकार, आकार और साकार- तीनों को फॉलो करो तो क्या बन जाएँगे? फरिश्ता बन जाएँगे ना! लण्दन निवासी अर्थात् नो कम्प्लेण्ट, नो कनफ्यूज़। अलौकिक जीवन वाले, स्वराज्य करने वाले सब किंग और क्वीन हो ना! आपका नशा कितना रूहानी है! अभी भी राजे और भविष्य में भी राजे। डबल नशा है ना! (अ.वा.11.1.83 पृ.44, 45 मध्यांत)

3. सदैव अपने को लाइट हाउस और माइट हाउस समझते हो? अनेक आत्माओं को अंधियारे से रोशनी में लाना, यह लाइट हाउस का कर्तव्य है। .....जैसा बाप वैसा बच्चा, जो बाप का धंधा वही बच्चे का।.....बाप तो हरेक बच्चे को अपने से भी ऊँचा बनाते हैं; इसलिए बच्चे को कहते ही हैं सिरताज। ऐसा सिरताज अपने को समझते हो? माया से घबराते तो नहीं? माया को जन्म देने वाले भी आप हो। जब कमज़ोर होते तो माया को जन्म देते, कमज़ोर न हो तो माया जन्म ही न ले। न जन्म दो, न घबराओ। मायाजीत बनने का वरदान संगम पर बाप द्वारा मिला है। यह तो अनुभव करते हो कि हम कल्प पहले वाले हैं। ..... कल्प-2

के विजयी हो, यह स्मृति रहे तो कोई भी बात बड़ी (नहीं) लगेगी, सहज लगेगी। (अ.वा.14.2.78 पृ.52 आदि)

4. लण्दन निवासी तो हैं ही सेवा के फाउण्डर। लण्दन सेवा का मुख्य स्थान है। सबकी नज़र लण्दन के ऊपर है। लण्दन से क्या डायरैक्शन मिलते हैं?.....तो लण्दन निवासी हैं विशेष सेवाधारी। ब्राह्मण जीवन का धंधा ही है सेवा।..... स्वप्न में सेवा, उठते भी सेवा, चलते-फिरते भी सेवा। इसी सेवा के आधार पर स्वयं भी सदा सम्पन्न, भरपूर और औरों को भी सदा भरपूर कर सकते हो। हरेक अमूल्य रत्न हो। चाहे लण्दन का राज्य-भाग्य एक (लेन+देन) तरफ रखें, दूसरी तरफ आप (निवासी) लोगों को रखें तो आपका भाग्य ज़्यादा है। ..... अभी सब प्रकार के बोझ समाप्त हो गए हैं ना! अभी पिंजरे की मैना से उड़ते पंछी हो गए। कंठी वाले, उड़ने वाले तोते बन गए। पिंजरे वाले नहीं, बाप+दादा के गीत गाने वाले। लण्दन निवासी, हिन्दी जानने वालों को पहला चान्स मिला है, फिर भी डायरैक्ट मुरली सुनने वाले लकी हो। (अ.वा.31.12.81 पृ.203 अंत, 204 आदि)

5. लण्दन निवासियों का निश्चय और उमंग बहुत अच्छा है। कमज़ोर आत्माएँ नहीं हैं, विघ्न आया और पार किया। बकरियाँ नहीं हैं, सब शेरनियाँ हैं। बकरीपन अर्थात् मैं-2 पन खत्म। शक्ति सेना का झण्डा अच्छा बुलन्द है। एक-2 शक्ति सर्वशक्तिवान बाप को प्रत्यक्ष करने वाली है। जब (विजयमाला की) शक्ति सेना मैदान में आ जाएगी तब जय-जयकार होगी। (अ.वा.18.3.81 पृ.65 अंत, 66 आदि)

6. लण्दन विदेश की सेवा का फाउण्डेशन है। आप सब सेवा के फाउण्डेशन स्टोन हो। .....भले फाउण्डेशन वृक्ष के विस्तार में छिप जाता है; लेकिन है तो फाउण्डेशन ना! ..... फाउण्डेशन गुप्त रह जाता है। ऐसे आप भी थोड़ा-सा निमित्त बन औरों को चान्स देने वाले बन गए; लेकिन फिर भी आदि, आदि है। औरों को चान्स देकर आगे लाने में आपको खुशी होती है ना! ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह डबल विदेशी आए हैं तो हम छिप गए हैं? फिर भी निमित्त आप ही हैं। उन्हों को उमंग-उत्साह देने के निमित्त हो। जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही। .....छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्ष फल मिलता ही रहता है। अगर आप लोग सहयोगी नहीं बनते तो लण्दन में इतने सेंटर नहीं खुलते। (अ.वा.26.2.84 पृ.174 मध्य,175 आदि)

7. वैसे भी लण्दन राज्य का स्थान है ना! प्रजा बनने वाले नहीं, सभी सेवा में आगे बढ़ने वाले। जहाँ प्राप्ति है, वहाँ सेवा के सिवाय रह नहीं सकते। सेवा कम अर्थात् प्राप्ति कम। प्राप्ति स्वरूप बिना सेवा के रह नहीं सकते। देखो, आप (जगदम्बा जैसे) लोग कितना भी देश छोड़कर विदेश चले

गए, तो भी बाप ने विदेश से भी ढूँढकर अपना (सेवाधारी) बना लिया। कितना भी भागे, फिर भी बाप ने तो पकड़ लिया ना! (अ.वा.25.12.83 पृ.74 अंत)

8. (लेन+देन) से सारे विदेश के सेवाकेन्द्रों का सम्बन्ध है। तो लण्दन निवासी इस सेवा के वृक्ष का फाउण्डेशन हो गए। फाउण्डेशन (अव्यभिचार में) कमज़ोर तो सारा वृक्ष कमज़ोर हो जाएगा। .....सब ज़िम्मेवारी के ताजधारी हैं। फिर भी आज लण्दन निवासी बच्चों को विशेष अटेन्शन दिला रहे हैं। यह (अव्यभिचार की) ज़िम्मेवारी का ताज सदा के लिए डबल लाइट बनाने वाला है; बोझ वाला ताज नहीं है, सर्व प्रकार के बोझ को मिटाने वाला है। अनुभवी भी हो कि जब (एक प्रति) तन-मन-धन, मंसा-वाचा-कर्मणा, सब रूप से सेवाधारी बन सेवा में बिज़ी रहते हो तो सहज ही मायाजीत, जगतजीत बन जाते हो। ..... ऐसे निरन्तर सेवाधारी निरन्तर मायाजीत हो जाते हैं, विघ्न-विनाशक बन जाते हैं। तो लण्दन निवासी क्या हैं? निरन्तर सेवाधारी। लण्दन में माया तो नहीं आती है ना; कि माया को भी लण्दन अच्छा लगता है? अच्छे-2 रत्न हैं लण्दन के, जगह-2 पर गए हैं। ..... अभी टोटल कितने सेवाकेन्द्र हैं? (50) तो (माला में) 50 जगह का फाउण्डेशन लण्दन है। तो वृक्ष सुन्दर हो गया ना! जिस तना से (विदेशी) 50 टाल-टालियाँ निकले, वह वृक्ष कितना सुन्दर हुआ। ..... बापदादा भी बच्चों के, सिर्फ लण्दन नहीं, सभी बच्चों के सेवा का उमंग-उत्साह देख खुश होते हैं। विदेश में (लगावरूप) लगन अच्छी है; याद की भी और सेवा की भी, दोनों की लगन अच्छी है। सिर्फ एक बात है कि माया के छोटे रूप से भी (पीपल-पात सरिस) घबराते जल्दी हैं। ..... तो विदेशी बच्चों को माया से घबराना नहीं चाहिए, खेलना चाहिए। कागज़ के शेर (माया-रावण) से खेलना होता है या घबराना होता है? .....जितनी मेहनत करते हो, उस हिसाब से डबल विदेशी सभी नं.वन सीट ले सकते हो; क्योंकि दूसरे (वृष्णिवंशी) धर्म के पर्दे के अंदर, (विधर्मी-विदेशी) डबल पर्दे के अंदर बाप को पहचान लिया है। .....हिम्मत वाले भी बहुत हैं, असम्भव को सम्भव भी किया है। .....जानने में भी होशियार, (पांडवों जैसे) मानने में भी होशियार हैं। दोनों में नं॰ वन (पांडवी) हो। बाकी चल करके चूहा आ जाता है तो घबरा जाते हो। है सहज मार्ग; लेकिन अपने व्यर्थ सकंल्पों को मिक्स करने से सहज मुश्किल हो जाता है। तो इसमें भी जम्प लगाओ। माया को परखने की आँख तेज़ करो। .....पहले विदेशियों में विशेष फँसने के संस्कार थे, अभी हैं फास्ट जाने के संस्कार। एक में नहीं फँसते हैं; लेकिन अनेकों (विधर्मियों) में फँस जाते हैं। .....तो जितना ही फँसने के संस्कार थे उतना ही फास्ट जाने के संस्कार हैं। सिर्फ एक बात है, छोटी चीज़ को बड़ा नहीं बनाओ, बड़े को छोटा बनाओ। यह भी होता है क्या? यह क्वेश्चन नहीं। यह क्या हुआ? ऐसे भी होता है? इसके बजाय जो (ड्रामा में) होता है, कल्याणकारी है। .....क्वेश्चन मार्क ज़्यादा होते हैं। तो अब मधुबन की वरदान भूमि में क्वेश्चन मार्क खत्म

करके, फुलस्टॉप लगा के जाओ। क्वेश्चन मार्क मुश्किल है, फुल स्टॉप सहज है। (अ.वा.8.1.82 पृ.224 आदि, 225, 226, 227)

9. सभी अपने को सदा बाप के साथी अनुभव करते हो? .....सदैव (एक) बाप की याद की छत्रछाया के अंदर हो। किसी भी प्रकार के माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नहीं सकते।.....खास विदेशियों के ऊपर बापदादा का विशेष स्नेह और सहयोग है। विदेशी आत्माएँ सेवा के क्षेत्र में भी अपना अच्छा (अव्यभिचारी) पार्ट आगे चल करके बजाएगी। सेवा का भविष्य भी बहुत अच्छा है। .....जनरल प्रोग्राम के साथ-2 विशेष आत्माओं की सेवा करो- उसके लिए मेहनत ज़रूर लगेगी; लेकिन सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। यह नहीं सोचो, बहुत किया है, फल नहीं दिखाई देता। फल तैयार हो रहे हैं। कोई भी कर्म का फल निष्फल हो ही नहीं सकता; क्योंकि (साकारी सो निराकारी) बाप की याद में करते हो ना! याद में किए हुए का फल सदा श्रेष्ठ रहता है; इसलिए कभी भी दिलशिकस्त नहीं बनना। जैसे (दोनों बेहद के) बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है, वैसे स्वयं भी निश्चय-बुद्धि रहो। कोई फल जल्दी निकलता, कोई थोड़ा देरी से; इसलिए इसका भी सोचो नहीं, करते चलो। अभी जल्दी ही ऐसा समय आएगा जो स्वतः आपके पास इनक्वायरी करने आएँगे कि यह (एडवांस-ज्ञान का) संदेश वा सूचना कहाँ से मिली थी। सिर्फ थोड़ा सा विनाश का ठका होने दो, तो फिर देखो कितनी लम्बी क्यू लग जाती है। फिर आप लोग कहेंगे- हमको समय नहीं है। अभी वह लोग कहते हैं- हमें टाइम नहीं, फिर आप कहेंगे- टू-लेट। .....सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म (परमात्म-)योग की शक्ति स्वतः ही आत्माओं को आपके तरफ आकर्षित करेगी। तो यही सहज सेवा है। यह तो सभी कर सकते हो ना! लण्दन निवासियों ने सेवा का विस्तार अच्छा किया है, हमजिन्स अच्छी तैयार की हैं। माला तैयार हो गई है? 108 रत्न तैयार किए हैं। अब लण्दन वाले ऐसा ग्रुप तैयार करें जिसमें सब वैराइटी हों, वैज्ञानिक भी हों, धार्मिक भी हों, नेताएँ भी हों और जो भिन्न-2 ऐसोसियेशन्स हैं, उनकी भी विशेष आत्माएँ हों। जब तक स्थापना के लिए सब प्रकार की वैराइटी आत्माएँ स्थापना के कार्य में बीज नहीं डालेंगी तो विनाश कैसे होगा? क्योंकि सतयुग में सब प्रकार के कार्य वाले काम में आएँगे, सेवाधारी बनकर आपकी सेवा करेंगे। ..... राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रॉयल फैमिली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्लाहना दे कि हमें संदेश नहीं मिला है। (अ.वा.14.1.79 पृ.214 अंत, 215, 216)

10. सभी स्नेह के सूत्र में बंधे हुए बाप के माला के मणके हो ना! .....तो (एक) स्नेह के सूत्र में सब (देशी-विदेशी) एक बाप के बने हैं, इसका यादगार माला है। जिसका एक बाप, दूसरा न कोई है, वही एक ही स्नेह के सूत्र में माला के मणके बन पिरोये जाते हैं। (स्नेह का) सूत्र एक है और दाने अनेक (वैराइटी) हैं। तो यह एक बाप के स्नेह की निशानी है। तो ऐसे अपने को माला

के मणके समझते हो ना या समझते हो- 108 में तो बहुत थोड़े आएँगे। क्या समझते हो? यह तो 108 का नं. निमित्तमात्र है। जो भी बाप के स्नेह में समाए हुए हैं, वह गले की माला के मोती हैं ही। जो ऐसे एक ही लगन में मगन रहने वाले हैं, तो मगन अवस्था निर्विघ्न बनाती है और निर्विघ्न आत्माओं का ही गायन और पूजन होता है। .....अविनाशी रत्न बने हो, इसकी मुबारक हो। 10 साल या 15 साल से माया (बेटी की चेली) से जीते रहे हो- इसकी मुबारक हो। आगे संगमयुग पूरा ही (10-15 साल) जीते रहो। सभी पक्के हो; इसलिए बापदादा ऐसे पक्के अचल बच्चों को देख खुश हैं। (अ.वा.18.2.85 पृ.174 आदि, 175 आदि)

मधुबन

1. मधुबन महान भूमि है। महाभाग्य भी है तो महापाप भी है। मधुबन में जा करके अगर ऐसा कोई व्यर्थ बोलता है तो उसका बहुत पाप बन जाता है। (अ.वा.12.3.84 पृ.210 मध्य)

2. यह वण्डरफुल विश्वविद्यालय है, देखने में घर भी है; लेकिन बाप ही सत शिक्षक है, घर भी है और विद्यालय भी है। इसलिए कई लोग समझ नहीं सकते हैं कि यह घर है या विद्यालय है। (अ.वा.22.4.84 पृ.265 आदि)

3. मधुबन की यह विशेषता है- हर बार कोई-न-कोई नई एडीशन हो जाती है। (अ.वा.14.12.83 पृ.54 मध्य)

4. मधुबन किसको कहा जाता है? जहाँ ब्राह्मणों का संगठन है, वह मधुबन है। तो हरेक विदेश के स्थान को मधुबन बनाओ। मधुबन बनावेंगे तो बापदादा भी आवेंगे; क्योंकि बाप का वायदा है कि मधुबन में आना है। तो जहाँ मधुबन वहाँ बापदादा। आगे चलकर बहुत वण्डर्स देखेंगे। ..... जहाँ संगठन है वहाँ बापदादा भी हाज़िर-नाज़िर हैं। वहाँ खुशी होती या यहाँ आने में खुशी होती? कितना भी कहो, फिर भी बड़ा, बड़ा है, छोटा, छोटा है; क्योंकि डायरैक्ट साकार तन की जन्मभूमि और कर्मभूमि, चरित्र भूमि का विशेष महत्व तो (होता) ही है। .....तो स्थान का महत्व है; लेकिन अपनी फुलवाड़ी को बढ़ाओ। मधुबन जैसा नक्शा बनाओ। जब मिनी-मधुबन भी होगा तो सभी को आकर्षण होगी देखने की। (अ.वा. 24.1.78 पृ.42 अंत, 43 आदि)

5. यह आ+बू बहुत भारी तीर्थ है। बाप कहते हैं- मैं यहाँ ही आकर सारी सृष्टि को 5 तत्वों सहित, सभी को पवित्र बनाता हूँ। कितनी सेवा है! एक ही बाप है, जो आकर सर्व की सद्गति करते हैं। (मु.ता.18.1.71 पृ.2 मध्यांत)

6. यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्त वेश में काम चलता रहेगा। (मु.ता.11.1.73 पृ.1 मध्यांत)

7. इस यूनिवर्सिटी के लिए कोई करोड़ों की बिल्डिंग नहीं बनाई है, यह मकान बनाया है। पिछाड़ी में आकर बच्चे रहेंगे। जो योगयुक्त होंगे वह आकर रहेंगे। इन आँखों से विनाश देखेंगे। (मु.ता.28.10.78 पृ.3 मध्यादि)

8. यह मधुबन है संगमयुग, जहाँ डायरैक्ट बाप से तुम सुनते हो। वहाँ तो ब्राह्मणियाँ बैठ सुनाती हैं। यहाँ तो शिवबाबा सम्मुख बैठ समझाते हैं। यहाँ का प्रभाव बहुत है। (मु.ता.26.10.71 पृ.1 अंत)

9. मधुबन-निवासी हर कर्म बाप के साथ करने वाले हो ना? ऐसा श्रेष्ठ भाग्य और किसी का होगा, जो हर कर्म मधुबन में मधुबन के बाप के साथ हो? मधुबन में चारों ओर बाप ही बाप है ना! तो मधुबन-निवासियों की विशेषता है- सदा हर कर्म बाप के साथ अनुभव करने वाले। .....सदा इसी अनुभव में चलने वाले को ही मधुबन-निवासी कहते हैं। जिस समय यह अनुभव नहीं होता तो मधुबन-निवासी नहीं हुए, उस समय मधुबन में रहते भी मधुबन-निवासी नहीं हैं और जो दूर रहते भी हर कर्म बाप के साथ करते, वह दूर रहते भी मधुबन-निवासी हैं। मधुबन वाले हर चरित्र में साथ चलने वाले हैं। भाग+वत मधुबन का यादगार है। (अ.वा.21.10.87 पृ.100 आदि)

10. यहाँ रूहानी कारोबार है। बाकी सारी दुनियाँ में जिस्मानी कारोबार है। वास्तव में कारोबार सारी चलती है रूहों की। (मु.ता.7.9.76 पृ.1 आदि)

11. यह ईश्वरीय कार्य चल रहा है, कोई साधारण बात नहीं है- यह अनुभव यहाँ आकर करना चाहिए।.....सभी प्रकार के साधनों से बाप के प्रैक्टिकल पार्ट की प्रत्यक्षता अवतरण भूमि पर तो प्रत्यक्ष मिलनी चाहिए। (अ.वा.17.5.72 पृ.280 मध्यांत)

12. मधुबन है ही परिवर्तन भूमि। .....मधुबन को महायज्ञ व राजस्व अश्वमेघ यज्ञ कहते हैं। तो यज्ञ में आहुति डाली जाती है।.....जो नाम देते हो, वैसा काम भी करते हो व नहीं? नाम है महायज्ञ, परिवर्तन भूमि और वरदान भूमि। तो जैसा नाम वैसा कार्य करो। (अ.वा.24.10.75 पृ.223 मध्य)

13. यह जो कहावत है, 'अपना घर, दाता का दर'- यह कौन-से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर, अपना घर तो मधुबन है ना! अपने घर में अर्थात् दाता के घर में आए हो। घर अथवा दर कहो, बात एक ही है। अपने घर में आने से आराम मिलता है ना- मन का आराम, तन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ, इससे भी आराम मिल जाता। थाली में बना-बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मन्दिर में घण्टी बजाते हैं ना! ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगाएँगे तो भी घंटी बजाएँगे। आपकी भी घण्टी बजती है ना! आजकल फैशनेबल हैं तो रिकॉर्ड बजता है। .....चैतन्य ठाकुरों को चार बजे से भोग लगाना शुरू हो जाता है। .....

चैतन्य स्वरूप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते; लेकिन यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। (अ.वा.25.11.85 पृ.56 मध्य, 57 आदि)

14. याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुबन द्वारा ऑफिशियल जाते रहना चाहिए, जिससे कि आत्माओं का किला मज़बूत रहेगा। (अ.वा.3.8.75 पृ.76 अंत)

15. पहले दिन जब मधुबन में आते हैं, वह फोटो और फिर जब जाते हैं, वह फोटो, दोनों निकालने चाहिए। (अ.वा.15.3.84 पृ.216 मध्य)

मधुबनवासियों प्रति

1. मधुबन-निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन-सा? व्रत यही लेना है कि हम सब एक मत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रूहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक/दो के सहयोगी बन, शुभ चिंतक बन, शुभ भावना और शुभ कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी, एक बाप-समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला, स्वभाव बनाने का किला मजबूत बनावेंगे। .....मधुबन-निवासियों में न सिर्फ स्वयं के प्रति, साथ ही संगठन के प्रति भी व्रत लेने की हिम्मत चाहिए। .....जैसे और ज़ोन वालों को अपनी-2 विशेष सर्विस का सबूत देने के लिए सुनाया है, वैसे ही मधुबन-निवासियों को भी इस बात का सबूत देना है। इस आधार पर ही जनवरी में प्राइज़ मिलेगी। .....अभी तो पुरानों को, आने वाले नए बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन-रात बिज़ी रहना चाहिए। यह अव्यक्त पार्ट भी विशेष नयों के लिए है। .....पुरानों का कार्य है नयों को अपने से भी आगे बढ़ाने का सबूत दिखाना व सर्व शिक्षाओं को साकार स्वरूप में दिखाना है। (अ.वा.18.7.74 पृ.118 अंत, 119, 120)

2. मधुबन-निवासियों को अथक भव का वरदान मिला हुआ है। तो अथक हो ना? और भी मेला चले? जितना आगे चलेंगे उतना यह मेला बड़ा ही होगा, कम नहीं। जितना बढ़ाते जाएँगे उतना बढ़ता जाएगा। ..... मधुबन-निवासियों ने पुरुषार्थ का नया तरीका क्या निकाला है? .....सहज पुरुषार्थ की नई इनवेन्शन निकालो और प्रैक्टिकल अनुभव करके दूसरों को सुनाओ। .....मधुबन विश्व के आगे स्टेज(मंच) है। स्टेज पर जो एक्टर होता (है), उसका हर एक्ट पर कितना अटेन्शन रहता है, हाथ उठाएगा तो भी अटेन्शन से; क्योंकि उसे मालूम है- हमें सब देखने वाले हैं। .....नया प्लैन बनाओ कि स्वतः और सहजयोगी कैसे बनें?..... सहजयोग किस आधार पर होता और या स्वतः योगी किस युक्ति से बन सकते, यह प्लैन निकालो और अनुभव करो, फिर सभी को सुनाओ तो वह आपके गुणगान करेंगे। मेहनत कम

और सफलता ज़्यादा, ऐसे नए पुरुषार्थ के तरीके बनाओ। प्लैन ऐसा तैयार करो जिसको देख सब मधुबन-निवासियों को थैंक्स दें। (अ.वा.13.1.78 पृ.24 मध्य, 25)

3. सबकी नज़र अब मधुबन में विशेष मुख्य रत्नों पर है। तो उस नज़र में ऐसे दिखाना है जो उनकी नज़र आप लोगों की बदली हुई नज़रों को ही देखे- अब वह पुरानी नज़र नहीं, पुरानी वृत्ति नहीं, तब अन्तिम नगाड़ा बजेगा। यह संगठन कॉमन नहीं है, यह संगठन कमाल का है। .....तो सबको सा. हो कि यह साक्षात् बाप+दादा बन करके ही निकले हैं। (अ.वा.7.10.76 पृ.1 अंत)

4. आप और सभी से एक्स्ट्रा भाग्यशाली हो। क्यों? कहते हैं ना कि जिनके घर में बहुत मेहमान आते हों, वह बहुत भाग्यशाली होते हैं। तो तुम भी एक्स्ट्रा भाग्यशाली हो; क्योंकि सभी से ज़्यादा मेहमान यहाँ आते हैं। ..... मेहमाननिवाज़ी ऐसी करनी है जो अपने घर से पूरा ही मेहमान हो जाए, आपकी मेहमाननिवाज़ी उनको सदा के लिए मेहमान बना दे। बापदादा साकार में यह करके दिखाते थे। एक दिन की मेहमाननिवाज़ी में पूरे जीवन के मेहमान बनाना, ऐसी मेहमाननिवाज़ी करनी है। इसको कहा जाता है- सन शोज़ फादर। (अ.वा.16.7.69 पृ.88 मध्य)

5. इस मधुबन के लिए ही गायन है कि कोई ऐसा-वैसा पाँव नहीं रख सकता। मधुबन है सौभाग्य की लकीर। उसके अंदर और कोई पाँव नहीं रख सकता। आप सभी को बापदादा समझाते हैं कि यह स्नेह की लकीर है, जिस स्नेह के घेराव के अंदर बापदादा निवास करते हैं। इसके अंदर कोई आ नहीं सकता, चाहे भल अपना शीश भी उतार कर रखे। साकार रूप में स्नेह मिलना कोई छोटी बात नहीं है, उसके लिए तो आगे चलकर जब रोना देखेंगे तब आप लोगों को उसकी वैल्यू का मालूम होगा। रो-रोकर आपके चरणों में गिरेंगे। .....सर्व सम्बन्धों का सुख, रसना जो आप आत्माओं में भरी हुई है, वह और कोई में नहीं हो सकती। तो ड्रामा में अपने इतने ऊँच भाग्य को सदैव सामने रखना। (अ.वा.6.12.69 पृ.153 अंत, 154 आदि)

6. मधुबन-निवासियों ने बहुत सुना है। बाकी सुनने को कुछ रहा है? .....जितने तीर भरे हैं, उतने छोड़े हैं? मधुबन-निवासियों को तीन प्रकार की सर्विस का चान्स है- किस प्रकार की सर्विस का विशेष चान्स है? विशेष मधुबन-निवासियों को सहज सर्विस का साधन यह वरदान भूमि या चरित्र भूमि का आधार है। इस भूमि के चरित्र की महिमा अगर किसी आत्मा को सुनाओ, तो जैसे गीता सुनने में इतना इण्ट्रेस्ट नहीं लेते जितना भागवत सुनने में, तो ऐसे (भगाने के) प्रैक्टिकल चरित्र सुनाने का साधन मधुबन वालों को है। ..... तो मधुबन-निवासी भागवत द्वारा सर्विस कर सकते हैं कि यहाँ 'ऐसा' होता है। (अ.वा.14.11.78 पृ.60 मध्य, 61 आदि)

7. मधुबन वाले मास्टर शिक्षक हो। आप सिखाओ, न सिखाओ; लेकिन आपका हर कर्म हरेक आत्मा को शिक्षा देता रहता है, चाहे साधारण भी करेंगे तो भी सीखकर जाते हैं और श्रेष्ठ करते

हो तो भी सीखकर जाते हैं। शिक्षा देते नहीं हो; लेकिन मधुबन-निवासी बनना अर्थात् मास्टर शिक्षक बनना।..... आप लोगों को खास तख़्त पर बैठकर सिखाने की ज़रूरत नहीं। ..... मधुबन-निवासी हरेक (ज्ञान की) लाइट, (योग की) माइट का गोला बनो, तो लाइट और माइट के अंदर स्वयं ही सभी आकर्षित होकर आएँगे। अभी तो बाप का कर्तव्य चल रहा है। (अ.वा.28.11.81 पृ.184 अंत, 185)

महाराष्ट्र

1. महाराष्ट्र की विशेषता है- जैसे 'महाराष्ट्र' नाम है, वैसे महान आत्माओं का सुन्दर गुलदस्ता बापदादा को भेंट करेंगे। महाराष्ट्र की राजधानी सुन्दर और सम्पन्न हैं। तो महाराष्ट्र को ऐसे सम्पन्न नामी-ग्रामी आत्माओं को सम्पर्क में लाना है। ..... अब अंत के समय में इन सम्पत्ति वालों का भी (सम्पर्क का) पार्ट है। सम्बन्ध में नहीं; लेकिन सम्पर्क का पार्ट है। (अ.वा.3.5.84 पृ.290 अंत, 291 आदि)

2. महाराष्ट्र की विशेषता क्या है, जानते हो? महान तो हैं ही; लेकिन विशेष विशेषता क्या गाई जाती है? महाराष्ट्र में गणपति की पूजा ज़्यादा होती है। गणपति को क्या कहते हैं? विघ्न-विनाशक। .....तो महाराष्ट्र वाले क्या करेंगे? हर महान कार्य में श्री गणेश करेंगे ना! महाराष्ट्र अर्थात् सदा विघ्न-विनाशक राष्ट्र। ..... महाराष्ट्र को सदा अपनी इस महानता को विश्व के आगे दिखाना है। विघ्न से डरने वाले तो नहीं हो ना! विघ्न-विनाशक चैलेन्ज करने वाले हैं। (अ.वा.17.4.84 पृ.249 आदि)

3. सभी संगमयुग के विशेष वरदानों से अपने को सम्पन्न बना रहे हो? संगमयुग को कहा ही जाता है- वरदानी युग। संगमयुग पर ही असम्भव सम्भव होता है।.....संगमयुग को सदाकाल का वरदान है। .....सिर्फ एक ही सहज बात तो याद करनी है।..... यह है बीज। बीज को पकड़ना तो सहज होता है ना, वृक्ष के विस्तार को पकड़ना मुश्किल होता है। तो एक बात याद रखो- अब अभूल बनो। द्वापर-कलियुग से भूलने वाले बने और इस समय अभूल बनते हो।..... बाप का स्नेह बच्चों के साथ सदा है। सदा बच्चों की याद ही बाप को रहती है। और कोई काम है क्या बाप को? बच्चों को याद करना, यही काम है ना! चाहे जाने या न जाने; लेकिन बाप तो याद करते हैं। जैसे बाप का काम है बच्चों को याद करना, वैसे बच्चों का भी काम है बाप को याद करना। (अ.वा.7.12.79 पृ.91 आदि, 92 मध्य)

मांगना नहीं

1. ब्रह्माकुमारी को कोई चीज़ माँगने का हक नहीं है, माँगने से तो मरना भला है। (मु.ता.4.10.73 पृ.4 अंत)

2. सेण्टर्स पर जिज्ञासुओं से माँगते रहते हैं- हमको यह चाहिए। बाबा हमेशा कहते हैं- माँगो मत।..... माँगना न है। तुमको कुछ भी चाहिए, शिवबाबा से मिल सकता है। और कोई से लेंगे तो उनकी याद रहेगी। हरेक चीज़ डायरैक्ट शिवबाबा से लेंगे तो शिवबाबा तुमको घड़ी-2 याद पड़ेगा। शिवबाबा कहते हैं- तुम्हारा लेन-देन का हिसाब मेरे से है। यह ब्रह्मा तो बीच में दलाल है। देने वाला मैं हूँ। मेरे से तुम कनेक्शन रखो थ्रू ब्रह्मा। (मु.ता.25.1.72 पृ.2 अंत)

3. माँगने से ब्रह्माकुमारियों को डूब मरना अच्छा है। कब भी माँगो नहीं। आज शिवबाबा का जन्मदिन है, कुछ तो भेजें। ऐसे माँगो नहीं। (मु.ता.4.4.72 पृ.3 मध्यांत)

4. माँगने से मरना भला। कोई भी चीज़ माँगनी नहीं होती है। शक्ति, कृपा, आशीर्वाद कई बच्चे माँगते हैं। भक्तिमार्ग में माँग-2 कर, माथा घिसा-2 कर, सीढ़ी नीचे गिरते ही आए हैं। अभी माँगने की कोई दरकार ही नहीं। बाप कहते हैं- डायरैक्शन पर चलो। (मु.ता.7.6.69 पृ.1 आदि)

5. बाप आकर फिर निरोगी अमर बनाते हैं। दृष्टि देते हैं ना! यहाँ कुछ भी माँगने की दरकार नहीं। सिर्फ श्रीमत पर चलना होता है। (मु.ता.16.6.72 पृ.1 मध्य)

6. पैसा-कौड़ी कुछ भी लेने का नहीं है। वह समझते हैं- यह राखी बाँधने आती है, कुछ देना पड़ेगा। बोलो, हमको और कुछ चाहिए नहीं, सिर्फ 5 वि+कारों का दान दो। यह दान लेने लिए हम आए हैं; इसलिए पवित्रता की राखी बाँधते हैं। बाप को याद करो, पवित्र बनो तो यह(ल.ना.) बनेंगे। बाकी हम पैसा कुछ भी नहीं ले सकते। (मु.ता.30.4.75 पृ.2 अंत)

7. बाबा हमेशा कहते हैं बच्चों को कि बच्चे, माँगने से तो मरना भला। बाप से वर्सा पा लिया, फिर माँगते क्यों हो कुछ भी? (मु.ता.28.7.77 पृ.2 मध्य)

8. कोई भी बात के माँगने वाले मंगता नहीं बनो, दाता बनो। मान, शान, प्रशंसा, बड़ापन आदि माँगने की इच्छा मत करो। माँगेंगे तो जैसे आजकल के माँगने वाले को कोई भी प्राप्ति नहीं कराते, और ही दूर से उसे भगावेंगे। इसी प्रकार यह रॉयल माँगने वाले, स्वयं को सर्व आत्माओं से स्वतः ही दूर करते हैं। (अ.वा.16.5.74 पृ.43 मध्य)

9. मेरा कुछ इन्साफ(न्याय) होना चाहिए। भगवान के घर में भी इन्साफ न हो तो कहीं इं+साफ मिलेगा? कभी भी इंसाफ माँगने वाले नहीं बनना। किसी भी प्रकार के माँगने वाला स्वयं को तृप्त आत्मा अनुभव नहीं करेगा। (अ.वा.27.11.78 पृ.77 मध्यांत)

मातागुरू

1. मातागुरू बिगर कोई का उद्धार नहीं होना है। माता को ही निमित्त रखा जाता है। जगदम्बा मुख्य है ना! उनको(उनका) देखो कितना प्रभाव है, ब्रह्मा का इतना नहीं, सिर्फ पुष्कर में है। वहाँ पर बहुत करके पुरुष ही जाते हैं। जगदम्बा का बहुत मान है। (मु.ता.13.7.72 पृ.3 मध्यांत)

2. मातागुरू बिगर किसका कल्याण हो न सके। तुम माताओं द्वारा पुरुष भी ज्ञान पाते हैं। पुरुष किसकी सद्गति कर नहीं सकते। (मु.ता.9.8.72 पृ.3 आदि)

3. बाप आय गुरूपद तुम माताओं को देते हैं। मन्दिर में भी मैज़ॉरिटी माताओं की है; इसलिए भारत माता शक्तिअवतार गाया जाता है। (मु.ता.17.8.72 पृ.1 अंत)

4. भगवान कहते हैं- वन्देमातरम्। यह माताएँ हमारी गुरु हैं। इन माता गुरू बिगर घोर अंधियारा है। इन कन्याओं द्वारा बाण मरवाए हैं। (मु.ता.30.7.78 पृ.3 अंत)

5. बापदादा दोनों की मत मशहूर है। माता की मत पर भी चलना चाहिए; क्योंकि माता गुरू बनती है। वह माता-पिता अलग है। इस समय माता को गुरू बनाने का सिलसिला चलता है। (मु.ता.13.4.78 पृ.2 अंत, 3 आदि)

6. बाप भी कहते हैं- मातागुरू बिगर कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति पा न सके। तो ज़रूर जब माता द्वारा एडॉप्ट हो तब जीवनमुक्ति पावे। माता को गुरू समझना चाहिए। बच्चों को अपना अहंकार न रख माता का मर्तबा रखना है। फॉलो करना है। (मु.ता.2.2.77 पृ.3 मध्य)

माताओं से

1. माताएँ जगत माताएँ बन गईं। अभी हद की माताएँ नहीं, ... हद की गृहस्थी में फँसने वाली नहीं। .....माताएँ बहुत भटक-2 कर थक गईं, तो बाप माताओं की (विकारी) थकावट देख, उन्हें थकावट से छुड़ाने आए हैं। (अ.वा.12.12.84 पृ.66 मध्य)

2. सभी माताएँ (अधरकुमारी जैसी) जगत माताएँ हो गईं ना! .....हद की गृहस्थी की माताएँ नहीं। ..... तो घर में रहती हो या विश्व की सेवा के स्थान पर रहती? .....जितना बेहद का लक्ष्य रखेंगी तो हद के बन्धनों से सहज मुक्त होती जाएँगी। .....श्रेष्ठ कार्य के लिए समय न मिले, शरीर काम न करे- यह हो नहीं सकता। पहिये लग जाएँगे। जब उमंग-उत्साह के पहिये लग जाते हैं तो न चलने वाले भी चलने लग पड़ते हैं। .....तो उमंग-उत्साह और खुशी के पहिये लगाकर यह हद के बंधन काटो। पति का बंधन, बच्चों का बंधन तो खत्म हुआ, अभी इन सूक्ष्म बंधनों से भी मुक्त बनो। (अ.वा.9.5.84 पृ.309 आदि)

3. माताएँ कहेंगी- मेरा पति ठीक (निर्विकारी) हो जाए, बच्चा चल जाए, धंधा ठीक हो जाए। यही बातें सोचते या बोलते हैं; लेकिन यह चाहना पूर्ण तब होगी, जब स्वयं हल्के हो (साकारी सो निराकारी 1) बाप से शक्ति लेंगे। इसके लिए बुद्धि रूपी बर्तन खाली चाहिए। क्या होगा, कब होगा, अभी तो हुआ ही नहीं- इससे खाली हो जाओ। (अ.वा.13.4.83 पृ.135 मध्य)

4. माताओं के लिए विशेष बापदादा सहज मार्ग की सौगात लाए हैं। .....सहज प्राप्ति जो होती है, यही सौगात है। .....माताओं को विशेष खुशी होनी चाहिए कि हमारे लिए खास (पतित-पावन राम) बाप आए हैं। ..... माताओं को किसी ने भी नामी-ग्रामी नहीं बनाया और बाप ने 'पहले माता' का सिलसिला स्थापन किया। तो माताएँ सिकीलधी हो गईं ना! कितने सिक से बाप ने ढूँढ़ा और अपना बना लिया। .....बाप ने देखो, कैसे (आस+ट्रे+लिया जैसे) कोने-2 से ढूँढ़ कर निकाल दिया। .....लोग कहते हैं- दो/चार माताएँ भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकतीं और अभी माताएँ सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। वह कहते, रह नहीं सकतीं और बाप कहते, माताएँ ही रह सकती हैं। ..... सिर्फ लौकिक परिवार की ज़िम्मेवारी निभाने वाली नहीं; लेकिन विश्व के (देशी-विदेशी) सर्व आत्माओं के सेवा की ज़िम्मेवारी निभाने वाली। चाहे निमित्त कहाँ भी रहते हों; लेकिन स्मृति में विश्व (पिता की) सेवा रहे। ..... लक्ष्य होगा बेहद का तो लक्षण भी बेहद के आएँगे; नहीं तो हद में ही फँसे रहेंगे। ..... माताओं को (ईश्वरीय) सेवा के मैदान पर आना चाहिए। एक-2 माता एक-2 सेवाकेन्द्र सम्भाले। अगर फुर्सत नहीं है तो आपस में दो-तीन का ग्रुप बनाओ। ऐसे नहीं, घर का बन्धन है, (2) बच्चे हैं। ..... अभी शक्तियाँ मैदान पर आओ, जो पालना ली है, उसका रिटर्न दो। .....जितनी सेवा करेंगे, उतना निर्विघ्न रहेंगे और खुशी भी रहेगी। (अ.वा.11.5.83 पृ.200 अंत, 201, 202)

5. सभी शक्तियों के हाथ में बाप की प्रत्यक्षता का (भारतमाता की विजय का) झण्डा है ना? शक्तियों को जैसे और शस्त्र दिए हैं, अब शक्तियों को बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना है। हरेक शक्ति द्वारा बाप प्रत्यक्ष हो जाए तभी जय-जयकार हो जाएगी। शक्तियों द्वारा बाप की प्रत्यक्षता हुई है, तभी सदा शिवशक्ति इकट्ठा दिखाया है। .....बापदादा को शक्ति सेना पर नाज़ है। जिनको किसी ने आगे नहीं बढ़ाया, वह इतनी आगे बढ़ीं जो सारे विश्व को बदल दें। जिन्हें लोगों ने नाउम्मीद करके छोड़ दिया, बाप ने उन्हें उम्मीदवार बना दिया। पहले शक्ति, पीछे शिव। अपने को भी पीछे किया। ..... माताएँ गिरीं तो चरणों तक, चढ़ती हैं तो एकदम सिर का ताज।.....माताओं को बाप द्वारा विशेष आगे जाने की लिफ्ट मिली है। .....माताओं को सदा विशेष खुशी होनी चाहिए कि क्या से क्या बन गईं। नाउम्मीद से सर्व उम्मीदों वाली जीवन बन गई। पास्ट की जीवन में क्या थे, अब क्या बन गए! दुनियाँ भटक रही है और आप ठिकाने पर, तो खुशी होनी चाहिए ना! .....सदा इसी नशे में रहो, हम

कल्प पहले वाली गोपियाँ हैं। बाप मिला गोया सब-कुछ मिला। .....शक्तियों का मुख्य गुण है- निर्भय। माया से भी डरने वाली नहीं। ..... जो निर्भय स्टेज पर रहते, उनका साक्षात्कार शक्ति रूप का होता- सदा शस्त्रधारी। दुनियाँ आपको इसी रूप में नमस्कार करने आएगी। माताएँ सिर्फ बाप के साथ सर्व सम्बन्ध निभाती रहें तो नं.वन ले सकती हैं। माताएँ अगर नष्टोमोहा में पास हो गईं तो बहुत आगे नं. ले सकती हैं। माताओं के लिए यही सब्जेक्ट ज़रूरी है। (अ.वा.30.11.79 पृ.72 मध्य, 73, 74)

6. माताएँ तीव्र पुरुषार्थी हो ना? अभी घर में नहीं बैठ जाना, अभी ग्रुप बनाकर चारों ओर सेवा के लिए फैल जाओ। सेण्टर खोलो। अगले साल देखेंगे, कितने सेण्टर खोले। समस्याओं के पहले सबको संदेश दे दो, तो सभी आपके बहुत गुणगान करेंगे। अभी सेवाकेन्द्र खोलते जाओ। सन्देश देने के लिए कोई साधन अपनाओ। .....माताओं को तो सदा खुशी में नाचना चाहिए; क्योंकि नाउम्मीद से उम्मीदवार हो गईं, बाप ने सिर का ताज बना दिया। .....पाण्डव भी माताओं को देखकर खुश होते हैं; क्योंकि शक्तियाँ हैं ही पाण्डवों के लिए ढाल। ढाल मज़बूत होगी तो वार नहीं होगा; इसलिए माताओं को आगे रखने में पाण्डवों को खुश होना चाहिए। अगर स्वयं आगे रहेंगे तो डण्डे खाने पड़ेंगे। शक्तियों को आगे रखेंगे तो पाण्डवों की भी महिमा है। आगे रखना भी आगे होना ही है। (अ.वा.5.12.79 पृ.88 मध्यादि, 89 अंत)

7. एक माताओं का संगठन बनाना। जैसे कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास किया है, वैसे ही माताएँ जो मददगार बन सकती हैं और हैं, उन्हों का मधुबन में संगठन रखना। कुमारियों के साथ माताओं का संगठन हो। संगठन के समय फिर आना होगा। (अ.वा.2.2.69 पृ.34 मध्य)

8. माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ। .....क्या भी हो, कुछ भी हो, खुशी में नाचते रहो। ‘‘मिरूआ मौत मलूका शिकार’’, इसको कहते हैं- नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजयमाला के दाने बनते हैं। .....पेपर बहुत आएँगे। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्तहान ही न हो तो क्लास चेन्ज कैसे होगा? इसलिए फुल पास होना, न कि पास होना है। (अ.वा.1.12.78 पृ.91 अंत, 92 आदि)

9. शक्तियों को, माताओं को सबने नीचे गिराया, अब बाप आ करके ऊँचा चढ़ाते हैं, अपने से भी आगे शक्तियों को रखते हैं। तो शक्तियों को विशेष खुशी होनी चाहिए। .....माताएँ कभी रोती तो नहीं हैं? कभी आँखों में आँसू भरते हैं? अब नयनों में रूहानियत आ गई। जहाँ रूहानियत होगी वहाँ पर आँसू नहीं होंगे। .....रोना अर्थात् दुःख की निशानी। सुख के सागर में समाये हुए रो कैसे सकते? कभी भी दुःख की लहर स्वप्न में भी न आए। स्वप्न भी सुख स्वरूप हों; क्योंकि सुख का सागर अपने समीप सम्बन्ध में आ गए। तो सदा सुख में, खुशी में रहो, कभी रोना नहीं।

.....शक्तियाँ तो एक सैम्पल हैं। अगर सैम्पल रोने वाला होगा तो और सौदा कैसे करेंगे; इसलिए कभी नहीं रोना, न आँखों से रोना, न मन से। (अ.वा.7.12.78 पृ.111 मध्यादि)

10. पहले-2 माताओं को मोहजीत बनने की कोशिश करनी है। नष्टोमोहा बनने में बड़ी मेहनत लगती है। .....भल पति मरा, बन्धन खलास हुआ। फिर पतियों का पति मिलता है तो उनको भी अच्छी रीति पकड़ना चाहिए ना! उस पति ने तो तुमको विकारी बनाया। यह पतियों का पति तो तुमको स्वर्ग में ले जाते हैं, नष्टोमोहा बनाकर ले जाते हैं। (मु.ता.29.5.72 पृ.2 आदि)

11. अगर माताएँ नहीं होतीं तो बाप गऊपाल नहीं कहलाता। ..... सदा मुरली पर नाचने वाली हो। मुरली से बहुत प्यार है ना! मुरली के बिना रह नहीं सकतीं। जिसका मुरली से प्यार है, उसका मुरलीधर से भी प्यार है। .....माताओं में पढ़ाई का शौक अच्छा है। पढ़ाई के प्यार का सर्टिफ़िकेट है। (अ.वा.21.3.85 पृ.261 मध्य)

12. यहाँ तो संन्यासियों के आगे एकदम सो जाते हैं, माताएँ भी सो जाती हैं। जो अनलॉफुल है। संन्यासियों के संग में माताओं को घर-बार छोड़ना बहुत खराब है। अभी तो माताएँ कितनी निकल पड़ी हैं। (मु.ता.15.4.72 पृ.2 अंत)

13. माताओं को विशेष कौन-सा विघ्न आता है? (मोह) मोह किस कारण आता है? मोह मेरा से होता है; लेकिन आप सबका वायदा क्या है? ..... मैं तेरी तो सब-कुछ तेरा। .....सो फिर भी मेरा कहाँ से आया? तेरे को मेरे से मिला देते हो। ..... पहला-2 वायदा ही सब यह कहते हैं- जो कहोगे, वो करेंगे, जो खिलाएँगे, जहाँ बैठाएँगे। .....जो वायदा किया है, उसको निभाकर दिखाएँगे। जो माताएँ ट्रेनिंग में आई हुई हैं, आप सब सरेण्डर हो? जब सरेण्डर हो चुके हो तो फिर मोह कहाँ से आया?.....सरेण्डर का अर्थ तो बड़ा है- मेरा कुछ रहा ही नहीं। सरेण्डर हुआ तो तन-मन-धन सब-कुछ अर्पण। जब मन अर्पण कर दिया तो उस मन में अपने अनुसार संकल्प उठा ही कैसे सकते हैं? .....जिसने मन दे दिया, उसकी अवस्था क्या होगी? मन्मनाभव। उसका मन वहाँ ही लगा रहेगा। .....जो मन्मनाभव होगा उसमें मोह हो सकता है? ..... अगर मोहजीत का ठप्पा लग जावेगा तो सीधी पोस्ट ठिकाने पर पहुँचेगी। .....इसलिए ही ठप्पा ज़रूर लगाना है। इन माताओं का ही फिर समर्पित समारोह करेंगे। उसमें बुलाएँगे भी उनको, जिन्होंने ठप्पा लगाया होगा। मोहजीत वालों का ही सम्मेलन करेंगे; इसलिए जल्दी-2 तैयार हो जाओ। (अ.वा.18.9.69 पृ.107 मध्यांत, 108)

14. साधारण माताएँ नहीं हो, शिव-शक्तियाँ हो। शक्तियाँ अर्थात् संघारणी, विजयी, विजय का झण्डा लहराने वाली, विश्व में बाप को प्रत्यक्ष करने वाली। प्रवृत्ति को सम्भालते हुए सदा बेहद का नशा रहे कि हम असुर संघारणी शिव-शक्तियाँ हैं। माताओं के लिए तो स्वयं बाप सृष्टि पर आए

हैं। ऐसी खुशी है ना कि हमने बुलाया और बाप को आना पड़ा। .....हमजिन्स को जगाना, यही माताओं का काम है। (अ.वा.9.5.84 पृ.310 आदि)

मिलन मेला

1. मिलना अर्थात् मुखड़ा देखना और दिखलाना। (अ.वा.11.4.83 पृ.127 अंत)

2. इस समय मुख्य मेला है ही आत्मा रूप से परमात्मा बाप के साथ मिलने का अथवा यूँ कहें कि आत्मा और परमात्मा का मेला है, न सिर्फ एक सम्बंध से; लेकिन सर्व सम्बंधों से सर्व सम्बन्धी बाप से मिलन का मेला है अथवा सर्व प्राप्तियों का यह मेला है। एक सेकेंड में सर्व सम्बंधों से सर्व सम्बंधी बाप से मिलन मनाने से प्राप्ति स्वतः ही हो जाती है और अन्य मेले तो खर्च करने के होते हैं; लेकिन यह मेला सर्व प्राप्ति करने का है और दूसरे मेले में अगर कुछ प्राप्ति भी करेंगे तो कुछ देकर ही प्राप्त करेंगे; परन्तु यहाँ देते क्या हो? जिसको सम्भाल नहीं सकते हो, तुम वही देते हो ना? (अ.वा.8.7.73 पृ.120 आदि)

3. अब व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन भी समाप्त होता जावेगा, फिर क्या करेंगे? मिलन नहीं मनावेंगे? अल्पकाल के मिलन के बजाय सदाकाल के मिलन के अनुभवी बन जाएँगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल समीप, सम्मुख मिलन मना रहे हैं। (अ.वा.24.12.72 पृ.387 मध्य)

मुक्ति-जीवनमुक्ति

1. जो बाप का बन और उससे नॉलेज लेते हैं, उनको जीवनमुक्ति ज़रूर मिलेगी। (मु.ता.8.2.68 पृ.2 आदि)

2. जो बाप से पढ़ते हैं, उन्हों को लम्बी-चौड़ी जीवनमुक्ति मिलती है। बाकी पीछे आने वालों को थोड़ी-2 मिलती है। (मु.ता.12.1.73 पृ.1 अंत)

3. तुम तो समझते हो, इस शरीर में ही जी करके बाप से वर्सा पाना है; इसलिए कोई बीमारी आदि में भी तंग न होना चाहिए। (मु.ता.25.5.70 पृ.2 अंत)

4. हरेक आत्मा का हक है बाप से बर्थ राइट लेने का। कल्प-2 लेते भी ज़रूर हैं। तुम वर्सा लेते हो जीवनमुक्ति का। जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है। वह भी जीवनमुक्ति में आते ज़रूर हैं। पहला जन्म तो सुख का ही होता है। (मु.ता.9.6.69 पृ.3 मध्य)

5. सेकेण्ड में जीवनमुक्ति का गायन है ना! इसी जन्म में ही हम बाबा से जीवनमुक्ति का वर्सा ले फिर सो देवता बन रहे हैं। (मु.ता.23.11.76 पृ.2 अंत)

मुरली

1. हरेक बात की समझानी मुरली में मिलती रहती है, तो नोट करना चाहिए। बच्चे मुरली से नोट तो करते नहीं हैं, फिर बैठकर बाबा से वही बातें पूछते हैं। (मु.ता.8.10.72 पृ.2 मध्य)

2. सबका आधार मुरली पर है ही। मुरली तुमको न मिलेगी तो तुम श्रीमत कहाँ से लावेंगे? (मु.ता.11.2.76 पृ.3 आदि)

3. जो साकार की मुरली है, वही मुरली है। जो मधुबन से श्रीमत मिलती है, वही श्रीमत है। बाप सिवाय मधुबन के और कहीं मिल नहीं सकता। .....अगर कहाँ भोग आदि के समय संदेशी द्वारा बाबा का पार्ट चलता है तो यह बिल्कुल राँग है। (अ.वा.11.4.82 पृ.365 मध्य)

4. सम्मुख सुनना है नं.वन, टेप से सुनना है नं.टू, मुरली से पढ़ना नम्बर थ्री। (मु.ता.27.1.73 पृ.3 अंत)

5. मुरली पढ़ने से फिर से जाग पड़ेंगे। यह मुरली छपने का काम तो बहुत ज़ोर से चलेगा। टेप का भी काम बहुत बढ़ जावेगा। मुरली विलायत तक भी जावेगी। (मु.ता.12.12.76 पृ.3 आदि)

6. मुरली है लाठी। इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जावेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा; लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं; लेकिन लगन से। .....सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी। मुरली से लगन अर्थात् सच्चा ब्राह्मण; मुरली से लगन कम अर्थात् हाफकास्ट ब्राह्मण। (अ.वा.23.10.75 पृ.220 अंत)

7. तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देती हो; नहीं तो यह वरशन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। (मु.ता. 23.5.71 पृ.1 अंत)

8. मुरली तो एक दिन भी मिस न करनी चाहिए; नहीं तो बाबा उनको मूर्ख समझते (हैं)। (धारणा) न होती है तो समझना चाहिए- मैं देह-अभिमानी हूँ। (मु.ता.14.1.72 पृ.2 आदि)

9. मुरली न सुनते हैं तो ज़रूर समझो, कमबख़्त हैं, बख़्तावर नहीं। मुरली को कब छोड़ना न चाहिए। (मु.ता.27.9.73 पृ.3 मध्यांत)

10. मुरली के नोट्स अपने पास रखना अच्छा है। यह बारूद है ना! बहुत बच्चे नोट्स रखते हैं। (मु.ता.16.10.72 पृ.2 मध्य)

11. जो ब्रह्मा का तन (आदि से ही) मुकर्रर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है और संदेशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस

मुरली में जादू नहीं है, बापदादा की मुरली में ही जादू है; इसलिए जो भी मुरलियाँ चल चुकी हैं, वह सभी रिवाइज़ करनी हैं। जैसे पहले पोस्ट जाती थी, वैसे ही मुख्य सेवाकेन्द्र पर आबू से जाती रहेगी। .....मुरली और पत्र का जैसे कनेक्शन होता है वैसे ही होगा। (अ.वा.21.1.69 पृ.20 अंत)

12. बात करना मुरली नहीं है क्या? हाँ, नज़र पड़नी चाहिए, यह सब बातें तो पूर्ण हो ही जाएँगी। (अ.वा.5.4.83 पृ.119 मध्य)

13. मुरली में रोज़ क्या करूँ और कैसे करूँ की बातों का रेस्पॉन्स मिलता है। अगर फिर भी पूछते हैं तो माना मुरली को प्रैक्टिकल में लाने की शक्ति कम है। (अ.वा.4.2.80 पृ.273 आदि)

14. अभी तो तुम बाप के सन्मुख बैठे हो। सन्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन खरीद करते हैं वैसे टेलीविज़न भी एक दिन आ जावेगा। बच्चों के सुख के लिए बाप क्या न प्रबंध करेंगे! कोई बड़ी बात तो नहीं है ना! (मु.ता.22.2.75 पृ.3 मध्यांत)

15. कई बच्चे तो मुरली पर ध्यान नहीं देते हैं, रेग्युलर मुरली पढ़ते नहीं हैं। कोई तो ब्राह्मणियाँ भी ऐसी-2 हैं जो कब मुरली पढ़ती नहीं, फिर वह क्या किसका कल्याण करते होंगे! बहुत ब्राह्मणियाँ हैं जो कुछ भी कल्याण नहीं करतीं, न अपना, न औरों का करती हैं। (मु.ता.19.3.75 पृ.2 आदि)

16. यहाँ सन्मुख कैसे ठोंक-2 कर बुद्धि में बिठाते हैं। सन्मुख सुनने और मुरली पढ़ने में तो रात-दिन का फर्क है! (मु.ता.2.3.77 पृ.2 अंत)

17. कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। ...पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे, रात को दो बजे उठकर 15-10 पेज लिखते थे, बाप लिखवाते थे। फिर उसकी कॉपियाँ निकलती थीं। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज़ सम्भालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़े किताब बनाते जाते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। वह फिर पढ़कर रखते हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो; नहीं तो यह वरशन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। (मु.ता.24.5.64 पृ.1 मध्य)

18. गोपिकाएँ मुरली बिगर रह न सकें तो यह प्रबन्ध है। मुरली बिगर तो तड़फते हैं; क्योंकि यह मुरली है जीवन हीरे जैसा बनाने वाली। (मु.ता.24.8.78 पृ.3 आदि)

19. मुरली सुनना यह सब्जेक्ट अलग है। वह है धन कमाने की बात। उससे आयु नहीं बढ़ेगी, पावन नहीं बनेंगे, विकर्म विनाश नहीं होंगे। मुरली तो बहुत सुनते हैं, फिर विकार में गिरते रहते हैं, सच नहीं बताते। बाप कहते हैं- पवित्र नहीं रह सकते हो तो यहाँ क्यों आते हो? कहते हैं- बाबा, मैं अजामिल हूँ, यहाँ आऊँगा तब तो पावन बनूँगा। (मु.ता.17.1.84 पृ.2 अंत)

20. ऐसी ऊँच-ते-ऊँच पढ़ाई को तो एक दिन भी मिस न करना चाहिए। एक दिन भी मुरली न सुनी तो फिर वह अपसेंट पड़ जाती है। अच्छे-2 महारथी भी अपसेंट हो जाते हैं। (मु.ता.24.6.74 पृ.3 आदि)

21. मुरली बच्चों को 5-6 बार पढ़नी चाहिए, सुननी चाहिए तब ही बुद्धि में बैठेगी। (मु.ता.31.8.73 पृ.4 मध्यांत)

नौकरी-धंधा

1. कोई देहधारी की चाकरी आदि नहीं करनी है। (मु.ता.10.6.75 पृ.2 आदि)

2. बाबा कोशिश भी कर रहे हैं- अच्छे-2 बच्चे जो बन्धनमुक्त हैं तो नौकरी भी छुड़ा दें। उस गवर्मेण्ट से भी तो इस गवर्मेण्ट की कमाई बहुत ऊँच है। (मु.ता.25.6.75 पृ.1 अंत)

3. जिनको पक्का निश्चय है वह तो कहेंगे- हम इस नौकरी-टोकरी को क्या करेंगे; परंतु पूरा नशा चाहिए। (मु.ता.25.6.75 पृ.1 अंत)

4. समझते हैं, हम बाबा के लिए धंधा आदि करते हैं, जो कुछ होगा, बाबा को देंगे। बाबा ऐसी बातें कब सुनते ही नहीं। (मु.ता.3.1.74 पृ.2 मध्यादि)

5. बाप ने समझाया है- आठ घण्टा भल आराम भी करो, आठ घण्टा शरीर निर्वाह लिए काम करो। वह धंधा आदि भी करना है। साथ में यह भी धंधा बापदादा ने दिया है आप-समान बनाने का। यह भी शरीर निर्वाह ही है ना! वह है अल्पकाल लिए और यह है 21 जन्म शरीर निर्वाह लिए। (मु.ता.20.3.68 पृ.1 मध्यांत)

6. शरीर निर्वाह अर्थ मेल को तो पढ़कर नौकरी करनी ही है। फिमेल को नौकरी नहीं करनी है; परंतु आजकल फिमेल भी नौकरी करती रहतीं। (मु.ता.3.12.73 पृ.6 अंत)

7. बाबा से बहुत बच्चे पूछते हैं- यह धंधा करें वा नहीं करें? बाबा लिखता है- मैं कोई तुम्हारे धन्धे आदि को देखने आया हूँ क्या? मैं तो टीचर हूँ पढ़ाने के लिए। धन्धे की बात हमसे क्यों पूछते हो? (मु.ता.19.12.73 पृ.3 मध्यादि)

8. धंधे में गए, फिर आस्ते-2 संगदोष में शादी की, दिल लगाई, यह गया। सर्टेण्टी नहीं है। (मु.ता.27.12.73 पृ.5 अंत)

9. बच्चे अजुन खड़े नहीं होते, नौकरी-टोकरी में फँसे रहते हैं। बन्धनमुक्त हैं तो फिर सर्विस में लग जाना चाहिए। (मु.ता.4.8.76 पृ.3 अंत)

10. सभी से अच्छा धंधा यह है। बाकी जो भी मनुष्य धन्धे करते हैं, वह सभी हैं खोटे। एक धंधा सिर्फ करना है, बाप और वर्से को याद करो। (मु.ता.17.7.72 पृ.3 अंत)

11. धंधे-धोरी, बच्चों आदि के चिन्तन में जो मरेंगे तो मुफ्त अपनी बरबादी करेंगे। शिवबाबा को याद करेंगे तो आबाबी(शोहरत) बहुत होगी। देह-अभिमान में आने से बरबादी होती है। (मु.ता.9.7.71 पृ.1 अंत)

12. कन्याएँ तो फ्री हैं, उनको नौकरी तो करनी नहीं है। उस नॉलेज के बदली यह लो तो 21 जन्म लिए वर्सा मिल जावेगा; नहीं तो स्वर्ग की बादशाही भी गँवा देंगे। (मु.ता.11.4.75 पृ.3 अंत)

13. आजीविका के लिए यह धंधा आदि करते हैं, वह है मायावी धंधा। यह भी तुम्हारी आजीविका है भविष्य के लिए। सच्ची कमाई तो यह है। (मु.ता.25.8.76 पृ.2 आदि)

14. बाबा समझाते रहते हैं- ज्यादा समय तो रहना नहीं है। काफी धन है तो शान्त में बैठ बाप से वर्सा लो, धन्धे-धोरी का झंझट छोड़ दो। (मु.ता.5.2.78 पृ.2 अंत)

निश्चय-पत्र

1. पहले मुख्य बात है- मात-पिता की पहचान देनी है। ..... तो पूछो- परमात्मा से तुम्हारा क्या संबंध है? क्या वर्सा मिलता है? यह लिखाना चाहिए। बाकी सारी प्रदर्शनी समझाकर पिछाड़ी में लिखने से कोई फायदा नहीं। मुख्य बात है- मात-पिता का परिचय दिया। अब समझा है तो लिखो; नहीं तो गोया कुछ नहीं समझा। हड्डी{दिल से} समझाकर फिर लिखवाना चाहिए- बरोबर यह जगतअम्बा-जगतपिता हैं। वह लिख दे- बरोबर बाप से वर्सा मिलता है। यह लिखकर दे तब समझें तो तुमने कुछ सर्विस की है। (मु.ता.12.3.87 पृ.2 मध्यांत)

2. बच्चियाँ लिखती हैं कि हमारा गला घुट गया है; परन्तु तुम जास्ती बातों में जाओ ही नहीं। पहली मुख्य बात समझाकर लिखाओ, फिर और बात। एक ही त्रिमूर्ति चित्र पर पूरा समझाना है। निश्चय करते हो- यह तुम्हारे माँ-बाप हैं, इससे वर्सा मिलना है। (मु.ता.12.3.87 पृ.2 अंत)

3. लिखा देना है- मात-पिता का, बरोबर जैसे तुम वर्सा ले रहे हो, हम भी वर्सा लेना चाहते हैं। उसकी एड्रेस आदि सब-कुछ हो, यह भी बताना चाहिए- यहाँ से बाहर निकलने से माया बिल्कुल भुला देगी। (मु.ता.12.3.87 पृ.3 अंत)

निश्चय-अनिश्चय

1. निश्चय हो कि बाप परमधाम से हमें राजधानी देने आए हैं तो फट आकर बाबा से मिले, कोई की बात माने नहीं, बाप की भी बात न माने। (मु.ता.2.1.73 पृ.3 आदि)

2. भल कोई लिखकर भी देते हैं- बरोबर शिवबाबा पढ़ाते हैं; परन्तु उसमें खुश नहीं होना है। निश्चय बिल्कुल नहीं बैठा है। भल कोई पत्र भी लिखते हैं; परन्तु बाप लिख देते हैं- तुमको निश्चय बिल्कुल नहीं बैठा है। निश्चय बैठे कि मोस्ट बिलवेड बाप से वर्सा मिलता है, तो एक सेकेण्ड भी ठहरे नहीं। विवेक कहता है कि ग़रीब झट भागेंगे। साहुकार कोई विरला निकलेंगे। (मु.ता.15.2.78 पृ.3 अंत)

3. जबकि निश्चय हुआ- शमा आई हुई है, तो फिर क्यों न जल मरें? अरे, ऐसा बाबा मिला तो झट भागना चाहिए। कोई कहते हैं- बारह मास से निश्चय हुआ है। अरे, इतने मास कहाँ थे, आज आए हो मिलने? बाबा आया स्वर्ग का मालिक बनाने के लिए, उनसे नहीं मिलते हो? निश्चय हो जाए, वह तो जेल से भी कूद कर भागने की कोशिश करे बाप से मिलने। बाबा जब सुनते हैं तो वण्डर लगता है- दो वर्ष हुआ है और ऐसे स्वर्ग का मालिक बनाने वाले से नहीं मिले हो? (मु.ता.12.5.73 पृ.4 अंत)

4. जबकि निश्चय हो जाए बेहद का बाप पढ़ाते हैं, 21 जन्म का वर्सा देते हैं, तो मिलने के सिवाय ठहर न सके। बच्चा बना तो फिर बाप डायरैक्ट वर्सा देंगे। पहले तो एक हफ्ता भट्ठी में बैठो। तुमको रोज़ यह नॉलेज मिलती रहेगी। (मु.ता.22.12.73 पृ.2 मध्य)

5. निश्चय-बुद्धि को फिर रोने की वा देह-अभिमान में आने की बात नहीं रहती। (मु.ता.17.12.73 पृ.3 मध्यादि)

6. निश्चय-बुद्धि वाले कम-से-कम हफ्ते-2 बाप को पत्र ज़रूर लिखेंगे, एक कार्ड ही सही। बाबा, मैं आपको याद करता हूँ। यह आपकी सेवा करता हूँ। सर्विस का समाचार लिखें तब विश्वास रखूँ। सर्विस का सबूत दिखावे तब बाबा समझें- इसमें उम्मीद अच्छी दिखाई पड़ती है और फिर यह भी समझना चाहिए- बाबा अकेला है, हम बच्चे बहुत हैं। ऐसे नहीं कि बाबा को रोज़-2 रिस्पॉन्स देना पड़ेगा, नहीं। कोई ग़रीब हैं तो टिकट के पैसे भी मिल सकते हैं। (मु.ता.22.12.73 पृ.3 अंत)

7. भल लिखते भी हैं- हमको निश्चय है, बाबा को हम जानते हैं। फिर भी चलते-2 ठण्डे पड़ जाते, 6-8 मास, 2/3 वर्ष आते नहीं। तो बाबा समझ जाते हैं- पूरा निश्चय-बुद्धि नहीं हैं, पूरा नशा न चढ़ा है। (मु.ता.27.8.76 पृ.1 मध्य)

8. इसमें निश्चय बड़ा अडोल चाहिए। शिवबाबा से कब कोई भूल हो न सके। इनसे हो सकती है। यह दोनों हैं इकट्ठे; परन्तु तुमको निश्चय यह रखना है- शिवबाबा समझाते हैं। उस पर हमको चलना पड़े। शिवबाबा की श्रीमत समझ चलते चलो तो उल्टा भी सुल्टा हो जावेगा। (मु.ता.19.1.71 पृ.3 आदि)

9. जब तक पहले यह निश्चय न हो यह परमपिता+परमात्मा के महावाक्य हैं तब तक तुम्हारी बात मानेंगे नहीं। पहले तो कोशिश करके निश्चय बिठाना चाहिए। (मु.ता.22.1.71 पृ.4 मध्य)

10. जिनको निश्चय हो जाता उनको तो आकर बाप से मिलना पड़े। बाबा, हम तो आपके पाँव पकड़ लेता हूँ। (मु.ता.22.12.73 पृ.2 आदि)

11. अभी राम शिवबाबा मत देते हैं, निश्चय में ही विजय है। इसमें कब नुकसान नहीं होगा। नुकसान को भी बाप फायदा करा देंगे; परन्तु निश्चय-बुद्धि वालों को। संशय बुद्धि वाले और ही घुटका खाते रहेंगे। निश्चय-बुद्धि वाले कब घुटका नहीं खावेंगे। समझेंगे, शिवबाबा इस रथ पर बैठा है, वह मत दे रहे हैं। पक्के निश्चय-बुद्धि वाले (को) कब घाटा पड़ न सके। बाबा खुद गैरण्टी करते हैं। (मु.ता.10.12.68 पृ.2 मध्य)

12. बाप के लिए कोई उल्टा संशय आया तो लो यह मरा। जिनसे तुम हीरे जैसा बनते हो उनमें फिर संशय क्यों? कोई भी कारण से बाप को छोड़ा तो कमबख़्त कहलावेंगे। (मु.ता.1.9.69 पृ.3 मध्यादि)

13. अपने में, बाप में और ड्रामा में पूरा-2 निश्चय हो तो कभी विजय न मिले, यह हो नहीं सकता। अगर विजय नहीं होती तो ज़रूर कोई-न-कोई प्वॉइण्ट में निश्चय की कमी है। (अ.वा.12.12.83 पृ.47 मध्य)

14. अगर ज़रा भी कोई चिन्ता है तो निश्चय की कमी है। कभी किसी बात की थोड़ी-सी भी चिन्ता हो जाती है- उसका कारण क्या होता? ज़रूर किसी-न-किसी बात के निश्चय में कमी है- चाहे ड्रामा① में निश्चय की कमी हो, चाहे अपने-आप② में निश्चय की कमी हो, चाहे बाप③ में निश्चय की कमी हो। तीनों ही प्रकार के निश्चय में ज़रा भी कमी है तो निश्चिंत नहीं रह सकते। (अ.वा.13.1.86 पृ.152 अंत)

15. सबसे बड़ी बीमारी है- चिंता। चिंता में बीमारी की दवाई डॉक्टर्स के पास भी नहीं है। टेम्परेरी सुलाने की दवाई दे देंगे; लेकिन सदा के लिए चिंता नहीं मिटा सकेंगे। चिंता वाले जितना ही प्राप्ति के पीछे दौड़ते हैं, उतना प्राप्ति आगे दौड़ लगाती है। इसलिए सदा निश्चय के पाँव अचल

रहें। सदा एक बल, एक भरोसा- यही पाँव हैं। .....ऐसे निश्चय-बुद्धि बच्चों की विजय निश्चित है। (अ.वा.13.1.86 पृ.152 अंत, 153 आदि)

16. समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है। ..... चाहे बाहर की रीति से नुकसान भी दिखाई दे; लेकिन उस नुकसान में भी कल्याण समाया हुआ है। .....कुछ भी होता है, होने दो। बाप हमारा, हम बाप के, तो कोई कुछ कर नहीं सकता। इसको कहा जाता है- निश्चय-बुद्धि। (अ.वा.7.3.81 पृ.26 आदि)

17. सिर्फ बाप-टीचर-सतगुरू में निश्चय नहीं; लेकिन इस निश्चय के साथ-2 उनके फ़रमान, उनकी पढ़ाई और उनकी श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चय-बुद्धि होकर चलना है। (अ.वा.26.5.69 पृ.64 अंत)

18. निश्चय-बुद्धि विजयी कभी अपने विजय का वर्णन नहीं करेंगे। दूसरे को उल्लाहना नहीं देंगे- देखा, मैं राइट था ना! यह उल्लाहना देना या वर्णन करना, यह खालीपन की निशानी है। खाली चीज़ ज़्यादा उछलती है ना! (अ.वा.25.11.85 पृ.55 आदि)

19. निश्चय में कभी परसेण्टेज होती है क्या? बाप के बच्चे तो हैं ही ना! ऐसे थोड़े ही 90प्रतिशत है और 10प्रतिशत नहीं है। ऐसा बच्चा कभी देखा है? निश्चय अर्थात् 100 प्रतिशत निश्चय। .....निश्चय-बुद्धि की पहली निशानी है- विजयी। (अ.वा.9.2.75 पृ.57 अंत)

20. निश्चय-बुद्धि बनने की मुख्य चार बातें हैं। .....पहली बात, बाप का निश्चय- जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना। 2-बाप द्वारा प्राप्त हुई नॉलेज को अनुभव द्वारा स्पष्ट जानना और मानना। 3-स्वयं भी जो है, जैसा है अर्थात् अपने अलौकिक जन्म के श्रेष्ठ जीवन को व ऊँचे ब्राह्मण के जीवन को, अपने श्रेष्ठ पार्ट को, अपनी श्रेष्ठ स्थिति और स्थान का जैसा महत्व है, वैसा स्वयं का महत्व जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना। 4-वर्तमान श्रेष्ठ, पुरुषोत्तम, कल्याणकारी, चढ़ती कला के समय को जानना और जान करके हर कदम उठाना। (अ.वा.8.2.75 पृ.53 अंत, 54 आदि)

21. एक ही सितारा है जो अपनी जगह बदली नहीं करता। क्या ऐसे सितारे हो? वह है दृढ़ संकल्प वाला सितारा, जिसको अपनी इस दुनियाँ में ध्रुव सितारा कहा जाता है। (अ.वा.20.5.74 पृ.44 अंत)

22. सफलता के सितारों की निशानी यह है कि उनके हर संकल्प में दृढ़ता होगी कि सफलता अनेक बार हुई है और अभी भी हुई पड़ी है। .....हर बात में निश्चय-बुद्धि होंगे। .....उनके हर कर्म द्वारा अनेक आत्माओं का पथ-प्रदर्शन होगा। .....उनके हर

कर्म अनेक आत्माओं को एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा। (अ.वा.14.7.74 पृ.110 अंत, 111 आदि)

23. निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बनके आवेंगी; फिर भी अचल रहोगे? (अ.वा.8.2.75 पृ.53 अंत)

{ देखिए प्रकरण 'सेवा मंसा की' में प्वॉइण्ट नं॰ 4 }

पंजाब से

1. सदा हर कदम में याद की शक्ति द्वारा पदमों की कमाई जमा करते हुए आगे बढ़ रहे हो ना! ..... सभी बहादुर हो ना? डरने वाले तो नहीं हो? डरे तो नहीं? थोड़ा-सा डर की मात्रा संकल्प-मात्र भी आई या नहीं? यह नथिंग न्यू है ना!..... जब बाप की छत्रछाया के नीचे रहने वाले हैं तो निर्भय ही होंगे। जब अपने को अकेला समझते हो तो भय होता। ..... बच्चों से बाप का स्नेह है ना! बाप के स्नेही बच्चों को, याद में रहने वाले बच्चों को कुछ भी हो नहीं सकता। याद की कमज़ोरी होगी तो थोड़ा-सा सेक आ भी सकता है। ..... बापदादा किसी-न-किसी साधन से बचा देते हैं। ..... सदा हिम्मत और हुल्लास के पंखों से उड़ने वाले हो ना! ..... हिम्मत ऐसी चीज़ है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। हिम्मत मुश्किल को सहज बनाने वाली है। .....स्वयं को सदा मास्टर ज्ञान-सूर्य (विवस्वत) समझते हो? ज्ञान-सूर्य का कार्य है- सर्व से अज्ञान अंधेरे का नाश करना। .....ऐसे सदा अंधकार दूर करने वाले अंधकार में स्वयं नहीं आ सकते। (अ.वा.3.12.84 पृ.42 अंत, 43,44)

2. सभी पंजाब निवासी महावीर हो ना! डरने वाले तो नहीं? .....सबसे बड़ा भय होता है मृत्यु से। आप सब तो हो ही मरे हुए। मरे हुए को मरने का क्या डर!..... अभी ऐसी शान्ति की शक्तिशाली लहर फैलाओ, जो सभी अनुभव करें कि सारे देश के अंदर यह शान्ति का स्थान है।.....जैसे उन्हों में आवाज़ फैल गया है कि अशान्ति का स्थान यह गुरुद्वारा ही बन चुका है। ऐसे शान्ति का कोना कौन-सा है? यही सेवा-स्थान है, यह आवाज़ फैलाना चाहिए।.....जो अशान्त हैं, उन्हों को खास बुलाकर भी शान्ति का अनुभव कराओ। .....पंजाब वालों को विशेष यह सेवा करनी चाहिए। अभी आवाज़ बुलन्द करने का चान्स है। .....कर्फ्यू हो, कुछ भी हो, सम्पर्क में तो आते हो ना! सम्पर्क वालों को अनुभव कराओ, तो ऐसी आत्माएँ आवाज़ फैलाएँगी। उन्हें एक-दो घण्टा भी योग शिविर कराओ।.....जितनी पंजाब की धरणी सख़्त है, उतनी नरम कर सकते हो। (अ.वा.19.4.84 पृ.257 अंत, 258, 259)

3. पंजाब वाले सबको मधुबन में आकर सरेण्डर कराएँगे। पंजाब से नदियाँ निकलेंगी और समाएँगी कहाँ? मधुबन है ही (ज्ञान-)सागर का कण्ठा। तो पंजाब और मधुबन का मेल हो गया। (अ.वा.28.11.81 पृ.182 अंत, 183 आदि)

4. पंजाब की दो विशेषताएँ हैं- एक, पंजाब का पानी और दूसरा, पंजाब की खेती।.....पंजाब ने ज्ञान-नदियाँ रूपी हैण्ड्स तो निकाले; लेकिन वण्डर भी किया है। ..... पंजाब की नदियाँ पंजाब में ही रहती हैं; इसलिए पंजाब का पानी मशहूर हो गया है। जैसे पंजाब में बिना सीज़न के भी अनाज पैदा कर लेते हैं, ऐसे साधन बनाए हैं। तो पंजाब वालों को 12 ही मास के 12 ही फल देने चाहिए। जब साइन्स की शक्ति से बिना सीज़न में अनाज पैदा कर लेते हैं ..... तो साधना द्वारा पंजाब की धरती को परिवर्तित करो। प्रत्यक्ष फल देना पड़े। पंजाब को यह नए वर्ष में स्लोगन याद रखना है। कौन-सा स्लोगन? 'तुरन्त दान महापुण्य'। अभी तो ज्ञान-गंगाओं का पार्ट है। पाण्डव बैकबोन हैं; लेकिन आगे निमित्त तो शक्तियों को रखेंगे। इसमें भी पाण्डवों का फायदा है; नहीं तो डंडे खाने पड़ेंगे। विशेष पंजाब में तो बहुत डंडे पड़ेंगे; इसलिए शक्तियाँ गाइड और पाण्डव गार्ड ठीक हैं। गार्ड और गॉड रास मिल जाती है। जैसे बाप बैकबोन होके शक्तियों को आगे करते हैं, वैसे पांडव भी बाप-समान बैकबोन हो शक्तियों को आगे रखें। (अ.वा.7.1.80 पृ.183 अंत, 184)

5. पंजाब वासियों को विशेष आत्मा होने के कारण विशेष फल अवश्य देना पड़े। पंजाब में विशेष अकालतख़्त का यादगार है। ..... अकाल-तख़्तनशीन आत्मा अर्थात् राज्य-अधिकारी। ..... कर्मेन्द्रियों के अधीन तो नहीं होते। जहाँ अधीनता होगी, वहाँ कमज़ोरी होगी।..... प्रजा हैं यह कर्मेन्द्रियाँ। प्रजा के राज्य में सदा हलचल रहती है और राजा के राज्य में अचल राज्य चलता। तो अचल राज्य चल रहा है ना? .....पहले समय था जब संकल्प को फ्री छोड़ दिया, वाचा-कर्मणा पर अटेन्शन रखते थे; लेकिन अभी मंसा (में) भी हलचल न हो; क्योंकि लास्ट में है ही मंसा द्वारा विश्व-परिवर्तन। (अ.वा.7.1.80 पृ.185 आदि)

6. पंजाब (ने) स्थापना के आदि में अपना विशेष शक्ति रूप का दृश्य अच्छा दिखलाया। अनेक प्रकार की हलचल में भी अचल रहे हैं।.....पंजाब में नदियों का गायन ज्यादा है। ऐसे ही पंजाब से ज्ञान-गंगाएँ भी अधिक निकली हैं। आदि समय के हिसाब से पंजाब से ज्ञान-नदियाँ भी ज़्यादा निकली हैं। तो पंजाब की धरणी कन्यादान में श्रेष्ठ निकली अर्थात् महादानी निकली। .....जैसे नदियों का पानी चारों ओर विस्तार से फैला हुआ है, वैसे पंजाब में भी सेवाकेन्द्रों का विस्तार अच्छा है।..... पंजाब की धरणी से नाम से काम करने वाली, सार वाली आत्माएँ निकालो, जिसका नाम सुनते अनेक आत्माएँ अपना भाग्य बना सकें। .....बड़े आवाज़ से

ललकार करो, छोटे आवाज़ से करते हो तो छोटा आवाज़ वहाँ के गुरु+द्वारों के आवाज़ में छिप जाता है। (अ.वा.19.12.78 पृ.137 आदि)

7. पंजाब की धरती (के) ऊपर कौरव गवर्मेण्ट को नाज़ है तो पाण्डव गवर्मेण्ट को भी नाज़ है। पंजाब की विशेषता यह है जो बापदादा के कार्य में मददगार फलस्वरूप सभी से ज़्यादा पंजाब से निकले हैं। सिन्ध से निकले हुए, (B.K. में) निमित्त बने हुए रत्नों ने आप रत्नों को निकाला। (अ.वा.19.7.72 पृ.3 मध्य)

8. पंजाब में सेवा का महत्व भी साइलेंस की शक्ति का है। साइलेंस की शक्ति से हिंसक वृत्ति वाले को अहिंसक बना सकते हो। जैसे स्थापना के आदि के समय में देखा- हिंसक वृत्ति वाले रूहानी शान्ति की शक्ति के आगे परिवर्तन हो गए ना! तो हिंसक वृत्ति को शान्त बनाने वाली शान्ति की शक्ति है।..... तो पंजाब वालों ने क्या सुना? सभी को वायब्रेशन आवे कि कोई शांति का पुंज, शान्ति की किरणें दे रहे हैं, ऐसी सेवा करने का समय पंजाब को मिला है। (अ.वा.18.11.87 पृ.139 अंत, 140 आदि)

9. पंजाब (की रुद्राणी)और दिल्ली (की महामाता), दोनों की टीचर्स हैं, तो दोनों भाई-बहन हो गए। दिल्ली है भाई, पंजाब है बहन। पंजाब भी दिल्ली से निकला ना! (अ.वा.21.12.78 पृ.149 अंत)

10. जैसा स्थान होता है, उस स्थान की स्मृति से भी स्थिति में बल मिलता है। ..... यहाँ का अनुभव वहाँ स्मृति में बल देता है; इसलिए मधुबन में आना ज़रूरी है। .....गृहस्थी में चारों ओर के कर्मबन्धन खींचेंगे। .....गृहस्थी में मेरापन होता है। मेरापन बहुत लम्बा है। जहाँ मेरापन है वहाँ बाप नहीं हो सकता; जहाँ मेरापन नहीं वहाँ बाप है।.....जहाँ हद का अधिकार है, वहाँ बेहद का अधिकार खत्म हो जाता है। अब बीती को बीती करके फुलस्टॉप लगाते जाओ। ..... जो कहते हैं, 'ऐसे यह होता है क्या!', 'ब्राह्मणों में यह-2 बात होती है!'- यह आश्चर्य की निशानी हो गई। 'यह भी नहीं होना चाहिए'। यह 'क्यों' हुआ? 'क्यों', 'क्या' कहना, यह क्वेश्चन हुआ। यह भी व्यर्थ संकल्प उत्पन्न होने का आधार है। जो होता है उसको साक्षी हो देखो। साक्षी के बजाय आत्मा के साथी बन जाते हो, बाप के साथी के बजाय आत्मा के साथी बन जाते हो।..... जितना समय (भगत-)आत्मा के साथी, उतना समय बाप के साथी नहीं बनेंगे। यह (दिति का) खण्डित योग हो जाता है। खण्डित चीज़ फेंकने वाली होती है। वही मूर्ति जो पूजने योग्य होती है, जब वह खण्डित हो जाती है तो उसकी कोई वैल्यू नहीं होती। ..... (मूर्ति की याद में) अखण्ड योगी, अटूट योगी और निरन्तर बापदादा के साथी। ऐसे हैं पंजाब निवासी। (अ.वा.24.10.75 पृ.229 अंत, 230, 231)

11. पंजाब में वैसे ही (खुशी का) मेवा खाने के आदती हैं। तो यहाँ भी जितनी सेवा करेंगे, उतना मेवा अर्थात् प्रत्यक्षफल खाने वाले बनेंगे। ..... यह तो विशेष बेहद की सेवा है। मेला अर्थात् बाप से मिलन मनाना। मेला कर रहे हैं अर्थात् आत्माओं का मिलन कराने के निमित्त बन रहे हैं। (अ.वा.3.4.82 पृ.345 मध्य)

12. सभी पंजाब निवासी सो मधुबन-निवासी ..... सभी बच्चे सदा ही बेफिकर बादशाह बने रहो। ..... हलचल वालों को अविनाशी सहारे की स्मृति दिलाए अचल बनाओ। (अंत में भी) यही सेवा पंजाब वालों को विशेष करनी है। पहले भी कहा था कि पंजाब वालों को नाम बाला करने का चान्स अभी (1985 में)अच्छा है। ..... पंजाब का नम्बर पीछे नहीं है, आगे है। पंजाब शेर कहा जाता है। शेर पीछे नहीं रहते, आगे रहते हैं। जो भी प्रोग्राम मिले, उसमें 'हाँ जी', 'हाँ जी' करना, तो असम्भव भी सम्भव हो जाएगा। (अ.वा.26.12.84 पृ.90 मध्यादि, 91 मध्य)

13. पंजाब है ही सदा सभी (धर्मों) को हरा-भरा करने वाला। पंजाब में खेती अच्छी होती है। ..... पंजाब-हरियाणा सदा खुशी में हरा-भरा है; इसलिए बापदादा भी देख-2 हर्षित होते हैं। (अ.वा.4.4.84 पृ.224 अंत, 225 आदि)

14. सबसे ज़्यादा पंजाब आया है। (1984 में) इस बारी ज़्यादा क्यों भागे हो? इतनी संख्या (पहले) कभी नहीं आई है।.....पंजाब में सत्संग और अमृतवेले का महत्व है। नंगे पाँव भी अमृतवेले पहुँच जाते हैं।.....पंजाब निवासी अर्थात् सदा संग के रूहानी रंग में रंगे हुए, सदा सत के संग रहने वाले। (अ.वा.15.4.84 पृ.245 आदि)

पर्चे, पत्र, कार्ड्स

1. विकारी सम्बन्धियों आदि को चिट्ठी लिखने आदि की भी दरकार नहीं रहती। बिगर ज्ञान के सिर्फ लिखने से थोड़े ही समझेंगे। (मु.ता.2.4.75 पृ.2 अंत)

2. यहाँ से घर गए, फिर चिट्ठी भी नहीं लिखते। बाप को बच्चा कितना प्यारा होता है। उनकी चिट्ठी न आए, बीमार पड़ जाते। पता नहीं, हमारा बच्चा मर गया, क्या हुआ! .....माया कोई को तो बिल्कुल ही मुर्दा बना देती है। जीते जी भी चिट्ठी नहीं लिखते, मरने के बाद तो बात ही नहीं! बाबा भी चिट्ठी तब लिखेंगे, जब वह खुद लिखेंगे। (मु.ता.27.7.73 पृ.3 मध्यांत)

3. बाबा किसी एक पर विश्वास नहीं करता। हरेक को हक है व्यक्तिगत पत्र लिखने का। (मु.ता.17.5.71 पृ.3 अंत)

4. चिट्ठी सिर्फ खुश-खैराफियत की नहीं। सर्विस करके समाचार लिखना है- बाबा, हमने यह सर्विस की। सिर्फ याद-प्यार लिखने से बाबा का पेट कब न भरेगा। (मु.ता.22.10.73 पृ.4 आदि)

5. बहुत बच्चे हैं जो छिपाकर समाचार लिखते हैं, दूसरे एड्रेस पर पत्र मँगाते हैं कि कहाँ मम्मा-बाबा को मालूम न पड़े। वह हैं धूते लोग। (मु.ता.26.4.72 पृ.3 मध्यांत)

6. परलौकिक माता-पिता से मिलने 3/4 वर्ष भी नहीं आते हैं। स्त्री पति से थोड़ा ही अलग होती है तो फथकती रहती है। तुम सजनियाँ साजन पास 3/4 वर्ष नहीं आते हो। ऐसा कोई बच्चा होगा, जो बाप को चिट्ठी न लिखे? ऐसा साजन जो गुलगुल बनाय पटरानी बनाते हैं, उनको चिट्ठी नहीं लिखते। ऐसा सद्गुरू जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनके पास तो जल्दी-2 आना चाहिए। चिट्ठी तो ज़रूर लिखनी चाहिए। (मु.ता.20.5.72 पृ.4 मध्य)

7. भल ब्राह्मणी से न बने तो भी बाबा को तो डायरैक्ट पत्र लिख सकते हो और डायरैक्ट पत्र मँगा सकते हो। हरेक को हक है- डायरैक्ट चिट्ठी में समाचार देना। भल कोई कारण से सेण्टर से दिल हट जाती है; परन्तु फिर भी पढ़ाई ज़रूर पढ़नी है। मुरली घर में भी मँगाकर ज़रूर पढ़नी है। .....फिर आखरीन बाबा वह मतभेद भी मिटा देंगे। (मु.ता.13.11.72 पृ.1 मध्यादि)

8. बाबा फरमान करें- कोई को चिट्ठी न लिखो, फिर भी लिखते रहते हैं। तो ऐसे बच्चों को कपूत कहेंगे ना! श्रीमत पर चलना चाहिए ना! .....छिपाकर चिट्ठी भेज देते हैं तो बाबा समझ जाते हैं, ऐसे चाण्डाल का जन्म पा लेंगे। (मु.ता.17.12.71 पृ.3 अंत)

9. बच्चों को अपना चार्ट देखना है। एक बाबा इतने बच्चों का कहाँ तक बैठ देखेंगे? बाबा को कितना काम रहता है। पत्रों के जवाब लिखने में अंगुलियाँ घिस जाती हैं; परन्तु बच्चों को शौक रहता है कि बाबा के हाथ का पत्र पढ़ें। तुम ही से बैठूँ, तुम्हीं से लिखा-पढ़ी करूँ। लिखते भी हैं शिवबाबा मार्फत ब्रह्मा। फिर बाबा जवाब भी देते हैं। कितने पत्र लिखने पड़े। हाँ, सर्विसेबुल बच्चे सर्विस का समाचार देंगे तो बाप भी खुश होगा। अच्छी-2 चिट्ठी आवेगी तो नयनों पर रखेंगे, फिर छाती पर रखेंगे; नहीं तो वेस्ट पेपर बॉक्स में डाल देनी पड़ती है। (मु.ता.26.2.78 पृ.3 मध्य)

10. यह महान खुशखबरी सबको सुनानी है, अब देहली में प्रदर्शनी भी होनी है, तो बच्चों को डायरैक्शन मिलती है- खुशखबरी लिखो।.....ऊँच-ते-ऊँच बेहद के बाप की खुशखबरी। .....तो यह क्लीयर और पूरे अक्षरों में लिखना चाहिए- बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित-पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे ब्र.कु.कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, भ्रष्टाचारी, पतित दुनियाँ को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी दुनियाँ बना रहे हैं, वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो। गवर्मेंट से भी तुम्हारी यह प्रतिज्ञा है- हम

भारत में फिर से सतयुगी श्रेष्ठाचारी 100प्रतिशत पवित्रता, सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और (ब्रह्मा-वत्सों का) इस विकारी दुनियाँ का विनाश कैसे होगा सो आकर समझो। ऐसे क्लीयर लिखना चाहिए। कार्ड में ही ऐसे लिखो। बाबा जो डायरैक्शन देते हैं वह एक्युरेट लिखना चाहिए, जो मनुष्य अच्छी रीति समझ सकें। यह प्रजापिता ब्र०कु०कुमारियाँ कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लैन-अनुसार परमपिता परमात्मा शिव की श्रीमत पर, सहज राजयोग और पवित्रता के बल से, अपने तन-मन-धन से भारत को ऐसा श्रेष्ठाचारी पावन कैसे बना रही हैं सो आकर समझो। ऐसे क्लीयर करके कार्ड में छपाना चाहिए। (मु.ता.2.3.76 पृ.1 आदि)

11. कहाँ ब्रह्माकुमारियों में खिटपिट है तो झट बाबा को लिखकर भेजो; परन्तु 10-12 लिखें तब समझें। एक के कहने से तो नहीं होगा। बच्चों को सब समाचार पूरा देना चाहिए- टीचर कैसे पढ़ाती है। टीचर खुद तो अपनी (खामियाँ) लिखेगी नहीं। स्टूडेण्ट लिख सकते हैं। फिर बाबा प्रबन्ध कर देंगे; परन्तु बाबा समझाते- कभी ब्राह्मणी से रूठकर खाना खराब न करना। पढ़ाई छोड़ी और मरा, भस्मासुर बना। (मु.ता.17.5.78 पृ.3 अंत)

पतित-पावन बाप

1. यह गुप्त वेश में कितना बड़ा मेहमान पतित को पावन बनाने आया है। बाप कहते हैं- मैं अपना परमधाम छोड़ पतित दुनियाँ, पतित शरीर में आया हूँ बच्चों को पढ़ाने। (मु.ता.12.10.78 पृ.3 अंत)

2. पतित दुनियाँ और पतित शरीर में आकर पावन बनाने का पार्ट भी इनका ही है। (मु.ता.3.1.84 पृ.2 मध्य)

3. पतितों को पावन बनाने का कर्तव्य करना है तो क्या भित्तर-ठिक्कर में जाकर करेंगे? इसको ही घोर अंधियारा कहा जाता है। (मु.ता.23.1.84 पृ.2 आदि)

4. मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। यह है बुद्धि का योग अथवा सम्मुख बाप के साथ संग। संग से रंग लगता है ना! कहा जाता है- संग तारे कुसंग बोरे। (मु.ता.4.5.69 पृ.2 आदि)

5. तुम खुद कहते हो- हे पतित-पावन!..... यह किसको कहा? क्या ब्रह्मा को, विष्णु को, शंकर को? नहीं! पतित-पावन तो एक ही है। (मु.ता.26.5.69 पृ.3 अंत)

6. (राम) बाप द्वारा पावन बनना है; नहीं तो बुलाने की दरकार नहीं, पूजा की भी दरकार नहीं। (मु.ता.10.9.69 पृ.2 मध्यादि)

7. भगवान को बुलाते हैं कि आकर मूत-पलीती कपड़ धोवो हम आत्माओं का। भाइयों ने पुकारा है- हे पतित-पावन! हम सभी आत्माओं के बाप! हमारा आकर कपड़ा साफ करो। (मु.ता.13.6.69 पृ.2 मध्य)

8. मम्मा का भल शरीर नहीं है तो भी पुरुषार्थ करती रहती है, सर्विस पर जाती है, बच्चों के तन में विराजमान हो पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताती है। (मु.ता.22.7.72 पृ.2 आदि)

9. पतितों को पावन करने वाला (कर्ता) भी वह है, जगत का मालिक भी वह है। (मु.ता.29.7.78 पृ.2 अंत)

10. ज़रूर बाप पावन भी बनावेंगे। ..... क्या-2 पार्ट चलना है सो आगे चलकर देखेंगे। (मु.ता.28.1.68 पृ.3 आदि)

11. बच्चे जानते हैं- हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। हमारा धंधा ही है पतितों को पावन करना। सहन भी करना पड़े। कठिनाइयाँ तो ज़रूर आवेंगी। विघ्न पड़ेंगे। तुमसे कोई पूछे, तुम्हारा उद्देश्य क्या है? बोलो, उद्देश्य यही है- भारत जो पतित बन गया है, तुम पुकारते रहते हो पतित-पावन बाप को कि आकर पतित भारत को पावन बना कर जाओ। यह बाप को हुकुम मिला हुआ है, सो बाप हम बच्चों सहित यह कार्य कर रहे हैं, भारत की रूहानी सेवा कर रहे हैं पावन बनाने की।..... (राम) बाप अकेला तो नहीं आकर पावन बनावेंगे, हम भी उनके मददगार हैं। (मु.ता.5.2.68 पृ.1 मध्य)

12. बाप तो ड्रामा में बाँधा हुआ है। पतित से पावन बनाने का उनका पार्ट है। हम महिमा थोड़े ही कहेंगे, यह तो उनकी ड्यूटी है पतित से पावन बनाने की। टीचर की ड्यूटी है ना पढ़ाने की! अपनी ड्यूटी बजाने वाले की महिमा क्या करेंगे? पार्ट है ना! बाप कहते हैं- मैं भी ड्रामा के बस हूँ। उनमें फिर ताकत काहे की! यह तो उनकी ड्यूटी है। कल्प-2 संगम पर आकर पतित को पावन बनाने का रास्ता बताना ही है। मैं पावन बनाने बिगर रह नहीं सकता हूँ। (मु.ता.13.2.68 पृ.1 अंत, 2 आदि)

13. (राम) बाप कहते हैं कि मेरे द्वारा तुम पवित्र बनेंगे तो स्वर्ग, पवित्र दुनियाँ का मालिक बनेंगे। पतित दुनियाँ अब विनाश होनी है। (मु.ता.8.4.78 पृ.3 मध्य)

14. (राम) बाप कहते हैं- पाँच-2 हज़ार वर्ष बाद धोबीघाट भा+रत में ही बनाता हूँ। (मु.ता.16.4.78 पृ.2 अंत)

15. कराची में इन्हों की 14 वर्ष भट्ठी रही। कपड़े धोते-2 कितने अच्छे, गोरे बन गए। कोई टूट पड़े, कोई मैले-के-मैले ही रहे। आजकल तो सात रोज़ भी मुश्किल ठहर सकते हैं। पहले तो पूरी भट्ठी थी। (मु.ता.16.4.78 पृ.3 मध्य)

16. कोई भी अंदर आते हैं, बोलो- देखो, प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ लिखा हुआ है। प्रजापिता तो बाप ठहरा। .....पतित मनुष्यों को पावन देवता बनाते हैं। कैसे बनाते हैं? उसकी भी मशीनरी है। यह है रूहानी नेचरक्योर। (मु.ता.10.1.75 पृ.3 मध्य)

17. उनको बुलाया है- आ करके हमको पावन बनाकर घर ले चलो। देखो, ड्यूटी कैसी है! तुम खुद पुकारते हो। (मु.ता.8.4.69 पृ.3 अंत)

पवित्रता

1. जो बाप के पास आकर समझेंगे, वही पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे। पतित, नालायक को बाप बैठ लायक बनाते हैं। (मु.ता.2.9.77 पृ.3 अंत)

2. इस ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार प्यूरिटी ही है। आप सभी श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठता प्यूरिटी ही है। प्यूरिटी ही इस भारत देश की महानता है। प्यूरिटी ही आप ब्राह्मण-आत्माओं की प्रॉस्पैरिटी है।..... प्यूरिटी ही विश्व-परिवर्तन का आधार है। प्यूरिटी के कारण ही आज तक भी विश्व आपके जड़ चित्रों को चैतन्य से भी श्रेष्ठ समझता है। आजकल की नामी-ग्रामी आत्माएँ भी प्यूरिटी के आगे सिर झुकाती रहती हैं। ..... अपवित्रता परधर्म है, पवित्रता स्वधर्म है। स्वधर्म को अपनाना सहज लगता है। आज्ञाकारी बच्चों को बाप की पहली आज्ञा है- पवित्र बनो, तब ही योगी बन सकेंगे।.....जब से जन्म लिया तब से अभी तक संकल्प में भी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। अपवित्रता अर्थात विष को छोड़ चुके। ब्राह्मण बनना अर्थात अपवित्रता का त्याग। (अ.वा.14.1.79 पृ.211 आदि, 212 आदि)

3. पवित्रता अनुसार पदवी पावेंगे। बाकी कुछ-न-कुछ हिस्सा कम होने से जन्म भी देरी से लेंगे। (मु.ता.2.10.76 पृ.2 मध्य)

4. पवित्रता ही योगी बनने का पहला साधन है। पवित्रता ही बाप के स्नेह को अनुभव करने का साधन है। पवित्रता ही सेवा में सफलता का आधार है। (अ.वा.27.2.85 पृ.194 अंत)

5. जो अधिकारी बच्चे हैं उन्हों को पवित्रता मुश्किल नहीं लगती। जिन्हों को पवित्रता मुश्किल लगती, वह डगमग ज़्यादा होते हैं। पवित्रता स्वधर्म है, जन्मसिद्ध अधिकार है तो सदा सहज

लगेगा। ..... अधिकारी आत्मा आते ही दृढ़ संकल्प करती कि पवित्रता बाप का अधिकार है; इसलिए पवित्र बनना ही है। (अ.वा.2.3.85 पृ.206 आदि)

6. प्यूरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता; संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्यूरिटी, मानो एक/दूसरे के प्रति ईर्ष्या या घृणा का संकल्प है तो प्यूरिटी नहीं, इम्प्यूरिटी कहेंगे। प्यूरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश-मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इम्प्यूरिटी न हो। (अ.वा.31.10.75 पृ.253 अंत)

7. सबसे पहला अधिकार पवित्रता का। उसके आधार पर सुख-शान्ति सर्व अधिकार प्राप्त हो जाते। तो पहला पवित्रता का अधिकार लेने में सदा नं॰ वन रहना, तो प्राप्ति में भी नं॰ वन हो जाएँगे। पवित्रता की फाउण्डेशन को कभी कमज़ोर नहीं करना, तब ही लास्ट सो फास्ट जाएँगे। (अ.वा.5.4.81 पृ.129 अंत)

8. प्यूरिटी ही पर्सनैलिटी है। जितनी-2 प्यूरिटी होगी तो प्यूरिटी की पर्सनैलिटी स्वयं ही सर्व के सिर झुकाएगी। .....प्यूरिटी की पर्सनैलिटी बड़े-2 लोगों के भी सिर झुकाती है। .....जहाँ देखें वहाँ प्यूरिटी-ही-प्यूरिटी नज़र आए। वर्तमान समय इसी का ही अनुभव करना चाहते हैं, जो चारों ओर नज़र नहीं आती। चाहे कितनी भी महान आत्मा हो, नाम है; लेकिन प्यूरिटी की वायब्रेशन्स नहीं हैं; क्योंकि वह सिद्धि का नाम, मान, शान को स्वीकार कर लेते हैं। .....अभी प्रैक्टिकल जीवन में यह प्यूरिटी की पर्सनैलिटी चाहिए। .....यह (पवित्रता) विश्व की बड़ी-से-बड़ी पर्सनैलिटी है। समझा और था, देखा कुछ और। ऐसे अनुभव करें, जो हमारी बुद्धि में बात नहीं है, वह इन्हीं की प्रैक्टिकल जीवन में है। (अ.वा.1.4.78 पृ.72 आदि, 73 आदि)

9. होलीएस्ट बनने की मुख्य बात है- बाप से सच्चा बनना। सिर्फ ब्रह्मचर्य धारण करना, यह प्यूरिटी की हाइएस्ट स्टेज नहीं है; लेकिन प्यूरिटी अर्थात् रियल्टी अर्थात् सच्चाई। (अ.वा.25.6.77 पृ.275 मध्य)

10. धर्मसत्ता को धर्मसत्ताहीन बनाने का विशेष तरीका है- पवित्रता को सिद्ध करना और राज्यसत्ता वालों के आगे एकता को सिद्ध करना।..... इन दोनों ही शक्तियों को सिद्ध किया तो ईश्वरीय सत्ता का झण्डा बहुत सहज लहराएगा। (अ.वा.21.2.85 पृ.186 आदि)

11. संकल्प में इतनी समर्थी है जो विश्व की आत्माओं तक शक्तिशाली संकल्प द्वारा सेवा कर सको, वृत्ति की शुद्धि अनुसार वायुमण्डल को शुद्ध कर सको। वृत्ति की शक्ति है! शुद्ध अर्थात् प्यूरिटी। प्यूरिटी का आधार है- भाई-2 की स्मृति की वृत्ति। (अ.वा.4.1.79 पृ.176 मध्य)

12. अगर नम्बर वन निश्चय है तो चलते-2 मुख्य पवित्रता धारण करने में मुश्किल नहीं लगेगा। अगर पवित्रता स्वप्न मात्र भी हिलाती है, हलचल में आती है, तो समझो- नम्बर वन फाउण्डेशन कच्चा है; क्योंकि आत्मा का स्वधर्म पवित्रता है। अपवित्रता परधर्म है और पवित्रता स्वधर्म है। तो जब स्वधर्म का निश्चय हो गया तो परधर्म हिला नहीं सकता। (अ.वा.4.12.95 पृ.47 आदि)

13. संकल्प द्वारा भी पाप होता है। संकल्प के पाप का भी प्रत्यक्षफल प्राप्त होता है। संकल्प में स्वयं की कमज़ोरी, किसी भी विकार की, पाप के खाते में जमा होती ही है; लेकिन अन्य आत्माओं के प्रति संकल्प में भी किसी विकार के वशीभूत वृत्ति है तो यह भी महापाप है। (अ.वा.3.12.78 पृ.94 अंत)

{ देखिए प्रकरण 'सर्वसंबंध बाप से' में प्वॉइण्ट नं॰20 }

पवित्रता पर बखेड़ा

1. कितनी बाँधेली बच्चियाँ मार खाती हैं। कोई मार दे, निशान हो तो फौरन गवर्मेण्ट को रिपोर्ट करो तो झट छुटकारा मिल जावेगा; परन्तु हिम्मत चाहिए, नष्टोमोहा पूरा चाहिए। आखरीन विजय तुम बच्चों की होनी है। (मु.ता.14.5.73 पृ.3 अंत)

2. बॉम्बे में एक बच्चा आता था। उसने पवित्रता की प्रतिज्ञा की थी तो उनके घर में बहुत झगड़ा चलता था। एक बच्ची जाती थी क्लास कराने तो उनका भाई कहता था- वहाँ जाएगी तो मार डालूँगा। (मु.ता.24.1.78 पृ.1 अंत)

3. बाप कहते हैं- पवित्र बनो। इसमें कोई विघ्न डालते हैं तो परवाह न करनी चाहिए। रोटी-टुकड़ तो मिल सकता है ना! (मु.ता.28.9.75 पृ.3 आदि)

4. इस पवित्रता पर ही झगड़ा चलता है; परन्तु अच्छी मज़बूत चाहिए। इस समय विकार देने लिए वेश्या बन रहने से तो अपने शरीर निर्वाह अर्थ कुछ-न-कुछ काम कर पवित्र रहना बेहतर है। ऐसे भी हैं। (मु.ता.25.4.71 पृ.3 मध्यांत)

5. माताएँ पवित्र बनती हैं तो कितना झगड़ा होता है। पति पवित्र बनने न देगा तो ज़रूर फिर अत्याचार होंगे, तो भागेंगी ना! (मु.ता.13.12.71 पृ.3 आदि)

6. और कोई संस्था के पिछाड़ी इतना हंगामा नहीं करते; क्योंकि यहाँ मुख्य है पवित्रता की बात। इस पर ही खिटपिट शुरू से लेकर पिछाड़ी तक रहेगी। बड़े-2 घर के आवेंगे तो बड़े हंगामे भी चलेंगे। (मु.ता.30.11.70 पृ.2 मध्यादि)

7. बाप यह भी समझाते हैं- पवित्रता के लिए विघ्न पड़ेंगे, अबलाओं पर अत्याचार होंगे। नाम ही है दुर्योधन, दु:शासन। (मु.ता.1.5.69 पृ.1 मध्यादि)

8. पवित्र बनने पर ही मार खाते हैं। बाप कहते हैं- मैं आया हूँ सबके घरों को फिटाने। (मु.ता.1.6.76 पृ.2 मध्यादि)

9. अपवित्र होने से बाप को याद कर न सकेंगे। ऐसे भी बहुत हैं। कर्मबन्धन का हिसाब जब छूटे, गाड़ी के दोनों पहिये पवित्र होंगे तो ठीक चलेंगे। दोनों पवित्र बनेंगे तो ज्ञान चिता पर बैठ जावेंगे; नहीं तो खिटपिट होती है। (मु.ता.7.9.76 पृ.3 मध्य)

10. कोई कहते हैं- बाबा, हम घर में रहते हैं, हमको हाथ लगाने नहीं देती है। अरे, अभी वह समय थोड़े ही है। स्त्री को हाथ लगाना भी ठीक नहीं है; नहीं तो विकार खींच लेंगे। (मु.ता.6.10.76 पृ.1 अंत)

11. कोई क्रोध में बोले, तुम शान्त हो देखते रहो। विकार पर ही झगड़ा होता है। अच्छा, पति मारता है, तुम शिवबाबा को याद करो- हाय शिवबाबा! यह मुझे मारता है। शिवबाबा को याद करने से तुम मुक्ति में चले जावेंगे। अंत मति सो गति हो जावेगी। (मु.ता.29.10.76 पृ.2 मध्यादि)

12. निर्विकारी बनने में बहुत सितम सहन करने पड़ते हैं। (मु.ता.6.3.84 पृ.2 मध्य)

प्रश्नावली

1. ब्रह्माकुमारियों के आगे 'प्रजापिता' अक्षर ज़रूर लिखना है। प्रजापिता कहने से बाप सिद्ध हो जाता है। हम प्रश्न ही पूछते हैं कि प्रजापिता से क्या सम्बन्ध है? क्योंकि 'ब्रह्मा' नाम तो बहुतों के हैं।..... 'प्रजापिता' नाम तो किसका होता नहीं। (मु.ता.7.9.77 पृ.2 आदि)

प्रेरणा

1. 'प्रेरणा' अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। (मु.ता.9.2.76 पृ.2 अंत)

2. वह समझते हैं- खुदा ऊपर से प्रेरणा देते हैं। बाप कहते हैं- धूर भी नहीं। प्रेरणा आदि तो कुछ है नहीं। (मु.ता.30.3.68 पृ.4 मध्यांत)

3. सद्गति दाता, पतित-पावन खुद आते हैं। ऐसे नहीं कि वहाँ से प्रेरणा करते हैं। वह तो यहाँ आते हैं। यादगार भी है। (मु.ता.4.3.78 पृ.2 अंत)

4. विनाश भी करवाते हैं शंकर द्वारा। (शंकर) प्रेरक है विनाश के लिए। ज्ञान में प्रेरणा की बात नहीं है। (मु.ता.11.4.76 पृ.3 अंत)

5. 'प्रेरणा' अक्षर राँग है। यह तो बाप की मत पर चलना होता है, प्रेरणा की बात नहीं। कोई-2 संदेशियाँ सन्देश ले आती हैं। उनमें भी बहुत मिक्सचर हो जाता है। सन्देशी सब एक जैसी तो नहीं हैं। आगे फिर भी कुछ अच्छी थीं। (मु.ता.7.12.73 पृ.1 अंत)

6. मैं तुमको यह वर्सा कैसे दूँ? सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान कैसे सुनाऊँ? इसमें प्रेरणा आदि की तो बात ही नहीं। (मु.ता.17.6.72 पृ.4 आदि)

7. (मुर्करर रथ द्वारा) मैं ज्ञान का सागर हूँ; परन्तु मैं निराकार (शिव) ऊपर बैठ प्रेरणा से कैसे पढ़ाऊँ? ऐसे तो कब पढ़ाई होती नहीं। प्रोफेसर घर में बैठ जाए, प्रेरणा से स्टूडेण्ट को पढ़ा सकेंगे? ज़रूर स्कूल में आना पड़े ना! (मु.ता.20.8.78 पृ.1 अंत)

8. वह आकर सबको पतित से पावन बनाते हैं। इसमें प्रेरणा की बात नहीं। कहते हैं- बाबा, आपकी प्रेरणा। हम प्रेरणा किसको देते नहीं वा न प्रेरणा कराता हूँ। मुझे अगर प्रेरणा से पावन बनाना हो, तो फिर आकर रथ लेने की क्या दरकार है? (मु.ता.12.7.71 पृ.2 मध्यांत)

9. पतितों को पावन बनाने आवेगा। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलावेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या? 'प्रेरणा' अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। (मु.ता.10.9.71 पृ.2 अंत)

10. बाप नज़र से निहाल कर देते हैं, काँटे से फूल बना देते हैं। सम्मुख आकर ही नॉलेज सुनावेंगे ना! इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। बाप डायरैक्शन देते हैं, ऐसे याद करने से शक्ति मिलेगी। (मु.ता.30.7.70 पृ.3 अंत)

11. मेरी श्रीमत पर चलो। इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ हैं तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है? 'प्रेरणा' अक्षर राँग है। (मु.ता.6.12.78 पृ.1 अंत)

12. प्रेरणा से अगर योग और ज्ञान सिखलाना होता, फिर तो बाप कहते- मैं इस गन्दी दुनियाँ में आता क्यों? प्रेरणा, आशीर्वाद- यह सब भक्तिमार्ग के अक्षर हैं। (मु.ता.8.8.76 पृ.3 अंत)

13. बाप भी मत शरीर द्वारा ही देंगे। ऐसे ही थोड़े ही कान में फूँक दे देंगे। शिवबाबा कहते हैं- मैं किसको कान में फूँक देने वाला वा प्रेरणा करने वाला नहीं हूँ। मैं कोई राय भी दूँगा तो ब्रह्मा द्वारा। कोई समझते हैं- हम तो शिवबाबा के डायरैक्शन पर चलते हैं। वह सब हैं गपोड़े। ऐसे भी

बहुत हैं जो शिव को मानते हैं, ब्रह्मा को मानते ही नहीं; परन्तु ब्रह्मा अथवा ब्राह्मणों बिगर ईश्वरीय महावाक्य तो सुन न सकें। मूढ़ बुद्धि ऐसे हैं जो समझते हैं- प्रेरणा से हमको सब मिलता है। (मु.ता.27.1.75 पृ.2 आदि)

पुरुषार्थ

1. पुरुषार्थ करना है। भल पिछाड़ी में जो आते हैं, वह पहले आने वालों से तीखे चले जाते हैं। (मु.ता.12.10.78 पृ.1 अंत)

2. बहुत काल की प्रारब्ध पानी है तो पुरुषार्थ भी बहुत काल का चाहिए ना! अगर लास्ट टाइम पुरुषार्थ करेंगे तो प्रालब्ध भी लास्ट की ही मिलेगी। पुरुषार्थ फर्स्ट नहीं और प्रालब्ध फर्स्ट वाली चाहिए? लास्ट में बचा-खुचा मिलने से क्या होगा? जैसे प्राप्ति का लक्ष्य फर्स्ट का है, वैसे पुरुषार्थ भी ऐसा करो। (अ.वा.9.2.75 पृ.59 अंत)

3. बहुत काल की कमी अंत में धोखा दे देगी। अगर कोई भी कमी की रस्सी रह जाएगी तो उड़ नहीं सकेंगे। (अ.वा.14.4.83 पृ.145 आदि)

4. बाबा लिखते हैं- काला मुँह किया, अब यहाँ नहीं आ सकते हो। यहाँ आकर क्या करेंगे? फिर भी वहाँ रह पुरुषार्थ करो। एक बार गिरा सो गिरा। ऐसे नहीं कि राजाई पद पा सकेंगे। कहा जाता है ना- चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस, गिरे तो एकदम चाण्डाल। (मु.ता.18.8.76 पृ.3 अंत)

5. पुरुषार्थ का समय बहुत बीत चुका। अब थोड़े का भी थोड़ा-सा रहा है।..... इस मेले का भी थोड़ा-सा समय रह गया है; इसलिए अब सुना तो बहुत, सुनना अर्थात् वाणी द्वारा ही यह ब्राह्मण जन्म लिया; इसलिए मुखवंशावली कहलाते हो। .....सुनने के बाद है (कर्मयोगी का) स्वरूप बनना; इसलिए लास्ट स्टेज स्मृति-स्वरूप की है। (अ.वा.30.1.79 पृ.250 अंत)

6. अभी तक कोई भी सीट सिवाय दो-तीन के फिक्स नहीं हुई है। अभी जो चाहे, जितना पुरुषार्थ करना चाहे, कर सकता है।..... अभी लेट हुई है; लेकिन टू-लेट नहीं हुई है; इसलिए सभी को आगे बढ़ने का चान्स है। .....तो सदैव उमंग-उत्साह रहे। ऐसे नहीं- चलो, कोई भी नम्बर वन बने, मैं नं. दो ही सही। इसको कहते हैं- कमज़ोर पुरुषार्थ। (अ.वा.25.10.87 पृ.107 अंत)

7. निमित्त बने हुए सदैव पुरुषार्थ के हुल्लास में रहते हैं, तो उन्हें देख और भी हुल्लास में रहते हैं। चलते-2 पुरुषार्थ में थकावट आना वा चलते-2 पुरुषार्थ साधारण रफ्तार में हो जावे, यह किसकी निशानी है? विघ्न न हो; लेकिन लगन भी श्रेष्ठ न हो, तो उसको भी आलस्य कहेंगे। (अ.वा.4.3.72 पृ.236 अंत)

8. पुरुषार्थी को कभी भी यह समझना नहीं चाहिए कि मेरे पुरुषार्थ करने के बाद कोई असफलता भी हो सकती है। सदैव ऐसा ही समझना चाहिए कि पुरुषार्थ जो किया, वह कभी भी व्यर्थ नहीं जा सकता। अगर सही प्रकार से पुरुषार्थ किया तो उसकी सफलता अब नहीं तो कब मिलनी ज़रूर है। (अ.वा.27.4.72 पृ.255 आदि)

9. 'पुरुषार्थ' शब्द का अर्थ क्या करते हो? इस रथ में रहते अपने को पुरुष अर्थात् आत्मा समझ कर चलो, इसको कहते हैं- पुरुष+अर्थी। ..... पुरुषार्थी माना अपने को रथी समझने वाला। ..... जानने और चलने में अगर अंतर है तो ऐसी स्टेज वाले को पुरुषार्थी नहीं कहा जाएगा। पुरुषार्थी सदैव मंज़िल को सामने रखते हुए चलते हैं, वह कब रुकता नहीं। बीच-2 में मार्ग में जो सीन आती हैं, उनको देखने लगते हैं; लेकिन रुकते नहीं। (अ.वा.3.5.72 पृ.261 मध्य)

10. जितना बहुत समय से अपने को सफलतामूर्त(विजयी) बनावेंगे, उतना ही बहुत समय वहाँ सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी बनेंगे। समझो, अगर कोई बहुत समय से सफलतामूर्त नहीं बनते है, लास्ट में बनते हैं वा थोड़ा समय पहले बनते हैं तो उस अनुसार राज्य के अधिकारी थोड़े समय लिए बनते हैं, सम्पूर्ण समय नहीं मिलता है। जो बहुत समय से सम्पूर्ण बनने के पुरुषार्थ में मग्न रहते हैं, वही सम्पूर्ण समय राज्य के अधिकारी बनते हैं। (अ.वा.14.10.76 पृ.1 आदि)

11. अभी पुरुषार्थ शक्तिशाली नहीं है, ढीला-ढाला है। पुरुषार्थी तो सभी हैं; लेकिन पुरुषार्थ शक्तिशाली जो होना चाहिए, वह शक्ति पुरुषार्थ में नहीं भरी है। .....अगर ऐसी ढीली रिज़ल्ट में रहेंगे तो जो आने वाली परीक्षाएँ हैं, उनकी रिज़ल्ट क्या रहेगी? परीक्षाएँ कड़ी आने वाली हैं, उसका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए। (अ.वा.9.6.69 पृ.73 आदि)

12. पेपर लास्ट में होगा। तीन नं॰ निकलेंगे। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, उतना नं॰ मिलेगा। नसीब को बनाना खुद के हाथ में है। (अ.वा.6.7.69 पृ.83 अंत)

13. मैं तो रोज़ यादप्यार देता हूँ, बच्चों को खज़ाना भेज देता हूँ। सबको ललकार करता रहता हूँ कि बाप की श्रीमत पर बेहद का वर्सा लेने पुरुषार्थ करते रहो। इसमें गफ़लत वा बहाना मत करो। कहते हैं- कर्मबन्धन है। यह तो तुम्हारा कर्मबंधन है, इसमें बाप क्या करें? बाप रास्ता बताते हैं- योग में रहो तो भी कर्मबंधन कटता जावेगा। (मु.ता.9.2.78 पृ.2 मध्यादि)

14. कोई पर ग्रहचारी बैठती है तो राहु की दशा बैठ जाती है, फिर टूटर बन पड़ते हैं। .....अफसोस की बात ही नहीं। अपने नशे में मज़बूत रहना है। राजधानी स्थापन करने में कुछ तो सहन करना पड़ता है। बिगर मेहनत थोड़े ही बाबा सिरताज रख देंगे। फिर तो सब पर रख देते। बाप समझाते रहते हैं- सबको पुरुषार्थ करना है। (मु.ता.27.4.71 पृ.3 मध्यादि)

15. सूर्यवंशी की निशानी है तीव्र पुरुषार्थ- सोचा और किया। (अ.वा.22.3.82 पृ.310 आदि)

16. जिस समय वातावरण के वशीभूत हो जाते हो, उस समय स्थूल उदाहरण सामने रखो। अगरबत्ती कब वातावरण के वशीभूत नहीं होती है, वातावरण को बदलने के लिए अगरबत्ती है। (अ.वा.11.7.74 पृ.105 अंत, 106 आदि)

17. संगमयुग है असम्भव से सम्भव होने का। जो बात सारी दुनियाँ असम्भव समझती है, वह सम्भव करने का युग यही है। (अ.वा.1.2.75 पृ.37 अंत)

राजस्थान

1. राजस्थान ज़ोन की विशेषता क्या है? राजस्थान में ही मुख्य केन्द्र है। तो जैसे ज़ोन की विशेषता है, वैसे राजस्थान निवासियों की भी विशेषता होगी ना! अभी राजस्थान में कोई विशेष हीरे निकाले हैं या आप ही विशेष हीरे हो? आप तो सबसे विशेष हो ही; लेकिन सेवा के क्षेत्र में दुनियाँ की नज़रों में जो (8) विशेष हैं, उन्हों को भी (विश्व) सेवा के निमित्त बनाना है, ऐसी सेवा की है? राजस्थान को सबसे नं॰ वन होना चाहिए- संख्या में, क्वालिटी में, सेवा की विशेषता में, सबमें नं॰ वन। ..... अभी नं॰ वन संख्या में महाराष्ट्र, गुजरात को गिनती करते हैं। अभी यह गिनती करें कि सबसे नं॰ वन राजस्थान है। अभी इस वर्ष तैयारी करो। अगले वर्ष महाराष्ट्र और गुजरात से भी नं॰ वन जाना। निश्चय-बुद्धि विजयी। कितने अच्छे-2 अनुभवी रत्न हैं। सेवा को आगे बढ़ाएँगे (तो) ज़रूर बढ़ेगी। (अ.वा.22.4.84 पृ.266 मध्य)

2. (पु.) संगमयुग के स्वराज्य की राजगद्दी तो राजस्थान में है ना! कितने राजे तैयार किए हैं? राजस्थान के राजे गाए हुए हैं। तो राजे तैयार हो गए हैं या हो रहे हैं? राजस्थान में राजाओं की सवारियाँ निकलती हैं। ..... (8x3+1) 25 स्थानों के 25 राजे आवें तो सवारी सुन्दर हो जाएगी ना! ड्रामानुसार राजस्थान में ही सेवा की गद्दी बनी है। तो राजस्थान का भी विशेष पार्ट है। राजस्थान से ही विशेष सेवा के घोड़े भी निकले ना! (अ.वा.24.4.84 पृ.269 आदि)

3. राजस्थान में मुख्य स्थान मुख्य केन्द्र है। तो जहाँ मुख्य केन्द्र है, वह सबमें मुख्य है ना! राजस्थान को तो नाज़ होना चाहिए, नशा होना चाहिए। राजस्थान से नए-2 सेवा के प्लैन्स निकलने चाहिए। राजस्थान को कोई नई इनवेन्शन करनी चाहिए। अभी की नहीं है। राजस्थान की धरती का परिवर्तन करना पड़ेगा। उसके लिए बार-2 मेहनत का जल डालना पड़ेगा। .....अभी हल्का खाद डाला है। (अ.वा.10.12.79 पृ.97 अंत)

4. राजस्थान को वरदान बहुत मिला हुआ है। पहले-2 सेवा का साधन गिफ्ट में राजस्थान को मिला। पहला-2 तीर्थस्थान तो राजस्थान ही हुआ। बाप-दादा, दोनों का राजस्थान को वरदान है।

..... एक दिन आएगा ज़रूर जो राजस्थान की संख्या कमाल की लिस्ट में आएगी- सिर्फ इसके लिए परोपकारी बनो। परोपकारी से विश्व-उपकारी बन जाएँगे। बापदादा की विशेष धरणी, जिस पर बाप की नज़र पड़ी, वह फल अवश्य देगी। राजस्थान की महिमा बाप जानते हैं, राजस्थान में रहने वाले कम जानते हैं। बाप जानते हैं कि क्या होने वाला है। ..... मुख्य केन्द्र भी राजस्थान में है ना, तो आस-पास (दिल्ली-अहमदाबाद) भी ज़रूर आकर्षण के केन्द्र बनेंगे, वह भी टाइम आएगा। साकार बाप की पहली-2 नज़र कहाँ गई? राजस्थान पर, तो कोई तो विशेषता होगी ना! समय जब पहुँच जाता है, पर्दा खुल जाता है और दृश्य सामने आ जाता। (अ.वा.19.12.78 पृ.139 मध्य, 140 आदि)

रिफाइनिंग-चेन्जिंग

1. आगे चलकर बाबा बहुत बातें सुनावेंगे। सब अभी बता देवें तो आगे क्या बतावेंगे? (मु.ता.25.9.73 पृ.4 अंत)

2. बाबा समझाते हैं कि गीता आदि छपती है तो थोड़ी छपवाकर फिर ऐसे ढंग से बनानी चाहिए, जो नए-2 प्वॉइण्ट्स एड कर सको। वो गीता तो पूरी फिनिश की हुई है। यह गीता तो पूरी नहीं होती है। जहाँ तक जीना है, अंत तक तुमको पढ़ना है। प्वॉइण्ट्स निकलती रहेंगी, एड होती जाएँगी। (मु.ता.4.10.73 पृ.2 मध्यादि)

3. जैसे समय समीप आ रहा है, पाण्डव सेना के प्रत्यक्ष होने का प्रभाव गुप्त रूप में फैलता जा रहा है। सेवा की रूपरेखा समय प्रमाण और सेवा प्रमाण परिवर्तन अवश्य होगी। जैसे आजकल भी साइंस द्वारा हर चीज़ को क्वाण्टिटी बजाय क्वालिटी में ला रहे हैं। ऐसा छोटा-सा रूप बना रहे हैं, जो रूप छोटा; लेकिन शक्ति अधिक भरी हुई होती है। जैसे मिठास के विस्तार को सैक्रीन के रूप में लाते हैं। विस्तार को सार में ला रहे हैं। (अ.वा.ता.28.6.77 पृ.1 मध्यादि)

4. दिन-प्रतिदिन कायदे-कानून भी सुधरते जावेंगे। दुनिया के कायदे-कानून तो बिगड़ते जावेंगे। (मु.ता.14.2.73 पृ.3 अंत)

5. दिन-प्रतिदिन तुम बच्चों को बहुत डीप डायरैक्शन भी मिलते रहेंगे। आगे बाबा बिन्दी-2 थोड़े ही कहते थे। अभी समझाते हैं- बिन्दी रूप में याद करो। आगे चल और भी नए-2 प्वॉइण्ट्स निकलते रहेंगे। दिन-प्रतिदिन उन्नति होती जावेगी। (मु.ता.28.2.69 पृ.2 मध्यादि)

6. बाप भी जैसे कल्प पहले समझाते थे, वह समझा रहे हैं कि शिव ज्योतिर्लिंगम है। अब फिर समझाते हैं कि नहीं! वह स्टार माफिक है, इतना बड़ा भी नहीं है। अब पहले जो ड्रामा में था समझाने का, वह उस समय समझाया। अब फिर ड्रामा में है और गुह्य समझाने का, वह समझाते

हैं। इसमें मूँझने की तो बात ही नहीं। बाबा ने कल जो समझाया, उसको आज बदल सूक्ष्मता से समझाते हैं। तो कहेंगे- ड्रामा अनुसार जिस वक्त जो सुनाना था, वह सुनाया। जो कल सुनाना था वह कल सुनाया; जो आज सुनाना है वो सुनाता हूँ। समझा! ड्रामा पर चलना चाहिए, तो मूँझेंगे नहीं। (रात्रि मु.ता.5.3.73 पृ.1 आदि)

7. रिफाइन चीज़ जो होती है, उनकी क्वाण्टिटी भले कम होती है; लेकिन क्वालिटी पावरफुल होती है। जो चीज़ रिफाइन नहीं होगी उसकी क्वाण्टिटी ज़्यादा, क्वालिटी कम होगी।.....रिफाइन चीज़ जास्ती भटकती नहीं, स्पीड पकड़ लेती है। (अ.वा.12.6.72 पृ.303 अंत, 304 आदि)

8. वण्डर यह है जो पहले वाले से पिछाड़ी वाले तीखे हो जाते हैं; क्योंकि अभी दिन-प्रतिदिन रिफाइन प्वॉइण्ट मिलती रहती है। सैपलिंग लगती जाती है। 50 वर्ष रहना पड़ता है। (मु.ता.2.10.76 पृ.3 आदि)

9. यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी बननी है। इनमें बड़ा क्लीयर लिखना है। ऊपर में लिखना चाहिए- विनाश काले प्रीति बुद्धि विजयन्ति और नीचे लिखना चाहिए- विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ति। (मु.ता.6.10.76 पृ.2 मध्यादि)

10. ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वॉइण्ट्स गुह्य होती जाती हैं, तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेन्ज होती है। आगे थोड़े ही यह समझाते थे- शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़े ही कहेंगे, पहले क्यों नहीं ऐसा बताया? बाप कहते हैं- सब बातें पहले ही थोड़े ही समझाई जा सकती हैं। (मु.ता.6.10.76 पृ.2 अंत)

11. जिनका ज्ञान तरफ पूरा ध्यान होगा, वह चित्रों आदि में करेक्शन आदि करते रहेंगे। (मु.ता.27.11.76 पृ.3 मध्य)

12. अभी तो वृद्धि की लिस्ट में कमी है। नौ लाख ही तैयार नहीं हुए हैं। किस भी विधि से मिलेंगे तो सही ना! विधि चेन्ज होती रहती है। जो साकार में मिले और अव्यक्त में मिल रहे हैं, विधि चेन्ज हुई ना! आगे भी विधि चेन्ज होती रहेगी। वृद्धि प्रमाण मिलने की विधि भी चेन्ज होती रहेगी। (अ.वा.14.12.85 पृ.94 अंत)

13. दिन-प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं, तो फिर पुराने चित्रों को बदलकर दूसरा बनाना पड़े। यह तो अंत तक होता ही रहेगा। (मु.ता.25.4.71 पृ.1 मध्यांत)

14. दिन-प्रतिदिन इम्प्रूवमेण्ट होती जाती है। कहाँ बच्चे पर्चों में तिथि-तारीख़ लिखना भूल जाते हैं। ल.ना. के चित्र में तिथि-तारीख ज़रूर होनी चाहिए। (मु.ता.3.6.70 पृ.1 मध्य)

15. बाप दिन-प्रतिदिन नई-2 प्वॉइण्ट्स भी देते रहते हैं। तो क्या करना चाहिए? सच्ची गीता बनानी चाहिए। फिर उसमें फर्स्ट वॉल्युम, सेकण्ड वॉल्युम, थर्ड वॉल्युम निकालते रहना चाहिए। यह गीता तुम कोई भी अख़बार आदि में भी डाल सकते हो। ..... दिन-प्रतिदिन नई-2 प्वॉइण्ट्स तो बाप सुनाते रहते हैं। तो बाबा की मुरली से प्वॉइण्ट्स निकालकर इकट्ठी करनी चाहिए। फिर कुछ पुरानी, कुछ नई प्वॉइण्ट्स, सच्ची गीता ही निकलनी चाहिए। (मु.ता.13.3.75 पृ.1 अंत, 2 आदि)

16. अब दिन-प्रतिदिन नॉलेज डीप होती जाती है। स्टूडेण्ट को एम-ऑब्जेक्ट याद रहती है। (मु.ता.27.4.84 पृ.2 आदि)

रिगार्ड-डिसरिगार्ड

1. बाप का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में अटेन्शन देना, यह तो डिसरिगार्ड हो गया। बाबा कहते हैं- मनुष्यों को हेविन का मालिक बनाऊँ, बच्चे फिर जिस्मानी हद की सर्विस में माथा मारें। (मु.ता.15.5.77 पृ.2 मध्य)

2. शिवबाबा का यह रथ है। इनका रिगार्ड न रखेंगे तो धर्मराज द्वारा बहुत डण्डे खाने पड़ेंगे।.....आदिदेव का कितना रिगार्ड रखते हैं! जड़ चित्र का इतना रिगार्ड है तो चैतन्य का कितना रखना चाहिए! (मु.ता.30.9.75 पृ.3 अंत)

3. थोड़ा-सा भी बाप का डिसरिगार्ड किया तो मरा। गाया हुआ है- सद्गुरू का निन्दक ठौर न पावे। काम वश, क्रोध वश उल्टा काम करते हैं, गोया बाप की निन्दा कराते हैं। (मु.ता.17.1.73 पृ.3 आदि)

4. कोई भी प्रकार का अभिमान अपना वा दूसरों का अपमान ज़रूर करेगा। दूसरों की बातों का रिगार्ड न देना, कट करना, यह भी एक रॉयल रूप का अभिमान है। (अ.वा.9.4.73 पृ.22 मध्य)

5. ऐसे भी बुद्धू हैं जिनमें पूरा ज्ञान न होने कारण कमाण्डर के भी डिसरिगार्ड करने में देरी नहीं करेंगे। बात-चीत करने में भी मैनर्स नहीं। अपन से बड़े को हमेशा आप-2 कहा जाता है; परंतु अनपढ़ बच्चों को यह भी अक्ल नहीं, आप के बदली तू-2 कर बात करते हैं। (मु.ता.27.7.73 पृ.2 मध्य)

6. जो अच्छे पढ़े हुए हैं, उनका रिगार्ड रखना चाहिए; परन्तु मैनर्स न सीखने कारण कोई-2 तो महारथियों का भी डिसरिगार्ड कर देते हैं। बुद्धि नहीं चलती, बाबा ने सर्विसएबुल को भेजा है, ज़रूर वह बाप के दिल पर चढ़े हुए हैं। (मु.ता.14.11.73 पृ.1 अंत)

7. बच्चों में बड़ा रिगार्ड रहना चाहिए। बेहद का बाप ब्रह्मा तन में आकर पढ़ाते, तो बाप के आने पहले सबको बैठ जाना चाहिए। बाप के बाद आना रिगार्ड नहीं। स्कूल में भी जो देरी से आते हैं तो उनको पिछाड़ी में खड़ा कर देते हैं। (मु.ता.30.11.73 पृ.1 अंत)

8. रथ का भी रिगार्ड रखना है। इन द्वारा ही तो बाप सुनाते हैं। (मु.ता.3.1.71 पृ.2 अंत)

9. रिगार्ड भी बच्चों को बाप का रखना है। रिगार्ड किसको कहा जाता है? बाप जो पढ़ाते हैं, वह अच्छी रीति पढ़ते हैं गोया रिगार्ड रखते हैं। (मु.ता.10.12.68 पृ.1 आदि)

10. बड़े महारथियों का रिगार्ड तो रखना होता है ना! ऐसे नहीं, यह भी तो बाबा के बच्चे हैं। फिर नं. वार रिगार्ड तो रखना होता है ना! हाँ, कोई छोटा भी होशियार हो जाता है, तो हो सकता है बड़ों को रिगार्ड रखना पड़े। (मु.ता.9.10.71 पृ.1 अंत)

11. पहले सत्कार देना, फिर अधिकार लेना।.....अगर सत्कार को छोड़ सिर्फ अधिकार लेंगे तो क्या हो जाएगा? जो कुछ किया, वह बेकार हो जाएगा; इसलिए दोनों बातों को साथ-2 रखना है। (अ.वा.9.12.70 पृ.331 आदि)

12. नॉलेज का रिगार्ड अर्थात् आदि से अभी तक जो भी महावाक्य उच्चारण हुए, उन हर महावाक्य में अटल निश्चय हो। कैसे होगा, कब होगा, होना तो चाहिए, है तो सत्य.....इस प्रकार के क्वेश्चन्स उठाना भी अर्थात् सूक्ष्म संकल्प के रूप में संशय उठाना है। यह भी नॉलेज का डिसरिगार्ड है। .....एक क्वेश्चन होता है स्पष्ट करने के लिए, दूसरा क्वेश्चन होता है सूक्ष्म संशय के आधार से, इसको कहा जाता है- डिसरिगार्ड।..... तीसरी बात- स्वयं का रिगार्ड- .....मैं तो कमज़ोर हूँ, मेरी हिम्मत नहीं है, बाप कहते हैं; लेकिन मैं नहीं बन सकती, मेरा ड्रामा में पार्ट ही पीछे का है, जितना है उतना ही अच्छा है- ऐसे स्वयं से दिलशिकस्त होना, यह भी स्वयं का डिसरिगार्ड है। .....चौथी बात- आत्माओं द्वारा सम्बन्ध वा सम्पर्क वाली आत्माओं का रिगार्ड। इसका अर्थ है ..... हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊँचे उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व-कल्याण की कामना हो .....। किसी की भी कमज़ोरी वा अवगुण को अपनी कमज़ोरी वा अवगुण समझ वर्णन करने के बजाय वा फैलाने के बजाय, समाना और परिवर्तन करना- यह है रिगार्ड। किसी की भी कमज़ोरी की बड़ी बात को छोटा करना, पहाड़ को राई बनाना चाहिए, न कि राई को पहाड़ बनाना है। इसको कहा जाता है- रिगार्ड। दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, संग के रंग में नहीं आना, सदा उमंग-उल्लास में लाना- इसको कहा जाता है 'रिगार्ड'। (अ.वा.25.1.79 पृ.243 आदि, 244)

13. जो चाहिए वह ज़्यादा-से-ज़्यादा देते जाओ। मान दो, लो नहीं। रिगार्ड दो, रिगार्ड लो नहीं। नाम चाहिए तो बाप के नाम का दान दो। ..... कोई को कहो- मुझे रिगार्ड दो या रिगार्ड दिलाओ,

माँगने से मिले- यह रास्ता ही राँग है, तो मंज़िल कहाँ से मिलेगी?.....शान माँगने वाले परेशान होते हैं; इसलिए मास्टर विधाता की शान में रहो। (अ.वा.7.1.85 पृ.104 आदि)

सम्मुख-विमुख

1. मुरली सब बच्चे सुनेंगे; परंतु सम्मुख की बात और है ना! यह भी दिखाते हैं- कृष्ण डान्स करते थे। डांस कोई वह नहीं, वास्तव में है ज्ञान का डान्स। (मु.ता.9.4.71 पृ.1 मध्य)

2. सबसे जास्ती मज़ा सम्मुख का है, फिर सेकिण्ड नं॰ टेप, फिर थर्ड नं॰ मुरली। (मु.ता.12.4.71 पृ.3 अंत)

3. भगवान ने जिन्हों को डायरैक्ट सुनाया उन्होंने ही सुना। फिर तो यह ज्ञान रहता नहीं। (मु.ता.15.4.71 पृ.3 आदि)

4. बाप सन्मुख आकर जन्म दे तब तो लव होगा ना! तुमको जन्म दिया है तब तो लव हुआ है। (मु.ता.3.3.78 पृ.3 अंत)

5. बाप सन्मुख आकर श्रीमत देते हैं। (मु.ता.19.3.78 पृ.3 मध्यादि)

6. यह ऐसा विचित्र है जो घड़ी-2 भूल जाता है। हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा के सन्मुख रही पड़ी हैं, यह भूल जाते हैं। (मु.ता.1.10.78 पृ.1 आदि)

7. बाप अभी सन्मुख कहते हैं, भक्तिमार्ग में फिर गायन चलता है। (मु.ता.17.10.78 पृ.2 आदि)

8. वह है स्वर्ग का रचता, हमको सन्मुख पढ़ा रहे हैं। (मु.ता.20.10.78 पृ.1 मध्यांत)

9. तुम्हारे द्वारा सुनने से इण्डायरैक्ट हो जाता है, फिर यहाँ आते हैं डायरैक्ट सुनने के लिए। फिर बाबा ब्रह्मा मुख द्वारा सुनाते हैं अथवा मुख द्वारा ज्ञानामृत देते हैं। इस समय दुनियाँ तमोप्रधान हो गई है तो उस पर ज्ञान की वर्षा चाहिए। (मु.ता.4.1.84 पृ.2 अंत)

10. यहाँ भी सा॰ तो बहुतों को होते हैं; परन्तु उससे सद्गति नहीं हो सकती, जब तक रूबरू ज्ञान-योग की शिक्षा पूरी (न) लेवें। शिक्षा बिगर साक्षात्कार से कुछ नहीं होता। (मु.ता.29.5.72 पृ.1 मध्यांत)

सम्पूर्णता की निशानियाँ

1. जितना सम्पूर्ण अवस्था के नज़दीक होंगे अर्थात् बाप के नज़दीक होंगे, उसी अनुसार भविष्य प्रारब्ध में भी राज-अधिकारी होंगे, साथ-2 आदि भक्त जीवन में भी समीप सम्बन्ध में होंगे। पूज्य

अथवा पुजारी, दोनों जीवन में साकार बाप के समीप होंगे अर्थात् आदि आत्मा के सारे कल्प में सम्बन्ध वा सम्पर्क में रहेंगे। हीरो पार्टधारी आत्मा के साथ-2 आप आत्माओं का भी भिन्न नाम-रूप से विशेष पार्ट होगा। अब के सम्पूर्ण स्थिति के नज़दीक से अर्थात् बापदादा की समीपता के आधार से सारे कल्प की समीपता का आधार है। ..... समीपता का आधार श्रेष्ठता है। श्रेष्ठता का आधार, अपने मरजीवे जीवन में विशेष दो बातों की चैकिंग करो- एक, सदा परउपकारी रहे हैं, दूसरा, आदि से अब तक सदा बाल ब्रह्मचारी रहे हैं, मरजीवे जीवन के आदिकाल से अर्थात् बाल काल से अब तक सदा ब्रह्मचारी रहे हैं! ब्रह्मचारी जीवन अर्थात् ब्रह्मा समान पवित्र जीवन। जिसको ब्रह्मचारी कहो या ब्रह्माचारी कहो- आदि से अंत तक अखण्ड रहे हैं? अगर बार-2 खण्डित रहे हैं तो बाल ब्रह्मचारी वा सदा ब्रह्माचारी नहीं कहला सकते। किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता खण्डन हुई है तो परम पूज्यनीय नहीं बन सकते हैं। बाप-समान न होने के कारण समीप सम्बन्ध में नहीं आ सकते। इसलिए श्रेष्ठता का आधार, समीपता का आधार बाल ब्रह्मचारी अर्थात् सदा ब्रह्माचारी, जिसको ही फॉलो फादर भी कहते हैं। तो अपने को चैक करो- अखण्ड हैं? अखण्ड रहने वाले को सर्व प्राप्तियाँ भी अखण्ड अनुभव होती हैं। (अ.वा.7.12.78 पृ.107 अंत, 108)

2. काँटा लगे और फिर निकालो, यह फाइनल स्टेज नहीं है; काँटे को अपनी सम्पूर्ण स्टेज से समाप्त कर देना है- यह है फाइनल स्टेज। (अ.वा.15.4.74 पृ.25 अंत)

3. जो सर्व में सम्पन्न होता है, उसकी आँख व बुद्धि कोई किसी तरफ नहीं डूबती। वह सदा रूहानी नज़र में रहते हैं, अनेक व्यर्थ संकल्पों व अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिक्रों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खज़ाने में सदा रमण करता रहता है। (अ.वा.2.5.74 पृ.38 आदि)

4. सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-2 सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेस्पांड मिले, इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आए हैं। (अ.वा.7.2.75 पृ.50 मध्य)

5. घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। (अ.वा.8.2.75 पृ.55 अंत, 56 आदि)

6. अपने सम्पूर्ण स्टेज की निशानियाँ स्वयं में स्पष्ट नज़र आवेंगी। ..... पहली निशानी- पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्प मात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा। ..... सारी सृष्टि की आसुरी आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। .....सदा

स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे। .....विकर्म का खाता समाप्त हुआ अनुभव होगा। (अ.वा.7.10.75 पृ.154 अंत, 155 आदि, मध्य)

7. निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुःख- सभी में समानता रहे, इसको कहा जाता है- सम्पूर्णता की स्टेज। दुःख में भी सूरत वा मस्तक पर दुःख की लहर बजाए, सुख वा हर्ष की लहर दिखाई दे।.....एक समय एक ज़ोर है, दूसरे समय पर दूसरा ज़ोर है तो भी दूसरी बात है; लेकिन एक ही समय पर दोनों बैलेन्स ठीक रहें, इसको कहा जाता है- सम्पूर्ण। (अ.वा.8.6.72 पृ.297 अंत, 299 आदि)

8. स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर न रह जावेगा तब सम्पूर्ण स्थिति में भी अन्तर न रहेगा। यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जावेगा। (अ.वा.24.1.70 पृ.191 अंत)

9. अभी-2 आवाज़ में, अभी-2 आवाज़ से परे- यह अभ्यास सरल और सहज हो जावेगा तब समझो, सम्पूर्णता आई है।.....सर्व पुरुषार्थ सरल होगा। .....दोनों में सरल अनुभव हो तब समझो, सम्पूर्णता की अवस्था प्राप्त होने वाली है। सम्पूर्ण स्थिति वाले पुरुषार्थ कम करेंगे, सफलता अधिक प्राप्त करेंगे। (अ.वा.2.4.70 पृ.234 मध्य)

10. फाउण्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो ही नहीं सकता। ऐसी स्टेज समीप आ रही है। इसी को ही कहा जाता है- सम्पूर्ण स्टेज के समीप। (अ.वा.2.1.78 पृ.1 अंत)

सर्विस- गीता-पाठशाला, सेंटर

1. बाप को सर्विसएबुल बच्चियाँ बहुत चाहिए। सेण्टर्स खुलते जाते हैं। बच्चों को शौक है, समझते हैं- बहुतों का कल्याण होगा; परन्तु (सेण्टर की) टीचर्स सम्भालने वाली भी अच्छी महारथी चाहिए। टीचर्स भी नम्बरवार हैं। (मु.ता.4.4.89 पृ.2 अंत)

2. घर में भी सर्विस तो कर सकते हैं ना! जो आवेंगे उनको टच करते रहेंगे। ऐसे बहुत हैं, जो अपने पास गीता-पाठशाला खोल बहुतों की सर्विस करते रहते। ऐसे नहीं कि यहाँ आकर बैठना है। (मु.ता.9.2.74 पृ.2 अंत)

3. सेण्टर्स सब शिवबाबा के हैं। तुम्हारा सेण्टर फिर कहाँ से आया? तुम शिवबाबा के हो। विश्वविद्यालय बाप का है न! ईश्वरीय विश्वविद्यालय। मेरा यह सेण्टर है- यह ख्याल आया और मरा। ऐसे मेरा-2 करते कितने गिर पड़ते हैं। (मु.ता.19.9.73 पृ.3 आदि)

4. अगर घर में बच्चा पतित है तो सेण्टर चल न सके। वायुमण्डल बड़ा अच्छा चाहिए। यह तो लाचारी फ्लैट में सेण्टर रखे जाते हैं। वास्तव में सेण्टर अलग किनारे होना चाहिए। (मु.ता.9.5.72 पृ.1 मध्यांत)

5. ल०ना० के मन्दिर में भी जाय तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। जो मन्दिर के बड़े ट्रस्टी हैं, बड़ों से मिलना चाहिए। आजकल माताओं का भी मान कम हो गया है; क्योंकि भीख माँगने वाले फ़क़ीरयानी बहुत निकल पड़ी हैं। (मु.ता.20.11.72 पृ.3 मध्यांत)

6. देह-अभिमान को छोड़ो- यह हमारा सेण्टर है, यह इनका सेण्टर है, यह जिज्ञासु यहाँ क्यों जाते हैं? सब शिवबाबा के सेण्टर्स हैं, कोई कहाँ भी जावे। तुम्हारा थोड़े ही सेण्टर है। तुमको यह क्यों होता है कि फलाना हमारे सेण्टर पर क्यों नहीं आता? कहाँ भी जाए। समझते हैं- यह हमारे सेण्टर पर आवे, यहाँ पैसा देवे, वहाँ क्यों देता है? बस। ..... यह जैसे इण्डायरैक्ट माँगना हुआ- यहाँ देवें, वहाँ न देवें । ऐसे भी समझने वाली हैं। (मु.ता.9.6.71 पृ.3 मध्यांत)

7. गाँवों में जाए सर्विस करो। ऐसे बहुत गाँव हैं जहाँ आपस में मिलकर क्लास करते हैं, बाबा को पत्र लिखते हैं। (मु.ता.24.11.71 पृ.3 मध्यांत)

8. गीता पढ़ने वा सुनने से कब कोई मनुष्य से देवता बन न सके। (मु.ता.26.2.76 पृ.3 आदि)

9. गॉडफादर को स्प्रिचुअल नॉलेजफुल कहा जाता है। तो तुम 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' नाम लिखेंगे, इसमें कोई एतराज़ नहीं उठावेंगे। फिर बोर्ड में भी वह अक्षर हटाकर यह 'स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी' लिख देंगे। ट्राय करके देखो। लिखो- गॉडफादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी। इनका एम-ऑब्जेक्ट यह है। ..... फिर सब सेण्टर्स पर लिखना पड़ेगा- गॉडफादरली स्प्रिचुअल यूनिवर्सिटी। (मु.ता.20.3.74 पृ.4 अंत)

10. ऐसे नहीं, तुम अपना दुकान निकाल बैठो। वह दुकान चल न सके। शिवबाबा के डायरैक्शन बिगर कुछ भी करेंगे तो वह शिवबाबा का तो हुआ नहीं। शिवबाबा के नाम पर तुम पाप कर्म करते हो, पैसा तुम खाते हो। उनका बनता कुछ भी नहीं है, कुछ भी जमा होता नहीं। (मु.ता.15.7.70 पृ.2 अंत)

11. ऐसा कोई आश्रम सारे-का-सारा पलट पड़े, फिर तो सभी की आँख खुल जाए। बहुत समझते भी हैं- जबकि यह महाभारत लड़ाई है, तो ज़रूर भगवान भी होना चाहिए। (मु.ता.4.4.75 पृ.2 आदि)

12. तुम लिख सकते हो- गॉड फादरली यूनिवर्सिटी। बाप बैठ सारी वर्ल्ड के आदि-मध्य-अंत का नॉलेज सुनाते हैं; इसलिए 'ईश्वरीय यूनिवर्सिटी' कहा जाता है। भगवान बैठ सिखलाते हैं। कितना ऊँच-ते-ऊँच पद तुम पाते हो। यह बड़ी भारी पढ़ाई है। बच्चों को युक्ति से समझाना चाहिए। हम गॉड फादरली यूनिवर्सिटी लिखते हैं। (मु.ता.28.7.76 पृ.3 मध्यांत)

13. यह घर का घर भी है और यूनिवर्सिटी भी है। इसको ही 'गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी' कहा जाता है; क्योंकि सारी दुनिया के मनुष्यमात्र की सद्गति होती है। रियल वर्ल्ड यूनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है। मात-पिता के सन्मुख बैठे हो। .....स्प्रिचुअल नॉलेज सिवाय स्प्रिचुअल फादर के और कोई भी मनुष्य दे नहीं सकता। (मु.ता.18.8.76 पृ.1 आदि)

14. मन्दिरों में जाओ, गीता-पाठशालाओं में जाओ। तुम्हारा कनेक्शन है ही गीता से और देवताओं के पुजारियों से। फिर तुम संन्यासियों के पास क्यों जाते हो? यह लोग पिछाड़ी में समझेंगे। (मु.ता.5.10.76 पृ.3 मध्य)

15. एक दिन अख़बार में भी पड़ेगा कि भगवान कहते हैं- मुझे याद करने से ही तुम पतित से पावन बन जावेंगे। जब विनाश नज़दीक होगा तब अख़बारों द्वारा भी यह आवाज़ कानों पर पड़ेगा। (मु.ता.2.3.75 पृ.2 आदि)

16. बाबा कहते हैं- जाकर सेण्टर सम्भालो, सर्विस करो; परन्तु वह भी जो ज्ञानी तू आत्मा होशियार होंगे, वही सम्भाल सकेंगे। ऐसे होशियार को फिर बाबा यहाँ रखते नहीं। (मु.ता.5.2.78 पृ.3 मध्यांत)

17. हर एरिया में सन्देश पहुँचाने की कोशिश करो, जिससे कोई उलाहना न दे कि हमें पता नहीं है। सर्विस करते जाओ तो सब आपे ही ऑफर करेंगे कि यहाँ सेण्टर खोलो। (अ.वा.19.11.79 पृ.34 आदि)

18. कोई-न-कोई प्रोग्राम हर सेण्टर पर चलना चाहिए, जो आने वालों में बल भर जाए। ऐसे समय पर वह भी न्यारे रहें, साक्षी होकर समस्या का सामना करें, उसके लिए याद का बल चाहिए। तो जब तक बाहर की सर्विस का, नए-2 प्लैन्स का फोर्स कम है तो कोई प्वॉइण्ट का ज़ोर होना चाहिए; नहीं तो फ्री होकर फिर व्यर्थ का साइड ज़्यादा हो जावेगा। सर्विस में बिज़ी रहने से व्यर्थ की बातों से बचे रहते हैं। .....इसलिए ब्राह्मणों को खबरदार, होशियार करने के लिए व स्वयं की सेफ्टी के लिए कुछ ऐसी प्वॉइण्ट्स व क्लासेज़ के प्रोग्राम्स बनाओ, जिससे वह यह समझें कि हमें मधुबन लाइट हाउस से विशेष लाइट आ रही है। (अ.वा.3.8.75 पृ.78 आदि)

19. जो पूरी रीत समझा नहीं सकते, वह तो और ही ब्रह्माकुमारियों की आबरू गंवाएँगे। कोई कहते हैं- हम यहाँ नहीं, इस सेण्टर पर रहेंगे, इस पर नहीं। तो भी बाबा समझते हैं- डल हेडेड हैं। बच्चों को तो ऑलराउण्ड जहाँ सर्विस मिले, लग जाना चाहिए। सेण्टर छोड़ कहाँ दूसरी जगह जावेंगे, तो क्या तेरे बिगर ढेरी हो जावेंगे? (मु.ता.20.3.70 पृ.4 मध्य)

20. सर्विस करना भी सीखना है। अच्छी ब्राह्मणियाँ भी चाहिए जो आप-समान बनाएँ। जो आप-समान मैनेजर बनाते हैं, उन्हें अच्छी ब्राह्मणी कहेंगे। वह पद भी ऊँच पाएँगी। (ब्राह्मणी) बेबी बुद्धि भी न हो; नहीं तो उठाकर ले जाएँगे। रावण सम्प्रदाय है ना! ऐसी ब्राह्मणी तैयार करो जो पिछाड़ी में सेण्टर सम्भाल सके। (मु.ता.22.5.85 पृ.3 अंत)

21. इतने वर्ष में तुमने किसको आप-समान न बनाया है तो क्या हजामत करती थी? इतने समय में मैनेजर न बनाया है जो सेण्टर सम्भाले। कैसे-2 मनुष्य आते हैं जिनसे बात करने का भी अक़्ल नहीं है। (मु.ता.3.10.75 पृ.3 अंत)

22. अगर गद्दी सम्भालने लायक कोई को आप-समान न बनाया है तो बाबा समझेंगे- कोई काम के नहीं। सर्विस नहीं की। बाबा को लिखती हैं- सर्विस छोड़ कैसे जावें? अरे, बाबा हुक्म करते हैं- फलानी जगह पर प्रदर्शनी है, सर्विस पर जाओ। अगर गद्दी लायक किसको न बनाया है तो गोया हज्जाम हो। बाबा ने हुक्म किया, झट भागना चाहिए। महारथी ब्राह्मणी उनको कहा जाता है। (मु.ता.3.10.75 पृ.3 मध्यांत)

23. बच्चे जो सर्विस पर उपस्थित हैं, जो अच्छे सर्विसेबुल हैं, उन्हों को भी दिल में रहता है- हम फलाने सेण्टर को जाकर उठावें। ठण्डा पड़ गया है, उनको जगावें; क्योंकि माया ऐसी है जो घड़ी-2 सुलाय देती है। (मु.ता.13.12.75 पृ.2 मध्य)

24. जितना तुम सेण्टर्स का जास्ती घेराव डालेंगे तो बहुत आकर समझेंगे। (मु.ता.25.1.84 पृ.3 मध्यादि)

25. जो सेण्टर खोलते हैं, सर्विस करते हैं, उनकी भी कमाई होती है, उनको भी बहुत फायदा मिलता है, उनको भी उज़ूरा मिल जाता है। कोई 3-4 सेण्टर भी खोलते हैं। दिल में रहता है- इसने सेण्टर्स खोले हैं। बाबा भी सेण्टर्स खोलते हैं ना! तो जो करते हैं, उनका हिस्सा तो आता है ना! मिलकर माया के दुःख का छप्पर उठाते हैं। तो उसमें सब कन्धा देते हैं तो सबको उज़ूरा मिलता है। (मु.ता.25.1.84 पृ.2 आदि)

26. हरेक को अपनी सर्विस होते हुए भी यज्ञ की ज़िम्मेवारी भी अपने सेण्टर की ज़िम्मेवारी समान ही समझना है।.....अभी तो आप लोगों को बेहद में अपना सुख देना है, तब सारी विश्व आपको सुखदाता मानेगी। (अ.वा.26.3.70 पृ.233 मध्य)

27. दिन-प्रतिदिन सेण्टर्स भी खुलते जाते हैं। कोई-न-कोई निकल आवेंगे। कहेंगे, फलाने शहर में आपकी ब्रांच नहीं है। बोलो, कोई प्रबन्ध करे मकान आदि का, निमन्त्रण दे, तो हम आकर सर्विस कर सकते हैं। सिर्फ मकान का प्रबन्ध कोई करे। बाबा तो कहते हैं- म्यूज़ियम ही खोलना है। एक/दो को देख आपे ही आते जावेंगे। (मु.ता.4.9.75 पृ.3 अंत)

सर्विस-डिससर्विस

1. बाबा के पास सच्चा समाचार देना चाहिए। बहुत हैं जो झूठ बोलते हैं, सर्विस बदली डिससर्विस कर लेते हैं। उन्हों की क्या गति होगी? दास-दासियाँ जाकर बनेंगे। या तो अगर टूट पड़े तो चाण्डाल का जन्म जाय लेंगे। (मु.ता.7.8.72 पृ.4 अंत)

2. अच्छे-2 बच्चे बड़ा आराम से रहते हैं, अन्दर सोये रहते हैं, बाहर में कोई पूछे- फलानी कहाँ है, तो कहेंगे- है नहीं; परन्तु अन्दर सोये पड़े हैं। क्या-2 होता रहता है।....कितनी डिससर्विस कर लेते हैं। (मु.ता.5.11.74 पृ.3 आदि)

3. ऐसे नहीं किसको कहना है- तुम फलाने पास न जाना, यहाँ आना। यह भी अपनी बरबादी करते हैं। हरेक की मर्जी, जहाँ चाहे वहाँ जाए। जहाँ देखो अच्छा समझाते हैं वहाँ जाओ। हैं सभी बाबा के घर। मतभेद में आकर लड़ेंगे तो भी अपनी ही बरबादी करेंगे। (मु.ता.15.7.72 पृ.4 अंत)

4. नए-2 बच्चे, जिनको पता ही नहीं, उनको बैठ ग्लानि की बातें सुनाते। ऐसी आदतें बहुतों में होती हैं। एक/दो की बातें सुनाते हैं। ऐसे अक्सर करके गोप बहुत होते हैं। फिमेल्स इतनी नहीं जितने गोप हैं। अक्सर करके तेज़ मिजाज, अहंकार, क्रोध गोपों में बहुत होता है। समझते हैं- हम सर्विस करते हैं; परन्तु वह डिससर्विस करते हैं। बाप समझाते रहते हैं, बच्चे सुधरते भी रहते हैं, फिर भी पहले की भूलचूक कोई की वर्णन करना, ग्लानि करना, बहुत डिससर्विस करते हैं- अपनी भी तो बाप की भी। डिससर्विस करने से अपना ही नुकसान बहुत करते हैं। (मु.ता.1.1.71 पृ.4 मध्यांत)

5. गायन है- यज्ञ में विघ्न पड़े, सो तो पड़ते रहते हैं। कल्प के बाद भी पड़ते रहेंगे। तुम अब पक्के हो गए हो। यह स्थापना-विनाश का कोई छोटा काम नहीं है। विघ्न किसमें पड़ते हैं? बाप कहते हैं- काम महाशत्रु है। (मु.ता.15.1.84 पृ.1 अंत)

6. कर्मों का हिसाब-किताब, बीमारी आदि ज्यादा आए तो इसमें डरना नहीं है। यह पिछाड़ी के हैं, फिर होगी नहीं। अभी सब उथल खाएँगी। बूढ़ों को भी माया जवान बना देगी। (मु.ता.30.4.84 पृ.3 अंत)

7. बाबा मना करते हैं- बच्चे, कभी भी संसारी झरमुई-झगमुई की बातें नहीं सुनो। कई तो बहुत खुशी से ऐसी बातें सुनते और सुनाते हैं; बाप के महावाक्य भूल जाते हैं। वास्तव में जो अच्छे बच्चे हैं, वह अपनी सर्विस की ड्यूटी बजाकर फिर अपनी मस्ती में रहते हैं। (मु.ता.13.4.89 पृ.2 अंत)

8. रूठकर सर्विस में धोखा न देना चाहिए। यह है ईश्वरीय सर्विस। माया के तूफ़ान तो बहुत आवेंगे; परन्तु बाप की ईश्वरीय सर्विस में धोखा न देना है। बाप सर्विस अर्थ डायरैक्शन तो देते रहते हैं। (मु.ता.4.9.75 पृ.2 अंत)

9. बच्चों आदि को ले आना भी बंद कर देना होगा। इतने बच्चों को कहाँ बैठ सम्भालेंगे? बच्चों को छुट्टियाँ मिलीं तो समझते हैं- और कहाँ जावें, चलो, बाबा पास जाते हैं मधुबन में। यह तो जैसे धर्मशाला हो जाए। फिर यूनिवर्सिटी कैसे हुई? बाबा जाँच कर रहे हैं, फिर कब ऑर्डर कर देंगे- बच्चे कोई भी न ले आए। (मु.ता.4.5.85 पृ.3 मध्य)

10. तुम बच्चों को सर्विस तो करनी है ना! सर्विस में कब विघ्न न पड़ना चाहिए। सर्विस में कमज़ोरी न दिखानी है। शिवबाबा की सर्विस है ना! उनमें कब ज़रा भी ढिलाई (कमी) नहीं करना चाहिए; नहीं तो अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। बाप के मददगार बने हो तो पूरी मदद देनी है। बाप की सर्विस में ज़रा भी धोखा न देना है। पैगाम सबको पहुँचाना ही है। (मु.ता.4.9.75 पृ.2 मध्यादि)

सर्वसंबंध बाप से

1. 'एक बाप, दूसरा न कोई'- इसी स्मृति में और समर्थी में रहना, यह मूल परहेज़ निरन्तर नहीं करते हैं, और ही कहीं-न-कहीं अपने को यह कहकर धोखे में रखते हैं कि मैं तो हूँ ही शिवबाबा का, और मेरा है ही कौन? लेकिन प्रैक्टिकल में ऐसा स्मृति-स्वरूप हो, जो संकल्प में भी एक बाप के सिवाय दूसरा कोई व्यक्ति व वैभव, सम्बन्ध व सम्पर्क व कोई साधन स्मृति में न आवे। (अ.वा.20.10.75 पृ.210 मध्य)

2. जो सदा साथ का अनुभव करेंगे, वे कभी किसी देहधारी के साथ की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे, कभी भी किसी सेवा में देहधारी का आधार नहीं लेंगे। मर्यादा प्रमाण, संगठन प्रमाण सहयोग लेना अलग बात है। बाकी किसी परिस्थिति में देहधारी की याद आए कि यह मुझे परिस्थिति से पार करेंगे, राय देंगे या सहारा देंगे- इससे सिद्ध है कि सर्वशक्तिवान का सहारा सदा साथ नहीं रहता। (अ.वा.23.1.76 पृ.21 अंत)

3. जब विश्व का मालिक अपना हो गया तो विश्व अपनी हो गई ना! जैसे बीज अपने हाथ में है तो वृक्ष तो है ही ना! जिसको ढूँढ़ते थे, उसको पा लिया। घर बैठे भगवान मिला, तो कितनी खुशी होनी चाहिए। भगवान ने मुझे अपना बनाया, इसी खुशी में रहो तो कहीं भी आँख नहीं डूबेगी। (अ.वा.13.1.78 पृ.27 अंत)

4. जब एक तरफ सम्बन्ध का सुख प्राप्त हो सकता है तो भटकने की क्या ज़रूरत है? ठिकाने लग जाना चाहिए ना! एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना, यह है ठिकाना। सदा अपना अंतिम फरिश्ता स्वरूप स्मृति में रखो, तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति बन जाएगी। (अ.वा.1.1.79 पृ.168 अंत)

5. सर्व सम्बन्ध निभाने वाले परम आत्मा को अपना बना लिया। जब चाहो, जैसा सम्बंध चाहो, वैसा ही सम्बन्ध का रस एक द्वारा सदा निभा सकते हो और सम्बन्ध भी ऐसे जो देने वाले होंगे, लेने वाले नहीं। कभी धोखा भी नहीं देने वाले, सदा प्रीति की रीति निभाने वाले- ऐसे अमर सम्बन्ध अनुभव करते हो ना? (अ.वा.23.1.79 पृ.236 अंत, 237 आदि)

6. सदा सुहागिन का गायन पटरानियों के रूप में है। फिर पटरानियों में भी नम्बर हैं- कोई सदा साथ रहती है और कोई कभी-2। ..... तो पटरानियाँ तो सब बनती हैं; लेकिन उनमें भी नं. हैं। प्राप्ति में भी अन्तर है और पूजन में भी अन्तर है। राधे और गोपियों में भी अंतर है। ..... राधे की प्राप्ति अपनी, गोपियों की अपनी। कोई विशेषता राधे के पार्ट में है और कोई विशेषता पटरानियों वा गोपियों के पार्ट में है। इसका भी गुह्य रहस्य है। मिलन मेला मनाने वाले कौन? सर्व सुखों का अनुभव परमात्म-पार्ट से है- यह भी सबसे विशेष भाग्य है। इसका भी आत्माओं के विशेष पार्ट से सम्बन्ध है। (अ.वा.23.1.79 पृ.238 आदि)

7. सर्व सम्बंध बाप के साथ जोड़ना अर्थात् सर्व बंधनों से मुक्त होना। अनेक जन्मों के अनेक प्रकार के बन्धन को समाप्त करने का सहज साधन बाप से सर्व सम्बंध। अगर किसी भी प्रकार का बन्धन अनुभव करते हो तो उसका कारण है- सम्बन्ध नहीं। (अ.वा.30.1.79 पृ.249 मध्य)

8. अनेक बन्धनों से मुक्त एक बाप के सम्बंध में समझो तो सदा एवर रेडी रहेंगे। ..... यथार्थ सेवा का कभी बन्धन होता ही नहीं।.....याद रखो, मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है, तो निर्बन्धन रहेंगे। ट्रस्टी हूँ, बन्धनमुक्त हूँ, ऐसी प्रैक्टिस करो। (अ.वा.26.11.79 पृ.51 अंत, 52 आदि)

9. बाप कैसे भी समय पर सम्बन्ध निभाने के लिए बँधे हुए हैं। जब बाप साथ दे रहे हैं तो लेने वाले क्यों नहीं लेते? सहयोग लेना ही योग कैसे होता है, यह अनुभव करो। माता का सम्बन्ध क्या है, बाप का सम्बन्ध क्या है, सखा और बन्धु का सम्बन्ध क्या है, सदा साजन के संग का अनुभव क्या है- यह अलग-2 सम्बन्ध का रहस्य अनुभव में आया है? अगर एक भी सम्बन्ध की

अनुभूति से वंचित रह गए, तो सारा कल्प ही वंचित रह जाएँगे। (अ.वा.5.12.79 पृ.84 अंत, 85 आदि)

10. प्यार पाने का साधन है- न्यारा बनो। जब तक देह से वा देह के सम्बन्धियों से न्यारे नहीं बने हो तब तक प्यार नहीं मिलता। इसलिए कहाँ भी लगाव न हो। लगाव हो तो एक सर्व सम्बन्धी बाप से। एक बाप, दूसरा न कोई... यह सिर्फ कहना नहीं; लेकिन अनुभव करना है। (अ.वा.17.3.82 पृ.300 आदि)

11. सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं, बाप सदा सम्मुख में हाज़िर-नाज़िर हैं, ऐसा अनुभव होता है? तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से सुनूँ... इसका अनुभव होता है ना? बाप ही सच्चा मित्र बन गया तो औरों को मित्र बनाने की ज़रूरत ही नहीं। जो सम्बन्ध चाहिए उस सम्बन्ध से बापदादा सदा सम्मुख में हाज़िर-नाज़िर हैं। तो शिक्षक अर्थात सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से अनुभव करने वाली। (अ.वा.27.3.82 पृ.324 मध्य)

12. सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएँ एक से लेने वाला ही एकान्त प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएँ प्राप्त हो सकती हैं तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या? लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते, वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते, तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। (अ.वा.25.10.69 पृ.131 अंत)

13. जब बाप मिल गया तो सर्व सम्बन्ध एक बाप से सदा हैं ही। पहले कहने मात्र थे, अभी प्रैक्टिकल हैं। भक्तिमार्ग में भी गायन ज़रूर करते थे कि सर्व सम्बन्ध बाप से हैं; लेकिन अब प्रैक्टिकल सर्व सम्बन्धों का रस बाप द्वारा मिलता है। ऐसे अनुभव करने वाली हो ना! जब सर्व रस एक बाप द्वारा मिलता है तो और कहाँ भी संकल्प जा नहीं सकता। (अ.वा.19.12.84 पृ.77 अंत)

14. सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे हैं, फिर शक्ति न आए- यह कैसे हो सकता है? ज़रूर बुद्धि की तार में कमी है। तार को जोड़ने लिए जो युक्तियाँ मिलतीं, उसको अभ्यास में लाओ। तोड़ने बिगर जोड़ लेते हैं, तो पूरा फिर जुटता नहीं; थोड़े समय के लिए जुटता, फिर टूट जाता है। इसलिए अनेक तरफ से तोड़कर एक तरफ जोड़ना है। इसके लिए संग भी चाहिए और अटेन्शन भी चाहिए। (अ.वा.26.1.70 पृ.205 अंत, 206 आदि)

15. सर्वशक्तिवान बाप को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया, यही मास्टर सर्वशक्तिवान की शक्ति है। तो सर्वशक्तिवान को सर्व सम्बन्ध से अपना बनाया है। जब इतना बड़े-ते-बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण है, फिर क्यों नहीं अपने को जानते और मानते हो? ..... जब सर्व सम्बन्ध एक के साथ जुट गए, तो और बात रही ही क्या? जब कुछ रहता ही नहीं तो बुद्धि जाएगी कहाँ? अगर बुद्धि इधर-उधर

जाती है तो सिद्ध होता है कि सर्व सम्बन्ध एक के साथ नहीं जोड़े हैं। जोड़ने की निशानी है- अनेकों से टूट जाना। (अ.वा.30.11.70 पृ.323 अंत)

16. आत्मा-परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं; लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव करना- यह नवीनता है, जिसको कहा जाता है- रियल्टी का अनुभव करना। (अ.वा.18.11.81 पृ.154 आदि)

17. जब बाप सर्व सम्बन्धों से अपना बन गया तो सदा बाप का साथ चाहिए ना! कितनी भी बड़ी परिस्थिति हो, पहाड़ हो; लेकिन आप बाप के साथ-2 ऊपर उड़ते रहो तो कभी भी रुकेंगे नहीं। ..... कभी भी झूले से नीचे नहीं आओ; नहीं तो मैले हो जाएँगे। मैले फिर बाप से कैसे मिल सकते? बहुत काल अलग रहे, अभी मेला हुआ, तो मनाने वाले मैले कैसे होंगे?..... अगर बार-2 मैले होंगे तो स्वच्छ होने में कितना टाइम वेस्ट होगा।..... स्वचिन्तन करो, परचिन्तन न सुनो, न करो, यही मैला करता है। अभी से क्वेश्चन मार्क समाप्त कर बिन्दी लगा दो। (अ.वा.29.3.82 पृ.330 आदि)

18. जब कोई समस्या जीवन में आएगी, दिल में कोई उलझन की बात होगी, तो न चाहते भी अल्पकाल के सहारे देने वाले वा अल्पकाल की प्राप्ति कराने वाले, लगाव वाली आत्मा ही याद आएगी, बाप याद नहीं आएगा। फिर ऐसे लगाव लगाने वाली आत्माएँ अपने-आप को बचाने के लिए वा अपने को राइट सिद्ध करने के लिए क्या सोचती और बोलती हैं कि बाप तो निराकार और आकार है ना! साकार में कुछ चाहिए ज़रूर; लेकिन यह भूल जाती हैं, अगर एक बाप से सर्व प्राप्ति का सम्बन्ध, सर्व सम्बन्धों का अनुभव और सदा सहारे दाता का अटल विश्वास है, निश्चय है, तो बापदादा निराकार, आकार होते भी स्नेह के बन्धन में बाँधे हुए हैं, साकार रूप की भासना देते हैं। अनुभव न होने का कारण? नॉलेज द्वारा यह समझा है कि सर्व सम्बन्ध एक बाप से रखने हैं; लेकिन जीवन में सर्व सम्बन्धों को नहीं लाया है। इसलिए साक्षात् सर्व सम्बन्धों की अनुभूति नहीं कर पाते हैं। ..... किसी भी आत्मा द्वारा अल्पकाल का सहारा लेते हो वा प्राप्ति का आधार बनाते हो, उसी आत्मा के तरफ बुद्धि का झुकाव होने के कारण कर्मातीत बनने के बजाय कर्मों का बन्धन बँध जाता है। एक ने दिया, दूसरे ने लिया- तो आत्मा का आत्मा से लेन-देन हुआ। तो लेन-देन का हिसाब बना वा समाप्त हुआ? ..... रिज़ल्ट क्या होगी? कर्मबन्धनी आत्मा बाप से सम्बन्ध का अनुभव कर नहीं सकेगी।..... वह याद के सब्जेक्ट में सदा कमज़ोर होगी, नॉलेज सुनने और सुनाने में भल होशियार, सेन्सिबुल होगी; लेकिन इसेन्सफुल नहीं होगी। .....सेवा की वृद्धि कर लेंगे; लेकिन विधिपूर्वक वृद्धि नहीं होगी। इसलिए ऐसी आत्माएँ कर्मबन्धन के बोझ कारण स्पीकर बन सकती हैं; लेकिन स्पीड में नहीं चल सकतीं। (अ.वा.8.4.82 पृ.356 आदि, 357)

19. इन (शिव+बाबा) को भाई कहने का रहता नहीं। टेव पड़ गई है। बाबा कहने से तुम बच्चे जानते हो, मैं तुम्हारा बाप हूँ। (मु.ता.17.5.77 पृ.2 अंत)

20. इस समय तुम्हारा सम्बन्ध सबसे छोटा है। सिर्फ एक बाप ही सर्व सम्बन्धी है। दूसरा कोई से भी तुम्हारा बुद्धियोग नहीं है सिवाय एक के। ..... सबका योग एक के साथ। तुम्हारा आपस में भी कोई सम्बन्ध नहीं। बहन-भाई का सम्बन्ध भी गिरा देता है। सम्बन्ध एक से होना चाहिए। यह है नई बात। (मु.ता.20.4.84 पृ.1 अंत, 2 आदि)

सेवा दृष्टि से

1. एक सेकेण्ड भी कोई आपके सामने आवे तो भी दृष्टि से ऐसा अनुभव करे कि मैंने कुछ पाया। तब कहेंगे- देने वाली देवी। अब चाहिए यह सर्विस, तब विश्व का कल्याण होगा। (अ.वा. 23.1.76 पृ.20 मध्य)

2. दृष्टि की भाषा फरिश्तेपन की निशानी है। ..... अगर मीठी दृष्टि द्वारा समझाने का प्रयत्न करते हैं तो कितना सहज हो जाता है! समय अनुसार यह दृष्टि द्वारा परिवर्तन होना और परिवर्तन कराना- यही काम में आएगा। ..... लेकिन मीठी दृष्टि और शुभ वृत्ति- यह एक मिनट में एक घण्टा समझाने का कार्य कर सकते हैं। (अ.वा. 30.11.92 पृ.95 मध्य)

3. दृष्टि द्वारा शान्ति की शक्ति, प्रेम की शक्ति, सुख वा आनन्द की शक्ति सब प्राप्त होती है। (अ.वा.23.11.89 पृ.40 मध्य)

सेवा का फल

1. यह ईश्वरीय ज्ञान देना ही ईश्वरीय सेवा है। सेवा का सदा ही मेवा मिलता है। कहावत है ना- 'करो सेवा तो मिले मेवा'। तो ईश्वरीय सेवा करने से अतीन्द्रिय सुख का मेवा मिलता है, शक्तियों का मेवा मिलता है। (अ.वा.17.10.87 पृ.92 आदि)

2. सर्विस करने से ही देह-अभिमान कम होगा। (मु.ता.18.8.70 पृ.1 मध्यांत)

3. सेवा के सिवाय अपने समय को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। सेवा का भी खाता जमा होता है। सच्ची दिल से सेवा करने वाले अपना खाता बहुत अच्छी तरह से जमा कर रहे हैं।..... ऐसे कभी नहीं समझना, हमको तो कोई देखता नहीं, समझता नहीं। बापदादा के पास तो जो जैसा है, जितना करता है, जिस स्टेज से करता है, सब जमा होता है। फाइल नहीं है; लेकिन फाइनल है। (अ.वा.1.3.86 पृ.224 मध्य)

4. बाबा, मैं आपका हूँ, आप जिस सर्विस में चाहें, लगा दें। फिर रेस्पॉन्सिबुल बाबा होगा। एसलम में दाखिल हुए तो बाबा सब बन्धनों से मुक्त कर देगा। (मु.ता.10.3.87 पृ.2 अंत)

5. सर्विस करने वाले कब भूख नहीं मर सकते हैं। तो सर्विस का बच्चों को शौक रखना चाहिए। (मु.ता.1.6.85 पृ.1 अंत)

6. सेवा भी वास्तव में उन्नति का साधन है। अगर सेवा को सेवा की रीति से करें तो सेवा लिफ्ट देती है आगे बढ़ाने की। सिर्फ़ प्लेन बुद्धि बनकर प्लैन बनाएँ, ज़रा भी कुछ यहाँ-वहाँ का मिक्स न हो। (अ.वा.3.2.88 पृ.250 मध्य)

7. जब तक किसको आप-समान नहीं बनाया है तब तक खुशी का पारा नहीं चढ़ेगा। .....जिसके पास धन हो और दान न करे तो उनको मनहूस कहा जाता है। यहाँ फिर ऐसे नहीं हैं। जिनके पास है वह तो देते रहेंगे; नहीं तो समझेंगे- इनके पास धन है नहीं। (मु.ता.14.3.87 पृ.3 अंत)

8. कोई भी सेवा के पुण्य का फल स्वतः ही प्राप्त होता है। पुण्य का फल जमा भी होता है और फिर अभी भी मिलता है। (अ.वा.18.1.88 पृ.222 अंत)

9. उस गवर्मेण्ट की 8 घण्टा सर्विस करते हो, उससे क्या मिलता है? हज़ार दो, पाँच हज़ार... इस गवर्मेण्ट की सर्विस करने से तुम पदमापदमपति बनते हो। तो कितना दिल से सेवा करनी चाहिए। (मु.ता.25.3.89 पृ.3 अंत)

10. यज्ञ सर्विस वा जो बापदादा का कार्य है, उसमें जो नज़दीक होगा वही वहाँ खेलपाल आदि में नज़दीक होंगे। यज्ञ की ज़िम्मेवारी वा बापदादा के कार्य की जिम्मेवारी के नज़दीक जितना-2 होंगे, उतना वहाँ भी नज़दीक होंगे। (अ.वा. 9.6.69 पृ.74 मध्य)

11. जितनी जो सेवा करता है उतना सेवा का फल समीप सम्बन्ध में आता है। यहाँ के सेवाधारी वहाँ के राज्य फैमिली(परिवार) के अधिकारी बनेंगे। यहाँ जितनी हार्ड(सख़्त) सेवा करते, उतना वहाँ आराम से सिंहासन पर बैठेंगे और यहाँ जो आराम करते हैं, वह वहाँ काम करेंगे। हिसाब है ना! एक-2 सेकेण्ड का, एक-2 काम का हिसाब-किताब बाप के पास है; इसलिए एक-2 सेकेण्ड का हिसाब कर चुक्तू भी करता है। गिनती करके हिसाब देता है, ऐसे नहीं देता। (अ.वा.21.10.87 पृ.99 मध्य)

12. शुभ भावना का फल प्राप्त नहीं हो- यह हो ही नहीं सकता। सेवाधारियों के शुभ भावना, शुभ कामना की धरणी सहज फल देने के निमित्त बनेगी। (अ.वा.2.11.87 पृ.117 मध्य)

13. सेवा का भी प्रत्यक्षफल मिलता है। चाहे कर्मणा भी करो, कर्मणा की भी खुशी होती है। मानो सफ़ाई करते हो; लेकिन जब स्थान सफ़ाई से चमकता है तो सच्चे दिल से करने कारण स्थान को चमकता हुआ देख करके खुशी होती है ना! (अ.वा.18.1.88 पृ.222 मध्य)

14. बच्चे तो सब शिवबाबा के हैं, 500 करोड़ हैं। इतने यह सब बाप के बच्चे ठहरे ना; परन्तु मददगार सब नहीं होते हैं। इस समय तुम जितनी मदद करते हो उतना ऊँच बनते हो। (मु.ता.24.9.75 पृ.2 मध्य)

15. सेवा की वृद्धि हो रही है। जितना वृद्धि करते रहेंगे उतना महान पुण्य आत्मा बनने का फल सर्व की आशीर्वाद प्राप्त होती रहेगी। ..... पुण्य आत्मा बनना भी ज़रूरी है। (अ.वा.27.3.86 पृ.286 अंत)

16. बेपरवाह निर्भय हो करके सेवा में लगन से आगे बढ़ते हैं तो पदम गुणा मदद भी मिलती है। ..... वह जमा का खाता समय पर खींचेगा ज़रूर। (अ.वा.27.2.86 पृ.239 आदि)

17. अभी संस्कार को मारने में समय नहीं लगाओ; लेकिन सेवा के फल से, फल की शक्ति से (संस्कार) स्वतः ही मर जाएगा। (अ.वा.18.2.86 पृ.194 मध्य)

18. जितनी बड़े-ते-बड़ी सेवा के निमित्त बनते हो, उतना ही सेवा का प्रत्यक्षफल बहुत बढ़िया और बड़ा मिलता है। .....खुशी की शक्ति बढ़ जाती है।.....रात है वा दिन है- यह पता नहीं पड़ता है ना!.....सेवा नहीं; लेकिन उत्सव मना रहे हो; इसलिए सेवा उत्साह दिलाती है और उत्साह अनुभव कराती है। (अ.वा.16.2.88 पृ.254 मध्य)

19. सर्विसएबुल की तो बाबा भी महिमा करते रहेंगे। .....सर्विस करेंगे तो बाप भी उनको याद करेंगे। सर्विस ही नहीं करते तो बाप याद क्यों करे? बाप याद उन बच्चों को करेंगे जो प्रीत बुद्धि होंगे। (मु.ता.13.4.85 पृ.3 अंत)

20. बाप बैठ समझाते हैं- मेरी सर्विस करने वाले बच्चे ही मुझे प्रिय लगते हैं। बहुतों को सुखदायी बनाते हैं, ऐसे बच्चों को याद करता रहता हूँ। (मु.ता.12.4.89 पृ.3 अंत)

21. बाप कहते हैं- जो मेरे अर्थ (भूख-प्यास) सब-कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं, वह बहुत प्यारे लगते हैं। दिल पर भी चढ़ते हैं। (मु.ता.14.5.94 पृ.1 मध्य)

22. सर्विसएबुल बीमार होगा तो तरस पड़ेगा। रात को जागकर भी उनकी आत्मा को याद करेंगे; क्योंकि उनको पावर की दरकार है। याद करते हैं तो उनको रिटर्न में याद मिलती है। बाप का लव बच्चों पर जास्ती है। फिर उनको भी याद पहुँचती है। (मु.ता.2.3.89 पृ.2 अंत)

23. जो बच्चे जास्ती सर्विस करते हैं वो ज़रूर सभी को प्रिय लगेंगे। (मु.ता.14.12.76 पृ.3 आदि)

24. सेवा नहीं तो खुशी नहीं, इसलिए सेवा में तत्पर रहो। रोज़ किसी-न-किसी को दान ज़रूर करो। दान करने के बिना नींद ही नहीं आनी चाहिए। (अ.वा.27.3.82 पृ.325 अंत)

25. बापदादा को सबसे अच्छी बात यही लगती है कि सदा ही सेवा में अथक बन आगे बढ़ रहे हैं और यही सेवा के सफलता की विशेषता है कि कभी भी दिलशिकस्त नहीं होना। (अ.वा.13.3.86 पृ.259 मध्यादि)

26. सच्ची सेवा सदा बेहद की स्थिति का, बेहद की खुशी का अनुभव कराती है। अगर ऐसी अनुभूति नहीं है तो वह मिक्स सेवा है। .....सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे को हरा-भरा करना। सेवा अर्थात् फूलों के बगीचे का अनुभव करना, न कि काँटों के जंगल में फँसना। उलझन, अप्राप्ति, मन की मूँझ और मौज, अभी-2 मूँझ- यह हैं काँटें। (अ.वा.13.1.86 पृ.150 आदि)

27. बापदादा सहयोगी बच्चों को सदा ही साथ देखते हैं। सहयोगी बच्चों को सदा ही सहयोग प्राप्त होता है। (अ.वा.18.1.84 पृ.121 आदि)

28. जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही। जैसे छोटे बच्चे को सदा कहते हैं- आगे चलो, बड़े पीछे रहते हैं। छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्ष फल मिलता ही रहता है। (अ.वा.26.2.84 पृ.174 अंत, 175 आदि)

29. मुझे जो जितना याद (और सेवा) करते हैं उनको मैं भी (उतनी सेवा &) याद करता हूँ। जितना जो मेरी सर्विस करते हैं उतना मैं उनकी सर्विस करता हूँ, प्यार करता हूँ। अनन्य बच्चे सर्विस करके आते हैं, उनको मैं आफरीन देता हूँ- तुम बहुतों का कल्याण करती हो। यह ही आफरीन है, शाबाश, प्यार है। (मु.ता.2.7.74 पृ.1 अंत)

30. सर्विसएबुल बच्चे ही बाबा को याद करते हैं। जो बहुतों को आप-समान बनाते हैं, उनको ही अतीन्द्रिय सुख रहता है, कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि याद ही नहीं पड़ते। आप मुये, मर गई दुनियाँ। बाबा को फॉलो करने वाले कब दुनियावी बातें पूछेंगे भी नहीं। बाबा समझ जाते हैं- उनकी लागत है। (मु.ता.20.12.75 पृ.3 अंत)

31. प्राइज भी उन्हों को ही मिलती है जो काम करके दिखाते हैं। (मु.ता.15.3.89 पृ.2 आदि)

32. अगर सच्चे (ईश्वरीय) सेवाधारी हैं तो यहाँ भी रिगार्ड मिलने के योग्य बन जाते। अगर मिक्स हैं तो आज दीदी-दादी कहेंगे, कल सुना भी देंगे। (अ.वा.3.4.81 पृ.125 अंत)

33. तन-(मन-धन) सेवा में लगाओ और 21 जन्मों के लिए सम्पूर्ण निरोगी तन-(मन-धन) प्राप्त करो। (अ.वा.18.2.85 पृ.169 मध्यांत)

34. रहना भी अपने घर में है। सब यहाँ तो नहीं बैठ जाएँगे। हाँ, पिछाड़ी में फिर आकर सभी वह रहेंगे, जो बाप की सर्विस में तत्पर रहते हैं। (मु.ता.17.4.87 पृ.3 मध्य)

35. कुमारियाँ निर्बन्धन हैं किसलिए? सेवा के लिए। ..... जितना-2 अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जाएँगी, तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। (अ.वा.13.2.78 पृ.49 अंत)

36. सेवा बाप के साथ का अनुभव कराती है। सेवा पर जाना माना सदा बाप के साथ रहना। चाहे साकार रूप में रहें, चाहे आकार रूप में; लेकिन सेवाधारी बच्चों के साथ बाप सदा साथ है ही है। (अ.वा.15.3.85 पृ.237 अंत)

37. मंसा नहीं तो वाचा, कर्मणा, कोई-न-कोई सर्विस में लग जाना चाहिए, तो अजूरा मिलेगा। (मु.ता.19.9.73 पृ.3 मध्य)

सर्विस कैसे, कैसी और किसकी

1. अभी तक सिर्फ आवाज़ फैलने तक रिज़ल्ट है, आवाज़ फैलाने में पास हो; लेकिन आत्माओं को बाप के समीप लाने का आवाहन अभी करना है। आवाज़ फैला है; लेकिन आत्माओं का आवाहन करना और बाप के समीप लाना- यह पुरुषार्थ अभी रहा हुआ है। (अ.वा.22.10.70 पृ.310 आदि)

2. बड़े-2 आदमियों को बड़ी युक्ति से पकड़ना चाहिए। उन्हों से ही आवाज़ निकलेगा और वाह-2 होगी। फिर कोई कुछ कर नहीं सकेंगे। (मु.ता.9.12.71 पृ.3 अंत)

3. अपने शरीर का भी ख़्याल न कर सारा दिन सर्विस में रहना, उसको कहा जाता है- हड्डी सर्विस। एक है जिस्मानी हड्डी सर्विस, दूसरी है रूहानी हड्डी सर्विस। (मु.ता.9.10.71 पृ.2 अंत)

4. बाप से वर्सा लेना है तो मंसा, वाचा, कर्मणा सर्विस करनी है। इस सर्विस में ही यह अन्तिम जन्म व्यतीत करना है। अगर और दुनियावी बातों में लग गए तो फिर यह सर्विस कब करेंगे? कल-2 करते मर जावेंगे। (मु.ता.30.4.71 पृ.3 अंत)

5. बुढ़ियों को समझाकर ऐसा तैयार करो कि जो बाबा बोले कि आठ बुढ़ियों को भेजो, तो वो झट आ जावें। (मु.ता.6.9.69 पृ.3 अंत)

6. जैसे कोई डूबता है तो उनको बचाना होता है। हमको सिखलाने वाला डूब पड़ा है, माया ने पकड़ लिया है ड्रामा प्लैन अनुसार। खुश होकर उनका साथी न बनना चाहिए, बचाने की कोशिश करनी चाहिए। कितनी भी डिससर्विस कर माया के वश हो जाए, फिर तुम रहमदिल बाप के बच्चे हो तो रहमदिल बन माया से बचा लेना चाहिए। (मु.ता.28.12.70 पृ.4 आदि)

7. जैसे बाप ओबीडियेण्ट सर्वेण्ट बन सेवा पर उपस्थित हैं, ऐसे ही हरेक बाप के साथी व सहयोगी बच्चों को भी बाप के समान ओबीडियेण्ट सर्वेण्ट बनना है। (अ.वा.6.9.75 पृ.97 अंत)

8. बाप तो कहते- छोटी-2 बच्चियाँ बैठ समझानी देवें चित्र पर, और भी सेन्स से समझावें, सिर्फ तोते मिसल नहीं। (मु.ता.6.4.77 पृ.1 मध्य)

9. अगर स्वयं निर्विघ्न बने हो तो बनने वालों का कर्तव्य क्या है?.....उनका कर्तव्य है दूसरों को बनाना। तो बना रहे हो न? तो क्या पहले चैरिटी बिगिन्स एट होम है अर्थात् अपने साथियों को; वे साथी कौन-से हैं? आपके जो ब्राह्मण परिवार के साथी हैं, तो उन अपने साथियों को आप-समान बनाने के बाद फिर बाप-समान बनाना है। (अ.वा.23.9.73 पृ.157 आदि)

10. इस वर्ष ऐसा कोई ग्रुप बनाओ, जिस ग्रुप की विशेषताओं को प्रैक्टिकल में देखकर दूसरों को प्रेरणा मिले और वायब्रेशन फैले। जैसे गवर्मेण्ट भी कहती है कि आप कोई ऐसा स्थान लेकर एक गाँव को उठा करके ऐसा सैम्पल दिखाओ, जिससे समझ में आए कि आप प्रैक्टिकल कर रहे हैं, तो उसका प्रभाव फैलेगा। ऐसे ही कोई ग्रुप बने, जिससे दूसरों को प्रेरणा मिले। ..... ऐसे अगर छोटे-2 ग्रुप प्रैक्टिकल प्रमाण बन जाएँ तो वह श्रेष्ठ वायब्रेशन वायुमण्डल में स्वतः ही फैलेगा। ..... तो एक से दो, दो से तीन- ऐसे फैलता जाएगा। (अ.वा.9.1.85 पृ.114 अंत, 115 आदि)

11. कैसा भी कमज़ोर तन हो, रोगी हो; लेकिन वाचा-कर्मणा नहीं, तो मंसा सेवा अन्तिम घड़ी तक भी कर सकते हो। (अ.वा.18.2.85 पृ.169 मध्य)

12. मन की मेहनत का कारण क्या बनता है, क्या करते हैं? टेढ़े-बाँके बच्चे पैदा करते- जिसका कभी मुँह नहीं होता, कभी टाँग नहीं, कभी बाँह नहीं होती। ऐसे व्यर्थ की वंशावली बहुत पैदा करते हैं .....इसलिए अब कमज़ोर रचना बंद करो तो मन की मेहनत से छूट जाएँगे। (अ.वा.15.3.85 पृ.235 अंत, 236 आदि)

13. वाणी से तीर चलाना आ गया है, अब 'शान्ति' का तीर चलाओ, जिससे रेत में भी हरियाली कर सकते हो। कितना भी कड़ा-सा पहाड़ हो; लेकिन पानी निकाल सकते हो। (अ.वा.13.11.81 पृ.138 अंत)

14. आत्मा-परमात्मा का शब्द तो सुनते रहते हैं; लेकिन कनेक्शन जुड़वाकर अनुभव कराना यह नवीनता है, जिसको कहा जाता है- रियल्टी का अनुभव करना। (अ.वा.18.11.81 पृ.154 मध्यादि)

15. ऐसे तुम बच्चों को सिर्फ कहना नहीं है कि भगवान आया हुआ है। इससे कोई समझेंगे नहीं, और ही हँसी करेंगे। .....युक्ति से दो (बेहद के) बाप का राज़ बैठ समझाना चाहिए। ..... सिर्फ भगवान आया है- यह कहने से कोई समझेंगे नहीं, समझेंगे- ब्र0कु0 सिर्फ ढिंढोरा पीटती रहती हैं। ऐसी-2 उल्टी सर्विस करने से और ही फिर सर्विस में ढिलाई आ जाती है। एक तरफ कहते हैं- भगवान आया है, हमको भगवान पढ़ाते हैं, फिर जाकर शादी करते हैं, शराब आदि पीते हैं। (मु.ता.27.8.76 पृ.1 अंत, 2 आदि)

16. किसी को सन्तुष्ट करना, यह सबसे बड़ी सेवा है। मेहमान निवाज़ी करना, यह सबसे बड़ा भाग्य है। कहते भी हैं- मेहमान भाग्यशाली के घर में आते हैं। .....माया कभी मेहमान तो नहीं बनती है ना? दरवाज़ा बन्द है? अगर किला मज़बूत होता है तो दुश्मन नहीं आता है। (अ.वा.25.1.80 पृ.246 अंत)

17. न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं। (अ.वा.14.7.74 पृ.110 मध्य)

18. जहाँ भी पाँव रखा है वहाँ सफलता न हो, यह हो नहीं सकता। कोई धरती जल्दी ही फल देती है, कोई धरती फल देने में समय लेती है। (अ.वा.7.1.78 पृ.13 अंत)

19. कहते हैं धंधों सभी में धूर, बिगर धंधे नर से नारायण बनाने की। (मु.ता.12.9.71 पृ.2 आदि)

20. बाहर का कुछ भी शो आदि करना, यह तो दुनियावी बातें हैं। अपना ज्ञान ही है गुप्त। (मु.ता.20.2.74 पृ.4 मध्यादि)

21. कहाँ भी प्रदर्शनी आदि हो, हाफ पे पर भी जाय सर्विस करें। कोई तो फुल पे भी छोड़कर जाय सर्विस करते हैं। बाबा पूछते हैं- बाल-बच्चे लिए कुछ चाहिए तो भेज दें । शरीर निर्वाह चाहिए तो कोई दस हज़ार से करे, चाहे तो दस रुपया से करे। (मु.ता.4.11.71 पृ.3 अंत)

22. अब कोई भी कामना दिल में नहीं रखनी है। ..... बड़ी नौकरी मिले- यह भी जास्ती न रहना है। ..... आस कोई भी नहीं रखो सिवाय बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेने। (मु.ता.30.6.71 पृ.1 आदि)

23. टू-मच धंधे आदि में मत जाओ। कितना चिंतन रखना पड़ता है। बाबा ने इनको कैसे छुड़ा दिया। (मु.ता.14.2.74 पृ.3 आदि)

24. अब मुख्य सर्विस है ही अपनी वृत्ति और दृष्टि को पलटाना। यह जो गायन है- नज़र से निहाल, तो दृष्टि और वृत्ति की सर्विस यह प्रैक्टिकल में लानी है। ..... जिस सर्विस को आप सर्विस समझते हो प्रजा बनाने की, वह तो आपके प्रजा की भी प्रजा जो बननी है, वह प्रदर्शनियों में बन रही है। (अ.वा.ता.7.10.76 पृ.3 मध्य)

25. क्वालिटी बनाना है। क्वाण्टिटी बनाना यह तो चल रहा है; लेकिन अब भी ऐसी क्वालिटी वाली आत्माएँ बनाने की सर्विस रही हुई है। क्वालिटी वाली एक आत्मा क्वाण्टिटी को आपे ही लाएगी। एक क्वालिटी वाला अनेकों को ला सकता है। (अ.वा.13.11.69 पृ.138 अंत)

26. सिर्फ संदेश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है, यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनियाँ के अन्दर यह आवाज़ फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वेश में कर रहे हैं। उन्हीं को इस स्नेह, सम्बन्ध में लाओ। (अ.वा.28.11.69 पृ.150 मध्य)

27. वरदान भूमि के एक-2 चरित्र में, कर्म में विशेष वरदान भरे हुए हैं। यज्ञ-भूमि में आकर चाहे सब्जी काटते हो, अनाज साफ करते हो, इसमें भी यज्ञ-सेवा का वरदान भरा हुआ है। (अ.वा.18.11.85 पृ.44 आदि)

28. औरों के प्रति एग्जाम्पल बनना है। यही सर्विस है। समय भल न भी मिले सर्विस का; लेकिन चरित्र भी सर्विस दिखला सकता है। चरित्र से भी सर्विस होती है, सिर्फ वाणी से नहीं होती। आपके चरित्र उस विचित्र बाप की याद दिलावे। यह तो सहज सर्विस है ना! (अ.वा.23.1.70 पृ.178 अंत)

29. मुरली लिखना अच्छी सर्विस है, सब खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे- बाबा, अक्षर बहुत अच्छे हैं; नहीं तो लिखते हैं- अक्षर अच्छे नहीं हैं। बाबा, हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा, हम अधिकारी हैं, जो आपके मुख से रतन निकलते हैं, वह सब हमारे पास आने चाहिए। .....मुरली की सेवा भी अच्छी रीति करनी चाहिए। सब भाषाएँ सीखनी चाहिए- मराठी, गुजराती...। जैसे बाबा रहमदिल है, बच्चों को भी रहमदिल

बनना है। पुरुषार्थ कर जीवन बनाने के लिए मददगार बनना है। बाक़ी उस दुनियाँ का जीवन तो बिल्कुल ही फीका है। (मु.ता.10.3.87 पृ.2 अंत)

30. सेवा का सबसे तीखा साधन है- समर्थ संकल्प से सेवा। समर्थ संकल्प भी हों, बोल भी हों और कर्म भी हों। तीनों साथ-2 कार्य करें। यही शक्तिशाली साधन है। (अ.वा.6.1.86 पृ.138 आदि)

31. कमज़ोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बनाओ- यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना- यह कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना- यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेंगे। (अ.वा.21.12.89 पृ.96 आदि)

32. जैसे कोई साहूकार होता है तो अपने नज़दीक सम्बन्धियों को मदद देकर ऊँचा उठा लेता है, ऐसे वर्तमान समय जो भी कमज़ोर आत्माएँ सम्पर्क और सम्बन्ध में हैं, उन्हों को विशेष सकाश देनी है। (अ.वा.21.1.72 पृ.219 मध्य)

33. तुम पतित से फरिश्ते बनते हो। फरिश्ते स्थूलवतन में नहीं होते हैं। फरिश्तों को हड्डी-माँस नहीं होती है। यहाँ इस रूहानी सर्विस में हड्डी आदि सब खलास कर देते हैं। फिर फरिश्ते बन जाते हैं। अभी तो हड्डी है ना! यह भी लिखा हुआ है- अपनी हड्डियाँ भी दे दीं सर्विस में। गोया अपनी हड्डियाँ खलास करते हैं। स्थूलवतन से सूक्ष्मवतनवासी बनना है। यहाँ हम हड्डी देकर सूक्ष्म बन जाते हैं। इस सर्विस में सब स्वाहा करना है। (मु.ता.20.1.76 पृ.1 मध्यांत)

34. कोई कहे, हमको सेवा मिलती नहीं है- कह नहीं सकता। वायुमण्डल को बनाने की कितनी सेवा रही हुई है! ..... बीमार भी हो, तो भी सेवा का चान्स है। कोई भी हो- चाहे अनपढ़ हो, चाहे पढ़ा हुआ हो, किसी भी प्रकार की आत्मा, सबके लिए सेवा का साधन बहुत बड़ा है। तो सेवा का चान्स मिले- यह नहीं, मिला हुआ है। (अ.वा.18.1.88 पृ.222 अंत, 223 आदि)

35. सर्विसएबुल बच्चों का भी काम है नब्ज़ देखना। अगर हमारे कुल का होगा तो शान्त हो जाएगा। (मु.ता.11.3.89 पृ.3 अंत)

36. बेहद में रहो तो हद की बातें स्वतः ही ख़त्म हो जावेंगी। आप लोग हद की बातों में समय व्यर्थ कर और फिर बेहद में टिकने चाहते हो; लेकिन अब वह समय गया। अभी तो बेहद की सर्विस में सदा तत्पर रहो तो हद की बातें आपे ही छूट जावेंगी। (अ.वा.24.10.71 पृ.204 अंत)

37. ज्ञान के हिसाब से विशेष व्यक्ति नहीं; लेकिन दुनियाँ के हिसाब से जो विशेष व्यक्ति हैं, उनकी सेवा करो। इससे स्वतः ही अख़बार वाले, रेडिओ, टी.वी. वाले आवाज़ फैलाते हैं। ऐसी कोई

विशेष आत्मा निकालो, जिनके आवाज़ से अनेक आत्माओं का कल्याण हो जाए। (अ.वा.6.1.79 पृ.183 अंत)

38. राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रॉयल फैमिली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्लाहना दे कि हमें सन्देश नहीं मिला है। (अ.वा.14.1.79 पृ.216 मध्य)

39. सहजयोगी रहना ही सदा सर्विस करना है। आपकी सूक्ष्म योग की शक्ति स्वतः ही आत्माओं को आपके तरफ़ आकर्षित करेगी, तो यही सहज सेवा है। (अ.वा.14.1.79 पृ.215 अंत)

40. सम्पर्क में आने वालों को आगे बढ़ाते चलो।.....हर वर्ग की सेवा करनी है। अन्त में कोई भी उल्लाहना न दे सके कि हमें नहीं बताया। इसलिए सब धर्म वालों को सन्देश ज़रूर देना है। (अ.वा.30.1.79 पृ.253 आदि)

41. सेवा ज़रूर करनी है, जैसे भी करो। सब सब्जेक्ट में मार्क्स लेनी है, अगर एक भी कम रह गई तो पास विद् ऑनर कैसे होंगे; इसलिए सब सब्जेक्ट को कवर करो। (अ.वा.1.2.79 पृ.260 अंत)

42. एक क्वालिटी वाला 100 क्वाण्टिटी के बराबर है। क्वालिटी वाली सेवा, इसको कहा जाता है- शक्तिशाली सेवा। (अ.वा.27.11.85 पृ.64 अंत)

सेवा कर्मणा की

1. स्थूल सेवा भी बहुत अच्छी की होगी तो पहले आवेंगे। बहुत प्यार से यज्ञ की हड्डी सर्विस करते हैं तो फल भी अच्छा मिलेगा। धमचक्र मचाने वाले ऊँच पद पा न सके। कोई-2 नौकर भी धणी को ऐसा सुख देते हैं जो बच्चा भी न दे सके। (मु.ता.20.3.69 पृ.4 मध्यादि)

2. जिसका हर कर्म कला के रूप में होता है, उनके हर कर्म अर्थात् गुणों का गायन होता है .....। जिस कला के रूप को देख औरों में भी प्रेरणा भरती है। उनके कर्म भी सर्विसएबुल होते हैं। (अ.वा.5.10.71 पृ.186 अंत)

3. बापदादा भी सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। ऐसे नहीं कि कर्मणा सेवा करते हैं, कोई ज्ञान की तो करते नहीं हैं; लेकिन कर्म का प्रभाव वाणी से भी बड़ा है। एक होता है सुना हुआ और दूसरा होता है देखा हुआ। (अ.वा. 31.3.90 पृ.212 अंत)

4. बहुत हैं जो कुछ समझा नहीं सकते, तो स्थूल काम करो। मिलेट्री में सब काम करने वाले होते हैं। (मु.ता. 25.1.84 पृ.3 आदि)

5. जितना स्व के ऊपर अटेन्शन होगा, उतना ही सेवा में भी अटेन्शन जाएगा। ..... अगर यह स्मृति रहेगी कि मेरा हर कर्म सेवा अर्थ है तो स्वतः ही श्रेष्ठ कर्म करेंगे। (अ.वा. 27.11.85 पृ.65 आदि, 66 आदि)

6. कई समझते हैं- सर्विस करना सहज है, साधन भी सहज हैं; लेकिन हर आत्माओं के साथ सम्पर्क में आते हुए संस्कारों को मिलाना, यह भी इतना सहज अनुभव हो, जैसे भाषण करना सहज है। वह मुख का भाषण है, यह कर्म का भाषण है। इसमें जो सक्सेसफुल हो जाते हैं, वही फुल पास होते हैं। (अ.वा.9.4.73 पृ.20 मध्य)

7. इस शरीर से जितना हो सके काम लेना चाहिए। जितना हड्डी सर्विस करते रहेंगे उतनी ही ताकत मिलेगी। ईश्वरीय सर्विस में ताकत ज़रूर मिलती है। (मु.ता.4.3.69 पृ.4 अंत)

8. सर्विस सिर्फ़ मुख से नहीं होती; लेकिन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा भी सर्विस कर सकते हो। (अ.वा.1.3.71 पृ.31 आदि)

9. बाबा की बच्चों को मना है- बच्चे, किसी से सेवा मत लो। तुम्हें सब-कुछ अपने हाथ से करना है। (मु.ता.6.3.87 पृ.3 मध्य)

10. निरन्तर समझो कि हम ईश्वरीय सर्विस पर हैं। भल कर्मणा सर्विस भी कर रहे हो, फिर भी समझो- मैं ईश्वरीय सर्विस पर हूँ। भल भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य; लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पावरफुल बनाना, वह तो ईश्वरीय सर्विस हुई ना! ..... हम ईश्वरीय संतान सिर्फ़ और सदैव इसी सर्विस के लिए ही हैं। ..... जब तक यह ईश्वरीय जन्म है तब तक हर सेकेण्ड, हर संकल्प, हर कार्य ईश्वरीय सर्विस है। (अ.वा.30.5.71 पृ.87 मध्यादि)

11. यज्ञ कारोबार अथवा कर्मणा सर्विस की भी मार्क्स है ना! फिर भी विद् ऑनर्स में वह 100 मार्क्स भी हेल्प देंगे ना; लेकिन ज़रूरी है, जिस समय कारोबार वा वाचा सर्विस करनी है तो लक्ष्य यह रखना चाहिए कि यह ईश्वरीय सर्विस है, यह कारोबार है। (अ.वा.4.7.71 पृ.126 अंत)

12. बाबा के पास आएँगे तो पहले झाड़ू आदि लगाना, सब करना पड़ेगा। (मु.ता.3.3.87 पृ.3 आदि)

13. बाप की सर्विस करनी चाहिए, रूहानी सर्विस; नहीं तो स्थूल सर्विस भी है। (मु.ता.2.9.75 पृ.2 आदि)

14. बहुतों में देह-अभिमान बहुत रहता है। बाबा ने समझाया है- कब कोई से भी सर्विस नहीं लो। अपने हाथ से भोजन आदि बनाओ। तो भी बहाना बनाते रहते। अरे, तुम सब-कुछ कर सकते हो। समझो, स्टूडेण्ट्स क्लास में आ जाते हैं, बोलो- अभी मैं 10 मिनट में रोटी बनाकर आती हूँ। तो

वह भी खुश होंगे। तो वह समझेंगे- यह तो रूहानी-जिस्मानी, दोनों सर्विस करती हैं। (मु.ता.3.9.92 पृ.3 मध्य)

सेवा माना क्या?

1. कमज़ोर आत्माओं को भी बाप द्वारा प्राप्त हुई शक्ति दे शक्तिशाली बनाओ- यही श्रेष्ठ सेवा है। परिचय देना, कोर्स कराना- यह कोई बड़ी बात नहीं है; लेकिन आत्माओं को शक्तिशाली बनाना- यही सच्ची सेवा है। हिम्मत आप रखेंगे और मदद बाप करेंगे। (अ.वा. 21.12.89 पृ. 96 आदि)

2. एक-दूसरे को बाप के गुणों का वा स्वयं की धारणा के गुणों का सहयोग देते हुए गुणमूर्त बनाना, यह सबसे बड़े-से-बड़ी सेवा है। (अ.वा.15.12.79 पृ.123 अंत)

3. बापदादा सदा डायरैक्शन देते हैं कि मैं-पन का, मेरे-पन का त्याग ही सच्ची सेवा है। (अ.वा.15.1.86 पृ.158 मध्य)

4. यह तो सब कहेंगे कि सर्विस-अर्थ निमित्त अर्थात् बाप के गुणों को साकार करने के निमित्त- इसको ही सर्विस कहा जाता है। बाक़ी ज्ञान को वर्णन करना, यह तो कॉमन बात है। यह विशेष सर्विस नहीं है। सर्विस की विशेषता अर्थात् बाप के सर्वगुणों का स्वरूप बनकर, बाप का साक्षात्कार अपने स्वरूप द्वारा कराना। (अ.वा.13.9.74 पृ.121 अंत, 122 आदि)

5. सेवा अर्थात् किसी भी आत्मा को (खुशी की) प्राप्ति का मेवा अनुभव कराना। (अ.वा.9.4.86 पृ.316 मध्य)

6. सभी को खुश करने की सेवा नम्बर वन सेवा है। सबके अन्दर खुशी की लहर पैदा करना, यह है बाप-समान सेवा। (अ.वा.18.1.88 पृ.224 आदि)

7. सुने हुए मधुर बोल का स्वरूप बन, स्वरूप से सेवा, निःस्वार्थ सेवा, त्याग-तपस्या स्वरूप से सेवा, हद की कामनाओं से परे निष्काम सेवा, इसको कहा जाता है- ईश्वरीय सेवा, रूहानी सेवा। (अ.वा.22.2.86 पृ.206 अंत)

8. सेवा भाव अर्थात् सर्व की कमज़ोरियों को समाने का भाव। कमज़ोरियों का सामना करने का भाव नहीं, समाने का भाव। (अ.वा.9.4.86 पृ.318 आदि)

9. कभी भी कोई सेवा उदास करे तो समझो, वह सेवा नहीं है। डगमग करे, हलचल में लाए तो वह सेवा नहीं है। सेवा तो उड़ाने वाली है। सेवा बेगमपुर का बादशाह बनाने वाली है। (अ.वा. 22.2.86 पृ.209 आदि)

10. वैसे देखा जाए तो सेवा उसको ही कहा जाता है, जिसमें स्व और सर्व की सेवा समाई हुई हो। दूसरे की सेवा करें और अपनी सेवा में अलबेले हो जाएँ, तो उसको वास्तव में यथार्थ सेवा नहीं कहेंगे। (अ.वा. 8.4.92 पृ.184 आदि)

11. तपस्या में बैठना भी सेवा ही है। (अ.वा.9.4.86 पृ.317 मध्यांत)

सेवा मंसा की

1. मन्सा सेवा करने के लिए सदा एकाग्रता का अभ्यास चाहिए। व्यर्थ समाप्त हो तब मन्सा सेवा कर सकेंगे। (अ.वा. 5.2.79 पृ.277 आदि)

2. मंसा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे।.....स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य-अधिकारी बनेंगे। (अ.वा.18.1.86 पृ.165 मध्य)

3. मन्सा सेवा वही कर सकता, जिसकी स्वयं की मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, निःस्वार्थ हो।.....यह भी करें तब मैं करूँगी, कुछ यह करें, कुछ मैं करूँ वा थोड़ा तो यह भी करें- इस भावना से परे। मैं करूँगी या करूँगा, और अवश्य करेंगे। कमज़ोर है, नहीं कर सकता है, फिर भी रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। इसको कहा जाता है- मंसा सेवाधारी। (अ.वा. 28.1.85 पृ.147 मध्य)

4. जो भी सदा निश्चय-बुद्धि होकर विजयी रहते हैं, उन निश्चय-बुद्धियों द्वारा वायुमण्डल शुद्ध होता जाता है। वह मंसा सेवा करते हैं; क्योंकि चारों ओर के व्यक्ति निश्चय-बुद्धि आत्माओं को देख समझते हैं कि इनको कुछ मिला है। चाहे कितने भी घमण्डी हों, ज्ञान को न भी सुनते हों; लेकिन अंदर में यह समझते ज़रूर हैं कि इनका जीवन कुछ बना है। तो जो शुरू से अटल निश्चय-बुद्धि रहे हैं, उनकी यह (मनसा) सेवा चलती रहती है। यह भी मंसा सेवा है। (अ.वा.17.12.79 पृ.128 आदि)

5. अब संकल्प से भी सेवाधारी बनो। वाचा सेवा तो सात दिन के कोर्स वाले भी करते हैं। कर्मणा सेवा भी सब करते हैं; लेकिन आपकी विशेषता है मंसा सेवा। इस विशेषता को अपनाकर विशेष नम्बर ले लो। (अ.वा.19.12.79 पृ.137 अंत)

6. वृत्ति में क्या भरना है, जिससे वृत्ति पावरफुल हो जाए? तो वह एक ही बात है कि वृत्ति में हर आत्मा के प्रति रहम वा कल्याण की वृत्ति रहे, तो ऑटोमैटिकली आत्माओं के प्रति यह वृत्ति होने के कारण, उन आत्माओं को आप लोगों के रहम वा कल्याण का वायब्रेशन पहुँचेगा। (अ.वा.9.10.71 पृ.188 अंत, 189 आदि)

7. सेवाभाव अर्थात् सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भाव। (अ.वा.9.4.86 पृ.316 आदि)

8. सेवा का सबसे तीखा साधन है- समर्थ संकल्प से सेवा। समर्थ संकल्प भी हों, बोल भी हों और कर्म भी हों। तीनों साथ-2 कार्य करें। (अ.वा.6.1.86 पृ.138 आदि)

9. जैसे वर्तमान समय ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूपधारी बन शुद्ध संकल्प की शक्ति से आप सबकी पालना कर रहे हैं, सेवा की वृद्धि के सहयोगी बन आगे बढ़ा रहे हैं, यह विशेष सेवा शुद्ध संकल्प के शक्ति की चल रही है, तो ब्रह्मा बाप-समान अभी इस विशेषता को अपने में बढ़ाने का तपस्या के रूप में अभ्यास करना है। तपस्या अर्थात् दृढ़ता सम्पन्न अभ्यास। (अ.वा.31.3.86 पृ.296 अंत, 297 आदि)

10. शक्तिशाली संकल्प का सहयोग विशेष आज की आवश्यकता है।.....संकल्प से सहयोग देना- इस सेवा को बढ़ाना है। वाणी से शिक्षा देने का समय बीत गया। ..... जितना जो सूक्ष्म चीज़ होती है वह ज़्यादा सफलता दिखाती है। वाणी से संकल्प सूक्ष्म है ना! (अ.वा.1.1.86 पृ.126 मध्य, 127 आदि)

11. आगे चल वाणी वा स्थूल साधनों के द्वारा सेवा का समय नहीं मिलेगा। ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति के साधन आवश्यक होंगे।.....तो वाणी से शुद्ध संकल्प सूक्ष्म हैं; इसलिए सूक्ष्म का प्रभाव शक्तिशाली होगा। (अ.वा.18.11.87 पृ.137 अंत)

12. हर महारथी के अन्दर सदा यह संकल्प रहे कि जो भी समय है, वह सेवा-अर्थ ही देना है। चाहे अपने देह व शरीर के आवश्यक कार्य में भी समय लगाते हो, तो भी स्वयं के प्रति लगाते हुए मन्सा विश्व-कल्याण की सेवा साथ-2 कर सकते हैं। अगर वाचा और कर्मणा नहीं कर सकते तो मन्सा कल्याणकारी भावना का संकल्प रहे, तो वह भी सेवा के सब्जेक्ट में जमा हो जाता है। (अ.वा.22.1.76 पृ.10 मध्यादि)

13. ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है। जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले, चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो, संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो;

लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो। (अ.वा.19.4.71 पृ.69 अंत)

14. शुभचिंतक बनना- यही सहज रूप की मन्सा सेवा है, जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो।.....तो आज विश्व को शुभचिन्तक आत्माओं की आवश्यकता है; इसलिए आप शुभचिन्तक मणियाँ वा आत्माएँ विश्व को अति प्रिय हैं। जब सम्पर्क में आ जाते हैं तो अनुभव करते हैं कि ऐसे शुभचिन्तक दुनियाँ में कोई दिखाई नहीं देते। (अ.वा. 10.11.87 पृ.125 आदि)

15. शुभकामना और शुभभावना- यह सेवा का फाउण्डेशन है। कोई भी आत्माओं की सेवा करते हो, अगर आपके अंदर शुभभावना, शुभकामना नहीं है, तो आत्माओं को प्रत्यक्ष फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। (अ.वा.27.11.89 पृ.43 मध्यांत)

16. क्वालिटी की सेवा में उन्हों को निमित्त बनाने अथवा उन्हों की बुद्धि को टच करने के लिए अपनी मन्सा बहुत शक्तिशाली चाहिए; क्योंकि क्वालिटी वाली आत्माएँ वाणी में तो पहले ही होशियार होती हैं; लेकिन अनुभूति में कमज़ोर होती हैं, बिल्कुल ही खाली होती हैं। तो जो जिस बात में कमज़ोर होते हैं, उसको उसी कमज़ोरी का ही तीर लग सकता है और जब अनुभूति होती है तब समझते हैं कि यह तो हमारे से ऊँचे हैं। (अ.वा.31.12.89 पृ.115 मध्य)

17. योग लगाना भी क्या है? खुशी में नाचना ही तो है ना! बाप की महिमा गाते हो, खुशी में नाचते हो और क्या करते हो! इसी में ही सेवा है। इसी में ही योग है, इसी में ही ज्ञान वा धारणा है। (अ.वा. 25.12.89 पृ.107 मध्य)

18. परिवर्तन का मूल आधार है- हर सेकेण्ड सेवा में बिज़ी रहना। हर महारथी के अन्दर सदा यह संकल्प रहे कि जो भी समय है, वह सेवा-अर्थ ही देना है। चाहे अपने देह व शरीर के आवश्यक कार्य में भी समय लगाते हो, तो भी स्वयं के प्रति लगाते हुए मंसा विश्व-कल्याण की सेवा साथ-2 कर सकते हैं। अगर वाचा और कर्मणा नहीं कर सकते तो मंसा कल्याणकारी भावना का संकल्प रहे, तो वह भी सेवा के सब्जेक्ट में जमा हो जाता है। (अ.वा.22.1.76 पृ.10 आदि)

19. मंसा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ। वाचा सेवा तो सात दिन के कोर्स वाले, प्रवृत्ति वाले भी कर सकते हैं। आपका कार्य है वायुमण्डल को पावरफुल बनाना। .....चेक करो- मंसा सेवा में सफलता मिलती है? अगर मंसा सेवा में सफलता होगी तो सदा स्वयं और सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और चढ़ती कला में होगा। चढ़ती कला यह नहीं कि संख्या वृद्धि को पाए। .....लास्ट में वाचा सेवा का चान्स नहीं होगा, मंसा सेवा पर सर्टिफ़िकेट मिलेगा; क्योंकि इतनी लम्बी क्यू होगी जो बोल नहीं सकेंगे। (अ.वा.23.1.80 पृ.239 आदि)

20. जो जास्ती याद करते हैं, उनके पाप कटते जाते हैं। यात्रा का ही ध्यान रखना है। पिछाड़ी में 8 घण्टा तुम्हारी यह सर्विस रहे, तो भी बहुत अच्छा। (मु.ता. 29.3.87 पृ.3 अंत)

21. वाणी के साथ-2 मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो, वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज़्यादा अनुभव कराएगी। (अ.वा.31.12.89 पृ.113 अंत)

22. दूर बैठे किसी भी आत्मा को बाप के बनने का उमंग-उत्साह पैदा करने का संदेश दे सकते हो, जो वह आत्मा अनुभव करेगी कि मुझे कोई महान शक्ति बुला रही है। .....दूर होते भी सम्मुख का अनुभव करेगी। विश्व सेवाधारी बनने का सहज साधन ही मंसा सेवा है। (अ.वा.28.1.85 पृ.147 अंत, 148 आदि)

सर्विस में असफलता

1. वायुमण्डल अगर और दिखाई देता है तो समझना चाहिए- अपनी वृत्ति में भी कमज़ोरी है। उस कमज़ोरी को मिटाना चाहिए। (अ.वा.10.5.72 पृ.274 मध्य)

2. सेवा के क्षेत्र में भी अगर आत्माओं की आवश्यकता और इच्छा को परखने के बिना कितना भी अच्छा ज्ञान दे दो, कितनी भी मेहनत कर लो; लेकिन सफलता नहीं होगी।..... उसके लिए परखने की शक्ति अति आवश्यक है। ..... पानी के प्यासे को 36 प्रकार का भोजन दे दो; लेकिन वह संतुष्ट पानी की बूँद से ही होगा, न कि भोजन से।..... इसलिए सेवा में भी आत्मा की स्थिति वा उसकी आस्था क्या है, उसको परखना आवश्यक है। (अ.वा.10.1.90 पृ.134 मध्य)

3. सर्विस कितनी भी करो, मगर अहंकार नहीं आना चाहिए। सर्विस करके अपना ही कल्याण करते हैं। मैं जास्ती सर्विस करता हूँ- यह अहंकार आने से गिर पड़ेंगे। (रात्रि मु.ता.14.11.66 पृ.1 मध्य)

4. हर संकल्प वा कर्म अगर विधिपूर्वक है तो सिद्धि ज़रूर होती है। अगर सिद्धि नहीं है तो विधिपूर्वक भी नहीं है।..... सिद्धि ना प्राप्त होने का मुख्य कारण यह है, जो एक ही समय तीनों रूप से सर्विस नहीं करते। तीनों रूपों और तीनों रीति से एक समय करना है- नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल। लव और लॉ, दोनों साथ-2 आ जाते हैं। (अ.वा.2.8.72 पृ.344 मध्य, 345 मध्य)

5. कैसी भी मुश्किल सेवा हो; लेकिन बाप को सेवा भी बुद्धि से अर्पण कर दो। मैंने किया, सफलता नहीं हुई, मैं कहाँ से आया? बाप करन-करावनहार की ज़िम्मेवारी भूल करके अपने ऊपर क्यों

उठाई? यह रॉंग हो जाता है। बाप की सेवा है, बाप अवश्य करेगा। बाप को आगे रखो, अपने को आगे नहीं रखो। मैंने यह किया, यह 'मैं' शब्द सफलता को दूर करता है। (अ.वा.19.3.90 पृ.191 मध्य)

6. बापदादा सभी को डायरैक्शन देते हैं- जहाँ देखते हो, सेवा स्थिति को डगमग करती है, उस सेवा में कोई सफलता मिल नहीं सकती। सेवा भले कम करो; लेकिन स्थिति को कम नहीं करो। जो सेवा स्थिति को नीचे ले आती है, उसको सेवा कैसे कहेंगे! इसलिए बापदादा सभी को फिर से यही कहेंगे कि सदा स्व-स्थिति और सेवा अर्थात् स्व-सेवा और औरों की सेवा साथ-2 सदा करो। स्व-सेवा को छोड़ पर-सेवा करना- इससे सफलता नहीं प्राप्त होती। हिम्मत रखो स्व-सेवा और पर-सेवा की। (अ.वा.22.1.90 पृ.153 आदि)

सेवा में सफलता का आधार

1. सेवा का उमंग-उत्साह स्वयं को भी निर्विघ्न बनाता, दूसरों का भी कल्याण करता है। सेवाभाव की भी सफलता है। सेवा-भाव में अगर अहम-भाव आ गया तो उसको सेवा-भाव नहीं कहेंगे। सेवा-भाव सफलता दिलाता है। (अ.वा.1.10.87 पृ.65 मध्य)

2. सेवा की विशेषता है ही स्नेह। जब तक ज्ञान के साथ रूहानी स्नेह की अनुभूति नहीं होती तो ज्ञान कोई नहीं सुनेगा। ..... तो सेवा का पहला सफलता का स्वरूप हुआ- स्नेह। (अ.वा.4.3.86 पृ.228 अंत, 229 आदि)

3. जब सेवा में क्या-क्यों, तू-मैं, तेरा-मेरा आ जाता है तो सेवा भी झंझट हो जाती है। तो इस झंझट से भी परे हो जाओ। सेवा के पीछे स्वमान न भूलो। जिस सेवा में शक्तिशाली याद नहीं तो उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को और औरों को भी परेशानी ज़्यादा। नाम की सेवा नहीं; लेकिन काम की सेवा करो। इसको कहा जाता है- शक्ति सम्पन्न सेवा। (अ.वा.21.11.84 पृ.24 मध्य)

4. विघ्न को विघ्न नहीं समझो और विघ्न अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा को विघ्नकारी आत्मा नहीं देखो।.....जब कहते हो- निंदा करने वाले मित्र हैं, तो विघ्नों को पास कराके अनुभवी बनाने वाला शिक्षक हुआ ना! पाठ पढ़ाया ना! .....इस प्रकार रूप भल विघ्न का है, आपको विघ्नकारी आत्मा दिखाई पड़ती; लेकिन सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त वही बनते; इसलिए सदा निर्विघ्न सेवाधारी को कहते हैं- सच्चे सेवाधारी। (अ.वा.20.2.87 पृ.39 मध्य)

5. तुम भी आगे, मैं भी आगे, साथ-2 चलते चलो, हाथ मिलाकर चलो तो सफलता होगी और संतुष्टता की दुआएँ मिलेंगी। ऐसी दुआएँ लेने में महान बनो तो सेवा में स्वतः महान हो जाएँगे। (अ.वा.11.4.85 पृ.18 आदि)

6. हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे, तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे। (अ.वा.19.4.71 पृ.69 आदि)

7. सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है- एक बाप से अटूट प्यार। .....ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है, तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देते हैं। .....दूसरा- सफलता का आधार हर ज्ञान की प्वॉइण्ट के अनुभवीमूर्त होना, जैसे ड्रामा की प्वॉइण्ट देते हैं। तो एक होता है नॉलेज के आधार पर प्वॉइण्ट देना, दूसरा होता है अनुभवीमूर्त होकर प्वॉइण्ट देना। (अ.वा.11.3.81 पृ.37 मध्य)

8. सर्विस की सफलता का स्वरूप यही है कि सर्व आत्माओं को बाप के स्नेही और बाप के कर्तव्य में सहयोगी और पुरुषार्थ में उन आत्माओं को शक्तिरूप बनाना।.... जिन आत्माओं की सर्विस करो, उन आत्माओं में यह तीनों ही क्वालिफिकेशन प्रत्यक्ष रूप में देखने में आनी चाहिए। अगर तीनों में से कोई भी गुण की कमी है तो सर्विस की सफलता की भी कमी है। (अ.वा.6.8.70 पृ.302 मध्य)

9. सेवा में सदैव स्वच्छ बुद्धि, स्वच्छ वृत्ति और स्वच्छ कर्म सफलता का सहज आधार है। (अ.वा.20.2.87 पृ.39 अंत)

10. सेवा की सदाकाल की सफलता का आधार 'उदारता' है। (अ.वा.11.4.85 पृ.11 अंत)

11. नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ़ दिल के आधार से, सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ़ दिमाग़ के आधार से सेवा की! (अ.वा.18.1.86 पृ.163 अंत)

12. प्रश्नः- सम्पर्क और सेवा, दोनों में सफल बनने के लिए मुख्य कौन-सी धारणा चाहिए? उत्तरः- सफलता तभी मिलेगी जबकि सदैव स्वयं को मोल्ड करने की क्वालिफिकेशन होगी। (अ.वा.19.11.79 पृ.34 आदि)

13. सर्विस की सफलता का मुख्य गुण कौन-सा है? नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफ़लता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। ..... जैसे बाप शरीर का आधार निमित्तमात्र लेते हैं, वैसे आप समझो कि निमित्तमात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्तमात्र समझना है और दूसरा- सर्विस में अपने को निमित्त समझना, तब नम्रता आएगी। (अ.वा.18.6.69 पृ.70 मध्य)

14. हर प्रकार की सेवा, मन्सा-वाचा-कर्मणा- तीनों में सदा सफलता अनुभव हो। उसका भी आधार परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति है। (अ.वा.10.1.90 पृ.133 मध्य)

15. कोई भी सेवा में सफलता का साधन नम्रता भाव है, निमित्त भाव है। तो इन्हीं विशेषताओं से सेवा की? ऐसी सेवा में सदा सफलता भी है और सदा मौज है। (अ.वा.25.10.87 पृ.105 मध्य)

16. अभी जो सेवा करते हो, वह अलग-2 करते हो। .....तो कोई भी कार्य शुरू करने के पहले सभी की शुभ भावनाएँ, शुभ कामनाएँ लो, सर्व के संतुष्टता का बल भरो, तब शक्तिशाली फल निकलेगा। (अ.वा.2.11.87 पृ.117 अंत)

17. मधुबन में रिफ्रेश होना अर्थात् सेवा के लिए निमित्त बन करके सेवाधारी बनकर सेवा का चान्स लेना। सेवा करने के पहले जो निमित्त बने हुए सेवाधारी हैं, उन्हों से सम्पर्क रखते हुए आगे बढ़ते चलो तो सफलता मिलती जाएगी। (अ.वा.15.3.81 पृ.54 मध्य)

18. निःस्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति से सेवा करना सफलता का आधार है। (अ.वा.20.2.87 पृ.40 मध्य)

19. जहाँ त्याग-तपस्या की आकर्षण होगी, वहाँ सर्विस भी आकर्षित हो पीछे आवेगी। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 आदि)

सेवा और याद में बैलेन्स

1. याद और सेवा, दोनों का बैलेन्स सदा ब्राह्मण जीवन में बापदादा और सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं द्वारा ब्लैसिंग (आशीर्वाद) का पात्र बनाता है। ..... स्वयं बाप हर श्रेष्ठ कर्म, हर श्रेष्ठ संकल्प के आधार पर हर ब्राह्मण बच्चे को हर समय दिल से आशीर्वाद देते रहते हैं। (अ.वा.6.11.87 पृ.120 आदि)

2. सेवा में समय लगाना बहुत अच्छी बात है और सेवा का बल भी मिलता है .....; लेकिन जो सेवा याद में, उन्नति में थोड़ा भी रूकावट करने के निमित्त होती है, तो ऐसी सेवा के समय को कम करना चाहिए। जैसे रात्रि को जागते हो, 12.00 वा 1.00 बजा देते हो, तो अमृतवेला फ्रेश नहीं होगा।..... तो रात के समय को कट करके 12.00 के बदले 11.00 बजे सो जाओ।..... नहीं तो दिल खाती है कि सेवा तो कर रहे हैं; लेकिन याद का चार्ट जितना होना चाहिए, उतना नहीं है। जो संकल्प दिल में वा मन में बार-2 आता है कि यह ऐसा होना चाहिए; लेकिन हो नहीं रहा है, तो उस संकल्प के कारण बुद्धि भी फ्रेश नहीं होती। ..... जितनी फ्रेश बुद्धि रहती- शरीर के

हिसाब से भी फ्रेश और आत्मिक उन्नति के रूप में भी फ्रेश, डबल फ्रेशनेस (ताजगी) रहती, तो एक घण्टे का कार्य आधा घण्टे में कर लेंगे। (अ.वा.20.2.88 पृ.261 आदि)

3. जहाँ याद और सेवा का बैलेन्स है अर्थात् समानता है, वहाँ बाप की विशेष मदद अनुभव होती है। (अ.वा.17.10.87 पृ.93 मध्य)

4. राजधानी को सजाने वाले सेवा और याद के बैलेन्स में रहो। हर संकल्प में भी सेवा हो। जब हर संकल्प में सेवा होगी तो व्यर्थ से छूट जाएँगे। तो चेक करना चाहिए- जो संकल्प उठा, जो सेकेण्ड बीता, वह सेवा और याद का बैलेन्स रहा?.....तो सेवा और याद का चार्ट रखो। (अ.वा.2.1.80 पृ.170 अंत, 171 आदि)

5. याद में रह सेवा करना, यह है याद और सेवा का बैलेन्स। (अ.वा.7.5.84 पृ.293 अंत)

6. सेवा में रह समय प्रमाण याद करना, समय मिला, याद किया; नहीं तो सेवा को ही याद समझना, इसको कहा जाता है- अनबैलेन्स। सिर्फ़ सेवा ही याद है और याद में ही सेवा है, यह थोड़ा-सा विधि का अन्तर सिद्धि को बदल लेता है। (अ.वा.7.5.84 पृ.293 अंत)

सेवा वाचा की

1. जैसे कोई घर में आता है तो उसे पानी तो पूछा जाता है ना! अगर ऐसे ही चला जाए तो बुरा समझते हैं ना! ऐसे ही जो सम्पर्क में आए तो उसे बाप के परिचय का पानी ज़रूर पूछो। थोड़ा सुनाया तो पानी पूछा, सप्ताह कोर्स कराया तो ब्रह्मा भोजन कराया। कुछ-न-कुछ देना ज़रूर; क्योंकि दाता के बच्चे हो। (अ.वा.19.12.79 पृ.140 अंत)

2. जो समझते हैं, वह दूसरों को समझावेंगे भी। नहीं समझा सकते हैं, तो समझना चाहिए- हमारे में ज्ञान नहीं है। (मु.ता. 20.3.70 पृ.4 अंत)

3. आपस में मिलकर संगठन कर भाषणों आदि के प्रोग्राम रखने चाहिए। (मु.ता.4.6.85 पृ.1 अंत)

4. समझाते थे- हर बात में बाबा-2 कहकर बोलो तो किसको भी तीर लग जावेगा। (अ.वा.26.3.70 पृ.232 आदि)

5. पहले-पहले 10-15 को रास्ता बताकर, फिर बाद में भोजन खाना चाहिए। (मु.ता.1.6.85 पृ.2 अंत)

6. सारे दिन में कितने को बाप का परिचय दिया। बाप का परिचय देने बिगर सुख नहीं आता, तड़फन लग जाती है। (मु.ता.23.3.89 पृ.2 अंत)

7. जितना दूसरों को संदेश देते हैं उतना अपने को भी सम्पूर्णता का संदेश मिलता है; क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बंधन है। (अ.वा.24.1.70 पृ.190 आदि)

8. समझाने वाला तो बहादुर चाहिए। देह-अभिमान न हो। कहाँ भी जाकर बैठे, टाइम मिल जाए तो बोलना चाहिए। मज़बूत होगा तो भाषण आदि करेगा कि गृहस्थ-व्यवहार में रहते कैसे सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। ..... बोलो, ब्रह्माकुमारी तो सफ़ेद वस्त्रधारी होती है। उन्हों का तो संन्यास किया हुआ है। हम तो गृहस्थ-व्यवहार में रहते हैं। ऐसे भी तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। (मु.ता.11.3.87 पृ.2 अंत, 3 आदि)

9. सुनना है और सुनाना है। कोई कहते हैं- हम सर्विस नहीं कर सकते हैं। प्रजा नहीं बनाएँगे तो राजा भी नहीं बनेंगे। (मु.ता.3.4.87 पृ.1 मध्यांत)

10. सिर्फ़ संदेश देना सर्विस नहीं, संदेश देना अर्थात् उनको अपने संबंधी बनाना। अपना संबंधी बनाना अर्थात् शिववंशी ब्रह्माकुमार/कुमारी बनाना। यह है अपना संबंधी बनाना। अपना संबंधी तब बनाएँगे जब उनको स्नेही बनाएँगे। स्नेही बनने से संबंधी बन जाएँगे। सिर्फ़ संदेश देना तो चींटी मार्ग की सर्विस है। यह विहंग मार्ग की सर्विस है। दुनियाँ के अन्दर यह आवाज़ फैलाओ कि बापदादा अपने कर्तव्य को कैसे गुप्त वेश में कर रहे हैं। उन्हीं को इस स्नेह, संबंध में लाओ। (अ.वा.28.11.69 पृ.150 मध्य)

11. तुम कहते हो- बाबा, सर्विस नहीं मिलती। अरे, सर्विस तो तुम बहुत कर सकते हो। गंगाजी पर जाकर बैठ जाओ। बोलो, यह पानी का स्नान करने से क्या होगा? क्या पावन बन जाएँगे? तुम तो भगवान को कहते ही हो- हे पतित-पावन! आओ, आकर पावन बनाओ। फिर वह पतित-पावन है वा यह? (मु.ता.28.8.70 पृ.3 आदि)

12. कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं, उन पर तरस पड़ना चाहिए। देखते हैं, यह विकार बिगर, गंद खाने बिगर रह नहीं सकते हैं। फिर भी समझाते रहना चाहिए। नहीं माने तो समझो, हमारे कुल का नहीं है। कोशिश कर पियर घर, ससुर घर का कल्याण करना है। ऐसी भी चलन न हो जो कहे- यह तो हमसे बात भी नहीं करते, मुख मोड़ दिया है। नहीं! सबसे जोड़ना है। हम उनका भी कल्याण करें। बहुत रहमदिल बनना है। (मु.ता.28.10.75 पृ.3 मध्य)

13. बाबा ठेकेदार है ना! कितना बड़ा ठेका उठाया है पतित दुनिया को पावन बनाने का। तुम भी ठेका उठाओ। जब तक दो-पाँच को सन्देश न दिया है तब तक हम भोजन नहीं खावेंगे। पत्थर जैसे मनुष्यों को जब तक हमने हीरे जैसा बनने का रास्ता न बताया है तब तक खाना हराम है। (मु.ता.28.12.76 पृ.3 आदि)

14. भाषण ही सिर्फ़ सेवा का साधन नहीं है, अनुभव द्वारा भी प्रभावित कर सकते हो। अनुभव की टॉपिक सबसे ज़्यादा अट्रैक्ट करने वाली होती है। (अ.वा.1.2.79 पृ.260 अंत)

15. सिर्फ़ बोलना ही सर्विस नहीं होती; लेकिन अपना चेहरा सदा हर्षित हो। रूहानी चेहरा भी सेवा करता है। (अ.वा.11.4.85 पृ.16 आदि)

16. सतयुग में यह रावण होता नहीं। गाया जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। यहाँ है सम्पूर्ण विकारी। यह समझाना तो बहुत सहज है। हिम्मत चाहिए। कहाँ भी जाकर समझावें। यह भी लिखा हुआ है- हनुमान सत्संग में पिछाड़ी में जूत्तियों में जाकर बैठता था। तो महावीर जो होंगे, वह कहाँ भी जाकर युक्ति से सुनेंगे- देखें, क्या बोलते हैं? तुम कहाँ भी वेश बदल जा सकते हो। बाबा भी बहुरूपी है ना! कपड़े बदलने वाले बहुरूपी बहुत होते हैं, कब कौन-सी ड्रेस, कब कौन-सी पहन भीख माँगने जाते हैं। तो तुम भी जो महावीर हो, ड्रेस बदलकर कहाँ भी जाकर सुनो। फिर बात भी करनी है- हमको यह समझ में नहीं आता है कि भगवान कौन है?..... भगवान तो नई दुनिया रचने वाला है। हम उनको ढूँढ़ रहे हैं। युक्ति से प्रश्न पूछ फिर खुलना चाहिए। हम गुप्त वेश में आए थे। इसमें कोई कुछ भी करेंगे नहीं। तुम संन्यासियों के झुण्ड में भी जा सकते हो; परन्तु वेश बदलना पड़े। ब्र०कु० सफेद पोशधारी मशहूर हो गई हैं। तुम ड्रेस बदल कहाँ भी जा सकते हो उनका कल्याण करने। बाबा भी गुप्त वेश में तुम्हारा कल्याण कर रहे हैं। तुम फिर इस स्थूल देश में ड्रेस बदलकर जाओ कल्याण करने। मन्दिरों आदि में कहाँ भी निमन्त्रण मिलता है तो जाकर समझाना है। (मु.ता.20.1.76 पृ.3 मध्य)

सेवा विदेश की

1. विदेश की सर्विस का मूल फाउण्डेशन ही यह है कि विदेश की आवाज़ द्वारा भारत के कुम्भकरण जागेंगे। विदेश सर्विस की एम-ऑब्जेक्ट यह है। विदेश का विदेश में दिखाया, यह कोई बड़ी बात नहीं है। उस लक्ष्य से विदेश की सेवा ड्रामा में नूँधी हुई है और अब तक भी कोई भी इनवेन्शन का आवाज़ विदेश से ही होता आया है। .....ऐसे ही यह ईश्वरीय प्रत्यक्षता की आवाज़ विदेश सर्विस ही भारत में नाम बाला करेगी। (अ.वा.2.8.75 पृ.72 मध्य)

2. अन्तिम समय में विदेश (की) सेवा को इतना महत्व क्यों दिया है? जबकि जाने वालों का भी संकल्प होता है कि ऐसे नाज़ुक व नज़दीक समय पर विदेश में क्यों भेजा जाता है? जबकि अंत में विदेश से भारत में ही आना है। फिर भी विदेश सेवा आगे बढ़ रही है।.....और यह भी जानते हैं कि अन्य मत-मतान्तरों का स्वर्ग में आने का पार्ट नहीं है; लेकिन जो ट्रान्सफर हो गए हैं व कन्वर्ट हो गए हैं, उन आत्माओं को अपने आदि धर्म में लाने के लिए (विदेश) भेजा जाता है, जो बहुत थोड़े होंगे। इसका मूल आधार व विदेश सर्विस की एम-ऑब्जेक्ट यह है कि विदेश द्वारा भारत

तक आवाज़ पहुँचने का राज़ ड्रामा में नूँधा हुआ है; इसलिए विदेश सर्विस को फर्स्ट चान्स दिया हुआ है। (अ.वा.2.8.75 पृ.73 आदि)

3. बच्चियाँ होशियार हो जाएँ तब फिर और-2 देशों में भी जा सकतीं। कितनी भाषाओं में चित्र बनाने पड़ेंगे। (मु.ता.31.12.76 पृ.3 अंत)

सेवा विश्व की

1. सेवा को विश्व-कल्याण के अर्पण करते चलो। वैसे भी भक्ति में जो गुप्त दानी, पुण्य-आत्माएँ होती हैं, वो यही संकल्प करती हैं कि सर्व के भले प्रति हो! मेरे प्रति हो, मुझे फल मिले, नहीं, सर्व को फल मिले, सर्व की सेवा में अर्पण हो। ..... सर्व के कल्याण की बैंक में जमा करते चलो। (अ.वा.22.2.86 पृ.208 अंत)

2. अब यह प्रयत्न करो- दिन-रात, संकल्प, सेकेण्ड विश्व के कर्तव्य में वा सेवा में जाए। (अ.वा.21.6.72 पृ.314 आदि)

3. जिनको विश्व-महाराजन बनना है, उनका पुरुषार्थ सिर्फ अपने प्रति नहीं होगा। अपने जीवन में आने वाले विघ्न वा परीक्षाओं को पास करना- वह तो बहुत कॉमन है; लेकिन जो विश्व-महाराजन बनने वाले हैं, उनके पास अभी से ही स्टॉक भरपूर होगा, जो कि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। ..... एक संकल्प भी अपने प्रति न जाए बल्कि विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। (अ.वा.13.4.73 पृ.29 मध्यांत, 30 आदि)

4. विश्व-कल्याणकारी के ऊपर कितना कार्य है! स्वप्न में भी फ्री नहीं हो सकते। स्वप्न में भी सेवा ही दिखाई दे, इसको कहा जाता है- फुल बिज़ी; क्योंकि सारे दिन का आधार स्वप्न होता है। जो दिन-रात सेवा में बिज़ी रहते हैं, उनका स्वप्न भी सेवा के अर्थ होगा। स्वप्न में भी कई नई-2 बातें, सेवा के प्लैन व तरीके दिखाई दे सकते हैं। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 आदि)

5. विश्व-कल्याणकारी का अर्थ ही है- विश्व के आधारमूर्त। ज़रा भी अलबेलापन विश्व को अलबेला बना देगा। इतना अटेन्शन रहे। (अ.वा.26.12.79 पृ.154 मध्य)

6. स्वयं की कमज़ोरी प्रति व स्वयं के पुरुषार्थ के प्रति वस्तु लगाना, यह जैसे कि अमानत में खयानत हो जाती है। ऐसा महीन पुरुषार्थ महारथी की निशानी है। महारथियों को तो अब अपना सब-कुछ विश्व के कल्याण में लगाना है तब तो महादानी और वरदानी कहा जावेगा। महारथी की स्टेज का प्रभाव ऐसा रहेगा, जैसे कि लाइट हाउस का प्रभाव दूर से ही नज़र आता है और वह चारों तरफ़ फैलती है। (अ.वा.6.2.74 पृ.19 मध्य)

7. 1.मधुरता 2.नम्रता- इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व-कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जावेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। (अ.वा.30.1.79 पृ.251 मध्य)

8. अकल्याणकारी बोल कल्याण की भावना में ऐसे बदल जाएँ, जैसे अकल्याण का बोल था ही नहीं। ऐसी स्टेज को विश्व-कल्याणकारी स्टेज कहा जाता है। किसी का भी कोई अवगुण देखते हुए, एक सेकेण्ड में उस अवगुण को गुण में बदल दें, नुक़सान को फायदे में बदल दें, निंदा को स्तुति में बदल दें। ऐसी दृष्टि और स्मृति में रहने वाला ही विश्व-कल्याणकारी कहा जाता है। विश्व-कल्याणकारी ही नहीं; लेकिन स्वयं कल्याणकारी बनें। (अ.वा.5.1.77 पृ.2 अंत)

9. जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, लास्ट समय की स्थिति में उपराम और पर-उपकार- यह विशेषता सदा देखी। स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया- न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा पहले बच्चे। इसको कहते हैं- पर-उपकारी। (अ.वा.11.4.86 पृ.325 अंत, 326 आदि)

10. अति पाप-आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफ़रत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं; लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो, रहमदिल बन, तरस की भावना रखते हुए, सेवा का संबंध समझकर सेवा करेंगे और जितने ही होपलेस केस की सेवा करेंगे तो उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे, नामी-ग्रामी विश्व-कल्याणी गाए जाएँगे, पीस मेकर की प्राइज़ लेंगे। (अ.वा.31.12.70 पृ. 334 आदि)

11. कुछ ले करके कुछ देना, उसको परोपकारी नहीं कहा जाता। परोपकारी अर्थात् भिखारी को मालामाल बनाने वाले, अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले, गाली देने वाले को गले लगाने वाले। अपने परउपकारी की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना दे अर्थात् भिखारी को बादशाह बना दे। ..... कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा करें। ..... अगर कोई आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्माएँ, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान दे करके स्वयं निर्माण बनना- यही परोपकार है। (अ.वा.12.12.78 पृ.123 आदि)

12. विश्व का मालिक कौन बनेंगे? जो विश्व-कल्याणकारी होंगे। तो आप सब कौन हो? विश्व पर राज्य करने वाले या स्टेट पर? जो विश्व पर राज्य करने वाले होंगे, वह सदा बेहद की स्थिति में स्थित होंगे। .....बेहद के मालिक बनने वाले बेहद की सेवा में ज़रूर लगेंगे। हद निमित्तमात्र, सारा अटेन्शन बेहद की सेवा में। बेहद में जाकर सेवा करो, सर्विस में नया मोड़ लाओ। (अ.वा.1.2.79 पृ.261 मध्य)

13. दूसरों को देना अर्थात् स्वयं में भरना। .....सारे दिन में विश्व-कल्याण के प्रति कितना समय देते हो? .....यह मन के विघ्नों से युद्ध करने में ही समय देना, यह तो अपने प्रति व्यर्थ समय देना हुआ ना! ..... तो सदा यह चेक करो कि ज़्यादा-से-ज़्यादा तो क्या; लेकिन सदा ही समय और संकल्प विश्व-कल्याण प्रति लगाते हैं? ऐसा सदा विश्व-कल्याण के निमित्त समय और संकल्प लगाने वाले क्या बनेंगे? विश्व-महाराजन। अगर अपने प्रति ही समय लगाते रहते हैं तो विश्व-महाराजन कैसे बनेंगे? तो विश्व-महाराजन बनने के लिए विश्व-कल्याणकारी बनो। (अ.वा.21.6.72 पृ.314 अंत, 315)

14. उल्टे को उल्टा नहीं करो, यह है ही उल्टा- यह नहीं सोचो; लेकिन उल्टे को सुल्टा कैसे करूँ, यह सोचो। इसको कहा जाता है- कल्याण की भावना। श्रेष्ठ भाव, शुभ भावना से अपने व्यर्थ भाव-स्वभाव और दूसरों के भाव-स्वभाव को परिवर्तन करने की विजय प्राप्त करेंगे। समझा! (अ.वा.1.3.86 पृ.222 मध्य)

15. कोई को भी, किस समय भी, किस परिस्थिति में, किस स्थिति में देखते हो; लेकिन वृत्ति और भाव अगर यथार्थ है, तो आपके ऊपर उसका प्रभाव नहीं पड़ेगा। कल्याण की वृत्ति और भाव शुभचिन्तक का होना चाहिए। .....कोई क्या भी करे, कोई आपके विघ्न रूप बने; लेकिन आपका भाव ऐसे के ऊपर भी शुभचिन्तकपन का हो। ..... जिसका आपके प्रति शुभ भाव है, उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो, वह कोई बड़ी बात नहीं। कमाल ऐसी करनी चाहिए जो गायन हो। अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। (अ.वा.19.7.72 पृ.335 आदि)

16. महारथियों के हर कर्तव्य में विश्व-कल्याण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देगी। उसका प्रैक्टिकल सबूत व प्रमाण हर बात में अन्य आत्मा को आगे बढ़ाने के लिए पहले आप का पाठ पक्का होगा, पहले मैं नहीं। .....जिस आत्मा के प्रति जो संकल्प करेंगे या जो बोल बोलेंगे, वह उस आत्मा के प्रति वरदान हो जावेगा। (अ.वा.27.10.75 पृ.236 आदि)

सेवा व्यक्ति की

1. मुख्य जो हेड हो, पहले उनसे मिलना चाहिए। उन्हों से सारा अंत निकाल फिर बड़े गुरू से मिलना चाहिए। फिर उनको समझाना होता है। ..... बाबा युक्ति बहुत समझाते हैं। सेन्सिबुल बच्चे झट समझ जावेंगे कि हमको क्या करना है, कैसे अंत निकालना है। रहने आदि का पैसा भी देना है। सब जाँच करनी चाहिए। तुम लोग यहाँ क्यों छोड़कर बैठे हो? सरेण्डर हुए हो, फिर उनसे क्या मिलना है? जाँच करनी चाहिए- वह क्या बोलते हैं। (मु.ता.4.4.75 पृ.1 अंत)

सेवाधारी की निशानियाँ

1. हर एक अपने को ज़िम्मेवार समझे। इसका भाव यह नहीं समझना कि सभी ज़िम्मेवार हैं तो भाषण का चान्स मिलना चाहिए या विशेष कोई ड्यूटी मुझे मिले तब ज़िम्मेवार हैं। इनको ज़िम्मेवारी नहीं कहते। जहाँ भी हों, जो भी ड्यूटी मिली है, चाहे दूर बैठने की, चाहे स्टेज पर आने की- मुझे सहयोगी बनना ही है। इसको कहा जाता है- सारे विश्व में सेवा की रूहानियत की लहर फैलाना। (अ.वा.30.12.85 पृ.118 मध्य)

2. सेवा में भी अभिमान और अपमान का अलाय मिक्स न हो। इसको कहा जाता है- गोल्डन एज्ड सेवा। स्वभाव में भी ईर्ष्या, सिद्ध और ज़िद का भाव न हो। यह है अलाय। इस अलाय को समाप्त कर गोल्डन एज्ड स्वभाव वाले बनो। संस्कार में सदा 'हाँ जी'। जैसा समय, जैसी सेवा, वैसे स्वयं को मोल्ड करना है अर्थात् रियल गोल्ड बनना है। मुझे मोल्ड होना है। दूसरा करे तो मैं करूँ- यह ज़िद्द हो जाती है, यह रियल गोल्ड नहीं! .....संबंध में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, कल्याण की भावना हो, स्नेह की भावना हो, सहयोग की भावना हो। (अ.वा.6.1.86 पृ.135 मध्यांत)

3. सच्चे सेवाधारी वह जो सदा रूहानी दृष्टि से, रूहानी वृत्ति से रूहे गुलाब बन रूहों को खुश करने वाले हों। (अ.वा.18.2.84 पृ.140 मध्य)

4. सच्चे सेवाधारी की निशानी है- त्याग, नम्रता और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय, नशे में दृढ़ता। (अ.वा.9.4.86 पृ.317 आदि)

5. कभी भी कहाँ भी रहते हो, चलते हो, सदा अपने को शान्ति के दूत समझकर चलो।.....वह आग लगाएँ, आप पानी डालो। यही काम है ना! इसको कहते हैं सच्चे सेवाधारी। ..... शान्ति के मैसेन्जर मास्टर शान्ति दाता, मास्टर शक्ति दाता, यह स्मृति सदा रहती है ना! सदा अपने को इसी स्मृति से आगे बढ़ाते चलो। औरों को भी आगे बढ़ाओ, यही सेवा है। (अ.वा.9.4.86 पृ.320 आदि)

6. कभी कोई सेवाधारी रोते तो नहीं? मन में भी रोना होता है, सिर्फ़ आँखों का नहीं। तो रोने वाले तो नहीं हो ना! अच्छा, शिकायत करने वाले हो? बाप के आगे शिकायत करते हो? ऐसा मेरे से क्यों होता? मेरा ही ऐसा पार्ट क्यों है? मेरे ही संस्कार ऐसे क्यों हैं? मेरे को ही ऐसे जिज्ञासु क्यों मिले हैं या मेरे को ही ऐसा देश क्यों मिला है? - ऐसी शिकायत करने वाले तो नहीं? शिकायत माना भक्ति का अंश। कैसा भी हो; लेकिन परिवर्तन करना, यह सेवाधारियों का विशेष कर्तव्य है। चाहे देश है, चाहे जिज्ञासु हैं, चाहे अपने संस्कार हैं, चाहे साथी हैं, शिकायत के बजाय परिवर्तन करने को कार्य में लगाओ। (अ.वा.21.2.85 पृ.185 आदि)

7. जो सेवाधारी होते हैं, उन्हों के लिए हर स्थान पर सेवा है। कहाँ भी रहें, कहाँ भी जावें; लेकिन सेवाधारी को हर समय और हर स्थान पर सेवा ही दिखाई देगी और सेवा में ही लगे रहेंगे। घर को भी सेवा-स्थान समझकर रहेंगे। .....एक सेकेण्ड वा एक संकल्प भी सेवा के सिवाय नहीं जा सकता, इसको कहते हैं- सच्चा रूहानी सेवाधारी। (अ.वा.11.6.71 पृ.105 अंत, 106 आदि)

8. सच्चे सेवाधारी होते हैं, वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब तो सेवा करेंगे। (अ.वा.11.7.71 पृ.132 अंत)

9. जो जितना महान होगा उतना निर्मान होगा। महान आत्माएँ सदा अपने को ओबीडियेण्ट सर्वेण्ट ही अनुभव करती हैं। (अ.वा.18.3.81 पृ.64 मध्य)

10. अपने को बेहद के निमित्त सेवाधारी समझते हो? बेहद के सेवाधारी अर्थात् किसी भी मैं-पन के व मेरे-पन की हद में आने वाले नहीं। बेहद में न मैं है, न मेरा है। सब बाप का है, मैं भी बाप का तो सेवा भी बाप की। इसको कहते हैं- बेहद सेवा। (अ.वा.3.2.88 पृ.250 आदि)

11. जितना-2 अपने को सर्विस के बंधन में बाँधते जाएँगे तो दूसरे बंधन छूटते जाएँगे। आप ऐसे नहीं सोचो कि यह बंधन छूटे तो सर्विस में लग जाएँ।.....कोई भी कारण है तो उनको हल्का छोड़कर पहले सर्विस के मौके को आगे रखो। कर्तव्य को पहले रखना होता है। कारण होते रहेंगे; लेकिन कर्तव्य के बल से कारण ढीले पड़ जाएँगे। (अ.वा.7.6.70 पृ.262 अंत)

12. जो ऑलराउण्डर होगा वह एक तो सर्विस में रहेगा, दूसरा- स्वभाव व संस्कार में भी सभी से मिक्स हो जाने का उसमें विशेष गुण होगा, तीसरा- कोई भी स्थूल कार्य, जिसको कर्मणा कहा जाता है, उसी कर्मणा की सब्जेक्ट में भी जहाँ उसको जिस समय फिट करना चाहे, वहाँ ऐसे फिट हो जाए, जैसे कि बहुत समय से इसी कार्य में लगा हुआ है, कोई नया अनुभव न हो। हर कार्य में अति पुराना और जानने वाला दिखाई दे। जो तीनों ही बातों में जो हर समय फिट हो जाते व लग जाते हैं, उसको कहा जाता है- ऑलराउण्डर। (अ.वा.4.5.73 पृ.53 आदि)

13. सेवाधारी बनना अर्थात् सारे कल्प के लिए सदा सुखी बनना। (अ.वा.3.4.81 पृ.125 मध्य)

14. सेवाधारी का कर्तव्य क्या है? हर विशेषता को सेवा में लगाना। अगर आपकी विशेषता सेवा में नहीं लगती तो कभी भी वह विशेषता वृद्धि को प्राप्त नहीं होगी, उसी सीमा में ही रहेगी। इसलिए कई बच्चे ऐसा अनुभव भी करते हैं कि बाप के बन गए, रोज़ आ भी रहे हैं, पुरुषार्थ में भी चल रहे हैं, नियम भी निभा रहे हैं; लेकिन पुरुषार्थ में जो वृद्धि होनी चाहिए वह अनुभव नहीं होती। (अ.वा.11.12.85 पृ.86 मध्य)

15. बच्चों के प्रति भी हर आत्मा के अंदर से यह अनुभव के बोल निकलें कि यह भी बाप-समान सर्व के सहयोगी हैं। पर्सनल एक/दो के सहयोगी नहीं बनना। वह स्वार्थ के सहयोगी होंगे, हद के सहयोगी होंगे। सच्चे सहयोगी बेहद के सहयोगी हैं। (अ.वा.11.12.85 पृ.87 मध्य)

16. सेवाधारी का अर्थ ही है- सेवा में सदा उमंग-उत्साह लाना। स्वयं उमंग-उत्साह में रहने वाले, औरों को उमंग-उत्साह दिला सकते हैं। तो सदा प्रत्यक्ष रूप में उमंग-उत्साह दिखाई दे। ऐसे नहीं कि मैं अंदर में तो रहती हूँ; लेकिन बाहर नहीं दिखाई देता। गुप्त पुरुषार्थ और चीज़ है; लेकिन उमंग-उत्साह छिप नहीं सकता है। चेहरे पर सदा उमंग-उत्साह की झलक स्वतः दिखाई देगी। बोले न बोले, लेकिन चेहरा ही बोलेगा, झलक बोलेगी। ऐसे सेवाधारी हो? (अ.वा.15.1.86 पृ.160 अंत, 161 आदि)

17. कहाँ भी हैं, सेवा के बिना चैन नहीं हो सकती। सेवा ही चैन की निद्रा है।..... सेवा नहीं तो चैन की नींद नहीं। (अ.वा.20.2.86 पृ.204 मध्य)

18. सेवा के बिना चैन से सो नहीं सकते। स्वप्न भी सेवा के आते हैं ना! आँख खुली, बाबा से मिले, फिर सारा दिन बाप और सेवा। (अ.वा.18.1.84 पृ.120 मध्य)

19. जो सर्विसेबुल बच्चे हैं, उनका स्वभाव बहुत मीठा चाहिए। (मु.ता.29.3.89 पृ.3 अंत)

20. बच्चों को बाप से रास्ता मिला है तो उन बच्चों को सर्विस बिगर और कुछ अच्छा ही नहीं लगता है। ..... उनको पढ़ाने बिगर आराम नहीं आवेगा। प्रदर्शनी आदि में रात को 12 भी बज जाते हैं, तो भी खुशी होती है। थकावट होती है, गला ख़राब हो जाता है, तो भी खुशी में रहते हैं। ईश्वरीय सर्विस है ना! (रात्रि मु.ता.23.12.75 पृ.3 मध्य)

21. जो थकता नहीं है वह रुकता भी नहीं है, बढ़ता रहता है। ..... अकेले होते हैं तो थकते हैं। बोर हो जाते हैं तो थक जाते हैं; लेकिन जहाँ साथ हो वहाँ सदा ही उमंग-उत्साह होता है।.....तो आप सभी भी रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़ते रहना; क्योंकि बाप का साथ, ब्राह्मण परिवार का साथ कितना बढ़िया साथ है! (अ.वा.6.1.88 पृ.204 आदि)

22. सेवा का चान्स मिले तो करेंगे, नहीं, सदा चान्स है। करने वाले (सेवा) करें तो चान्स-ही-चान्स है। कितना बड़ा जंगल है। इसमें जितना जो करे उतना अपने लिए वर्तमान और भविष्य बनाता है। तो सदा के सेवाधारी हैं- यह लक्ष्य पक्का रहे। सेवा के बिना जीवन नहीं। मन्सा करो, वाणी से करो, कर्म से करो, सम्पर्क से करो; लेकिन सेवा ज़रूर करनी है। सेवा के बिना रह नहीं सकते- इसको कहते हैं 'सेवाधारी'। (अ.वा.1.1.86 पृ.130 अंत)

23. विशेष कार्य करने वाले को सब सहयोग भी मिल जाता है। स्वयं ही कोई टिकिट भी ऑफर कर लेंगे। शुरू-2 में जब आप सभी सेवा पर निकले थे तो सेवा कर फर्स्ट क्लास में सफर करते थे और अभी टिकेट भी लेते और सेकण्ड, थर्ड में आते। ऐसी कोई कम्पनी की सेवा करो, सब हो जाएगा। सेवाधारी को साधन भी मिल जाता है। (अ.वा.22.1.84 पृ.129 मध्य)

24. समर्पण करना और कराना, यही ब्राह्मणों का धंधा है। (अ.वा.24.1.70 पृ.185 आदि)

25. जो सर्विसेबुल हैं उनका हर संकल्प, हर शब्द, हर कर्म सर्विस ही करेगा। .....तो अपने को देखना है कि हमारी हर सेकेण्ड सर्विसेबुल चलन होती है? वा कहाँ डिससर्विस वाली चलन तो नहीं है? जब नाम सर्विसेबुल है तो कर्म भी ऐसा ही होना चाहिए। (अ.वा.28.9.69 पृ.111 मध्य)

26. सर्विस हो सकती है तो प्रबन्ध करना है। सच्चे दिल से, निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी है। बाबा कहते हैं, ऐसे बच्चों की हुण्डी मैं सकारता (भरता) हूँ। ड्रामा में नूँध है। (मु.ता.11.5.94 पृ.3 अंत)

27. सदा बाप के साथी बन सेवा करो। करावनहार बाप, निमित्त करनहार मैं हूँ, तो कभी भी सेवा हलचल में नहीं लाएगी। (अ.वा.14.12.87 पृ.170 अंत)

28. जैसे याद ब्राह्मण जीवन की खुराक है, ऐसे सेवा भी जीवन की खुराक है। बिना खुराक के कभी कोई रह सकता है क्या? लेकिन बैलेन्स ज़रूरी है। इतना भी ज़्यादा नहीं करो जो बुद्धि पर बोझ हो और इतना भी नहीं करो जो अलबेले हो जाओ। न बोझ हो, न अलबेलापन हो, इसको कहते हैं- बैलेन्स। (अ.वा.20.2.88 पृ.263 अंत)

29. आगे के लिए भी जैसे निरन्तर योगी का वरदान बाप द्वारा प्राप्त हुआ है, वैसे ही निरन्तर सेवाधारी। सोते हुए भी सेवा हो। सोते हुए भी कोई देखे तो आपके चेहरे से शान्ति, आनन्द के वायब्रेशन अनुभव करें। (अ.वा.24.1.78 पृ.41 अंत)

30. सर्विसएबुल बच्चों को सर्विस का कितना शौक रहता है, चक्कर लगाते रहते हैं। सर्विस न करते तो उनको रहमदिल, कल्याणकारी आदि कुछ भी नहीं कहेंगे; तुच्छ बुद्धि कहेंगे। (मु.ता.22.8.75 पृ.3 मध्यादि)

31. सेवा तो सभी करते हैं; लेकिन निर्विघ्न सेवा हो, इसी में नम्बर मिलते हैं। (अ.वा.20.11.85 पृ.50 मध्य)

32. कोई-2 सोचते हैं कि सेवा तो करनी ही पड़ेगी। जैसे लौकिक गवर्मेण्ट की ड्यूटी है,.....ऐसे इस ऑलमाइटी गवर्मेण्ट द्वारा ड्यूटी मिली हुई है- ऐसे समझ के सेवा करना, इसको सच्ची सेवा नहीं कहा जाता। ड्यूटी सिर्फ़ नहीं है; लेकिन ब्राह्मण-आत्माओं का

निजी संस्कार ही सेवा है। तो संस्कार स्वतः ही सच्ची सेवा के बिना रहने नहीं देते। (अ.वा.6.1.90 पृ.126 अंत)

33. जब बेहद के वैरागी बनेंगे तब बेहद की सर्विस कर सकेंगे। कहाँ भी लगाव न हो। अपने-आप से भी लगाव न लगाना है तो औरों की तो बात ही छोड़ो! (अ.वा.2.7.70 पृ.284 अंत)

34. बेहद की बात सोचना, बेहद परिवार से संबंध और स्नेह, सर्व स्थान अपने..., ऐसे को कहते हैं- बेहद का सर्विसेबुल। हद की सर्विस वाले को सर्विसेबुल नहीं कहेंगे। (अ.वा.11.7.70 पृ.289 अंत)

35. सर्विसेबुल जितना होगा वैसा आप-समान बनाएगा, फिर बाप-समान बनाएगा। (अ.वा.23.10.70 पृ.316 अंत)

36. नॉलेजफुल के साथ-2 पावरफुल भी बनना है, तब ही सर्विसेबुल बनेंगे। (अ.वा.9.12.70 पृ.330 अंत)

37. एक ने कहा, दूसरे ने माना- यह है सच्चे-2 स्नेह का रेस्पॉण्ड। ऐसे एग्ज़ाम्पल को देख और भी सम्पर्क में आने के लिए हिम्मत रखते हैं। संगठन भी सेवा का साधन बन जाता है। (अ.वा.19.3.81 पृ.74 मध्य)

38. सेवा के बिना यह ब्राह्मण जीवन खाली-सी लगती है। सेवा नहीं हो तो जैसे फ्री-2 है। (अ.वा.13.3.86 पृ.258 मध्य)

39. सेवा में रहने वाले की कहीं भी आसक्ति नहीं होती। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 अंत)

40. सेवा करने वाले त्याग और तपस्या-मूर्त होते हैं। ..... उन्हें शक्तियाँ देने वाला बाप और उनके द्वारा मिली हुई शक्तियाँ ही याद रहती हैं। ऐसे शक्ति अवतार ही मायाजीत बनते हैं। (अ.वा.20.10.75 पृ.207 अंत, 208 आदि)

41. जब तक त्याग नहीं तब तक सेवाधारी हो न सकेंगे। सेवाधारी बनने से त्याग सहज और स्वतः हो जावेगा। सदैव अपने को बिज़ी रखने का यही तरीका है। (अ.वा.28.7.71 पृ.150 अंत)

42. जो अच्छी सर्विस करते हैं वह कितने मीठे लगते हैं। न पढ़ने वाले उन्हों के आगे जाकर झाड़ू लगावेंगे। (मु.ता.12.10.75 पृ.2 मध्य)

43. सभी से तीखे जो सर्विस करते हैं, ज़रूर भक्ति भी जास्ती की है। (मु.ता.24.7.70 पृ.3 अंत)

44. बच्चों को शौक होता है- हम बाबा की सर्विस पर जाते हैं। तो बाप भी भीती देते हैं। बाप आए ही हैं सर्विस पर। सर्विस के लिए सब-कुछ है। (मु.ता.1.6.85 पृ.1 अंत)

45. जब भी कोई सेवार्थ जाते हो तो पहले चेक करो कि स्व-स्थिति में स्थित होकर जा रहे हैं? हलचल में तो नहीं जा रहे हैं? अगर स्वयं हलचल में होंगे तो सुनने वाले भी एकाग्र नहीं होते, अनुभव नहीं करते। (अ.वा.26.12.79 पृ.156 आदि)

46. सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार-सागर-मंथन करना चाहिए और बहुत बहादुर होना चाहिए। (मु.ता.11.3.87 पृ.3 मध्य)

शूद्र कुमारी

1. बड़ी-2 ब्राह्मणियों की आपस में ही नहीं बनती। मतभेद के कारण आपस में बात भी नहीं करतीं। देह-अभिमान बहुत है। रामराज्य में जाने लिए तो लायक बनना पड़े ना! यह है ईश्वरीय राज्य। इसमें आसुरी स्वभाव वाले रह न सकें। उनको ब्रह्माकुमारी कहलाने का भी हक नहीं। (मु.ता.18.11.72 पृ.3 अंत)

2. कोई-2 ब्राह्मणियाँ गुस्सा करती हैं, कोई बच्ची बीमार है तो उनकी दवाई नहीं करतीं, खाना नहीं पूरा खिलातीं। बाबा मुरली से सभी को समझाते हैं, खबरदार करते हैं- ऐसे-2 कर्तव्य करने से गोया तुम आसुरी सम्प्रदाय हो। (मु.ता.31.7.70 पृ.2 आदि)

3. कोई-2 हेड ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं, दास-दासियाँ रखती हैं- बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो। उनको बाबा देह-अभिमानी समझते हैं। बाबा कितना बड़ा निरअहंकारी है। बाप का रथ भी कितना निरअहंकारी है। बच्चों को बड़ा-2 म्यूज़ियम मिल जाता है तो बस हुकुम चलाना शुरू कर देते हैं। जैसे रानी होकर चलती हैं। (मु.ता.12.11.70 पृ.2 अंत)

4. ब्राह्मणी पूरी मेहनत करती नहीं है, बहुत आराम से सेण्टर्स पर रहती है, खाती-पीती है, बर्तन मँजवाती है, कपड़े धुलवाती है। बाबा कहते हैं- यहाँ पर सर्विस लेंगे तो भविष्य में दासी बनकर सर्विस देनी पड़ेगी। .....दूसरों से सेवा लोगी तो तुम्हारे ऊपर ही कर्ज़ा चढ़ेगा। (मु.ता.13.10.73 पृ.4 अंत)

5. ऐसी भी बहुत ब्रह्माकुमारियाँ हैं जो भक्तिमार्ग बैठ सिखलाती हैं। जैसे साधु-संत करते हैं। कृष्ण की मूर्ति रख उनको माथा टेका। ब्रह्माकुमारियों के आगे भी माथा टेका। कुछ-न-कुछ आमदनी मिली। बैठकर खाते। कितनी सत्यानाश कर रही हैं! चढ़ने के बदली और ही गिरते हैं। (मु.ता.11.4.72 पृ.2 अंत)

6. ब्राह्मण जो हैं वह (जड़ चित्रों के) मन्दिर आदि नहीं बनावेंगे। शूद्र लोग मन्दिर बनावेंगे, चित्र आदि रखेंगे। (मु.ता.25.3.76 पृ.2 आदि)

7. कोई-2 हेड बनकर रहती हैं तो बड़ा नशा चढ़ जाता। भभके से बहुत रहती हैं। बड़े आदमी से भी तू-2 कर बात करती हैं। बस, उनको दीदी-2 कहते हैं तो उसमें ही खुश हो जातीं, योग कुछ भी नहीं। नशा चढ़ जाता है- हम दीदी हैं! ऐसे नहीं समझतीं, यह मेरे से तीखा है। (मु.ता.26.3.75 पृ.2 मध्य)

स्नेह

1. जहाँ स्नेह होता है वहाँ याद स्वतः, सहज आती ही है। स्नेही को भुलाना मुश्किल होता है। ..... अगर ज्ञान है और स्नेह नहीं है तो वह रूखा ज्ञान है।..... दिमाग से याद करने वालों को याद में, सेवा में, धारणा में मेहनत करनी पड़ती है। वह मेहनत का फल खाते हैं और वह मुहब्बत का फल खाते हैं। जहाँ स्नेह नहीं, दिमागी ज्ञान है, तो ज्ञान की बातों में भी क्यों, क्या, कैसे ..... दिमाग लड़ता रहेगा और लड़ाई लगती रहेगी, अपने-आप से। व्यर्थ संकल्प ज़्यादा चलेंगे। (अ.वा.6.1.88 पृ.200 मध्य)

2. अपनी स्नेह की डोर से बापदादा को भी बाँधने वाले, अव्यक्त को भी आप-समान व्यक्त में लाने वाले, नए-2 बच्चे व साकारी देश में दूर-देशी बच्चे जो हैं, उन्हों के प्रति विशेष मिलने के लिए बापदादा को भी आना पड़ा है, तो शक्तिशाली कौन हुए, बाँधने वाले या बँधने वाले? (अ.वा.18.1.75 पृ.20 अंत)

3. सदा सर्व सम्बन्धों से प्रीति की रीति प्रैक्टिकल में निभाई है? एक सम्बन्ध की भी प्रीति निभाने में कमी नहीं। स्नेह का प्रत्यक्ष रिटर्न अपने स्नेही मूर्त द्वारा कितनों को (डाइरैक्ट) बाप का स्नेही बनाया है? सिर्फ ज्ञान के स्नेही नहीं या प्यूरिटी के स्नेही नहीं या बच्चों के जीवन-परिवर्तन के स्नेही नहीं या श्रेष्ठ आत्माओं के स्नेही नहीं; लेकिन डायरैक्ट बाप के स्नेही। (अ.वा.30.1.80 पृ.254 अंत, 255 आदि)

4. जिससे स्नेह होता है, स्नेह अर्थात् सम्पर्क। जिससे सम्पर्क होता है तो उन जैसे संस्कार ज़रूर भरेंगे। संस्कार मिलने के आधार से ही सम्पर्क होता है ना! तो अगर बाप के स्नेही हो, सम्पर्क भी है, तो संस्कार क्यों नहीं मिलते? (अ.वा.18.6.70 पृ.270 अंत)

5. स्नेह की वर्षा दुश्मन को भी दोस्त बना देगी। चाहे कोई आपको मान दे वा माने न माने; लेकिन आप सदा स्वमान में रह औरों को स्नेही दृष्टि से, स्नेही वृत्ति से आत्मिक मान देते चलो। वह माने न माने आपको; लेकिन आप उसको मीठा भाई, मीठी बहन मानते चलो। ..... वह

पत्थर फेंके, आप रत्न दो, आप भी पत्थर न फेंको; क्योंकि आप रत्नागर बाप के बच्चे हो। ..... भिखारी नहीं हो, जो सोचो- वह दे तब दूँ। यह भिखारी के संस्कार हैं। दाता के बच्चे कभी लेने का हाथ नहीं फैलाते। बुद्धि से भी संकल्प करना कि यह करे तो मैं करूँ, यह स्नेह दे तो मैं स्नेह दूँ। ..... यह भी हाथ फैलाना है। यह भी रॉयल भिखारीपन है। (अ.वा.16.2.86 पृ.187 मध्यांत, 188 आदि)

6. बाप से प्यार की निशानी यह है कि सभी ब्राह्मण आत्माएँ प्यारी लगेंगी। हर ब्राह्मण प्यारा लगना माना बाप से प्यार है। माला में एक/दो के सम्बन्ध में तो ब्राह्मण ही आएँगे, बाप तो रिटायर हो देखेंगे। (अ.वा.1.3.86 पृ.225 मध्यांत)

7. सेवा का पहला सफलता का स्वरूप हुआ- स्नेह। जब स्नेह में बाप के बन जाते हो, तो फिर कोई भी ज्ञान की प्वॉइण्ट सहज स्पष्ट होती जाती। जो स्नेह में नहीं आता, वह सिर्फ ज्ञान को धारण कर आगे बढ़ने में समय भी लेता, मेहनत भी लेता; क्योंकि उनकी वृत्ति क्यों, क्या, ऐसा कैसे- इसमें ज़्यादा चली जाती और स्नेह में जब लवलीन हो जाते, तो स्नेह के कारण बाप का हर बोल स्नेही लगता। .....जो प्यार में खो जाते हैं, तो जिससे प्यार है, उसको वह जो बोलेगा, उनको वह प्यार ही दिखाई देगा। तो सेवा का मूल आधार है- स्नेह। (अ.वा.4.3.86 पृ.229 आदि)

8. जो सदा सन्तुष्ट रहता है, उससे सभी का स्वतः ही दिल का प्यार होता है, बाहर का प्यार नहीं। एक होता है किसको राज़ी करने के लिए बाहर का प्यार करना, एक होता है दिल का प्यार। नाराज़ न हो, उसके लिए भी प्यार करना पड़ता है; लेकिन वह प्यार को सदा लेने का पात्र नहीं बनता। (अ.वा.18.3.85 पृ.244 मध्य)

9. जो सदा बाप के प्यारे हैं, उसकी निशानी है- स्वतः याद। प्यारी चीज़ स्वतः सदा याद आती है ना! तो यह कल्प-2 की प्रिय चीज़ है।.....तो ऐसी प्रिय वस्तु को कैसे भूल सकते? भूलते तब हो जब बाप से भी अधिक कोई व्यक्ति या वस्तु प्रिय समझने लगते हो। (अ.वा.1.11.81 पृ.103 मध्यांत)

ट्रैफिक कंट्रोल

1. थकावट मिटाने का विशेष साधन हर घण्टे वा दो घण्टे में एक मिनट भी शक्तिशाली याद का अवश्य निकालो। .....बीच-2 में एक मिनट भी अगर शक्तिशाली याद का निकालो तो उसमें ए, बी, सी-सब विटामिन्स आ जाएँगे। (अ.वा.20.2.88. पृ.262 मध्य)

2. ट्रैफिक को भी रोक कर 3 मिनट साइलेन्स की प्रैक्टिस कराते हैं। ..... आप भी कोई कार्य करते हो वा बात करते हो तो बीच-2 में यह संकल्पों की ट्रैफिक को स्टॉप करना चाहिए। एक

मिनट के लिए भी मन के संकल्पों को चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को बीच-2 में रोक कर भी यह प्रैक्टिस करना चाहिए। (अ.वा.24.7.70 पृ.290 अंत, 291 आदि)

3. ऐसी स्टेज हो जिसमें साकार शरीर भी आकारी रूप में अनुभव हो। जैसे आकार रूप में देखा, साकार शरीर भी आकारी फरिश्ता रूप अनुभव किया ना! (अ.वा.10.12.78 पृ.116 आदि)

4. अभी-2 किसी भी परिस्थिति व वातावरण में ऑर्डर मिले व श्रीमत मिले कि एक सेकेण्ड में सर्व कर्मेन्द्रियों की अधीनता से न्यारे हो कर्मेन्द्रिय-जीत बन एक समर्थ संकल्प में स्थित हो जाओ तो .....। बाप ने बोला और बच्चों की स्थिति ऐसी ही उस घड़ी बन जाए, उसको कहते हैं- एवर रेडी। (अ.वा.1.9.75 पृ.86 मध्य)

5. एक सेकेण्ड में विस्तार से सार में चले जाएँ और एक सेकेण्ड में सार से विस्तार में आ जाएँ- यही है वण्डरफुल खेल। (अ.वा.13.1.78 पृ.23 अंत)

6. साथ में रहते हुए भी निर्लेप। आत्मा निर्लेप नहीं है; लेकिन आत्म-अभिमानी स्टेज निर्लेप है। (अ.वा.2.10.81 पृ.12 आदि)

7. बापदादा भी तो आवाज़ से परे जाएँगे या आवाज़ में ही आएँगे? प्रैक्टिस करो आवाज़ में कम आने की।..... पहला गेट तो आवाज़ से परे जाने का खुलना है ना! .....इसका उद्घाटन बापदादा अकेले करेंगे या साथ में करेंगे? (अ.वा.4.10.81 पृ.17 आदि)

8. सदा विजयी बनने वाले की विशेषता यही होगी- एक सेकेंड में अपने संकल्प को स्टॉप कर लेना। कोई भी स्थूल कार्य व ज्ञान के मनन करने में बहुत बिज़ी हैं; लेकिन ऐसे समय में भी अपने-आप को एक सेकेंड में स्टॉप कर लेना। (अ.वा.28.6.73 पृ.112 आदि)

ट्रस्टी (न्यासी, अमानती, धरोहर वाला)

1. दिलवाड़ा मन्दिर के जो ट्रस्टी हैं, वह कुछ भी नहीं जानते। उनको भी ढूँढ़ना चाहिए। शायद अहमदाबाद में रहते हैं। उनको किताब देना चाहिए। आओ तो हम आपको दिलवाड़ा मन्दिर का राज़ समझावें। (मु.ता.5.7.71 पृ.4 अंत)

2. बहुत कहते हैं- हमारा बच्चों में मोह है। वह तो निकालना ही होगा। मोह रखना है एक में। बाकी तो ट्रस्टी होकर सम्भालना है। (मु.ता.1.10.71 पृ.3 आदि)

3. देना भी कुछ नहीं है, सिर्फ वारना है- बाबा, यह सब-कुछ आपका है। अच्छा बच्चे, ट्रस्टी हो सम्भालो। शिवबाबा का समझ खावेंगे तो वो जैसे शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो।.....

तुम बच्चों को अपना घर-बार भी सम्भालना है; परन्तु अपन को ट्रस्टी समझ। (मु.ता.14.4.77 पृ.1 अंत)

4. ट्रस्टी अर्थात डबल लाइट; गृहस्थी अर्थात् बोझ वाला। (अ.वा.30.1.79 पृ.254 मध्यादि)

5. ऐसे नहीं कह सकते कि सेवाधारी बन सेवाकेन्द्र पर रहना, यही श्रेष्ठ त्याग वा भाग्य है। ट्रस्टी आत्माएँ भी त्याग वृत्ति द्वारा माला में अच्छा नं. ले सकती हैं। (अ.वा.1.4.82 पृ.331 अंत, 332 आदि)

6. ट्रस्टी अर्थात् सदा हल्का, गृहस्थी अर्थात् सदा बोझ वाला। गृहस्थी होंगे तो उतरती कला में जाएँगे। .....ट्रस्टी सदा बेफिकर बादशाह होते अर्थात् फिकर से फारिग होते हैं, उन्हें रूहानी फखुर रहता है कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं।..... ट्रस्टी समझेंगे तो फुलस्टॉप आ जाता। फुलस्टॉप अर्थात् पावरफुल स्टेज का अनुभव। (अ.वा.21.12.78 पृ.147 मध्य)

7. मेरी प्रवृत्ति है या मेरी युगल है, यह स्मृति भी राँग है। ..... यह जो हद की रचना बापदादा ने ट्रस्ट बनाकर सम्भालने के लिए दी है, वह मेरी रचना नहीं; लेकिन बापदादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ। ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं होता, ट्रस्टी निमित्त होता है। (अ.वा.12.7.72 पृ.322 अंत)

8. सबसे रॉयल रूप का बोझ है- यह मेरी ज़िम्मेवारी है। इसको तो निभाना ही पड़ेगा। ..... ऐसे गृहस्थी में फँसने के कारण ट्रस्टीपन भूल जाते हो। यह तन भी मेरा नहीं, तन का भी ट्रस्टी हूँ। तो ट्रस्टी मालिक के बिगर किसी भी वस्तु को अपने प्रति यूज़ नहीं कर सकते हैं।..... इन कर्मेन्द्रियों द्वारा एक का ही रस लेना है। तो फिर अनेक कर्मेन्द्रियों द्वारा भिन्न-2 रस क्यों लेते हो? तो लौकिक व अलौकिक प्रवृत्ति में गृहस्थी बन जाते हो।..... सब (शिव) बाप की ज़िम्मेवारी है, मेरी ज़िम्मेवारी नहीं- इस स्मृति से हल्के बन जाओ, तो फिर जो सोचेंगे वही होगा अर्थात् हाई जम्प लगावेंगे। (अ.वा.20.10.75 पृ.211 अंत, 212)

9. अगर ट्रस्टी बन जाते तो न्यारे और प्यारे होने से एकरस हो जाते।..... ज़रा भी मेरापन है तो मेरा माना गृहस्थीपन। जहाँ मेरापन होगा वहाँ ममता होगी। ममता वाले को गृहस्थी कहेंगे, ट्रस्टी नहीं। (अ.वा.12.10.81 पृ.41 अंत, 42 आदि)

10. तन के और मन के ट्रस्टी बनो। सब बाप की ज़िम्मेवारी है, मेरी ज़िम्मेवारी नहीं। (अ.वा.20.10.75 पृ.212 अंत)

11. जो ट्रस्टी होगा उसका विशेष लक्षण सदैव स्वयं को हर बात में हल्का अनुभव करेगा।.....जब (शिव) बाप के बने तो तन-मन-धन सहित बाप के बने ना! सब बाप को दिया ना! जब दे दिया तो अपना कहाँ से रहा? .....ट्रस्टी अर्थात् मेरापन नहीं। ..... ट्रस्टी बन्धन वाला नहीं होता, स्वतन्त्र आत्मा होता। किसी भी आकर्षण में परतन्त्र होना भी ट्रस्टीपन नहीं, ट्रस्टी माना ही स्वतन्त्र। (अ.वा.5.6.77 पृ.215 अंत, 216 आदि)

12. थोड़ा सेण्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? ..... ऐसा पेपर आवे तो नष्टामोहा हैं? ..... यह अलौकिक सेवा का सम्बन्ध, इसमें यदि आपका मोह होगा तो आने वाले स्टूडेण्ट्स इस पर वाणी चलावेंगे! (अ.वा.24.10.75 पृ.234 आदि)

13. प्रवृत्ति में भी रूहानियत के कारण अमानत समझकर चलेंगे तो मेरापन सहज ही समाप्त हो जाएगा। अमानत में कभी मेरापन नहीं होता है। मेरेपन में ही मोह के साथ-2 अन्य विकारों की भी प्रवेशता होती है। (अ.वा.24.10.75 पृ.221 मध्य)

त्याग

1. त्याग तपस्या-मूर्त ज़रूर बनावेगा। जहाँ त्याग और तपस्या खत्म, वहाँ सेवा भी खत्म। ..... मैं टीचर हूँ, मैं इन्चार्ज हूँ, मैं ज्ञानी हूँ या योगी हूँ- यह स्वीकार करना, इसको भी त्याग नहीं कहेंगे। दूसरा भले ही कहे; परंतु स्वयं को स्वयं न कहे। अगर स्वयं को स्वयं कहते हैं तो इसको भी स्व-अभिमान ही कहेंगे। ..... त्याग का मतलब यह नहीं कि सम्बन्ध छोड़ यहाँ आकर बैठे, नहीं! महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग- यह है त्याग। (अ.वा.20.10.75 पृ.205 मध्य, 206 मध्य)

2. जो किसी भी बात का बिना स्वार्थ के दिल से त्याग करता है, उसका भाग्य बहुत होता। स्वार्थ के त्याग का भाग्य नहीं होता; निःस्वार्थ त्याग का भाग्य बहुत बड़ा है। बापदादा तो सभी बच्चों को एक/दो से आगे देखते हैं। (अ.वा.31.3.86 पृ.304 आदि)

3. साकार ब्रह्मा का मुख्य संस्कार कौन-सा था? ..... उनका मुख्य संस्कार था- सर्वस्व त्यागी। निरअहंकारी का मतलब ही है- सर्वस्व त्यागी। अपना सभी कुछ त्याग कर लेते हैं। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को न देखना, यह भी त्याग है।..... सर्वस्व त्यागी अर्थात देह के भान का भी त्यागी।.....इस त्याग से मुख्य गुण कौन-से आते हैं? सरलता और सहनशीलता। (अ.वा.17.4.69 पृ.52 आदि)

4. त्याग किया और ब्राह्मण बने; लेकिन त्याग की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कहने में तो सभी एक बात कहते कि तन, मन, धन, सम्बन्ध, सबका त्याग कर लिया; लेकिन तन का त्याग अर्थात् देह के

भान का त्याग। तो देह के भान का त्याग हो गया है वा हो रहा है? त्याग का अर्थ है- किसी भी चीज़ को वा बात को छोड़ दिया, अपने-पन से किनारा कर लिया, अपना अधिकार समाप्त हुआ। जिसके प्रति त्याग किया, वह वस्तु उसकी हो गई। जिस बात का त्याग किया, उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते। ..... तो त्याग किए हुए पुराने घर में फिर से वापिस तो नहीं आते हो? वायदा क्या किया है? तन भी तेरा कहा वा सिर्फ मन तेरा कहा? पहला शब्द 'तन' आता है। जैसे तन, मन, धन कहते हो, देह और देह के सम्बंध कहते हो, तो पहला त्याग क्या हुआ? इस पुराने देह के भान से विस्मृति अर्थात् किनारा। (अ.वा.3.4.82. पृ.336 आदि, 337 आदि)

यू.पी.

1. यू.पी. वाले क्या कमाल दिखाएँगे? यू.पी. की विशेषता क्या है? तीर्थ भी बहुत हैं, नदियाँ भी बहुत हैं, जगतगुरु भी वहाँ ही हैं। चार कोने में चार जगतगुरु हैं ना! महामण्डलेश्वर यू.पी. में ज्यादा हैं। हरि का द्वार यू.पी. का विशेष है। तो हरि का द्वार अर्थात् हरि के पास जाने का द्वार बताने वाले सेवाधारी यू.पी. में ज्यादा होने चाहिए। जैसे तीर्थ-स्थान के कारण यू.पी. में पण्डे बहुत हैं। वह तो खाने-पीने वाले हैं; लेकिन यह हैं सच्चा रास्ता बताने वाले रूहानी सेवाधारी पंडे, जो बाप से मिलन मनाने वाले हैं, बाप के समीप लाने वाले हैं। ऐसे पाण्डव सो पण्डे यू.पी. में विशेष हैं। (अ.वा.17.4.84 पृ.249 अंत, 250 आदि)

2. सदा अपने को विश्व के आगे एक यथार्थ रास्ता दिखाने वाले रूहानी पण्डे समझते हो? पण्डों का काम क्या है? यू.पी. में पण्डे बहुत होते हैं ना! वह पण्डे क्या करते और आप क्या करते? वह कौन-सी यात्रा कराते और आप कौन-सी यात्रा कराते हो? आप ऐसी यात्रा कराते जो जन्म-2 के लिए यात्रा करने से छूट जाएँगे और वह बार-2 यात्रा करते रहेंगे। तो सदा के लिए मुक्ति और जीवनमुक्ति की मंज़िल पर पहुँचाने वाले पण्डे हो। .....जैसे बाप का कार्य है, बाप ने रास्ता दिखाया ना, वैसे बच्चों का भी वही कार्य। ..... रास्ते के बीच जो साइडसीन आती है, उसमें रुक तो नहीं जाते हो? क्योंकि माया साइडसीन के रूप में रोकने की कोशिश करती है.....; लेकिन पक्के यात्री रुकते नहीं, मंज़िल पर पहुँच जाते हैं। चाहे आँधी हो, तूफान हो, मंज़िल पर पहुँचने व पहुँचाने वाले हो ना! (अ.वा.15.4.81 पृ.161 अंत, 162 आदि)

3. नदियों के किनारे पर यू.पी. ज्यादा है। जमुना नदी के किनारे पर राजधानी और रास दिखाते हैं; लेकिन यू.पी. की पतित-पावनी मशहूर है यानी यू.पी. को सेवा का स्थान दिखाया है। तो ऐसा कोई यू.पी. से निकलेगा ज़रूर जो अनेकों की सेवा के निमित्त बने। .....ऐसे यू.पी. से भी कोई निकल आएगा, जो एक से अनेकों की सेवा हो जाएगी। ..... अभी एकदम बड़ा वी.आई.पी. नहीं निकला है। अभी तक जो वी.आई.पी. निकले हैं, उनसे ज्यादा नामी-ग्रामी तो वही विदेश का कहेंगे ना, जो प्रैक्टिकल अनेकों को सन्देश दिलाने के निमित्त बन रहे हैं। भारत

भी आगे जा सकता है; लेकिन अभी की बात है। आखिर जय-जयकार तो भारत में ही होनी है ना! विदेश से भी जय-जयकार के नारे लगाते-2 पहुँचेंगे तो भारत में ही ना! .....विदेश इस समय रेस में आगे जा रहा है। अभी की बात है, कल दूसरा भी बदल सकता है।.....यू.पी. का कोई वी.आई.पी. लाओ। पतित-पावनी कोई को पावन करके छू मंत्र करो। (अ.वा.1.11.81 पृ.105 मध्य)

4. यू.पी. की विशेषता है, जैसे भक्ति के तीर्थस्थान यू.पी. में बहुत हैं, वैसे ज्ञान के सेवाकेन्द्रों का विस्तार भी अच्छा कर रहे हैं। यू.पी. में भक्त-आत्माएँ भी बहुत हैं। तो मास्टर भगवान! अब भक्तों की पुकार सुन और भी जल्दी-2 भक्ति का फल उनको दो, दे रहे हैं; लेकिन और भी स्पीड को बढ़ाओ। .....यू.पी. का कौरव गवर्मेंट के नक्शे में भी विस्तार है। एरिया बहुत लम्बी है। ऐसे ही पाण्डव गवर्मेण्ट के नक्शे में सेवा की एरिया सबसे नं॰ वन करके दिखाओ। विशेष इस वर्ष में रहे हुए गुप्त वारिसों को प्रत्यक्ष करो। अब तक जो किया है वह बहुत अच्छा किया है, अभी और भी चारों ओर की आत्माएँ वन्स मोर करें, वाह-2 की ताली बजाएँ। ऐसा विशेष कार्य भी यू.पी. वाले करेंगे। अभी और भी ज्यादा ज्ञान-स्थान बनाओ। तीर्थ-स्थानों से ज्ञान-स्थान बनाते जाओ। (अ.वा.12.12.79 पृ.110 मध्य)

5. यू.पी. की भूमि विशेष पावन-भूमि गाई हुई है। पावन करने वाली भक्तिमार्ग की गंगा नदी भी वहाँ है और भक्ति के हिसाब से कृष्ण की भूमि भी यू.पी. में ही है। भूमि की महिमा बहुत है। कृष्णलीला जन्मभूमि देखनी होगी तो भी यू.पी. में ही जाएँगे। तो यू.पी वालों की विशेषता है, सदा पावन बन और पावन बनाने की विशेषता सम्पन्न है। जैसे बाप की महिमा है- पतित-पावन..., यू.पी. वालों की भी महिमा बाप-समान है। पतित-पावनी आत्माएँ हो। भाग्य का सितारा चमक रहा है। ऐसे भाग्यवान स्थान और स्थिति, दोनों की महिमा है। सदा पावन- यह है स्थिति की महिमा। तो ऐसे भाग्यवान अपने को समझते हो? सदा अपने भाग्य को देख हर्षित होते, स्वयं भी सदा हर्षित और दूसरों को भी हर्षित बनाते चलो; क्योंकि हर्षितमुख स्वतः ही आकर्षण-मूर्त होते हैं। जैसे स्थूल नदी अपनी तरफ खींचती है ना, खिंचकर यात्री जाते हैं। चाहे कितना भी कष्ट उठाना पड़े, फिर भी पावन होने का आकर्षण खींच लेता है। तो यह पावन बनाने के कार्य का यादगार यू.पी. में है। ऐसे ही हर्षित और आकर्षित-मूर्त बनना है। (अ.वा.5.10.87 पृ.71 मध्य)

6. यू.पी. को धर्मयुद्ध का खेल दिखाना चाहिए। (अ.वा.24.12.79 पृ.146 अंत)

योग से प्राप्ति

1. तुम याद मे रहेंगे तो कोई भी तुम्हारे सामने बुरे विचार से आवेंगे, तो उनको भयंकर साक्षात्कार हो जावेगा और झट भाग जावेगा। (मु.ता.26.2.76 पृ.2 अंत)

2. योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो; बाहुबल से कोई विश्व का मालिक बन न सके। (रात्रि मु.ता.21.8.73 अंत)

3. अरे, योग में रहेंगे तो दर्द आदि भी कम होगा। योग ही नहीं तो बीमारी कहाँ से छूटे? ..... मात-पिता जो पावन बनते हैं, वही फिर सबसे जास्ती पतित बनते हैं। उनको तो बहुत भोगना भोगनी पड़े; परन्तु योग में रहने के कारण बीमारी आदि हटती जाती है; नहीं तो इनको सबसे जास्ती भोगना चाहिए, सबसे जास्ती बीमार रहना चाहिए; क्योंकि सबसे पतित-रोगी यह है; परन्तु योगबल से दुःख दूर होते हैं। (मु.ता.21.11.73 पृ.2 अंत)

4. बाप को जो जितना जास्ती याद करते हैं उतनी दौड़ी पहनते हैं। वही जाकर रुद्र के गले का हार बनेंगे, फिर विष्णु के गले की माला बनेंगे। (मु.ता.3.6.72 पृ.2 मध्यांत)

5. जो राजयोग सीखते हैं वही सुखधाम में आवेंगे। बाकी हिसाब-किताब चुक्तू कर शान्तिधाम में चले जावेंगे। (मु.ता.15.7.72 पृ.2 मध्यादि)

6. जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ (मा॰ आबू) आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वह ही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से खत्म हो जावेंगे। (मु.ता.4.11.78 पृ.2 मध्यांत)

7. योगबल नहीं है तो फिर इच्छाएँ होती हैं- यह चाहिए, यह चाहिए। वह खुशी नहीं है। खुशी जैसी खुराक नहीं। साहबजादों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। (मु.ता.7.8.70 पृ.3 आदि)

8. योगबल ही भूतों को भगावेगा, ज्ञान-बल नहीं। योग में ही बहुत कमजोर हैं। सारा दिन दुनियाँ देखते हैं। घूमने का शौक बहुत है। घूमने, धक्के खाने का शौक तो भूतों को होता है। भूतों को भगाने का एक ही रास्ता है, बाप की याद से भूत भागते जावेंगे। (मु.ता.15.5.69 पृ.3 अंत)

9. यहाँ तो योगबल से कर्मेन्द्रियों को वश करना है, तब मंथली डिस्चार्ज आदि भी बन्द हो। वहाँ यह बीमारी आदि होती नहीं, यह कीचड़-पट्टी रावण-राज्य में होते हैं। (मु.ता.14.12.68 पृ.4 आदि)

10. रावण की दुनियाँ को योगबल से उड़ाना है। (मु.ता.13.4.73 पृ.6 मध्यांत)

11. जो योग में रहेंगे तो उनकी यहाँ भी आयु बढ़ेगी। जितनी आयु बड़ी होगी उतना बाप से अन्त तक वर्सा लेते रहेंगे। योग से तन्दुरुस्ती को भी ठीक करना है। (मु.ता.9.2.78 पृ.1 अंत)

12. याद में अच्छी रीति रहेंगे तो तुम जो भी मांगो, मिल सकता है। प्रकृति दासी बन जाती है। उनकी शक्ल आदि भी ऐसे खींचने वाली रहती है, कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। (मु.ता.17.11.84 पृ.3 आदि)

13. बेहद के बाप को याद करो, बेड़ा पार। बेहद के बाप से बेहद का (बुद्धि रूपी) जेब भर जाता है। वहाँ तुम्हारी आयु भी बड़ी हो जाती है। इतनी बड़ी जो (महाविनाश में भी) कब काल खा न सके। (रात्रि मु.ता.4.7.68 पृ.4 मध्य)

14. बाप ने समझाया है- तुम बच्चे जितना याद की यात्रा में तत्पर रहेंगे, उतनी खुशी भी रहेगी और मैनर्स, चलन, कैरेक्टर्स भी ठीक रहेंगे। (मु.ता.5.10.68 पृ.1 आदि)

15. कदम-2 पर बाप को याद करते रहो तो पदम इकट्ठे होंगे। (मु.ता.10.9.68 पृ.3 अंत)

16. तुम्हारी कोई चीज़ तोड़-फोड़ जावेंगे, तुमको हाथ नहीं लगावेंगे। सो भी बाबा के योग में होंगे तो। याद से ही सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। कैरेक्टर्स को सुधारना सारा याद पर है। (मु.ता.8.4.68 पृ.3 आदि)

17. कोई अगर पूछे कि अभी पढ़ते-2 हमारा शरीर छूट जाए तो क्या पद मिलेगा? बाबा बतला सकते हैं। योग से ही आयु बढ़ती है, विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय पतित से पावन बनने का है नहीं। (मु.ता.26.4.76 पृ.2 अंत)

18. जो बाप को अच्छी रीति याद करते हैं तो बाप उन्हों की रक्षा भी करता है। दुश्मन को भयंकर रूप दिखाए भगा देते हैं। (मु.ता.26.1.93 पृ.1 अंत)

19. जब तुम अच्छे योगी बनेंगे, कहाँ भी आँख नहीं डूबेगी, तो फिर तुम्हारी इन्द्रियाँ शांत हो जाएँगी। मुख्य है यह जो सबको धोखा देती हैं। योग में अच्छी रीति अवस्था जम जाएगी, तो फिर महसूस होगा- हम जैसे जवानी में ही वानप्रस्थ अवस्था में आ गए हैं। (मु.ता.16.8.91 पृ.2 आदि)

20. जो योग में मस्त हैं वही ऊँच पद पाएँगे। (मु.ता.17.2.90 पृ.3 मध्य)

21. बाप के साथ योग रखें तो बुद्धि में (ज्ञान की) रोशनी आवे। योग में नहीं रहने से अंधियारा ही रहता है। इसलिए बच्चों को बाप कहते हैं- जितना याद में रहेंगे उतना लाइट बढ़ती जावेगी। याद से आत्मा पवित्र बनती है, लाइट बढ़ती जाती है। याद ही नहीं करेंगे तो लाइट मिलेगी नहीं। याद से लाइट वृद्धि को पावेगी। याद न किया और कोई विकर्म कर दिया तो लाइट कम हो जावेगी। (मु.ता.20.3.70 पृ.2 अंत)

22. जितना याद करेंगे उतना सहज तुम्हारी अलॉय निकलेगी। आग ठण्डी होगी तो अलॉय निकलेगी नहीं। इनको योग-अग्नि कहा जाता है। जिससे विकर्म विनाश होते हैं। (मु.ता.8.3.70 पृ.3 मध्य)

युगलों से

1. किसी भी प्रवृत्ति के बन्धन में बँधे हुए तो नहीं हो? लोक-लाज के बन्धन में, सम्बन्ध में बंधे हुए को बन्धनयुक्त आत्मा कहेंगे। ..... मन में भी यह संकल्प न आए कि हमारा कोई लौकिक सम्बन्ध है। लौकिक सम्बन्ध में रहते अलौकिक सम्बन्ध की स्मृति रहे। निमित्त लौकिक सम्बन्ध; लेकिन स्मृति में अलौकिक और पारलौकिक सम्बंध रहे। ..... देह का सम्बन्ध नहीं है, सेवा का सम्बन्ध है। प्रवृत्ति में सम्बन्ध के कारण नहीं रहे हो, सेवा के कारण रहे हो। घर नहीं, सेवा-स्थान है। सेवा-स्थान समझने से सदा सेवा की स्मृति रहेगी। (अ.वा.28.4.82 पृ.400 अंत, 401 आदि)

2. युगल मूर्त अर्थात् सेवा के लिए सैम्पल रूप। ..... तो प्रवृत्ति में रहते विश्व के शोकेस में विशेष शो पीस होकर चलते हो? ..... शो केस में गन्दी चीज़ नहीं रखी जाती। अभी थोड़ा समय आगे बढ़ेगा तो सारे विश्व के अन्दर प्रवृत्ति में रहकर निवृत्त रहने वालों का नाम बाला होगा। .....युगलों की अपरम्पार महिमा होगी। बाप के कार्य को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनेंगे। कोई साधारण नहीं हो, विशेष आत्माएँ हो। (अ.वा.28.12.79 पृ.162 आदि)

3. स्मृति से पुराना सौदा कैन्सिल कर सिंगल बनो, फिर युगल बनो। ..... माया के सम्बन्ध को डायवोर्स दे दिया, बाप के सम्बन्ध से सौदा कर दिया। ..... सहयोगी भले हो, कम्पेनियन नहीं। कम्पेनियन एक है, कम्पेनियनपन का भान आया और गया। .....सभी मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाए तो इससे बड़ा लक और क्या चाहिए! जो स्वप्न में न हो और साकार हो जाए तो और क्या चाहिए! बाप आपके पास पहले आया, पीछे आप आए हो। (अ.वा.1.12.78 पृ.92 आदि)

4. सदा स्वराज्य अधिकारी आत्माएँ हो? स्व का राज्य अर्थात् सदा अधिकारी। अधिकारी कभी अधीन नहीं हो सकते। अधीन हैं तो अधिकार नहीं। जैसे रात है तो दिन नहीं; दिन है तो रात नहीं। ऐसे अधिकारी आत्माएँ किसी भी कर्मेन्द्रियों के, व्यक्ति के, वैभव के अधीन नहीं हो सकते। ..... स्वप्न में भी हार का संकल्प मात्र न हो। इसको कहा जाता है- सदा के विजयी (ना.)। माया भाग गई कि भगा रहे हो? इतना भगाया है जो वापिस न आए। (अ.वा.16.1.85 पृ.128 मध्य)

5. अगर तुम्हारा युगल साथ नहीं देता तो तुम अपना पुरुषार्थ करो। युगल साथी नहीं बनते तो जोड़ी नहीं बनेगी? (मु.ता.30.6.74 पृ.2 मध्य)

ओमशांति